CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding: IKS-MoE-Grant-2

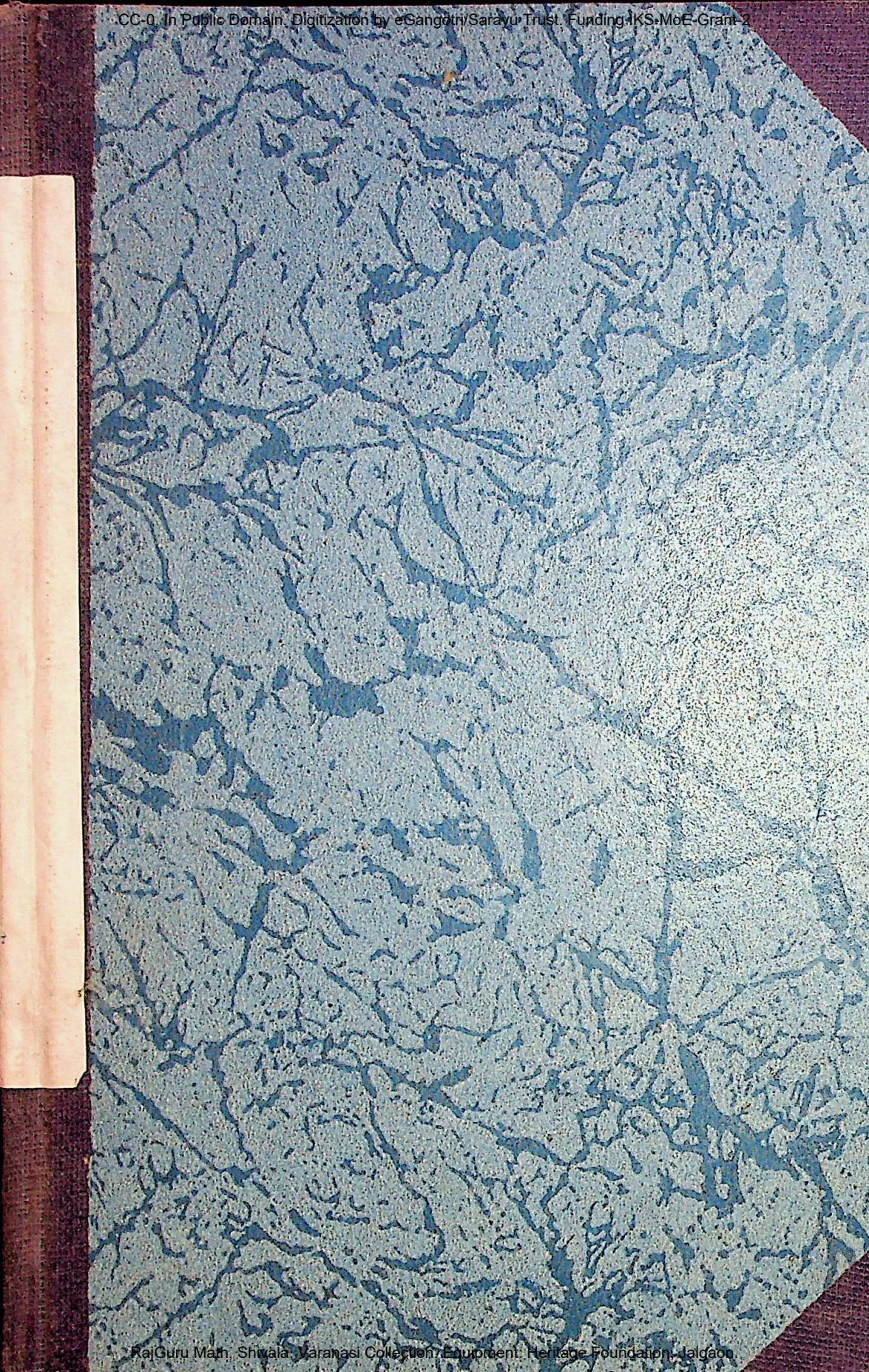

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaldaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS MoE-Grant-2

S.2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी लोकोक्तियाँ

डॉ० शशिशेखर तिवारी

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशक
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना-४

© बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

प्रथम संस्करण २,०००
शकाब्द १८९२; विक्रमाब्द २०२७; खृष्टाब्द १९७०
मूल्य : १०·००

मुद्रक
हिन्दुस्तानी प्रेस
पटना-४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वक्तव्य

'भोजपुरी लोकोक्तियाँ' आगरा-विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच्० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत डॉ० शशिशेखर तिवारी के शोध-प्रबन्ध का किंचित् परिवर्त्तित रूप है। डॉ० तिवारी ने प्रस्तुत ग्रन्थ में विभिन्न स्रोतों से प्राप्त लगभग पाँच हजार भोजपुरी लोकोक्तियों का अध्ययन कर उनका भाषावैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय एवं ऐतिहासिक विवेचन प्रस्तुत किया है। यह प्रसन्नता की बात है कि इन भोजपुरी लोकोक्तियों को लिपिबद्ध करते समय लेखक ने भोजपुरी भाषा की प्रकृति पर विशेष ध्यान रखा है।

लेखक ने बहुत ही युक्तियुक्त ढंग से लोकोक्ति की परिभाषा, व्यापकता तथा लोकोक्तियों के उद्भव और विकास के साथ ही भोजपुरी भाषा, क्षेत्र और भोजपुरी-भाषा-भाषियों की संस्कृति पर विचार किया है। लोकोक्तियों के उद्भव और विकास के अन्तर्गत लेखक ने लोकोक्तियों के उद्भव के आधार, उद्भव की प्रक्रिया, उद्भव के स्रोत और उद्भव की प्राचीनता का सम्यक् विवेचन किया है। इस विवेचन में लोकोक्तियों के उद्भव के ये चार प्रमुख स्रोत निरूपित किये गये हैं—घटना, पहेली, लोककथा और लोकप्रिय चिन्तकों की सूक्तियाँ। तदनन्तर, लेखक ने लोकोक्तियों के विषयवस्तुपरक वर्गीकरण के आधार पर अध्येतव्य भोजपुरी लोकोक्तियों का विस्तृत विश्लेषण किया है। भाषातात्त्विक दृष्टि से 'लोकोक्तियों का रूपात्मक अध्ययन' शीर्षक अध्याय सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है, जिसमें लेखक ने छन्द तथा अलंकार जैसे परम्परा-स्वीकृत काव्य-तत्त्वों को भाषा-तत्त्व के रूप में गृहीत किया है। छन्द-बन्धन की दृष्टि से इन्होंने भोजपुरी लोकोक्तियों को तीन वर्गों—छन्दोबद्ध, लयबद्ध और लयबद्ध गद्य में विभाजित कर दिया है, जिससे प्रतिपाद्य विषय का अध्ययन और भी सांगोपांग हो गया है। इस सन्दर्भ में लेखक की यह मान्यता विचारणीय है कि लयबद्ध लोकोक्तियाँ मात्राबन्ध और यति-विधान से मुक्त होकर भी अनुप्रास और वाक्यांश की द्विरुक्ति से लयात्मक बनी रहती हैं। साथ ही, दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि जन-मानस के भावोच्छ्वास से निर्मित होने के कारण लोकोक्तियों में भाषातात्त्विक दृष्टि से व्याकरणिक पदक्रम की अपेक्षा अव्याकरणिक पदक्रम अधिक रहता है। सचमुच, लोकोक्तियों की भाषा लिखित भाषा के शील से किंचित् भिन्न होती है। इसलिए, लोकोक्तियों में व्याकरण-सम्मत पदक्रम के विपर्यय का रहना स्वाभाविक है। तदुपरान्त, 'उपसंहार' में लेखक ने अपने सभी महत्त्वपूर्ण शोध-निष्कर्षों को बहुत ही सटीक ढंग से निरूपित किया है। अन्त में,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिशिष्ट के रूप में दी गई तीन सूचियों ने, जिनके अन्तर्गत कवियों की लोकोक्तिपरक सूक्तियाँ, लौकिक न्यायों पर आधृत लोकोक्तियाँ तथा प्रस्तुत अध्ययन की आधारभूत भोजपुरी लोकोक्तियाँ संगृहीत हैं, इस ग्रन्थ की उपयोगिता को और भी बढ़ा दिया है।

साधारणतः, सामान्यजन की कोई अनुभवसिद्ध या आकर्षक उक्ति ही लोकप्रिय होकर कालक्रम में लोकोक्ति बन जाती है। लोकोक्ति के लिए संस्कृत में 'आभाणक' और अपभ्रंश में 'अहाणउ' शब्द का भी प्रयोग मिलता है। लोकोक्ति के अभिव्यक्ति-पक्ष की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि उसमें सदैव अभिधा को अतिक्रान्त करने की प्रवृत्ति रहती है। इसलिए, लोकोक्ति की बुनावट में मुख्यतः व्यंग्यार्थ की ही तानी-भरनी रहती है। फलस्वरूप, लोकोक्तियों में शब्द-शक्ति या शब्द-सामर्थ्य का अद्भुत प्रकर्ष मिलता है। आशय यह है कि लोकोक्तियों में लोक-चेतना के आनुभविक ज्ञान की, माप-सांक्षेप्य से युक्त, विदग्ध अभिव्यक्ति रहती है और ऐसी लोकोक्तियाँ ही सामान्य जन-जीवन में आप्तवचन का कार्य करती हैं। प्रायः प्रत्येक लोकोक्ति के अन्तर्गत किसी-न-किसी रूप में जनपद-विशेष के विश्वास और दीर्घ अनुभव की अनुगूँज रहती है। इसलिए, लोकोक्ति विश्वास और अनुभव के धरातल पर वैयक्तिक नहीं, गणतन्त्रात्मक होती है। दूसरी बात यह है कि लोकोक्तियाँ सदैव सोद्देश्य होती हैं और उनका अर्थ अनुकूल प्रसंग में प्रयुक्त होने पर ही खुलता है। यों, लोकोक्तियाँ सोद्देश्य होकर भी अक्सर व्यंग्य-विनोद-गर्भित होती हैं और इनमें थोड़ी-बहुत अन्योक्तिपरकता अवश्य रहती है।

लोकोक्ति लोक-साहित्य के बौद्धिक पक्ष का एक विशिष्ट रूप है; क्योंकि अज्ञातोद्भवा लोकोक्तियों में जन-मानस की ऐसी स्वतः उच्छ्वसित एवं अनुभूति-समृद्ध अभिव्यक्ति रहती है, जो कुछ अंशों में लोक-जीवन के बौद्धिक पहलुओं को अवश्य ही द्योतित करती है। कहना तो यह अच्छा होगा कि लोकोक्तियों में जन-मानस के बौद्धिक और रागात्मक—दोनों ही रिक्थ सुरक्षित रहते हैं। लोकोक्तियों के महत्त्व-निरूपण के सन्दर्भ में प्रस्तुत ग्रन्थ के लेखक की यह उक्ति सर्वथा समीचीन है कि 'लोकोक्तियाँ मानव-समाज की मनीषा, मनःस्थिति और भाषा के विविध स्तरों के अध्ययनार्थ एक कामदुघा स्रोत सिद्ध होती हैं।' (पृ० २२)

ग्रन्थ के आरम्भ में लेखक ने बहुत ही अभिनिवेशपूर्वक लोकोक्ति की अन्य सजातीय विधाओं—मुहावरा, सुभाषित, रोजमर्रा, पहेली इत्यादि के साथ लोकोक्ति का सतर्क तुलनात्मक अध्ययन किया है। प्रायः ये सभी सजातीय विधाएँ माप-सांक्षेप्य से युक्त अभिव्यक्ति-भंगिमाएँ हुआ करती हैं। सबसे अधिक कठिनाई लोकोक्ति और मुहावरे के पार्थक्य-निरूपण में होती है; क्योंकि लोकोक्तियों में भी मुहावरों के जैसा ही 'वाग्योग' रहता है। इसलिए, न्यस्त सादृश्य के कारण सामान्यतः इन दोनों का ठीक-ठीक अभिज्ञान नहीं हो पाता है। किन्तु, प्रस्तुत ग्रन्थ के विद्वान् लेखक ने 'लोकोक्ति की व्यापकता' शीर्षक अध्याय में लोकोक्ति और मुहावरे के व्यावर्त्तक लक्षणों का पारदर्श विवेचन किया है। लेखक ने लोकोक्ति और मुहावरे के इस रेखांकित पार्थक्य का सही निर्देश किया है कि लोकोक्ति में एक पूर्ण वाक्य रहता है और मुहावरे में एक वाक्य-खण्ड। इसलिए, अनेक लोकोक्तियों के अन्तर्गत अभिव्यक्ति के प्रभारी बाँकपन के लिए मुहावरे का सटीक प्रयोग मिलता है। यों भी, अधिकांश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकोक्तियाँ 'मुहावरत' से ही बनती हैं। निष्कर्ष रूप में, लोकोक्तियाँ ऐसी अज्ञातनामा सूक्तियाँ हैं, जिनमें प्रज्ञा, नीति और व्यवहार का त्रिवेणी-संगम रहता है।

कई भारतीय भाषाओं में विवेचनात्मक अध्ययन की दृष्टि से लोकोक्ति-संग्रह और मुहावरा-कोश प्रकाशित हो चुके हैं, जिनमें तमिल, तेलुगु, मलयालम और बँगला में प्रस्तुत किये गये संग्रह विशेष महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं। अनेक विदेशी विद्वानों ने भी इस क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है, जिनमें जेम्स जे० केलसी, जॉन क्रिश्चियन, एस्० डब्ल्यू० फैलन, एस्० जी० चैम्पियन इत्यादि को विशेष गौरव दिया जाता है। किन्तु, प्राच्य लोकोक्तियों के अध्ययन की दिशा में पथिकृत् कार्य करने का श्रेय 'ऑरियण्टल प्रॉवर्ब्स' के लेखक जेम्स लाँग को मिलना चाहिए, जिन्होंने सन् १८५१ ई० से ही एतद्विषयक अपना शोध-कार्य प्रारम्भ किया और एक व्यापक फलक पर लोकोक्तियों का सम्बन्ध लोक-साहित्य, इतिहास तथा समाजशास्त्र के साथ निरूपित किया। जेम्स लाँग ने तो निरन्तर पन्द्रह वर्षों के श्रम के उपरान्त यूरोप तथा एशिया की लोकोक्तियों तथा मुहावरों का तुलनात्मक अध्यन प्रस्तुत किया था, जो अपने ढंग का एक ऐतिहासिक कार्य है। जहाँतक भोजपुरी लोकोक्तियों और मुहावरों के संग्रह का प्रश्न है, उसकी आंशिक पूर्वझलक एस्० डब्ल्यू० फैलन द्वारा रचित तथा सन् १८७९ ई० में बनारस से मुद्रित 'ए न्यू हिन्दुस्तानी-इंगलिश डिक्शनरी विद इलस्ट्रेशन्स फ्रॉम हिन्दुस्तानी लिट्रेचर ऐण्ड फोक्लोर' तथा जॉन क्रिश्चियन के 'बिहार प्रॉवर्ब्स' में मिलती है। किन्तु, भोजपुरी लोकोक्तियों पर आधुनिक शोध की अद्यतन दृष्टि से व्यवस्थित कार्य करने का पहला श्रेय डॉ० शशिशेखर तिवारी को ही है।

आशा है, प्रबुद्ध पाठक-समुदाय भोजपुरी लोकोक्तियों के इस शोधपूर्ण विवेचनात्मक अध्ययन का हृदय से स्वागत करेगा।

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना
विवाह-पंचमी, सं० २०२७ वि०

(डॉ०) कुमार विमल
निदेशक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रख्यात भाषाविद्

डॉ० विश्वनाथप्रसादजी की

पुण्यस्मृति को

विनीत

शशिशेखर तिवारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रस्तावना

प्रस्तुत ग्रन्थ 'भोजपुरी लोकोक्तियाँ' आगरा-विश्वविद्यालय (आगरा) द्वारा, भाषाविज्ञान के अन्तर्गत, डॉक्टरेट की उपाधि के लिए स्वीकृत मेरे शोध-प्रबन्ध 'भोजपुरी लोकोक्तियों का अध्ययन' का परिवर्त्तित रूप है। यह शोध-प्रबन्ध सन् १९६३ ई० में प्रस्तुत किया गया था।

लोकोक्ति, लोकसमुदाय के समवेत अनुभव और अभिज्ञता की सूत्रात्मक विदग्ध अभिव्यक्ति के रूप में अपने अभिधान को सार्थक करती है। इसका प्रथम शब्द 'लोक' सारगर्भ है। यह लोकोक्ति की सृष्टि, प्रयोजन और महत्त्व को संकेतित करता है। लोकोक्ति लोक के कर्मसंकुल जीवन के समस्त अवसरों और क्षेत्रों में यथास्थान प्रयुक्त होकर सत्य वचन, प्रमाण, आप्तवाक्य, साक्षी और लोकमत के रूप में सर्वसाधारण को प्रभावित और प्रेरित करती है। इसलिए, यह राष्ट्र की मेधा और महिमा के बृहत् अंश की सृष्टि ही नहीं, स्रष्टा तथा संरक्षिका भी है। इस तरह, यह अपने प्रयोक्ता जनपद के विचार, विश्वास और वाणी की समर्थ संवाहिका होने के कारण लोक-वाङ्मय के अन्तर्गत एक विशिष्ट प्लवमान विधा के रूप में प्रतिष्ठित है।

लोकोक्तियों का उद्भव एवं विकास सतत गतिशील लोक-जीवन के बीच होता है। इसमें स्वतः स्फूर्त्त रूप से लोक का ज्ञान और गिरा संचित होती रहती है। मनीषियों ने लोकोक्ति के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए उसे **व्यावहारिक जीवन की कुंजी, मानव-जाति के अलिखित कानून-संग्रह, मानव-स्वभाव और व्यवहार-कौशल के सिक्के, समष्टि का चातुर्य तथा व्यष्टि का बुद्धि-चमत्कार, ईश्वरोक्ति, लोकमान्य निष्कर्ष, अनुभव की दुहिता** आदि विशेषणों से अभिषिक्त किया है। इस प्रसंग में सुप्रसिद्ध मनस्वी 'फ्रांसीस बेकन' का यह कथन उल्लेखनीय है : **राष्ट्र की प्रतिभा, विदग्धता और भावना उसकी लोकोक्तियों के द्वारा अन्वेषित होती है :** 'दि जीनियस, विट् ऐण्ड स्पिरिट ऑव ए नेशन आर डिस्कवर्ड बाइ देयर प्रॉवर्ब्स'।

लोकोक्तियों के वैज्ञानिक संकलन और अध्ययन का कार्य इस देश में अन्य देशों की अपेक्षा प्रारम्भिक अवस्था में है। इस देश के कुछ विद्वानों ने लोकोक्तियों का अध्ययन किया है। मेरे विचार में इनमें साहित्यिक दृष्टिकोण प्रमुख रहा है। ऐसे अध्ययन का अपना महत्त्व है। किन्तु, लोकगीत (फोकलोर) की विधाओं में लोकोक्ति किसी राष्ट्र की बौद्धिक, रागात्मक एवं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon. . . .

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भौगोलिक सत्ता और उसके भाषा-वैशिष्ट्य के प्रत्यक्ष ज्ञान और प्रामाणिक अनुशीलन के लिए उपयुक्त और समृद्ध सामग्री के रूप में विशेष स्थान रखती है। इस तथ्य को इधर विश्व के सभी उन्नत राष्ट्रों के चिन्तकों ने स्वीकार किया है। परन्तु, हमारे देश में लोकोक्तियों के उपर्युक्त महत्त्व को दृष्टि से विशेषतः उनका भाषावैज्ञानिक एवं समाजशास्त्रीय अध्ययन अभीप्सित रहा है।

यह ग्रन्थ उपर्युक्त अध्ययन की दिशा में एक प्रयत्न है। मुख्य रूप से इसमें भोजपुरी लोकोक्तियों का भाषावैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय और ऐतिहासिक अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन मेरे द्वारा विविध स्रोतों से संगृहीत लगभग पाँच हजार भोजपुरी लोकोक्तियों पर आधारित है। इन लोकोक्तियों के सहारे भोजपुरी प्रदेश के विगत और वर्त्तमान जीवन का समन्वयात्मक पट बुना गया है। भोजपुरी लोकोक्तियों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन अत्यन्त उपादेय सिद्ध हुआ है। आधुनिक समय में इन लोकोक्तियों के प्रयोक्ताओं की संख्या लगभग चार करोड़ है, जो पचास हजार वर्गमील में वर्त्तमान भारत के तीन प्रदेशों में बसे हुए हैं। सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और भौगोलिक परिस्थितियों ने इन भोजपुरी जनपदों को एक विशिष्ट स्वरूप प्रदान किया है। इसलिए इस बृहत् क्षेत्र की लोकोक्तियाँ शब्दावली, शब्द-रूपों, शब्दार्थ-सामर्थ्य, भाषिक प्रयोग और वाक्य-संरचना के अध्ययन के लिए प्रचुर सामग्री प्रस्तुत करती हैं। इस ग्रन्थ में लोकोक्तियों में प्राप्त इन भाषागत विशिष्टताओं का अध्ययन सामान्य और विशेष दोनों रूपों में किया गया है। जहाँ लोकोक्तियों का ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीय आदि अध्ययन किया गया है, वहाँ भी यथास्थान भाषात्मक तथ्यों एवं तत्त्वों का विश्लेषण किया गया है। लोकोक्तियों के रूपगत अध्ययन में 'छन्द' तथा 'अलंकार' को काव्य के तत्त्व की अपेक्षा भाषातत्त्व के रूप में गृहीत किया गया है।

भोजपुरी लोकोक्तियों के ऐतिहासिक और समाजशास्त्रीय अध्ययन में लेखाचित्रीय विधि का सहारा लिया गया है। लोकोक्तियों के द्वारा भोजपुरी प्रदेश, संस्कृति, जीवन-प्रणाली, इतिहास और भूगोल का सघन और सूक्ष्म रेखांकन प्रस्तुत किया गया है। इस तरह, यह अध्ययन प्रकारान्तर से भोजपुरी प्रदेश की आत्मकथा हो गया है।

इस ग्रन्थ का मूल शोध-प्रबन्ध भारत के सुप्रसिद्ध भाषाविद् स्वर्गीय डॉ० विश्वनाथ प्रसाद, भूतपूर्व संचालक हिन्दी तथा भाषाविज्ञान-विद्यापीठ, आगरा-विश्वविद्यालय; निदेशक, हिन्दी-निदेशालय, भारत-सरकार और सचिव, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली-आयोग, भारत-सरकार के निदेशन में लिखा गया था। पूज्य गुरु डॉ० प्रसाद ने अपने स्वर्गवास के कुछ ही माह पूर्व मुझसे कहा था कि अच्छा होता, अगर इस शोध-प्रबन्ध को बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् प्रकाशित करती। उनकी यह इच्छा पूरी हुई। मैं अपने इस परम सौभाग्य को, यह ग्रन्थ श्रद्धेय गुरु की पुण्यस्मृति को समर्पित कर प्रकट कर रहा हूँ।

मेरे शोध-कार्य के सम्पन्न करने में हिन्दी तथा भाषाविज्ञान-विद्यापीठ के तत्कालीन विद्वान् प्राध्यापक डॉ० गौरीशंकर 'सत्येन्द्र', डॉ० अशोक रामचन्द्र केलकर, डॉ० रमानाथ सहाय और हस्तलिखित ग्रन्थ-विभाग के सहायक पं० उदयशंकर शास्त्री से यथेष्ट सुझाव और सहायता मिली है। इसके लिए मैं इन सभी का कृतज्ञ हूँ। शोधकार्य और इस ग्रन्थ के लेखन में मुझे समय-समय डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ० बाबूराम सक्सेना, डॉ० उदयनारायण तिवारी, पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, डॉ० कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह, प्रो० देवेन्द्रनाथ शर्मा,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीहंसकुमार तिवारी और डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त से बहुमूल्य निदेशन और प्रोत्साहन मिला है। इन मूर्द्धन्य मनीषियों के प्रति मैं अपना हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन के अवसर पर मैं अपने पूज्यपाद पिता पं० श्रीरंग तिवारी और श्वशुर डॉ० रामावतार शुक्ल के चरणों में प्रणति निवेदित करता हूँ; क्योंकि वस्तुतः अपने इन पूज्य स्वजनों के आशीष के फलस्वरूप ही मैं सरस्वती की उपासना में संलग्न रहा हूँ। साथ ही, मैं उन सभी मित्रों और शुभचिन्तकों को धन्यवाद देता हूँ, जिनसे मुझे इस ग्रन्थ की प्रस्तुति में किसी-न-किसी प्रकार से सहायता मिली है।

निस्सन्देह, इस ग्रन्थ के प्रकाशन का सारा श्रेय बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के पारिषदों, निदेशक और अन्य अधिकारियों में वरीय शोध-पदाधिकारी एवं प्रकाशन-पदाधिकारी को है। सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय महत्त्व का कार्य करनेवाली इस देश की संस्थाओं में अग्रगण्य बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् ने मेरी यह पुस्तक प्रकाशित कर मुझे जो गौरव दिया है, उसके लिए मैं हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

ग्रन्थ में मुद्रण एवं ध्वन्यंकन-सम्बन्धी अशुद्धियों का रह जाना स्वाभाविक है। सहृदय विद्वान् पाठकों से संलग्न शुद्धि-पत्र पर ध्यान रखने के लिए निवेदन है।

स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग,
मगध-विश्वविद्यालय, बोधगया
अक्षय-नवमी, कार्त्तिक, सं० २०२७ वि०

शशिशेखर तिवारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संकेत-सूची

ऽ 'अ' का विलम्बित उच्चारण

√ धातु

> रूप-परिवर्त्तन

< से व्युत्पन्न

= सम, समान अर्थ

अ० को०—अवधी कोश

इ० आर्० ए०—ए'नूसाइक्लोपीडिया ऑव रिलिजन ऐण्ड एथिक्स

ई०—ईसवी

ई० पू०—ईसवी-पूर्व

उदा०—उदाहरणार्थ

एल्० एस्० इ०—लिंग्विस्टिक सर्वे ऑव इण्डिया

एस्० डि० एफ्० एम्० एल्०—स्टैण्डर्ड डिक्शनरी ऑव फोकलोर ऐण्ड लिजेण्ड

का० ना० प्र० स०—काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा

का० प्र०—काव्यप्रकाश

कृ० को०—कृषि-कोश

ग०—गजेटियर

जि०—जिल्द

जे० ए० एस्० बी०—जर्नल ऑव दि एशियाटिक सोसाइटी ऑव बंगाल

जे० आर्० ए० एस्०—जर्नल ऑव दि रॉयल एशियाटिक सोसाइटी

जे० बि० रि० सो०—जर्नल ऑव बिहार रिसर्च सोसाइटी

डि० ग० यू० पी० ओ० आ०—डिस्ट्रिक गजेटियर्स ऑव दि यू० पी० ऑव अवध ऐण्ड आगरा

तु०—तुलना कीजिए

दे०—देखिए

ने० डि०—नेपाली-इंगलिश-डिक्शनरी

पाठा०—पाठान्तर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पृ०—पृष्ठ
प्र०—प्रसंग
बि० प्रो०—बिहार प्रोवर्ब्स
बि० रा० प०—बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
भा०—भाग
भो०—भोजपुरी
भो० क्षे०—भोजपुरी क्षेत्र
भो० भा० सा०—भोजपुरी भाषा और साहित्य
लो०—लोकोक्ति
व्यु०—व्युत्पत्ति
शु०—शुदि
सं०—संस्कृत
सं० हिं० श० सा०—संक्षिप्त हिन्दी-शब्दसागर
सं० इं० डि०—संस्कृत-इंगलिश-डिक्शनरी
हिं० श० सा०—हिन्दी-शब्दसागर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषय-सूची

विषय		पृष्ठ
भूमिका	....	१—३६
०.१.१. लोकोक्ति क्या है ?	....	१— ३
०.१.२. लोकोक्ति की व्यापकता	....	३— ८
लोकोक्ति और मुहावरे	....	३
लोकोक्ति और सुभाषित	....	५
लोकोक्ति और रोजमर्रा	....	५
लोकोक्ति और पहेली	....	७
लोकोक्ति और लौकिकन्याय	....	८
०.१.३. लोकोक्तियों का उद्‌भव और विकास	....	८—२५
क. उद्‌भव	....	८—१५
(अ) उद्भव का आधार	....	९
(आ) उद्भव की प्रक्रिया	....	९
(इ) उद्भव के स्रोत	....	१०
ख. विकास	....	१५—२५
लोकोक्ति का महत्त्व	....	२२
०.२.१. भोजपुरी भाषा	....	२५—२७
०.२.२. भोजपुरी क्षेत्र का इतिहास और भूगोल	....	२८—३१
(क) भोजपुरी क्षेत्र का इतिहास	....	२८
(ख) भूगोल	....	३०
०.२.३. भोजपुरी-भाषा-भाषी की संस्कृति	....	३२—३६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय १ : लोकोक्तियों का विषयवस्तुपरक वर्गीकरण तथा उसके आधार पर उनका अध्ययन .... ३७—१७९

१.१. लोकोक्तियों का वर्गीकरण और उनका आधार .... ३९—४२

१.२. इतिहास-सम्बन्धी .... ४२—७०

१.३. प्राकृतिक भूगोल-सम्बन्धी .... ७०—९७

१.४. समाज-सम्बन्धी .... ९७—१२४

१.५. जात-पाँत-सम्बन्धी .... १२४—१३६

१.६. कृषि-सम्बन्धी .... १३७—१४७

१.७. नीति और लोक-व्यवहार-सम्बन्धी .... १४७—१५८

१.८. धर्म और दर्शन-सम्बन्धी .... १५८—१६५

१.९. लोक-विश्वास-सम्बन्धी .... १६५—१६८

१.१०. स्वास्थ्य-सम्बन्धी .... १६८—१७२

१.११. व्यंग्य विनोद-गर्भित .... १७२—१७९

अध्याय २ : लोकोक्तियों का रूपात्मक अध्ययन .... १८१—२२३

२.०. रूपात्मक अध्ययन की सीमाएँ १८३

२.१. शैलीगत १८३

२.१.१. छन्द .... १८९—१९८

२.१.२. अलंकार १९९

२.२. भाषागत .... १९९—२०३

२.२.१.१. पदक्रम .... २०३—२०९

२.२.१.२. पदलोप .... २०९—२२३

२.२.१.३. शब्द-सामर्थ्य २०९

२.२.१.३,१. प्राचीन शब्द-भाण्डार २१६

२.२.१.३.२. नाम-पद २२०

२.२.१.३.३. संख्या-पद ....

उपसंहार .... २२४—२२८

परिशिष्ट १ : कवियों की लोकोक्तिपरक सूक्तियों की सूची .... २३१—२३४

परिशिष्ट २ : संस्कृत लौकिक न्यायों पर आधारित और लौकिक न्यायपरक लोकोक्तियों की सूची .... २३४—२३५

परिशिष्ट ३ : प्रयुक्त लोकोक्तियों की सूची .... २३६—२८१

सहायक ग्रन्थ-सूची २८२

अनुक्रमणी २८९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी लोकोक्तियाँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

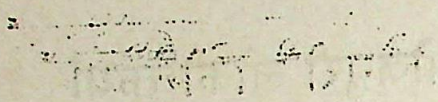

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूमिका

०. १. १. लोकोक्ति क्या है ?

लोकोक्ति की सर्वमान्य और सम्यक् परिभाषा देना कठिन कार्य है। विद्वानों द्वारा लोकोक्ति की अनेक परिभाषाएँ दी गई हैं।[१] किन्तु, इनमें से कोई भी परिभाषा निर्दोष नहीं है। इन परिभाषाओं के निम्नांकित अभाव हैं :

१. लोकोक्ति के पूरे स्वरूप को निश्चित और स्पष्ट नहीं कर पाना।

---

१. (क) "A proverb is much matter decocted into few words." (Worthies of England, ch. 2, Thomas Fuller)", Racial Proverbs, p. 3.

(ख) "Jewels five words long, that, on the stretched forefinger of time, sparkle forever." (Tennyson), Racial Proverbs, p. 3.

(ग) "The genius, wit, and spirit of a nation are discovered in its proverbs." (Francis Bacon), Racial Proverbs, p. 4.

(घ) "The people's voice the voice of God we call; and what are proverbs but the people's voice ? Coined first and current made by common choice ? Then sure they must have weight and truth withal." (Preface to 'Collection of Proverbs'), Homall—Racial Proverbs, p. 4.

(ङ) "The guiding oracles which man has found out for himself in that great business of hours of learning how to be, to do, to do without, and to depart." (Mr. Moley's 'Definition of Proverbs'), Racial Proverbs, p. 4.

(च) "A proverb is a short sentence, sententious and true, long since accepted by common consent." (Capriano de Valera Spanish). Racial Proverbs, p. 6.

(छ) "Proverbs are short sentences drawn from long experience." ('Don Quixote Cervantes'), Racial Proverbs, p. 6.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२. लोकोक्ति की परिभाषा के नाम से लोकोक्ति के महत्त्व का प्रतिपादन होना।

३. कई परिभाषाओं में एक ही तथ्य को किंचित् भेद से स्थापित करना।

अतएव, लोकोक्ति के स्वरूप को निश्चित करने के लिए उसे परिभाषाओं में बाँधने की अपेक्षा उसके लक्षणों को निर्धारित करना अधिक वैज्ञानिक पद्धति होगा। कई विद्वानों ने भी इसी पद्धति से लोकोक्ति की विशेषता और व्याप्ति को स्पष्ट करने की कोशिश की है।[1] यहाँ लोकोक्ति के रूप, अर्थ और प्रकरण को दृष्टि में रखते हुए उसके निम्नांकित लक्षण दिये जा रहे हैं :

१. लोकोक्ति मुक्तक शैली में अभिव्यक्त संक्षिप्त और सूत्रबद्ध वक्तव्य होती है।[2]

२. लोकोक्ति का अर्थ वाच्य और व्यंग्य—दोनों होता है। किन्तु, संख्या की दृष्टि से व्यंग्यार्थ-प्रधान लोकोक्तियाँ अधिक हैं।

३. अधिकांश लोकोक्तियों की अभिव्यक्ति-शैली मर्मस्पर्शी और विदग्ध होती है।[3]

४. लोकोक्तियों की भाषा सामान्यतः अलंकृत और लयात्मक होती है।

५. लोकोक्तियों की शब्दावली और वाक्य-विन्यास अधिकांशतः बोलचाल की वास्तविक और व्यावहारिक भाषा पर आधारित होता है।

---

१. (क) "Four qualities are necessary to constitute a proverb, brevity....sense, piquancy or salt (Trench) and popularity". —Hastings Encyclopaedia of Religion and Ethics, Vol. X, p. 412.

(ख) "Proverb ..... A short pithy saying in common and recognized use; a concise sentence, often metaphorial or alliterative in form, which is held to express some truth ascertained by experience or observation and familiar to all....."—Encyclopaedia Brittanica (1768), p. 642.

(ग) "A proverb in my opinion is a racial aphorisum which has been, or still is, in common use, conveying advice or counsel, invariably camouflaged figuratively, disguised in metaphor or allegory."—Selwyn Gurney Champion, Racial Proverbs, Introduction, p. xv.

२. "Remnants which, on account of their shortness and correctness—have been saved out of the wreck and ruin of ancient philosophy."—(Aristotle), Racial Proverbs, P. 5.

३. (क) "The wit of the man; the wisdom of many." ('Mack intosh Memories' Lord John Russell), Racial Proverbs, p. 4.

(ख) 'लोकोक्तियाँ मानवी ज्ञान के चोखे और चुभते हुए सूत्र हैं।'—'मधुकर' पत्रिका में संगृहीत डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल का 'लोकोक्ति-साहित्य का महत्त्व' शीर्षक निबन्ध, मार्च, १९४९ ई०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

६. लोकोक्तियों में वर्णित विषय-वस्तु लोक-समुदाय की समवेत अभिज्ञता और प्रत्यक्ष ज्ञान पर आधारित होती है।[१]

७. लोकोक्ति समस्त लोक-समुदाय द्वारा स्वीकृत और व्यवहृत होती है।

८. लोकोक्तियों का प्रयोग यथाप्रसंग किसी तथ्य, मान्यता और स्थिति में किसी एक के सूचन, निर्देश, आलोचन और पोषण के लिए होता है।[२]

०. १. २. लोकोक्ति की व्यापकता

'लोकोक्ति क्या है'—इस प्रश्न का उत्तर 'लोकोक्ति क्या नहीं है—इस निषेधात्मक प्रश्न के उत्तर से भी स्पष्ट किया जा सकता है। इसके लिए लोकोक्ति और उसकी सजातीय शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन सर्वथा उपादेय है।

बोलचाल और साहित्य की कई विधाएँ लोकोक्ति की सजातीय हैं। इनमें विशेष रूप से ये उल्लेख्य हैं: मुहावरे, सुभाषित, रोजमर्रा, पहेली और लौकिक न्याय। नीचे लोकोक्ति और उसकी उपर्युक्त सजातीय विधाओं का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है।

लोकोक्ति और मुहावरे :

सामान्य लोगों की तरह कुछ कोशकार और लेखक भी लोकोक्ति और मुहावरे को एक ही अभिव्यक्ति-शैली मान बैठते हैं। पं० रामदहिन मिश्र ने 'हिन्दी मुहावरे' में कुछ ऐसी लोकोक्तियाँ उद्धृत की हैं, जो कि उनके अनुसार 'मुहावरे' के अन्तर्गत परिगणित की जा सकती हैं। अँगरेजी के प्रसिद्ध लेखक एल्० पी० स्मिथ ने भी कुछ अँगरेजी की लोकोक्तियों को मुहावरे की उदार परिभाषा के अन्तर्गत सन्निविष्ट कर लिया है। डब्ल्यू० जी० स्मिथ द्वारा सम्पादित 'दि ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ऑव इंगलिश प्रोवर्ब्स' में संकलित कई लोकोक्तियाँ मूलतः मुहावरे हैं। इस प्रकार, लोकोक्ति और मुहावरे को एक दूसरे के पर्याय के रूप में स्वीकृत और प्रयुक्त किया गया है। किन्तु, उक्त दोनों शैलियों में मूलभूत अन्तर है। यथा:

१. अर्थ और रूप की दृष्टि से, लोकोक्ति एक पूर्ण वाक्य है, और मुहावरा एक वाक्य-खण्ड। लोकोक्ति में उद्देश्य और विधेय का विधान होता है, किन्तु मुहावरे में इस प्रकार के विधान का अभाव है। इसीलिए लोकोक्ति के वाक्यों में मुहावरे का प्रयोग होता है, किन्तु मुहावरे के अन्तर्गत लोकोक्ति के प्रयोग का प्रश्न ही नहीं उठता।

लोकोक्तिगत वाक्य में प्रयुक्त पदों के काल, पुरुष, वचन, लिंग आदि निश्चित होते हैं। परन्तु, मुहावरे-रूपी वाक्यखण्ड के पद किसी वाक्य में प्रयुक्त होकर अपने काल, पुरुष और वचन बदल देते हैं। 'अखड़ल' (शोर करते हुए रोष प्रकट करना), 'अफनाइल' (खाकर सन्तुष्ट

---

१. 'किसी भाषा की प्रवादावली उस भाषा की जनता की सैकड़ों वर्षों की अभिज्ञता का सम्पुट है। यह अभिज्ञता जीवन के सब व्यापारों के आधार पर होती है।'—मुनीतिकुमार चाटुर्ज्या : राजस्थानी कहावतें, भूमिका, पृ० १३।

२. "A proverb is a terse didactic statement that is current in tradition....."—Archer Tayler (Standard Dictionary of Folklore, Mythology & Legend), Vol. II., p. 902.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होना) और 'कचरकूट कइल' (छककर खाना या मौज करना)—ये भोजपुरी मुहावरे वाक्यों में प्रयुक्त होकर अपना रूप इस प्रकार बदल डालेंगे :

उखड़ल : उ बड़ा अखड़ रहल बाड़न ।

अफनाइल : उ खा के अफना गइल बाड़न ।

कचरकूट कइल : मेला में ई खूब कचरकूट कइले हा ।

२. मुहावरों की शब्द-योजना के अन्तर्गत पदक्रम-विपर्यय, पद-परिवर्त्तन और शाब्दिक न्यूनाधिक करना निषिद्ध है । इसका कारण है कि 'चिर प्रयोग के कारण मुहावरे स्थिर हो गये हैं । उनमें किसी प्रकार का परिवर्त्तन नहीं किया जा सकता ।'[1] मुहावरों के पदों और उसकी योजना में किया हुआ किसी प्रकार का परिवर्त्तन, मुहावरे के अभिप्रेत अर्थ और प्रकृति को विनष्ट कर देता है । भोजपुरी मुहावरा 'कोदो देके पढ़ल' (मुफ्त में शिक्षा लेना) का शाब्दिक विस्तार करके 'कोदो देके खूब पढ़ल' के रूप में प्रकट किया जाय, तो मुहावरे की मुहावरेदारी और अर्थ-सामर्थ्य नष्ट हो जायगी ।

किन्तु, लोकोक्ति में शाब्दिक न्यूनाधिक, पद-क्रम का पर-प्रयोग और पद-परिवर्त्तन की गुंजाइश है । 'चमारे के बेटी नाँव रजरनियाँ' लोकोक्ति को 'नाँव रजरनियाँ बेटी चमारे के' के रूप में अभिव्यक्त करें, तो इस परिवर्त्तित लोकोक्ति के शब्दार्थ या भावार्थ में कोई विशेष अन्तर नहीं होगा ।

३. रूप की दृष्टि से लोकोक्ति और मुहावरे दोनों संक्षिप्त और सूत्रात्मक होते हैं । परन्तु, प्रायः लोकोक्तियाँ मुहावरे की अपेक्षा बड़ी होती हैं । एक अतिसंक्षिप्त भो० लो० 'अस्सी लस्सी' (अर्थात् अस्सी वर्ष की उम्र में मनुष्य ढीला-ढाला हो जाता है) में दो पद हैं और एक अति संक्षिप्त भो० मुहावरे 'गाजल' (प्रसन्न होना) में एक ही पद है ।

४. अर्थ-प्रकाशन की दृष्टि से लोकोक्ति तीन प्रकार की होती है—(१) जिनमें अभिधेयार्थ ही मुख्य होता है ; जैसे—'छूँछ छोह हतैया बरोबरि'—केवल (मौखिक) दया दिखाना, हत्या करने के बराबर है । (२) जिनमें अभिधेयार्थ और व्यंग्यार्थ दोनों रहते हैं, जैसे—'चूना चाम कुटले से ठीक होला ।' इस लोकोक्ति का अभिधेयार्थ है—चूना और चमड़े कूटने से ही ठीक होते हैं और व्यंग्यार्थ है—दुष्ट दलित होकर ही रास्ते पर आते हैं । (३) जिनमें व्यंग्यार्थ ही अभिप्रेत होता है, जैसे—'ठिकरिओ से घइला फूटेला' लो० (ठिकरी से भी घड़ा फूटता है) का व्यंग्यार्थ है—निम्न वस्तु से भी बड़ी या शक्तिशाली वस्तु को हानि पहुँच सकती है ।

किन्तु मुहावरा, लक्षणा और व्यंजना द्वारा सिद्ध वाक्य होता है । इसलिए, इसमें लक्ष्यार्थ या व्यंग्यार्थ ही अभिप्रेत होते हैं । उदा०

चहेटल : अर्थात्, पीछा करना ।

चानी काटल : अर्थात्, मौज करना ।

छूँछ हाथ रहल : अर्थात्, खर्च के कारण पास में रुपया-पैसा नहीं रहना ।

जीव सँकेता में पड़ल : अर्थात् विपत्ति में पड़ना ।

५. अपने प्रयोग की उपयोगिता और उद्देश्य की दृष्टि से भी मुहावरे और लोकोक्ति में अन्तर है । सामान्यतः, लोकोक्तियाँ किसी तथ्य या ज्ञान के पोषण, शिक्षण, आलोचन और

---

१. मेक मारडी : इंगलिश इडियम्स ऐण्ड हाउ टू यूज़ देम, पृ० १५ ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सूचन के लिए उद्धृत की जाती हैं। उदाहरणार्थ : 'बासी बाँची ना कुकुर खाई' (न बासी बचेगा, न कुत्ता खायगा) लोकोक्ति का प्रयोग 'किसी परिणाम को टालने के लिए उसके कारण को नष्ट करना चाहिए'—इस सामान्य विचार को पुष्ट या उदाहृत करने के लिए किया जाता है। इसी प्रकार, 'बाँस के जरी बाँसे जामेला' (बाँस की जड़ में बाँस जन्म लेता है) लो० में शिक्षण या सूचन की दृष्टि है।

परन्तु, मुहावरे का प्रयोग—वाक्य के अर्थ में चमत्कार उत्पन्न करके उसे साधारण वाक्यों से अधिक प्रभावशाली, समृद्ध और उत्कृष्ट एवं ओजःपूर्ण बनाने के लिए होता है।'[१] उदाहरण के लिए, भोजपुरी भाषा के एक ही अर्थ रखनेवाले दो वाक्य—एक साधारण और दूसरा मुहावरेदार—दिये जा रहे हैं :

(१) 'उ खूब पेन्ह-ओढ़ के निकलल बाड़न' (वे खूब पहन-ओढ़कर निकले हैं)।

(२) 'उ छयल चिकनियाँ बनत फिरत बाड़न' (वे 'छयल चिकनियाँ' बनते फिर रहे हैं)। यहाँ 'छयल चिकनियाँ बनना' मुहावरे का प्रयोग हुआ है।

६. लोकोक्ति एक अलंकार भी है और मुहावरा लक्षणा और व्यंजना पर आश्रित होने के कारण अलंकार-प्रकाशन का साधन बनता है।

७. मुहावरा वस्तुतः एक कार्य-व्यापार है, जब कि लोकोक्ति एक प्रकार का नैतिक अथवा व्यावहारिक अनुभवों पर आधारित लोक-स्वीकृत कथन है।

लोकोक्ति और सुभाषित :

'सुभाषित' के व्यापक अर्थ के अन्तर्गत 'प्रज्ञासूत्र', 'नीतिवचन' या 'व्यवहारसूत्र' और 'सूक्ति' का भी बोध हो जाता है। नीचे इसी अर्थ में 'सुभाषित' का प्रयोग किया गया है। लोकोक्ति और सुभाषित के पारस्परिक अन्तर निम्नलिखित हैं :

१. सुभाषित के रचयिता का नाम ज्ञात रहता है, किन्तु अधिकांश लोकोक्तियाँ अज्ञातनामा होती हैं।

२. सुभाषित के रूप में अभिव्यक्त भाव या तथ्य में, सुभाषितकार का व्यक्तिगत दृष्टिकोण या मनोवृत्ति का भी परिचय मिलता है। किन्तु, लोकोक्ति तो लोक द्वारा स्वीकृत सत्य या प्रत्यक्ष स्थिति पर आधारित होती है, अर्थात् लोकोक्ति निर्वैयक्तिक कृति होती है।

३. सुभाषित प्रायः विचारित चिन्तन या रमणीयता के उदाहरण हैं, किन्तु लोकोक्तियाँ लोकमानस की स्वतः उच्छ्वसित अभिव्यक्ति हैं।

४. किसी व्यक्ति की उक्ति को 'सुभाषित' बनने के लिए उसका लोक-समुदाय द्वारा स्वीकृत और व्यवहृत होना आवश्यक नहीं है। पर कोई भी उक्ति, लोक द्वारा स्वीकृत और व्यवहृत होकर ही लोकोक्ति की संज्ञा पाती है।

लोकोक्ति और रोजमर्रा :

'नित्य के व्यवहार में आनेवाली बोलचाल की भाषा का विशिष्ट प्रयोग', रोजमर्रा कहा जाता है। यह मुहावरे का एक प्रकार है। किन्तु, जहाँ मुहावरा का दूसरा प्रकार, लक्षणा या

---

१. डॉ० ओमप्रकाश गुप्त : मुहावरा-मीमांसा, पृ० ३६२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यंजना द्वारा सिद्ध वाक्यांश होता है, वहाँ रोजमर्रा अभिधा-सिद्ध वाक्यांश होता है। मौलाना हाली ने लिखा है—"....मुहावरा का इतलाक खासकर उन अफ्हाल (क्रियाओं) पर किया जाता है, जो किसी इस्म (संज्ञा) के साथ मिलकर अपने हकीकी मानों में नहीं, बल्कि मजाजी मानों में इस्तेमाल होते हैं। जैसे, उतारना—इसके हकीकी माने किसी जिस्म को ऊपर से नीचे लाने के हैं। जैसे घोड़े से सवार का उतारना....। हाँ, 'नक्शा उतारना, दिल से उतारना'.... यह सब मुहावरे कहलायेंगे। क्योंकि इन सब मिसालों में उतारने का इतलाक मजाजी मानों पर किया गया है।"[1] इस उद्धरण से यह संकेतित होता है कि हाली साहब के अनुसार रोजमर्रा मुहावरे का अंग है, किन्तु सभी मुहावरे रोजमर्रा नहीं हैं।

रोजमर्रा, बोलचाल की भाषा में व्यवहृत परम्परागत लोकसम्मत प्रयोग है। लोक-समुदाय की व्यावहारिक भाषा में कई ऐसे वाक्य होते हैं, जिनके पद-क्रम और पद-सान्निध्य निश्चित और विशिष्ट होते हैं। ऐसे ही वाक्य, रोजमर्रा हैं। उदा०

१. वे तो यहाँ आते-जाते रहते हैं।

२. मुझे उनसे कुछ लेना-देना नहीं है।

३. चार दिन की चाँदनी, फिर अँधेरी रात।

४. आपके क्या हाल-चाल हैं ?

इन उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त 'आते-जाते', 'लेना-देना', 'चार दिन की चाँदनी' और 'हाल-चाल' पदों के प्रयोग रोजमर्रा के अनुकूल हैं। अगर इन पदों का क्रम बदल दिया जाय या उन पदों का पर्यायवाची पदों से स्थानापन्न कर दिया जाय, तो यह परिवर्त्तित प्रयोग रोजमर्रा के प्रतिकूल होगा।

लोकोक्ति भी रोजमर्रा की तरह बोलचाल में प्रयुक्त होनेवाली परम्परागत और विशिष्ट अभिव्यक्ति-शैली है। लोग रोजमर्रा की तरह लोकोक्ति का भी उसके निश्चित रूप में प्रयोग करने की कोशिश करते हैं। किन्तु, अर्थ और रूप की दृष्टि से लोकोक्ति और रोजमर्रा में कई आधारभूत अन्तर हैं। जैसे :

१. लोकोक्ति, एक पूर्ण विचार पर आधारित एक वाक्य होती है। रोजमर्रा विशिष्ट अभिव्यक्ति का माध्यम होता है।

२. रोजमर्रा की तरह कुछ लोकोक्तियों में शाब्दिक अर्थ ही अभिप्रेत होता है। किन्तु, अधिकांश लोकोक्तियों में विशेषतः अन्योक्तिपरक लोकोक्तियों में, अभिप्रेत अर्थ व्यंग्य रहता है।

३. लोकोक्ति के कितने ही वाक्यों में रोजमर्रा का प्रयोग मिलता है। अर्थात्, लोकोक्ति के रूप-गठन में रोजमर्रा भी सहायक होता है। इस प्रकार, लोकोक्ति के अन्तर्गत रोजमर्रा आ जाता है, किन्तु रोजमर्रा के अन्तर्गत लोकोक्ति नहीं आती। समासतः, लोकोक्ति एक विशिष्ट शैली में अभिव्यक्त एक 'अर्थ' या 'विचार' भी है, किन्तु रोजमर्रा भाषा का एक परम्परागत और रूढ प्रयोग है।

---

१. हरिऔध : बोलचाल : पृ० १२६ पर उद्धृत हाली-कृत 'मुकद्दमा शेर व शायरी' का अंश।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकोक्ति और पहेली :

लोकोक्ति और पहेली प्राचीन काल से ही सभी देशों में बुद्धिमूलक लोक-साहित्य के रूप में, लोक-समुदाय के राजनीतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन के प्रमुख अंग के रूप में प्रतिष्ठित रही हैं। वैदिक साहित्य में पहेली 'ब्रह्मोदय' के रूप में और लोकोक्ति 'कुछ सूक्तों' के रूप में प्राप्त होती हैं। संसार के प्राचीनतम सुमेरियन शिलालेख में लोकोक्तियों के साथ पहेलियाँ भी अंकित हैं।

कई दृष्टियों से लोकोक्ति और पहेली में साम्य है। दोनों बुद्धिमूलक साहित्य हैं। दोनों में मुक्त शैली में किसी विचार या व्यापार का चित्रण किया जाता है। दोनों का उद्भव और विकास लोक-जीवन के मध्य होता है।

किन्तु, प्रयोग के उद्देश्य, विषयवस्तु और रूप-विधान की दृष्टि से लोकोक्ति और पहेली में आधारभूत भिन्नताएँ हैं। जैसे :

१. पहेली का प्रयोग मुख्यतः सहज ज्ञान की परीक्षा या बुद्धि-विलास के लिए किया जाता है।[१] किन्तु, लोकोक्ति का प्रयोग मुख्यतः लोकमान्य ज्ञान या विचार के सूचन के लिए किया जाता है।

२. पहेलियाँ अपने प्रयोक्ताओं या श्रोताओं की स्मरणशक्ति, कल्पनाशक्ति और विचारशक्ति को विकसित करती हैं। पहेली बूझने से एकाग्र होकर सोचने की आदत पड़ती है। लोकोक्तियाँ प्रत्यक्ष रूप से आचार-विचार और लोक-व्यवहार का ज्ञान कराती हैं। पहेलियों की तरह ये बुझाने के लिए पूछी नहीं जातीं, वरन् अनुकूल प्रसंग आने पर उद्धृत की जाती हैं।

३. पहेली में श्लिष्ट शब्द या अर्थ का प्रयोग, पहेली बूझनेवाले को भटकाने की दृष्टि से किया जाता है। किन्तु, लोकोक्ति में अलंकारों का प्रयोग तथ्य या अनुभूति को प्रभावशाली और संवेद्य बनाने के लिए होता है।

४. पहेली के उद्भव और विकास के मूल में मनुष्य की हास्य-भावना, प्रकृति में सादृश्य खोजने की सामर्थ्य,[२] बुद्धि-विलास आदि प्रवृत्तियों का पता चलता है। किन्तु, लोकोक्ति

---

१. "The educational character and purpose of riddles is plainly revealed in their very name. Whether we take the English 'riddle', the German Rät(h)sel, or the Greek ainigma, they all come from the corresponding verbs, English rede (old English raedan), German rät(h)en, and Greek, ained, all meaning to give advice."—C. F. Potter : Standard Dictionary of Folklore, Mythology & Legend, Vol. II., page 939, edited by Archer Tayler.

२. "....for riddles are essentially metaphors, and metaphors are the result of the primary mental processes of association, comparision, and the perception of likenesses and differences."
—Ibid, p. 938.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के उद्भव और विकास के मूल में मनुष्य को कुछेक सारगर्भित शब्दों में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अनुभूत तथ्य या स्थिति का बोध कराने की प्रवृत्ति का पता चलता है।

लोकोक्ति और लौकिक न्याय :

संस्कृत-साहित्य में वर्णित लौकिक न्याय, मुख्यतः परम्परागत दृष्टान्त-वाक्य हैं। इनका संग्रह विविध कालों में और विविध स्रोतों से हुआ है। इनमें उपमानों, युक्तियों, उपदेशात्मक वचनों, उदाहरणों और लोकोक्तिपरक सूक्तियों का समावेश हुआ है।

कई कोशकारों ने लौकिक न्याय को 'लोकोक्ति' का पर्यायवाची माना है। इतना अवश्य है कि विभिन्न भारतीय भाषाओं या बोलियों में प्रचलित बहुत-सी लोकोक्तियाँ, संस्कृत लौकिक न्यायों के ही रूपान्तर या विकसित रूप हैं। साथ ही, कुछ लोकोक्तियों के रूप-विन्यास या अभिव्यंजना-पद्धति पर भी लौकिक न्यायों की छाप दीख पड़ती है। किन्तु, सभी लौकिक न्यायों और लोकोक्तियों में समानता नहीं है। रूप और अर्थ-सामर्थ्य की दृष्टि से भी लोकोक्तियों और लौकिक न्यायों में कई मूलभूत अन्तर हैं। नीचे, लोकोक्ति और लौकिक न्याय के पारस्परिक अन्तर पर विचार किया गया है।

१. लौकिक न्याय कटे-छँटे खण्डवाक्य होते हैं। किन्तु, लोकोक्ति 'वाक्य' होती है। बहुत-से लौकिक न्याय तो एक या दो शब्दों से ही निर्मित हुए हैं। उदाहरणार्थ :

अपवाद-न्यायः, आभाषक-न्यायः, प्रदीप-न्यायः, पट-न्यायः, भैरव-न्यायः, अन्धगज-न्यायः, अन्धपंगु-न्याय, आम्रवण-न्याय, करकंकण-न्यायः, जलतुम्बिका-न्यायः, पिष्टपेषण-न्याय आदि।

२. सभी लौकिक न्याय उदाहरणार्थ प्रयुक्त किये जाते हैं। किन्तु, लोकोक्तियों का एक वर्ग ऐसा है, जो किसी तथ्य के सूचनार्थ प्रयुक्त किया जाता है। वर्ण-सम्बन्धी और नीति-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस वर्ग में आती हैं। इन लोकोक्तियों का वाच्यार्थ ही अभिप्रेत अर्थ होता है। उदाहरणार्थ :

क. जहाँ के पीये पानी, तहाँ के बोले बानी।
जहाँ का पानी पिया जाता है, वहाँ की ही भाषा बोलनी चाहिए।

ख. दरबे से सरबे, जे चहबे से करबे।
द्रव्य से ही सब कुछ होता है। इससे सभी अभीष्ट कार्य सिद्ध होते हैं।

ग. बोखार के जरि खाँसी, लड़ाई के जरि हाँसी।
बुखार की जड़ खाँसी है और लड़ाई की जड़ हँसी (गन्दा मजाक) है।

३. लोकोक्ति की तरह लौकिक न्याय भी अन्योक्तिपरक घटनाओं या कथाओं पर आधारित होते हैं। परन्तु, ऐसे लौकिक न्यायों को पूर्णतः लोकोक्ति नहीं कहा जा सकता है। वस्तुतः, ये लोकोक्तियाँ नहीं, उनके तात्त्विक अवशेष हैं।

०. १. ३. लोकोक्तियों का उद्भव और विकास :

क. उद्भव :

लोकोक्तियों के उद्भव का अध्ययन निम्नांकित शीर्षकों के अन्तर्गत किया गया है—(अ) उद्भव का आधार, (आ) उद्भव की प्रक्रिया, (इ) उद्भव के स्रोत और (ई) उद्भव की प्राचीनता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(अ) उद्भव का आधार :

प्रायः लोकोक्तियों का उद्भव अज्ञात रहता है। लोकोक्तियाँ, विशेष घटना या जीवन के प्रत्यक्ष निरीक्षण से प्राप्त अनुभूति पर आधारित स्वतः उच्छ्वसित वक्तव्य होती हैं। प्रारम्भ में सभी लोकोक्तियाँ व्यक्तिगत उक्तियों के रूप में ही प्रस्फुटित होती हैं। कालान्तर में ये उक्तियाँ अपनी सर्वजनीन विषय-वस्तु और स्वरूप के कारण लोक-सामान्य द्वारा स्वीकृत होकर लोकोक्तियों के पद पर आसीन होती हैं और समस्त लोक-समुदाय की सम्पत्ति बनती हैं। इससे यह स्पष्ट है कि कोई 'उक्ति' अपने रचयिता के कारण नहीं, वरन् अपनी विषय-वस्तु में निहित लोकचित्त को आन्दोलित करनेवाले सत्य या तथ्य और अपनी आकर्षक अभिव्यंजना के कारण लोकोक्ति बनती है। इन उपर्युक्त कारणों से यह स्पष्ट है कि लोकोक्तियों के उद्भव-सम्बन्धी विवरण अनुपयोगी होने के कारण कालान्तर में लुप्त होकर अज्ञात हो जाते हैं। इस तरह यह सिद्ध होता है कि अधिकांश लोकोक्तियों का उद्भव अज्ञात है और उनके उद्भव को निश्चित करना भी एक विवादास्पद और जटिल विषय है। केवल कुछ तथ्यों के सहारे लोकोक्तियों के उद्भव के आधार और प्रक्रिया-सम्बन्धी निश्चित धारणाएँ बनाई जा सकती हैं।

लोकोक्तियाँ अपने प्रारम्भिक रूप में व्यक्तिगत रचनाएँ होती हैं। किन्तु, इनके रचयिता अज्ञात रहते हैं। कोई कल्पना-सम्पन्न और अनुभवी व्यक्ति दैनन्दिन जीवन के विशेष व्यापारों या अपने अनुभूत ज्ञान से प्रेरित होकर प्रभावोत्पादक शैली में अपना विचार प्रकट करता है। यह विचार या वक्तव्य मूल रूप में या किंचित् परिवर्त्तन के साथ लोक-समुदाय द्वारा स्वीकृत और व्यवहृत होकर 'लोकोक्ति में बदल जाता है। इस तरह लोकोक्ति के उद्भव के लिए दो बातें आवश्यक हैं : १. उसका किसी के विचार-रूप में जन्म लेना, और २. उसका लोक द्वारा स्वीकृत होना।

(आ) उद्भव की प्रक्रिया :

सभी लोकोक्तियाँ, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से किसी-न-किसी अनुभव पर आधारित रहती हैं। ये अनुभव जीवन के विविध व्यापारों के प्रत्यक्ष दर्शन और निरीक्षण से गृहीत होते हैं। ये ही अनुभव या विचार लोकोक्तियों में सामान्यतः अन्योक्ति, उपमा, रूपक और उदाहरण या सामान्य वक्तव्य में से किसी एक के रूप में अभिव्यक्त होते हैं।

डॉ० कन्हैयालाल सहल ने लिखा है—'कोई कहावत किस प्रकार जन्म लेती होगी, इसके सम्बन्ध में हम कुछ कल्पना कर सकते हैं।[१] किन्तु, सभी लोकोक्तियों के पीछे किसी-न-किसी घटना या व्यापार का होना आवश्यक नहीं है। साथ ही, कुछ लोकोक्तियों के पीछे कोई घटना होगी भी, तो उसकी 'कल्पना' ही की जा सकती है, उसे निश्चित नहीं किया जा सकता।

वक्ता किसी विचार को अभीष्ट अभिव्यक्ति देने के लिए भी दैनन्दिन जीवन-व्यापारों से उपमान या उदाहरण चुनता है; जैसे घी के महत्त्व को दिखाने के लिए निम्नांकित लोकोक्तियों में कई प्रकार की शैलियाँ अपनाई गई हैं :

घीव के लड्डू टेढ़ो भला।
घी का लड्डू टेढ़ा भी हो, तो भी वह अच्छा है।

---

१. राजस्थानी कहावतें : एक अध्ययन, पृ० ३८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घीव देत घोड़ नरियाय ।
घी (ऐसी सुन्दर चीज) पिलाने से भी घोड़ा चिल्लाता है ।
घीव सँवारे काम बड़ी बहू का नाम ।
कामों को घी सँवारता है, किन्तु नाम होता है बड़ी बहू का ।
घीवो खाइब तऽ खेसाड़ी के दाल में ।
घी भी खाऊँगा, तो खेसाड़ी की दाल में ।

(इ) उद्भव के स्रोत :

जेम्स ए० केलसो ने लोकोक्तियों के उद्भव के तीन स्रोतों का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार हैं—क. घटना, ख. पहेली और ग. लोक-कथा (अन्योक्तिपरक कथा)।[1] किन्तु, केलसो ने एक महत्त्वपूर्ण स्रोत को छोड़ दिया है। वह स्रोत है लोकप्रिय साहित्यकारों या चिन्तकों की सूक्तियाँ। इस प्रकार, लोकोक्तियों के निम्नांकित उद्भव के चार प्रमुख स्रोत हुए—क. घटना, ख. पहेली, ग. लोक-कथा और घ. लोकप्रिय चिन्तकों की सूक्तियाँ। नीचे उपर्युक्त सभी स्रोतों से उद्भूत लोकोक्तियों का सोदाहरण विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है।

(क) घटना : दैनिक जीवन की विशेष घटनाएँ, चिन्तन का आधार या प्रेरणा बनती हैं। कभी-कभी सामान्य लगनेवाली घटना भी किसी पैनी दृष्टिवाले दर्शक के लिए विशेष घटना सिद्ध हो जाती है। लोकोक्तियों में सन्निविष्ट अधिकांश घटनाएँ सामान्य जीवन-व्यापारों से गृहीत होने पर भी आकर्षक होती हैं। लोकोक्तिगत घटनाओं को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—१. सामान्य और २. ऐतिहासिक।

(१) सामान्य : ये सामान्य घटनाएँ लोक-जीवन के विस्तृत और विविध पक्षों से गृहीत होती हैं। विशेषतः, लोक-समुदाय के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, नैतिक और व्यावहारिक जीवन और प्राकृतिक जगत् के विविध व्यापार लोकोक्तियों के आधार बनते हैं। यथा :

सामाजिक जीवन के व्यापार :

एक पूत के पूत ना कहीं, एक आँखि के आँखि ना कहीं ।
एक पुत्र को पुत्र नहीं कहना चाहिए और एक आँख को आँख नहीं कहना चाहिए।
काजर देहले के ना हऽ मटकवले के हऽ ।
काजल लगाने से ही नहीं होता, उसे लगाकर आँखें मटकाने की कला भी आनी चाहिए।
जइसन देस, ओइसन भेख ।
देश के अनुसार ही वेष-भूषा होनी चाहिए।
मँड़वा में कोई बात ना पूछे, कोहबर में दुलहा के चाची ।
(उससे) मण्डप में तो कोई बात भी नहीं करता है और कोहबर में वह अपने को दूल्हे की चाची कहती है।
सास ना ननद, घर अपने अनन्द ।
सास-ननद तो हैं नहीं, इसलिए बहू अकेले घर में आनन्द करती है।

---

१. दे० इ० आर० ए०, भाग १०, पृ० ४१३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आर्थिक जीवन के व्यापार (कृषि, उद्योग-धन्धा, श्रम आदि) :

उत्तम खेती जे हर गहा, मद्धिम खेती जे हर संग रहा ;
जे पूछे हर गइल कहाँ, तेकर घर दिन दुपहरे जरा ।
उत्तम खेती उसकी है, जो खुद हल चलाता है। मध्यम खेती उसकी है, जो हल चलने के समय वर्त्तमान रहता है। जो घर बैठे ही यह पूछता है कि मेरे हल कहाँ गये हैं, उसका घर दुपहर में ही जल जाता है (नष्ट हो जाता है)।

जब हरवाहे, धान बिदाहे, ना जानी ऊखि उपजे काहे ।
जौ, खूब जोते हुए खेत में बोने से और धान, खेत को बिदाहने से अधिक होता है। किन्तु ईख क्या करने से अधिक होती है, यह पता नहीं।

जेठ के दुपहरिया, भादो के अन्हरिया,
पूस के भिनसहरा अभागा काम करेले ।
जेठ के दोपहर में, भादों के अँधेरे में और पूस के भोर में अभागा व्यक्ति ही काम करता है।

बाँस के परिहथ, कुसे के नाधा; जोते के मरें, गाँव के आधा ।
उनके पास बाँस का जुआ है और कुश का नाध है, इसलिए आधा गाँव जोतकर वे मर रहे हैं (अर्थात् तबाह हो रहे हैं)।

धार्मिक विश्वास और जीवन के व्यापार :

जइसन करनी, ओइसन भरनी ।
जैसा कर्म होता है, वैसा भोग भोगना पड़ता है।

मरजी गोविन्द के राव करे भेली ।
गोविन्द (भगवान्) अपने इच्छानुसार 'राव' (गुड़ का रस) को 'भेली' (गुड़ का लड्डू) बना देता है। अर्थात्, सभी क्रिया, व्यापार और परिस्थितियाँ, भगवान् द्वारा परिचालित होती हैं।

ना खँड़लिच के गोड़े लागे के, ना ढेले फेंके के ।
खंजन को न तो प्रणाम ही करना चाहिए और न उसपर ढेला ही फेंकना चाहिए।

उपर्युक्त लोकोक्ति खंजन-सम्बन्धी एक लोकविश्वास पर आधारित है। यह यथानिर्दिष्ट प्रसंग में व्यवहृत होती है—विघ्नकारी लोगों का सम्मान और अपमान नहीं करने का आदर्श अपनाना।

नैतिक और व्यावहारिक जीवन :

आधा तजे पण्डित, सरबस तजे गँवार ।
पण्डित तो केवल आधा का त्याग करता है, किन्तु गँवार सर्वस्व का।

ढिल-मिल बेंट कुदारी के, हँस के बोलल नारी से;
हँस के माँगल दामा, ई तीनों काम नकामा ।
कुदाल की ढीली बेंट, नारी के साथ हँसकर बोलना, हँसकर किसी से पैसा माँगना—ये तीनों चीजें गलत हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नानी के धन, बैयमानी के धन, जजमानी के धन ना रहेला ।

नानी का धन, बेईमानी का धन और यजमानी का धन—ये पास नहीं रहते ।

नेकी के नेक राह, बदी के बद राह ।

भलाई का रास्ता भला होता है और बुराई का रास्ता बुरा ।

प्राकृतिक जगत् और उसके व्यापार :

अमवाँ झोर बहे पुरवाई, तब गेहूँ में गेरुई धाई ।

आम को झकझोरनेवाली पुरवा हवा जब चलती है, तब गेहूँ में 'गेरुई' (फसल का रोग) लगती है ।

जतना तपी, ओतने बरसी ।

सूर्य जितना तपेगा, वर्षा उतनी ही अधिक होगी ।

साठी पाके साठ दिना, जब बरखा होखे रात दिना ।

साठी साठ दिनों में तैयार हो जाती है, अगर लगातार वर्षा होती रहती है ।

हरहा हाथी, हाकिम चोर, बिगड़ला पर ना लागे ओर ।

बिगड़ैल हाथी और चोर हाकिम के क्रुद्ध होने पर उनकी गतिविधि का पता नहीं चलता ।

(२) **ऐतिहासिक :** विगत काल की घटनाएँ और उनसे सम्बद्ध लोक-धारणाएँ लोकोक्ति के जन्मदाता का विशेष रूप से ध्यान आकृष्ट करती हैं । इसका कारण यह है कि ऐसी घटनाओं का प्रभाव अधिक चमत्कारी और वैचित्र्यपूर्ण होता है ।

भोजपुरी भाषा की ऐतिहासिक लोकोक्तियों का विशद विवेचन अलग से यथास्थान किया गया है । यहाँ उदाहरणार्थ कुछ ऐतिहासिक लोकोक्तियाँ दी जा रही हैं :

गंगा के नेहान तिरोजपुर के पेठिया ।

एक ही साथ, गंगा-स्नान और तिरोजपुर की हाट में खरीद-बिक्री—ये दोनों काम हो जायेंगे ।

प्र० एक ही परिश्रम से दो उद्देश्यों की पूर्त्ति करना ।

यह लोकोक्ति शाहाबाद जिले के तिरोजपुर और उसके पार्श्ववर्त्ती स्थानों की ऐतिहासिक और भौगोलिक स्थिति पर प्रकाश डालती है । तिरोजपुर में पहले बहुत बड़ी हाट लगती थी और इसके पास ही गंगा नदी बहती थी । जातकों में तिरोजपुर के समीपस्थ कारीसाथ के समीपवर्त्ती मसाढ़ गाँव का 'महासर' नाम से उल्लेख हुआ है । साथ ही, यह भी उल्लेख मिलता है कि उस समय महासर और पटना के बीच होकर गंगा बहती थी ।[१] आज तिरोजपुर में न कोई हाट लगती है और न उसके किनारे गंगा बहती है । किन्तु, उक्त लोकोक्ति से तिरोजपुर, कारीसाथ और मसाढ़ की पूर्वकालीन भौगोलिक स्थिति और व्यापारिक महत्त्व का पता चलता है ।

---

१. "Masar has been identified with the Mo-ho-so-lo of the Chinese pilgrim Hiuen Tsiang and from his account, it appears that Masar must have been close to the river Ganga which is now flowing at a distance of about 10 miles north of the village."
—Bihar District Gazetteers, Shahabad, p. 852, Patna, 1966.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नदी ताप्ती, खैरा बन, छतरी राजा गेहुँए अन्न;
नदी तरैना, परसा बन, कुरमी राजा, मेंडुवे अन्न ।

ताप्ती नदी, खैरा वन, क्षत्रिय राजा और गेहूँ (अन्न) अच्छे हैं। तरैना नदी, परसा वन, कुरमी राजा और मँडुआ (अन्न) भी अच्छे हैं।

यह लोकोक्ति गोरखपुर-जनपद के ऐतिहासिक और भौगोलिक स्थिति पर प्रकाश डालती है। गोरखपुर-जनपद में क्षत्रिय राजाओं के साथ कुर्मी राजाओं का भी प्राचीन काल में प्रभुत्व रहा है। उक्त लोकोक्ति तुलनात्मक पद्धति से गोरखपुर-जनपद की उपर्युक्त नदियों, वनों और राजाओं के महत्त्व पर प्रकाश डालती हैं।

(ख) पहेली : जेम्स जे० केलसो ने लिखा है कि 'बहुत-सी लोकोक्तियाँ पहेलियों के उत्तरस्वरूप या उनके विकसित रूप हैं। उन्होंने इस मत को सोदाहरण स्थापित करने की कोशिश की है।'[१] किन्तु, विशेषतः भारतीय लोकोक्तियों और पहेलियों को दृष्टि में रखते हुए, केलसो का उपर्युक्त मत सन्दिग्ध सिद्ध होता है। पहेली और लोकोक्तियाँ—दोनों अर्थ, रूप और प्रयोग के उद्देश्य की दृष्टि से एक दूसरे से भिन्न सिद्ध होती हैं। ऐसे, लोकोक्ति में भी पहेली की तरह कथोपकथन या प्रश्नोत्तरपरक वाक्य रहते हैं। पर, ऐसे वाक्य तो स्वाभाविक कथोपकथन होते हैं। ये पहेली की तरह जान-बूझकर पूछे हुए या बूझे हुए वाक्य नहीं होते। इसी प्रकार, लोकोक्ति के किसी वक्तव्य को, पहेली की तरह किसी समस्या के समाधानार्थ पूछा जानेवाला प्रश्न नहीं माना जा सकता। लोकोक्ति और पहेली में एकरूपता सिद्ध नहीं की जा सकती; क्योंकि हर विचार, चाहे वह किसी शैली में अभिव्यक्त हुआ हो, वह प्रकारान्तर से किसी-न-किसी समस्या का समाधान होता है। इसके अतिरिक्त, प्राचीन भारतीय भाषाओं में तो आरम्भ से ही लोकोक्ति और पहेली दो स्वतन्त्र शैलियों के रूप में विकसित हुई हैं। अतः, भारतीय भाषाओं की लोकोक्तियों को दृष्टि में रखते हुए केलसो का उपर्युक्त मत सहज ही स्वीकार नहीं किया जा सकता।

कई भोजपुरी लोकोक्तियाँ भी पहेली के उत्तर या पहेली-सी लगती हैं। किन्तु, मूलतः ये लोकोक्तियाँ हैं, न कि पहेलियाँ। ऐसी लोकोक्तियों के उदाहरण निम्नांकित हैं :

अकरब मुये, ना छुतिहर फूटे ।
आलसी मरता नहीं है और अछूत बरतन फूटते नहीं हैं।
खरबूजा चाहे धूप, आम चाहे मेह;
नारी चाहे जोर, बालक चाहे नेह ।
खरबूजा धूप चाहता है, आम पानी चाहता है, स्त्री शक्ति चाहती है और बालक स्नेह चाहते हैं।
आगे चले तऽ ढेलन मारे, पीछे चले तऽ धूरि उड़ावे ।
(बदमाश) आगे चलते हैं, तो ढेलों से प्रहार करते हैं और पीछे चलते हैं, तो धूल उड़ाते हैं।
बाप जभवे ना कइले, पूत पिछुआरे ठाढ़ भइले ।
पिता का जन्म हुआ भी नहीं, किन्तु पुत्र पीछे खड़े हो गये।
प्र० असमय ही फल-प्राप्ति की इच्छा करना।

---

१. दे० इ० आर० ए०, भाग १०, पृ० ४१३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपर्युक्त लोकोक्तियों में क्रमशः पहली लोकोक्ति 'क्या मरता नहीं है और क्या फूटता नहीं है, दूसरी लोकोक्ति कौन-कौन-सी चीजें धूप, मेह, जोर और नेह चाहती हैं'—इन प्रश्नों के (अर्थात् पहेलियों के) उत्तर-सी लगती हैं। इसी प्रकार, तीसरी लोकोक्ति में कर्त्ता-पद के लोप के कारण और चौथी लोकोक्ति में 'विभावना अलंकार' के सहारे स्थिति को वैचित्र्यपूर्ण ढंग से रखने के कारण उक्त लोकोक्तियों के पहेली होने की शंका होती है। किन्तु, ये सभी लोकोक्तियाँ, बोलचाल की विशिष्ट कथन-शैली में अभिव्यक्त वक्तव्य हैं, न कि पहेलियों के अवशेष।

(ग) लोककथा : लोक-कथाएँ तीन तरह से लोकोक्तियों के उद्भव का आधार बनती हैं—१. चरम वाक्य, २. प्राप्त उपदेश और ३. कथा का संक्षिप्त रूप। सामान्यतः इन तीन रूपों में लोक-कथाओं का सार लोकोक्तियों के रूप में संचित हो जाता है। यथा :

तू का हँसऽ कोंहारे के पूत, कवनो ओर लटकिहें ऊँट।

हे कुम्हार के पुत्र ! तुम हँसते क्यों हो—यह ऊँट किसी ओर भी झुक सकता है।

कथा : एक कुम्हार और कुँजड़ा, एक ही ऊँट पर अपने-अपने सामान लादकर हाट में खरीद-बिक्री के लिए जाते थे। एक दिन ऊँट रास्ते में अपनी पीठ पर लदी कुँजड़े को गठरी से सब्जियाँ निकालकर खाने लगा। कुँजड़े को हानि देखकर कुम्हार ने हँस दिया। किन्तु, ऊँट ने हाट पहुँचने पर नीचे बैठने के समय वही करवट ली, जिधर कुम्हार के मिट्टी के बरतन थे। फलस्वरूप, सभी बरतन टूट-फूट गये। इसपर कुँजड़े ने उपर्युक्त लोकोक्ति दुहराई।

लेना एक न देना दू।

एक लेने और दो देने का काम खराब होता है।

प्र० किसी के साथ विशेषतः लेन-देन का सम्बन्ध न रखना।

कथा : एक मोर और केकड़े में दोस्ती थी। नदी के किनारे दोनों मित्र प्रतिदिन मिलते-जुलते थे। एक दिन एक बहेलिये ने मोर को पकड़ लिया। मोर ने बहेलिये से अपने मित्र केकड़े से अन्तिम भेंट करने की आज्ञा माँगी। बहेलिया तैयार हो गया। अपने मित्र को देखकर केकड़े को तरस आ गया। उसने बहेलिए से कहा कि वह मोर के बदले कोई बहुमूल्य चीज ले ले और मोर को छोड़ दे। बहेलिया इसपर तैयार हो गया। केकड़े ने पानी में घुसकर एक कीमती पत्थर निकाला और उसे बहेलिये को दे दिया। इस प्रकार मोर को मुक्ति मिली। किन्तु, बहेलिया लोभी था। वह फिर केकड़े के पास गया और एक और कीमती पत्थर की माँग की। उसने अपनी इस माँग के न पूरा होने पर फिर मोर को पकड़ने की धमकी दी। इसपर केकड़ा राजी हो गया। उसने पहले पत्थर की तरह दूसरे पत्थर की खोज करने के लिए बहेलिये से पहले पत्थर को माँगा। किन्तु केकड़ा चालाक था, उसने तबतक मोर को दूर जंगल में पहुँचने की सलाह दे दी थी। इसलिए वह पानी में घुसकर, पत्थर तो देने की बात अलग रही, पहले पत्थर को भी लौटाने से इनकार करने लगा और बहेलिये को उपर्युक्त लोकोक्ति के रूप में उत्तर दिया।

(घ) लोकप्रिय चिन्तकों की सूक्तियाँ : संसार की सभी भाषाओं में कुछ ऐसी लोकोक्तियाँ मिलती हैं, जो मूलतः लोकप्रिय चिन्तकों की सूक्तियाँ होती हैं। ये सूक्तियाँ अपने सार्वभौम सत्य और विदग्ध शैली के कारण लोक-समुदाय द्वारा कण्ठाग्र कर ली जाती हैं। इन्हें सामान्य जनता प्रसंगानुसार लोकोक्तियों की ही तरह अपनी बोलचाल में उद्धृत करती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी जनता भी बहुत-से कवियों की सूक्तियों को लोकोक्ति की तरह प्रयुक्त करती है। यथा :

रहना नहीं देस बिराना है।—कबीर

जात-पाँत पूछे ना कोई, हरि के भजे सो हरि के होई।—कबीर

दैब-दैब आलसी पुकारा।—तुलसीदास

पर उपदेश कुशल बहुतेरे।—तुलसीदास

(ई) लोकोक्तियों के उद्भव की प्राचीनता :

सभ्यता के शैशव काल में लोकोक्ति का पता मिलता है। संसार की प्राचीनतम भाषाओं में लोकोक्तियों के उदाहरण मिलते हैं। ऋग्वेद और अन्य वैदिक साहित्य की कई सूक्तियाँ लोकोक्तिपरक हैं। उदा०

न दुरुक्ताय स्पृहयेत्।—ऋग्वेद, १।४१।९।

अपशब्द का अवसर नहीं जाने देना चाहिए।

नावा जिवं वाजिना हासयन्ति। न गर्दभं पुरो अश्वान्नयन्ति।—३।५३।२३।

धीमे चलनेवाले घोड़े को तेज चलनेवाले घोड़े की समता में नहीं लाना चाहिए। लोग गदहे को घोड़े के आगे नहीं ले जाते।

द्वितीयवान् हि वीर्यवान्।—शतपथब्राह्मण, ३।७।३।८।

साथीवाला ही बली है।

बेबिलोनिया के एक प्राचीनतम अभिलेख पर सुमेरियन भाषा में लिखित कई लोकोक्तियाँ पाई गई हैं। डॉ० क्रेमर के अनुसार इन लोकोक्तियों का काल लगभग ई० पू० ३६०० वर्ष और बाइबिल (ओल्ड टेस्टामेण्ट) की कहावतों में १००० वर्ष पूर्व है।[1] विद्वानों का अनुमान है कि ओल्ड टेस्टामेण्ट में प्राप्त लोकोक्तियाँ उक्त सुमेरियन लोकोक्तियों से बहुत कुछ साम्य रखती हैं। मिस्र के ई० पू० २५वीं शताब्दी के इमहोटेप और टाहाटेप के उपदेशों में भी लोकोक्तियों का प्रयोग मिलता है। ग्रीस के सोलोन और देओग मीज आदि प्राचीनतम विचारकों के पूर्व भी लोकोक्तियों के प्रयोग होने का पता चलता है। इस प्रकार, ये लोकोक्तियाँ एक प्राचीनतम अभिव्यक्ति-शैली सिद्ध होती हैं।

ख, विकास :

लोकोक्तियों का निर्माण और व्यवहार विशाल लोक-समुदाय के बीच हमेश होता रहता है। ये हजारों बार कही-सुनी जाती हैं। किन्तु, ये एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी, एक समुदाय से दूसरे समुदाय और एक भाषा से दूसरी भाषा की सम्पत्ति बनकर अपने रूप और अर्थ में परिवर्त्तन भी कर लेती हैं। यह परिवर्त्तन ही 'लोकोक्तियों का विकास' है। रूप और अर्थ के आधार पर यह विकास दो प्रकार का होता है—(क) रूप-विकास और (ख) अर्थ-विकास।

(क) रूप-विकास : लोकोक्तियों के रूप-विकास की प्रमुख दिशाएँ दो हैं—(अ) पाठान्तर या श्रुत्यन्तर और (आ) रूपान्तर।

(अ) पाठान्तर या श्रुत्यन्तर : लोकोक्तियों के श्रुत्यन्तरों में सामान्यतः तीन प्रकार के भेद दीख पड़ते हैं—१. पद-भेद, २. पद-क्रमभेद और ३. रूप-विस्तार-भेद।

---

१. दे० इ० आर० ए०, भाग १०, पृ० ४१३-४१४।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१. पद-भेद : एक लोकोक्ति के विभिन्न श्रुत्यन्तरों में दो प्रकार का पद-भेद होता है—(अ) एक पद का भेद और (आ) कई पदों का भेद।

(अ) एक पद का भेद :

आगे खेती आगे-आगे, पीछे के खेती भागे-जोगे।

समय पर की हुई खेती उपज की दृष्टि से भी अच्छी होती है। पीछे पड़ी हुई खेती भाग्य या संयोग से ही उपजती है।

श्रुत्यन्तर : (क) आगे खेती आगे-आगे, पीछे के खेती भागे जोगे।
(ख) आगे खेती आगे-आगे, पीछे के खेती भागे धोखे।

अरबी न फारसी, मियाँजी बनारसी।

न तो वे अरबी जानते हैं और न फारसी ही, फिर भी वे अपने को 'बनारसी' बताते हैं!

श्रुत्यन्तर : आरसी न फारसी भैयाजी बनारसी।

उपवास भला कि मेहरी के जूठ भला।

उपवास अच्छा है कि पत्नी का जूठा खाना अच्छा है?

श्रुत्यन्तर : उपवास भला कि पतोह के जूठ भला।

(आ) कई पदों का भेद :

आपन बैला मोहि दे, तें जो अगवारि कर।

अपना बैल मुझे दे दो और तुम जाकर 'अगवारि'[१] (मजदूरी के बदले हल लेना) करो।

श्रुत्यन्तर : आपन बैला हमरा के दे, तोहरा बाप के अगवार सहेला।

आँख के देखल भोर परल, मुँह पुरधान भइल।

आँख का देखा हुआ भुला दिया गया, अब तो मुँह (व्यंग्यार्थ : झूठ बोलना) ही प्रधान है।

श्रुत्यन्तर : गुनल गथल भोर परल, मुँह पुराधान भइल।

२. पद-क्रम-भेद :

चमारे के बेटी नाँव रजरनियाँ।

चमार की बेटी है, किन्तु नाम है राजरानी!

पदक्रम-भेद : बेटी चमार के नाँव रजरनियाँ।

---

१. जब हलवाहा अपने तीन दिनों के परिश्रम के बदले किसान से अनाज या रुपये-पैसे के बदले एक हल-बैल की जोड़ी एक दिन के लिए लेता है, तब उसे 'अगवरिया' या 'अँगवरिया' कहते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जे रोगिया के भावे, उहे बैदा फुरमावे ।

रोगी को जो (भोजन) अच्छा लगता है, उसे ही वैद्य भी फरमाते हैं ।

पदक्रम-भेद : उहे बैदा बतलावे, जे रोगिया के भावे ।

३. रूप-विस्तार-भेद :

लोकोक्ति के रूप का विस्तार भी होता है । किसी लोकोक्ति का विस्तृत अंश, मूल लोकोक्ति के रूप और अर्थ के वजन पर ही बना होता है । उदा०

आगे नाथ ना पाछे पगहा ।

आगे न तो नाथ है और न पीछे पगहा (अर्थात्, ये स्वच्छन्द हैं) ।

विस्तृत अंश : (क) खाय-मोटाय के भइले गदहा ।

(ख) सबसे भला कोंहरा के गदहा ।

आपन बैल कोल्हुवाड़ी नाधब्रि ।

मैं अपना बैल कोल्हू (ईख पेरने का यन्त्र) खींचने में लगाऊँगा ।

विस्तृत अंश : लोग के बाप के का ?

गरजे सो बरसे नहीं ।

जो गरजता है, वह बरसता नहीं है ।

विस्तृत अंश : बरसे घोर अन्हार ।

जहाँ जेईं, तहाँ जीमा ।

जहाँ भोजन मिलता है, वहाँ जिम्मेवारी भी मिलती है ।

विस्तृत अंश : जहाँ रोग वहाँ दावा ।

तीन में कि तेरह में ।

तीन में हैं या तेरह में ।

विस्तृत अंश : (क) सुतरी में कि गीरह में ।

(ख) तीन में ना तेरह में सुतरी के गीरह में ।

(आ) रूपान्तर : विभिन्न भाषाओं की लोकोक्तियों में आकृतिमूलक और सिद्धान्तमूलक समानता के अनेक उदाहरण मिलते हैं । इन साम्यमूलक लोकोक्तियों में किंचित् शब्द-भेद रहता है, परन्तु इनके अभिप्रेत अर्थ या व्यंग्यार्थ में समता होती है । इससे यह आभासित होता है कि एक भाषा की लोकोक्तियाँ, दूसरी भाषा में या कई भाषाओं में कायाकल्प करते हुए रूपान्तरित हो जाती हैं । उदाहरण के लिए, कुछ भोजपुरी लोकोक्तियों के विभिन्न भाषाओं में या विभिन्न भाषाओं की लोकोक्तियों के भोजपुरी भाषा में प्राप्त रूपान्तरों को यहाँ दिया जा रहा है :

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी लोकोक्ति	संस्कृत लोकोक्ति
१. आपन हाथ जगन्नाथ । अपना हाथ (स्वकर्म) जगन्नाथ के समान है ।	१. अयं मे हस्तो भगवान् । —ऋग्वेद, १०।६०।१२ ये मेरे हाथ ही भगवान् हैं ।
२. नौ नगद ना तेरह उधार । तेरह उधार से नौ नगद अच्छा है ।	२. (क) सहस्रादर्धकाकिणी श्रेयसी । —४।५८ उधार के हजार से नगद की आधी कौड़ी भली । (ख) श्वो मयूरादद्य कपोतो वरः । —चाणक्यसूत्र, ५।५९ कल के मोर से आज का कपोत ही अच्छा है । (ग) वरं सांशयिकान्निष्कान् असांशयिकः कार्षापण इति लोकायतिकाः । —वात्स्यायनकामसूत्र संशय में डालनेवाले निष्क से संशय-रहित कार्षापण ही अच्छा है ।
३. बिनु घरनी घर भूत के डेरा । बिना गृहस्वामिनी के घर भूत के निवास-स्थान-सा है ।	३. जाये दस्तम् । —ऋग्वेद, ३।५।३।४ पत्नी ही घर है ।
४. हाथ कंगन के आरसी का ।	४. (क) न हि करकङ्कणदर्शनायादर्शापेक्षान्यायः । (ख) हत्थकंकणे किं दप्पणोणपेक्खी....। —कर्पूरमंजरी, १।१८
५. बाँझ का जाने परसोनि के पीरा । बाँझ स्त्री प्रसूता की पीडा क्या जाने ?	५. नहि वन्ध्या विजानाति गुर्वीं प्रसववेदनाम् । —सुभाषित
६. उपास भला कि मेहरी के जूठ भला । उपवास अच्छा कि पत्नी का जूठन अच्छा ।	६. उपवासाद्वरं भैक्ष्यमिति न्यायः । उपवास से भिक्षा ही श्रेष्ठ है ।

भोजपुरी लोकोक्ति	फारसी लोकोक्ति
१. दूर के ढोल सोहावन । दूर के ढोल सुहावने होते हैं ।	१. आवाजे दुहुल अज् दूर खुश मे नमायद ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२. सियरा के मन बसे ककरी के खेत में ।
सियार का मन हमेशा ककड़ी के खेत की ओर जाता है ।

३. एक दिन पहुना, दोसर दिन ठेहुना, तेसर दिन केहुना ।
पहले दिन अतिथि, अतिथि की तरह रहता है, दूसरे दिन उसे 'ठेहुना' (पैर के नीचे का भाग) से और तीसरे दिन कोहनी से मारकर घर से जाने का संकेत दिया जाता है ।

२. तिश्न मारा बुलबद अन्दर खाक,
हमा आलम बचश्म चश्मये आब ।
बिल्ली को स्वप्न में भी गोश्त दिखता है ।

३. मेहमान अजीजस्त गर तासिह रोज ।
तीन दिन का मेहमान, चौथे दिन का हैवान ।

भोजपुरी लोकोक्ति

१. लोहा से लोहा कटेला ।
लोहो से हो लोहा कटता है ।

२. चाम के टाटी कुकुर रखवार ।
चमड़े की टट्टी और कुत्ता रखवाला !

३. मँगनी के बयल के दाँत ना देखल जाला ।
मँगनी के बैल का दाँत नहीं देखना चाहिए ।

मलयालम लोकोक्ति

१. कललने पिटिक्कान, कललन वन्ने वेगम् ।
चोर को पकड़ने के लिए चोर की जरूरत होती है ।

२. पुलि वकयिल पशुविने एलप्पिक्कुमपोले ।
गाय की रक्षा के लिए बाघ को रखना ।

३. दानम् किट्टिय पशु विण्डे पल्ल पिटिच्चु नोक्करुतु ।
दी हुई गाय के दाँत मत देखो ।

भोजपुरी लोकोक्ति

१. अन्हरा में काना राजा ।
अन्धों में काना राजा होता है ।

२. अधजल गगरी छलकत जाय ।
आधी भरी गगरी छलकती जाती है ।

३. अपनी करनी, पार उतरनी ।

४. अपना दुवरे कुकुरो परिचार होला ।
अपने द्वार पर कुत्ते भी बलवान् होते हैं ।

तेलुगु लोकोक्ति

१. येहु लेनि ऊल्लो आमुदमु चेहु गोप्प ।

२. एमी लेनि इल्लर एगिरे गिरि पडु पुदि ।

३. मनकु अक्करकु वस्तुन्दि ।

४. स्थान बल मुगालि बल बल मुगादवा ।

उपर्युक्त तेलुगु लोकोक्तियों के अर्थ भोजपुरी लोकोक्तियों के अर्थ के समान ही हैं ।

(ख) अर्थ-विकास : सभी लोकोक्तियाँ किसी-न-किसी विशेष व्यापार या विचार पर आधारित होती हैं । किन्तु, इनमें से अधिकांश अपने आलंकारिक स्वरूप और व्यंजकता के कारण सम्बद्ध सामान्य व्यापार या तथ्य पर भी लागू हो जाती हैं । ऐसी लोकोक्तियों में अभिधेयार्थ के स्थान पर व्यंग्यार्थ की प्रधानता होती है । शुरू-शुरू में प्रायः लोकोक्तियों का अभिधेयार्थ ही अभिप्रेत अर्थ होता है । पर, कालान्तर में इनके उपमा, अन्योक्ति और उदाहरणपरक संश्लिष्ट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वरूप के कारण जब इनके अभिधेयार्थ गौण या लुप्त हो जाते हैं, तब इनके व्यंग्यार्थ ही अभिप्रेत अर्थ हो जाते हैं। इस प्रकार, लोकोक्तियाँ अपने विशिष्ट स्वरूप और संचरणशील प्रकृति के कारण, अपने अर्थ में विकास लाती हैं। भाषा के अर्थ-विकास की तरह लोकोक्तियों का अर्थ-विकास भी तीन दिशाओं में होता है—(अ) अर्थ-विस्तार, (आ) अर्थ-संकोच और (इ) अर्थादेश।

(अ) **अर्थ-विस्तार :** निम्नांकित लोकोक्तियाँ अपने अभिधेयार्थ या मूल प्रकरण के साथ, व्यंग्यार्थ या सम्बद्ध प्रकरणों में भी प्रयुक्त होती हैं :

साँप के काटल रस्सी देखि के डेराला।

साँप से डँसा हुआ रस्सी देखकर भी डर जाता है।

व्यंग्यार्थ : किसी चीज से कष्ट पाने के बाद भविष्य में उससे अतिरिक्त सावधानी बरतना।

ओढ़े के कुछ ना दरी बिछौना।

ओढ़ने के लिए कुछ नहीं है और बिछावन के लिए दरी ही चाहिए।

व्यंग्यार्थ : अपनी प्राथमिक आवश्यकताओं को कम महत्त्व देना।

उसरे के देवी, कोदो के अच्छत।

ऊसर (देश) की देवी को कोदो का अक्षत दिया जाता है।

व्यंग्यार्थ : योग्यता के आधार पर किसी को सम्मान देना।

कसनो अहिरा हो सेयाना, लोरिक छाड़ि ना गावहि आना।

अहीर कितना भी बुजुर्ग क्यों न हो जाय, वह 'लोरिकायन' छोड़कर और कुछ नहीं गाता।

व्यंग्यार्थ : स्थिति के परिवर्त्तन के बाद भी स्वभाव या व्यवहार का न बदलना।

गोहुमा सभ के घरे होला; रोटिया बिरले घरे बनेला।

गेहूँ सभी के यहाँ होता है, किन्तु रोटी किसी-किसी के यहाँ ही पकती है।

व्यंग्यार्थ : प्रयोक्ता के कौशल पर किसी वस्तु की उपादेयता का निर्भर रहना।

(आ) **अर्थ-संकोच :** लोकोक्तियों के अर्थ का संकोच होना लोकोक्तियों की प्रकृति और प्रवृत्ति के प्रतिकूल पड़ता है। प्रायः लोकोक्तियाँ एक से अधिक अर्थ को संकेतित करती हैं या एक से अधिक प्रकरणों में प्रयुक्त होती हैं। फिर भी, संसार की अन्य वस्तुओं की तरह लोकोक्तियों का भी क्षय होता है। विशेषतः, सामयिक घटना पर उत्थित लोकोक्तियाँ कालान्तर में लुप्त होने लगती हैं! उदाहरणार्थ, निम्नांकित भोजपुरी लोकोक्तियाँ दी जा रही हैं :

ई तऽ जरमनवाँ के लड़ाई हो गइल।

यह तो जर्मन की लड़ाई(-सा) हो गई।

इडिल मिडिल के छोड़ऽ आस, खुरपी लेके गढ़ऽ घास।

मिडिल पास करने की आशा छोड़ो, खुरपी लेकर घास गढ़ो।

जबले रसरी खेत पर तबले दिवान दिवान।

जबतक जरीब खेत में रहती है, तबतक दीवान की इज्जत दीवान की तरह होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपर्युक्त प्रथम लोकोक्ति का उपमान द्वितीय महायुद्ध से सम्बद्ध है और अब सामान्य जनता इसे भूलती जा रही है। दूसरी लोकोक्ति में प्रयुक्त 'मिडिल' अँगरेजी-शासन में स्थापित एक छोटी कक्षा थी। उस समय कई छोटी-मोटी सरकारी नौकरियाँ भी मिडिल पास करने पर मिल जाती थी। किन्तु, अब तो शिक्षा का बहुत प्रसार हो गया है, इसलिए मिडिल पास करने का कोई महत्त्व नहीं रहा। तीसरी लोकोक्ति में उल्लिखित 'दीवान' सामन्त, राजा या जमीन्दारों के शासन-काल का संकेतक है। अब तो राजा या जमीन्दार नहीं रहे। इसलिए, कालान्तर में उपर्युक्त लोकोक्तियों के लुप्त होने की सम्भावना है।

यह स्पष्ट है कि किसी लोकोक्ति का प्रयोग कम होने लगता है, तो उसके व्यंग्यार्थ या प्रसंगों का भी संकोच होने लगता है।

(इ) अर्थादेश : अधिकांश अन्योक्तिपरक या अप्रस्तुत कथनपरक लोकोक्तियों का व्यंग्यार्थ ही मुख्यार्थ होता है। कालान्तर में इन लोकोक्तियों का वाच्यार्थ अप्रस्तुत कथन होकर, गौण या विस्मृत हो जाता है। उदाहरणार्थ :

तीन टिकट महा विकट।

तीन व्यक्तियों का मिलन महाविकट (अशुभ) होता है।

इस लोकोक्ति में प्रयुक्त 'टिकट' 'त्रिकटु' का विकसित रूप है। 'आयुर्वेद' में पीपर, अदरख (सोंठ) और मरीच—इन तीन कड़वे औषधों को 'त्रिकटु' कहा गया है। किन्तु, अब 'त्रिकटु' कहीं 'तिकठ' (तिक्त) और कहीं 'टिकट' (रेलवे का टिकट) के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा है। इस लोकोक्ति में तो वह अपशकुन का द्योतक है।

आन्हर गोरइया, भरसाईं में खोंत।

अन्धी गौरैया, चूल्हे में घोंसला बनाती है।

व्यंग्यार्थ : विवेकहीन व्यक्ति अपना ही विनाश कर लेता है।

ऊँट रे ऊँट, तोर फवन खाल सीधा बा।

हे ऊँट, तुम्हारा कौन-सा अंग सीधा है।

व्यंग्यार्थ : टेढ़े व्यक्ति के सभी व्यवहार टेढ़े होते हैं।

चलनी दूसे सूप के जेकरा सहस्सर छेद।

चलनी, सूप की निन्दा करती है, जिसके खुद अनेक छेद हैं।

व्यंग्यार्थ : स्वयं गलती करनेवाला व्यक्ति—दूसरों की गलती ढूँढ़ता है। छिद्रान्वेषियों पर व्यंग्य करने के प्रसंग में इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है।

गाय मार के जूता दान।

गाय मारकर जूता दान करना।

व्यंग्यार्थ : भारी अपराध करके मामूली प्रायश्चित्त करना।

चिउँटा मिसले पानी।

चींटे को मसलने पर पानी मिलता है।

व्यंग्यार्थ : मामूली व्यक्ति को सताने पर कुछ लाभ नहीं होता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकोक्ति का महत्त्व :

लोकोक्ति लोक-समुदाय की एक बहुमूल्य सम्पत्ति है। समुदाय की बौद्धिक और रागात्मक विरासत इसमें संचित रहती है। इसलिए, लोकोक्तियों का अध्ययन कितने ही दृष्टिकोणों से सर्वथा उपादेय है।

लोकोक्तियाँ किसी राष्ट्र या प्रजाति के जीवन का अविच्छिन्न अंग हैं। ये लोक-स्मृति में प्लावित होती हुई अतीत की परम्परा को वर्त्तमान में गतिशील रखती हैं और उसे भविष्य की देहरी तक पहुँचाती हैं। यही कारण है कि इनके अध्ययन से मानव-ज्ञान को अज्ञात उपलब्धियों और मानव-जीवन के भूले-बिसरे पक्षों के यथार्थ स्वरूप को समझने में बहुत सहायता मिलती है। संक्षेप में, लोकोक्तियाँ, मानव-समाज की मनीषा, मनःस्थिति और भाषा के विविध स्तरों के अध्ययनार्थ एक कामदुघा स्रोत सिद्ध होती हैं।

लोकोक्तियों की विषय-वस्तु विस्तृत होती है। इसकी विषय-वस्तु के अन्तर्गत दृश्य और अदृश्य—दोनों लोक आते हैं। मनुष्य, ईश्वर, अदृश्य शक्तियाँ, जीव-जन्तु, इतिहास और प्राकृतिक भूगोल—इन सभी विषयों पर लोकोक्तियों में लोक-स्वीकृत विचार, धारणा, निरीक्षण, अनुमान और निष्कर्ष संचित रहते हैं। इस साहित्य के विस्तृत क्षेत्र पर विचार करते हुए नरोत्तम स्वामी ने लिखा है :

"मानव-जीवन से सम्बन्ध रखनेवाला कौन-सा ऐसा विभाग है, जो उनके (लोकोक्ति) दायरे के भीतर न आया ? वे जीवन के सभी प्रकार के विविध रंगों को लिये हुए मिलती हैं। उनमें कहीं गम्भीर अनुभवजन्य चातुर्य भरा है, तो कहीं प्रतिदिन के गृहस्थ-जीवन का पथ-प्रदर्शक व्यावहारिक ज्ञान छलछला रहा है। कहीं सुकुमार भावों की सुमधुर योजना दृष्टिगत होती है, कहीं कोमल कल्पनाओं का निराला माधुर्य अपनी छटा दिखा रहा है। कहीं लक्ष्य न चूकनेवाले चुटीले व्यंग्य के बाण सीधे हृदय में पैठ जाते हैं, तो कहीं विनोदमय मधुर हास्य के छींटे रोम-रोम खिला देते हैं।"[१]

लोक-साहित्य विश्व के प्राचीनतम वाङ्मय का एक प्रमुख अंग रहा है। ऋग्वेद और अथर्ववेद के कई ऋक् या पाद, वस्तु और विधान की दृष्टि से लोकोक्ति से भिन्न नहीं हैं।[२] बुद्धदेव के वचनों का संकलन-ग्रन्थ 'धम्मपद', लोकोक्तिपरक सूक्तियों से प्रतिभासित है। संस्कृत-साहित्य में, व्यास, वाल्मीकि, मनु, शुक्राचार्य, चाणक्य या विष्णुशर्मा, भर्तृहरि आदि की सूक्तियाँ लोकोक्ति की ही प्राचीन परम्परा की कड़ियाँ हैं। अधिकांश संस्कृत लौकिक न्याय, अर्थतः और स्वरूपतः लोकोक्ति हैं। अपभ्रंश-साहित्य के 'पाहुड़दोहा' 'सावयधम्मदोहा', 'उपदेशरसायन', 'पउमचरिउ', 'कर्पूरमंजरी' आदि ग्रन्थों में भी लोकनीति और व्यवहार-सम्बन्धी अनगिनत लोकोक्तियाँ प्राप्त होती हैं। इस तरह वैदिक, पालि, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश आदि प्राचीन साहित्य लोकोक्तियों से भरे-पूरे हैं।

---

१. राजस्थानी कहावताँ. अवतरणिका, पृ० ३।

२. उदाहरण के लिए लोकोक्तिपरक वैदिक सूक्तियाँ ली जा सकती हैं : 'संगच्छध्वं संवदध्वम्' : ऋग्वेद, १०।१९१।२; 'न स सखा यो न ददाति सख्ये' : ऋग्वेद, १०।११७।४; 'मा गृधः कस्यस्विद्धनम्' : यजुर्वेद, ४०।१ ; 'ऋतस्य पथा प्रेत' : यजुर्वेद, ७।४५; 'उद्यानं ते पुरुष नावयानम्' ; अथर्ववेद, ८।१।६ और 'शतस्य समाहार सहस्रस्य किरः' : अथर्ववेद, ३।२४।५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पश्चिम के प्राचीन धार्मिक ग्रन्थ 'ओल्ड टेस्टामेण्ट' में 'प्रोवर्ब' नामक एक प्रकरण है। लोकोक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन यह सिद्ध करता है कि 'ओल्ड टेस्टामेण्ट' में संगृहीत लोकोक्तियों पर मिस्र के एक प्राचीनतम ग्रन्थ का प्रभाव है। ऐसी कितनी ही लोकोक्तियाँ प्राप्त होती हैं, जिनके स्वरूप अन्तरदेशीय सिद्ध होते हैं। इनमें भारत, मिस्र, बेबिलोनिया, यूनान आदि प्राचीन सांस्कृतिक केन्द्रों की विचारधाराएँ सुरक्षित हैं। एक यहूदी प्रार्थना-ग्रन्थ, जिसमें तिरसठ कानूनी पण्डितों और शिक्षकों की लोकोक्तिपरक सूक्तियाँ संकलित हैं, का समय ईसा-पूर्व तीसरा वर्ष है। इस्लाम के प्राचीन ग्रन्थ 'कुरानशरीफ' में भी 'मिसाल' के रूप में लोकोक्तियाँ प्रतिष्ठित हैं।

लोकोक्तियों का विधिवत् अध्ययन महत्त्वपूर्ण सिद्ध होता है। इस साहित्य में जनपदों में फैले विराट् मनुष्य-समाज के प्रत्यक्ष दर्शन होते हैं।[1] इनमें लोगों के विविध मनोरागों और बौद्धिक प्रयत्नों के द्योतक कथन आबद्ध हैं। इसलिए, इनमें मनुष्य-समाज की भौतिक और आध्यात्मिक संस्कृति, अर्थव्यवस्था, सामाजिक संरचना, धार्मिक आचार और विश्वास, नैतिक धारणाएँ और अन्य संवेदनाएँ—प्रतिबिम्बित होती हैं। इस प्रकार, ये लोकोक्तियाँ ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रों—समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, नृशास्त्र, प्रजातिशास्त्र, इतिहास, भूगोल, भाषा-विज्ञान आदि के अध्ययन के लिए एक उपयोगी उपादान हैं।

लोकोक्ति समाज की सृष्टि ही नहीं, समाज की पथप्रदर्शिका भी होती हैं। ये लोकोक्तियाँ समष्टि के अनुभव की होशियार बेटियाँ होती हैं, जो गतिशील जीवन के विविध अवसरों पर मुखर होकर कल्याण-मार्ग का उद्‌घाटन और विवेचन करती हैं। ये प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जीवन के आदर्श मार्गों के निर्माण और निर्देशन में सक्रिय सहयोग प्रदान करती हैं। सामान्य जनता शास्त्रों के जटिल और सूक्ष्म ज्ञान से अनभिज्ञ होती है। किन्तु, उसे लोकोक्ति के रूप में जीवन और जगत् का सामान्य व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त हो जाता है। इस अर्थ में लोकोक्तियाँ लोकचित्त को प्रशिक्षित, आन्दोलित और प्रभावित करनेवाले सर्वसुलभ ज्ञान-पुंज-सी हैं। जनसामान्य की दृष्टि में लोकोक्तियाँ वेद और ब्रह्म की तरह 'स्वतः प्रमाण' होती हैं। जीवन में जहाँ भी अज्ञान या दुराचार के कारण तनाव, विरोध और किंकर्त्तव्यविमूढता की स्थिति उपस्थित होती है, वहाँ लोकोक्तियाँ यथासमय किसी के द्वारा उद्‌धृत होकर सामंजस्य स्थापित करती हैं। इसीलिए सभी लोग लोकोक्ति के रूप में प्राप्त ज्ञानराशि के प्रति श्रद्धा और विश्वास रखते हैं। वे नतमस्तक होकर उच्चरित लोकोक्ति के सत्य को स्वीकार करते हैं, मानों कि उनके लिए लोकोक्तियाँ जीवन के हर प्रश्न या जिज्ञासा के अन्तिम उत्तर हों। डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ने लिखा : 'लोग अपने लाभ और नुकसान, सुख और दुःख से भरे हुए जीवन में इन सूक्तियों का स्मरण करते हुए अपनी अवचेतना में मस्त हो जाते हैं—कहते हैं; हाँ ठीक ही कहा है। कहावतों में भाव-साम्य मिलने के कारण लोगों के दुःख-भार का लाघव होता है, सुख और भी गाढ़ा हो जाता है।'[2]

---

१. "The proverbs of a nation are the great book out of which it is easy to read its character."—(Paxton Hood) Racial Proverbs, p. 4.

२. राजस्थानी कहावतें, अवतरणिका, पृ० १४।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकोक्ति-साहित्य का उद्देश्य महान् होता है। लोक-समुदाय का यह ज्ञान, मानव-महिमा की प्रतिष्ठा और मानवता की मुक्ति का प्रयासी होता है। जर्मन-विद्वान् ओटोहौफलर का कथन है : "लोकोक्ति मनुष्य के अन्तर्गत 'शिवम्' का दर्शन करती है और इस 'शिवम्' में विश्वास रखती है।"[१] लोकोक्ति वह 'तेजोमयी वाक्' होती है, जो लोक को सत्य, धर्म और सद्विचार के यथार्थ स्वरूप से परिचित कराती है और उन्हें कुसंस्कार, परमुखापेक्षिता और पाशविक मनोवृत्तियों के दलदल से निकालकर श्रेष्ठ और सुखी जीवन यापन करने की प्रेरणा देती है। लोकोक्ति लोक के समवेत ज्ञान और व्यावहारिक अनुभव पर आधारित होती हैं। इसलिए, वह सार और निस्सार, खरा और खोटा, क्षीर और नीर के सम्बन्ध में सम्यक् ज्ञान प्रस्तुत करती है। समासतः, लोकोक्ति वाणी की कल्याणी मूर्त्ति होती है।

लोकोक्तियाँ शिक्षण-पद्धति के एक उपादान के रूप में भी उपयोगी रही हैं। शिक्षक प्रत्युत्पन्नमति, स्मरण-शक्ति और सामान्य ज्ञान के विकास के लिए लोकोक्तियों को प्रश्न के रूप में विद्यार्थियों के सामने रखते हैं। विद्यार्थी लोकोक्तियों के लिए उपयुक्त प्रकरण या घटना गढ़ते हैं। शिक्षण के अतिरिक्त लोकोक्तियाँ बाल-क्रीडा के विषय भी रही हैं। जापान में लोकोक्ति पर आधारित कुछ बाल-क्रीडाएँ बहुत लोकप्रिय हैं।[२]

लोकोक्तियाँ अभिव्यक्ति-सामर्थ्य को विकसित करती हैं। गूढ से भी गूढ विचार लोकोक्तियों के सहारे सहज संवेद्य हो जाते हैं। वस्तुतः, लोकोक्तियाँ भाषा के लालित्य और लावण्य हैं। एक अरबी लोकोक्ति है : 'भोजन के लिएनमक का जो महत्त्व है, वही लोकोक्तियों का भाषा के लिए है।' उपयुक्त अवसर पर उद्धृत छोटी-सी लोकोक्ति भी विराट् श्रोता-समूह को आकृष्ट करती है। यह अपने प्रयोक्ता और श्रोता के बीच दृढ सेतु का निर्माण करती है। जॉन क्रिश्चियन ने लिखा है : "भाषा विना चटपटे और चुटीले कथनों के, और जीवन निस्सन्देह, अलंकृत भाषा के विना भी ग्राह्य है। किन्तु, अगर हम भाषा को सुस्वादु और चुटीली बनाना चाहते हैं और हम सत्य को सुप्रतिष्ठित करना, श्रोता के फड़फड़ाते हुए ध्यान को पकड़ना और नीति को प्रकट या कहानी को सुसज्जित करना चाहते हैं, तो हमें अवश्य ही अपनी भाषा को लोकोक्ति के प्रयोग से आस्वाद्य बनाना होगा।"[३]

लोकोक्ति, भाषा और उसके अनुसन्धेय पक्षों के अध्ययन के लिए बहुमूल्य सामग्री जुटाती है। समय-समय लोकोक्ति के रूप में लोक-समुदाय की बहुरूप अभिव्यक्तियाँ आकलित होती रहती हैं। इसलिए, लोकोक्तियों में अतीत और वर्त्तमान की भाषात्मक भंगिमाएँ सुरक्षित रहती हैं। इनके अध्ययन से जनपदीय भाषाओं की अनुपम शब्द-शक्ति और रागात्मक तत्त्वों का पता चलता है। लोकोक्तियों में ऐसे कितने शब्द विजडित होते हैं, जो वय में शताब्दियों पुराने सिद्ध होते हैं। इन शब्दों का वैज्ञानिक अध्ययन, सामुदायिक जीवन के अनुशीलन की जटिल समस्याओं को सुलझाने और समझने में सहायता देता है। डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने

---

१. "....inspite of all, the proverb sees the good in man and believes in man this good."—Otto Hofler : 'Introduction to the Proverbs of Germany' (Racial proverb, p. Ivi).

२. दे० रेसियल प्रोवर्ब्स : इण्ट्रोडक्शन, पृ० ८।

३. बिहार प्रोवर्ब्स इण्ट्रोडक्शन, पृ० ७।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिखा है : 'भाषाशास्त्र में रुचि रखनेवाले व्यक्ति के लिए जनपदीय अध्ययन कल्पवृक्ष के समान समझना चाहिए। किसान के जीवन की जो विस्तृत शब्दावली है, उसमें वैदिक काल से लेकर अनेक शताब्दियों तक के शब्द संचित हैं।'[१] अतः, यह स्पष्ट है कि लोकोक्तियाँ प्राचीन ज्ञान की संरक्षिका होती हैं।

विभिन्न भाषाओं या बोलियों की लोकोक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। दो भाषाओं की लोकोक्तियों में भाव और रूप-साम्य अथवा वैषम्य—दोनों होते हैं। लोकोक्तिगत साम्य या अन्विति के कारण, वे समान उत्स भी होते हैं, जो मानव-मन में कम या अधिक मात्रा में एक-सा बौद्धिक और रागात्मक अनुभवों का सर्जन करते हैं। इसलिए, लोकोक्ति के आधार पर मानव-एकता के मूलभूत कारणों का पता लगाया जा सकता है। इसी प्रकार, लोकोक्तियों के पारस्परिक वैषम्य भी कई महत्त्वपूर्ण निष्कर्षों पर पहुँचाते हैं। किसी भाषा की लोकोक्तियों में एकदेशीय मान्यताएँ या विचार भी अभिव्यक्त होते हैं। ये विचार उन ऐतिहासिक, भौगोलिक और सांस्कृतिक कारणों की ओर संकेत देते हैं, जो किसी राष्ट्र की विचारधारा के प्रेरक अथवा नियामक होते हैं। साथ ही, किसी भाषा के लोकोक्ति-साहित्य में किसी विशेष वर्ग की लोकोक्तियों का आधिक्य, उस राष्ट्र के विशिष्ट संस्कार और विचारधारा का परिचायक होता है।

लोकोक्तियाँ घुमक्कड़ होती हैं। एक देश की अन्य बोलियों की अथवा कई देशों की भाषाओं की लोकोक्तियों में एक ही लोकोक्ति के रूपान्तर या पाठान्तर प्राप्त होते हैं। लोकोक्तियाँ अब भी दूरदेशीय यात्राओं में स्वभावतः अपने अर्थ और स्वरूप में परिवर्त्तन और परिवर्द्धन कर लेती हैं। अपरिचित व्यक्ति को नये समाज से हिलने-मिलने के लिए अपने स्वभाव और रहन-सहन को लचीला बनाना पड़ता है। लोकोक्तियाँ भी बड़ी चालाकी से कभी अपने मौलिक रूप में विदेशी विषय-वस्तु, और कभी विदेशी रूप में मौलिक विषय-वस्तु धारण करती हैं। इसलिए, लोकोक्तियों के पाठान्तर भी विभिन्न देशों के सम्बन्ध और भाषात्मक विशेषता के द्योतक हैं।

उपर्युक्त दृष्टियों से लोकोक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन सर्वथा उपादेय है। परन्तु, दो या कई भाषाओं की लोकोक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन तब करना चाहिए, जबकि तुल्य देशों की लोकोक्तियों का अलग-अलग विधिवत् संकलन और वैज्ञानिक अध्ययन हो गया हो।

०. २. १. भोजपुरी भाषा :

भोजपुरी, ५० हज़ार वर्गमील के विस्तीर्ण क्षेत्र में फैली लगभग चार करोड़ जनसंख्या द्वारा बोली जानेवाली एक लोकभाषा है। भाषा-भाषियों की संख्या की दृष्टि से यह संसार की महान् भाषाओं में एक है। ग्रियर्सन ने इसे मागधी-परिवार की पश्चिमी शाखा 'बिहारी' के अन्तर्गत रखा है।[२] उक्त विद्वान् के अनुसार यह भाषा मागधी-अपभ्रंश से विकसित हुई है। डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ने 'भोजपुरी' को पश्चिमी मागधन-परिवार के अन्तर्गत रखा है।[३]

---

१. पृथिवीपुत्र, पृ० ५५।

२. लिंग्विस्टिक सर्वे ऑव इण्डिया, जिल्द १, भाग १, पृ० १५१।

३. दि ऑरिजिन ऐण्ड डेवलपमेण्ट ऑव दि बंगाली लैंग्वेज, पृ० ९८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० उदयनारायण तिवारी ग्रियर्सन के उपर्युक्त मत को स्वीकार करते हैं।[१] किन्तु डॉ० विश्वनाथ प्रसाद ने भोजपुरी भाषा के ऐतिहासिक और रूपात्मक अध्ययन के आधार पर यह सिद्ध किया है कि : 'भोजपुरी प्राच्यभाषा-वर्ग के अन्तर्गत आती है, जिसके पश्चिमी रूप अर्द्धमागधी और पूर्वी रूप मागधी—इन दोनों के बीच के प्रदेश से सम्बद्ध होने के कारण, उसमें कुछ-कुछ अंशों में दोनों के लक्षण पाये जाते हैं।[२] इस सम्बन्ध में डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी का मत डॉ० प्रसाद के उपर्युक्त मत से साम्य रखता है।[३] वस्तुतः, भोजपुरी को पूर्णतः न तो 'अर्द्धमागधी' और न 'मागधी' से ही विकसित माना जा सकता है।

इस भाषा के क्षेत्र के अन्तर्गत भारतवर्ष के तीन राज्यों के भू-भाग आते हैं। बिहार प्रान्त के चम्पारन, सारन, शाहाबाद और राँची और पलामू जिले के अधिकांश क्षेत्रों में भोजपुरी बोली जाती है। उत्तरप्रदेश के गाजीपुर, बलिया, वाराणसी, मिर्जापुर, जौनपुर के अधिकांश पूर्वी भाग, आजमगढ़, गोरखपुर और बस्ती जिले के अधिकांश पूर्वी भाग भोजपुरी भाषा-भाषी हैं। मध्यप्रदेश की सरगुजा-रियासत और जसपुर-राज्य के पूर्वी क्षेत्र में भोजपुरी भाषा का प्रसार है।

भोजपुरी-भाषा-भाषी उपर्युक्त क्षेत्रों के अतिरिक्त भारतवर्ष के अधिकांश प्रदेशों और विदेश के कुछ भागों में भी न्यूनाधिक रूप से बसे हुए हैं। भोजपुरीतर क्षेत्र और विदेश में रहकर भी भोजपुरी लोग अपनी ही भाषा बोलते हैं। ग्रियर्सन ने ब्रिटिश-भारत के ३२ जिलों में रहने-वाले भोजपुरी-भाषा-भाषियों की संख्या ३,८६,८७८ बतलाई है।[४] आज तो उपर्युक्त संख्या और भी अधिक बढ़ गई होगी। इस प्रकार, भाषा-भाषियों की संख्या और सीमा-विस्तार की दृष्टि से भोजपुरी भाषा अन्तरराष्ट्रीय भाषाओं की पंक्ति में आती है।

भोजपुरी क्षेत्र के पूर्व में मैथिली और मगही भाषा, दक्षिण में उड़िया भाषा, पश्चिम में छत्तीसगढ़ी और अवधी भाषा और उत्तर में नेपाली भाषा के क्षेत्र हैं।

ग्रियर्सन ने भोजपुरी को चार भागों में विभाजित किया है—(१) उत्तरी, (२) दक्षिणी, (३) पश्चिमी और (४) नगपुरिया।[५] डॉ० उदयनारायण तिवारी ने उत्तरी भोजपुरी को दो विभाषाओं में वर्गीकृत किया है—(१) सरवरिया और (२) गोरखपुरी।[६] डॉ० उदयनारायण तिवारी के अनुसार भोजपुरी भाषा के उपर्युक्त चार वर्गों का सीमा-विस्तार इस प्रकार है—'सोन नदी के दक्षिण नगपुरिया भोजपुरी बोली जाती है। उत्तरी तथा नगपुरिया भोजपुरी के बीच में ही दक्षिणी तथा पश्चिमी भोजपुरी का क्षेत्र है। यदि बरहज से गाजीपुर शहर तक और वहाँ से सोन नदी तक रेखा खींची जाय, तो इसके पूरब दक्षिणी भोजपुरी तथा पश्चिम पश्चिमी भोजपुरी का क्षेत्र होगा।[७]

---

१. भोजपुरी भाषा और साहित्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, प्रवेशक, पृ० ३।
२. भोजपुरी के कवि और उनका काव्य, सम्पादक का मन्तव्य, पृ० ७।
३. 'सरस्वती' (पत्रिका), अक्तूबर १९३१, पृ० ४३५।
४. लिंग्विस्टिक सर्वे ऑव इण्डिया, रफ लिस्ट ऑव लैंग्वेजेज बंगाल : लोअर प्रोविन्सेज, कलकत्ता, १८९८, पृ० ८३।
५. लिंग्विस्टिक सर्वे ऑव इण्डिया, जिल्द १, भाग १, पृ० १४९-१५०, कलकत्ता, १९२७ ई०।
६. भोजपुरी भाषा और साहित्य, प्रवेशक, पृ० ९-१०।
७. भोजपुरी भाषा और साहित्य, प्रथम खण्ड, प्रवेशक, पृ० ११।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी भाषा के उपविभागों में उच्चारण-सम्बन्धी किंचित् भिन्नता है। किन्तु, ये सूक्ष्म भिन्नताएँ हैं। ऐसे, शब्दकोश, व्याकरणिक कोटियाँ और उच्चारण की सामान्य प्रवृत्तियों की दृष्टि से भोजपुरी भाषा के विभिन्न भेदों में पूर्णतः समरूपता है।

कुछ अवान्तर भेदों के आधार पर भोजपुरी की तीन उप-भाषाएँ स्वीकृत की गई हैं। ये हैं—(१) मघेसी, (२) थारू और (३) नगपुरिया। मघेसी, चम्पारन की भोजपुरी का नाम है। चम्पारन जिला गोरखपुर और मुजफ्फरपुर जिले के मध्य में है। अतः, यहाँ की भोजपुरी पर गोरखपुर की उत्तरी भोजपुरी और मुजफ्फरपुर की मैथिली का प्रभाव पड़ा है।

थारू भाषा, हिमालय की तराई में बसनेवाली 'थारू' नाम की आदिवासी जाति द्वारा बोली जाती है। भाषा-भाषी के नाम पर इस भाषा का नाम पड़ा है। यह भाषा बस्ती जिले की भोजपुरी का विकृत रूप है। जिस प्रकार थारू जाति में मंगोल रक्त का मिश्रण है, उसी प्रकार 'थारू भोजपुरी' पर पार्श्ववर्त्ती पहाड़ी भाषाओं का प्रभाव है। ग्रियर्सन ने 'थारू' को भोजपुरी के ही अन्तर्गत परिगणित किया है।[1]

नगपुरिया, राँची और पलामू जिले के अधिकांश दक्षिणी और पश्चिमी क्षेत्रों में बोली जाती है। इसपर मगही, छत्तीसगढ़ की 'सरगुजिया' और उराँव-मुण्डारी का प्रभाव परिलक्षित होता है। कुछ विद्वानों ने इसे मगही की उपभाषा माना है। किन्तु, मूलतः यह भोजपुरी है। ग्रियर्सन ने भी तटस्थ होकर इसे भोजपुरी के अन्तर्गत रखा है।[2]

भोजपुरी भाषा की कुछ अद्भुत विशेषताएँ हैं। सही अर्थों में यह व्यवहार और व्यवसाय की भाषा है। यह भाषा व्याकरणिक नियमों से जकड़ी हुई नहीं है। इस भाषा की ध्वनियों में विशिष्ट प्रकार के रागात्मक तत्त्व हैं, जो अन्य भारतीय भाषाओं में नहीं है। इसी रागात्मक प्रवृत्ति के कारण भोजपुरी भाषा के कई पद विभिन्न रागों में ध्वनित होकर विभिन्न अर्थों के बोधक होते हैं। साथ ही, इस रागात्मकता के कारण भोजपुरी भाषा के शब्दों के उच्चारण में श्रुतिमधुर बलाघात और स्वराघात, और शब्दों की मात्राओं में लयात्मक सामंजस्य मिलते हैं। ग्रियर्सन ने इस भाषा की उक्त प्रवृत्ति को समझाने का स्तुत्य प्रयास किया है। डॉ० विश्वनाथ प्रसाद ने भोजपुरी भाषा की इस रागात्मक प्रवृत्ति का विशद और वैज्ञानिक अध्ययन किया है। इस भाषा के शब्दकोश के वैज्ञानिक अध्ययन से कई भाषागत विशेषताएँ प्रकट होती हैं। इसमें संस्कृत के अतिरिक्त भारत की प्रायः सभी भाषाओं और विदेश की फारसी, अरबी, तुर्की, अँगरेजी, पुर्त्तगीज एवं कुछ अन्य यूरोपीय भाषाओं के शब्द मिलते हैं। इस भाषा में कितने ही वैदिक शब्द सुरक्षित हैं। इस प्रकार, इसने परम्परा को जोगते हुए प्रगतिशीलता और समन्वयात्मक प्रवृत्ति का परिचय दिया है।

भोजपुरी भाषा में साहित्य की प्रायः सभी विधाएँ हैं। इनका अधिकांश अलिखित होकर भी समृद्ध है। लोकवार्त्ता की दृष्टि से यह भाषा बहुत धनी है। इस भाषा में लोकगाथा, लोकगीत, लोकोक्ति, मुहावरा, पहेली आदि साहित्य भरपूर हैं। गुण और गणना की दृष्टि से भोजपुरी का लोक-साहित्य संसार में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

---

१. लिंग्विस्टिक सर्वे ऑव इण्डिया, भाग ५, अंक २, पृ० ३११—३२४।

२. वही, जिल्द १, भाग १, पृ० १४६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

०.२.२. भोजपुरी क्षेत्र का इतिहास और भूगोल

(क) भोजपुरी क्षेत्र का इतिहास :

वर्त्तमान भोजपुरी क्षेत्र की प्राचीन सीमाएँ प्रामाणिक रूप से निश्चित नहीं की जा सकतीं। डॉ० राजबली पाण्डेय का विचार है कि : 'इस क्षेत्र में प्राचीन मल्ल, वज्जि, काशी, कारूष आदि जनपद सम्मिलित हैं।'[१] इन जनपदों की विस्तार-सीमाएँ, ऐतिहासिक और भौगोलिक कारणों से बनती-बिगड़ती रही हैं। बाद में तो इनमें से कई के अस्तित्व भी समाप्त हो गये। भारतीय इतिहास के विभिन्न युगों में पूरे भोजपुरी क्षेत्र पर किसी एक ही राजा या राजवंश की सत्ता अधिक दिनों तक नहीं रही। एक साथ कई राजवंशों ने इस क्षेत्र के विभिन्न भागों पर राज्य किये। इसलिए, पर्याप्त खोज के बाद ही भोजपुरी क्षेत्र का प्रामाणिक इतिहास लिखा जा सकता है। यहाँ भोजपुरी क्षेत्र के इतिहास की सामान्य रूपरेखा प्रस्तुत की जा रही है।

इस क्षेत्र के वैदिक-कालीन राजाओं का उल्लेख प्राचीन साहित्य में मिलता है। कुछ विद्वानों ने यह सिद्ध किया है कि ऐतरेय ब्राह्मण में वर्णित महाराजा भोज इसी क्षेत्र के शासक थे। विश्वामित्र, इसी भोज के पुरोहित थे। इन विद्वानों का यह भी कहना है कि मालवा के परमारवंशीय भोज के नाम पर नहीं, वैदिक-कालीन भोज के नाम पर इस क्षेत्र का नाम पड़ा है।[२] यह कहा जाता है कि वेद के सावित्री और गायत्री आदि मन्त्रों की रचना इसी क्षेत्र में हुई। विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि जैसे महान् ऋषियों के आश्रम इसी क्षेत्र में थे। जनश्रुति और इस क्षेत्र के तीर्थस्थानों से भी उपर्युक्त विवरणों की पुष्टि होती है।

स्मृतिकाल (ई० पू० छठी शताब्दी) में भोजपुरी क्षेत्र में एक बहुत वीर राजा का शासन था। उसका नाम करुष था। इस क्षेत्र को प्राचीन काल में करुष देश कहते थे। करुष, मनु वैवस्वत के छठे पुत्र थे। ये दक्षिण से उत्तर की ओर किसी दुश्मन को बढ़ने नहीं देते थे। पुराण और रामायण-काल में इस क्षेत्र के राजा के रूप में मारीच का नाम लिया जाता है। मारीच भी बड़ा प्रतापी राजा था। यह रावण का मित्र था। इसीलिए, विश्वामित्र ने राम की सहायता से इसका विनाश करवा दिया। पुराण और रामायण-काल में भोजपुरी क्षेत्र में कई महत्त्वपूर्ण घटनाएँ घटीं। इसी क्षेत्र के बक्सर (प्राचीन नाम : व्याघ्रसर) में वामनावतार हुआ। इन्द्र, इसी क्षेत्र को पवित्र जानकर अपने अभिशप्त जीवन से मुक्ति पाने के लिए यहाँ बहुत दिनों तक रहे और यहीं राम ने ताड़का का वध किया।

बुद्ध और महावीर के काल में भारत के इतिहास में पहली बार इस क्षेत्र में गणतन्त्र की स्थापना हुई। बौद्ध ग्रन्थों में प्राप्त उल्लेखों के अनुसार इस क्षेत्र में निम्नांकित जनपदों का अस्तित्व था—१. शाक्य, २. कोलिय, ३. मौर्य ४. मल्ल, ५. वुलि, ६. काशी और ७. मग्ग।[३] इन जनपदों में शाक्य, कौलिय, मौर्य, मल्ल और काशी प्रमुख थे। यह शाक्यवंश अपनी वीरता और कुलशीलता के लिए बड़ा प्रसिद्ध रहा है। विश्व के महान् लोकनायक और परिव्राजक

---

१. हिन्दी-साहित्य का बृहत् इतिहास, प्रथम भाग, का० नागरी-प्रचारिणी सभा, सं० २०१४ वि०, पृ० ३२।

२. दे० डॉ० ए० पी० बनर्जी शास्त्री : प्रोसिडिंग्स ऑव सिक्स्थ ऑल इण्डिया ओरियेण्टल कानफ्रेन्स, पटना, दिसम्बर, १९३०, पृ० १८६।

३. दे० दीघनिकाय, २।१३७; मज्झिमनिकाय, १।२३१।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महात्मा बुद्धदेव शाक्यवंशीय थे। बुद्धदेव के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ भोजपुरी क्षेत्र में ही घटित हुईं।

मल्ल-गणतन्त्र के अन्तर्गत वर्त्तमान गोरखपुर, चम्पारन और सारन जिले के अधिकतर भाग थे। रामायण के अनुसार, इस गणतन्त्र का नाम लक्ष्मण के छोटे पुत्र चन्द्रकेतु, मल्ल (उपाधि) के नाम पर पड़ा।[1] यह मल्ल-राष्ट्र शासन की गणतन्त्रात्मक प्रणाली के लिए प्रसिद्ध था।

काशी-जनपद का इतिहास वैदिक काल से ही आरम्भ होता है। शतपथब्राह्मण (१३।५।४।१९—२१) में काशी (काशीवासी) और 'काश्य' (काशी का वस्त्र) का उल्लेख है। उक्त ग्रन्थ के एक मन्त्र से काशी-जनपद के अक्खड़पन और विचार-स्वातन्त्र्य का पता चलता है।[2] वैदिक काल के बाद इस जनपद के प्रमुख शासकों में अजातशत्रु, ब्रह्मदत्त, शिशुनाग एवं अश्वसेन प्रमुख रहे हैं। ये सभी अपनी वीरता, विद्वत्ता और प्रजाहित-चिन्ता के लिए पुराणों-इतिहासों में स्मृत किये गये हैं। शिशुनाग-वंश के शासन के बाद काशी मौर्यवंश के अधीन हुआ। इस काल में अशोक जैसे दार्शनिक और दयालु राजा का प्रादुर्भाव हुआ। भोजपुरी क्षेत्र में स्थित बहुत-से शिलालेख, गुफालेख और स्तम्भलेख अशोककालीन ही हैं।

मौर्यकाल के बाद काशी, भारशिव नागों के शासन में आया। ये नाग बड़े वीर थे। इन्होंने विदेशी कुषाणों को खदेड़ा। भारशिवों के पश्चात् भोजपुरी क्षेत्र गुप्तवंश के शासन में आया। भोजपुरी क्षेत्र की वीरता और राष्ट्रीय भावना गुप्तकाल में काफी प्रकट हुई। समुद्रगुप्त और स्कन्दगुप्त जैसे सम्राटों की अजेय सेना में भोजपुरी जवानों की पर्याप्त संख्या थी। ये जवान जिस पराक्रम से दुश्मन पर धावा करते थे, उसका वर्णन, गाजीपुर के पास स्थित एक स्तम्भ पर लिखी प्रशस्ति से संकेतित होता है।[3]

मौर्यकाल के बाद कुछ दिनों तक भोजपुरी क्षेत्र तीन राजवंशों—पालवंश, प्रतिहारवंश और राष्ट्रकूटवंश के पारस्परिक युद्ध का अखाड़ा बना रहा। जब, इस क्षेत्र पर गहड़वाल-वंश का शासन हुआ, तब इसकी काफी उन्नति हुई। इस वंश के गोविन्दचन्द्र और हरिश्चन्द्र यवनारि जैसे वीर राजाओं के नेतृत्व में भोजपुरियों ने तुर्कों से लोहा लिया। किन्तु, बाद में मुहम्मद तुगलक की चढ़ाई से भोजपुरी क्षेत्र को प्राचीन संस्कृति और जन-धन की बड़ी हानि हुई। फिर, यह क्षेत्र मुगल-शासन में आया। इस काल में शेरशाह ने भोजपुरी सैनिकों की ही सहायता से बहुत दिनों तक के लिए मुगल-साम्राज्य का मूलोच्छेद कर दिया। शेरशाह के बाद भोजपुरी क्षेत्र के पराक्रमी पुरुष के रूप में विक्रमादित्य हेमू का नाम अग्रगण्य है। यह इतिहास-प्रसिद्ध तथ्य है कि पानीपत के मैदान में हेमू के हाथी नहीं भड़कते, तो अकबर के

---

१. वाल्मीकिरामायण, उत्तरकाण्ड, १०२।९।

२. "गोविन्तेन शतानीकः। सात्राजितS ईजे काश्यस्याश्वमादाय। ततो हैतदर्षाक् काशयोऽग्नीन्नादधत। आत्तसोमपीथाः रमS इति व्यदन्तः।"—श० ब्राह्मण, १३।३।६।१९।

३. उक्त प्रशस्ति का एक वाक्य इस प्रकार है :
"हूणेर्यस्य समागतस्य समरे दोर्भ्यों धरा कम्पिता।"
हूणों से युद्ध करते समय जिसकी भुजाओं के टकराने से धरा काँप उठी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सेनापति बैरम खाँ को परास्त कर, हेमू एक तेजस्वी और साहसी सम्राट् के रूप में भारत का प्रसिद्ध शासक सिद्ध होता।[1]

मुगलकाल में तत्कालीन शासन के विरुद्ध भोजपुरी क्षेत्र में अनेक क्रान्तियाँ हुईं। 'आइने अकबरी' के अनुवाद में ब्लॉचमैन ने बिहार के राजा दलपतराय का उल्लेख किया है।[2] दलपतराय को अकबर के एक दरबारी की हत्या करने के फलस्वरूप बहुत दिनों तक सजा भुगतनी पड़ी थी। जहाँगीर के समय में भी भोजपुर के उज्जैनी राजाओं ने राजद्रोह किया था।

मुगलकाल के बाद भो० क्षे० पर कई नवाबों का शासन रहा। नवाबों के शासन के बाद ब्रिटिश-शासन की स्थापना हुई। इस शासन के आरम्भ में ही बनारस के राजा चेतसिंह और तत्कालीन गवर्नर जेनरल हेस्टिंग्ज के बीच तनातनी हो गई थी। क्रुद्ध होकर हेस्टिंग्ज ने चेतसिंह को कैद में डलवा दिया था। इससे क्षुब्ध होकर भोजपुरी जनता ने सशस्त्र क्रान्ति कर दी थी।[3] इसी प्रकार, भो० क्षे० में ब्रिटिश-शासन के विरुद्ध शाहाबाद के जगद्विख्यात वीर कुँवरसिंह के नेतृत्व में, सन् १८५७ ई० में जबरदस्त क्रान्ति हुई थी। इस क्रान्ति में भोजपुरियों ने अपनी अदम्य शक्ति और अद्भुत रण-कौशल का परिचय दिया था। सन् १९१७ ई० में नमक-कानून के विरुद्ध पूज्य बापू और देशरत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के नेतृत्व में इस भोजपुरी क्षेत्र में बड़ा भारी आन्दोलन हुआ था।

उपर्युक्त विवरणों से यह सिद्ध होता है कि भोजपुरी क्षेत्र प्राचीन काल से ही सभ्यता और संस्कृति के उद्भव और विकास का प्रमुख केन्द्र रहा है। इस क्षेत्र में देशव्यापी ही नहीं, विश्वव्यापी क्रान्तियों का संघटन और महापुरुषों का प्रादुर्भाव होता रहा है। वर्त्तमान काल में भी भोजपुरी जनता के भौतिक और आध्यात्मिक जीवन, लोक-साहित्य, लोक-विश्वास और क्षेत्रीय पुरातत्त्व के अवशेषों में विगत युगों के उज्ज्वल और स्मरणीय चरण-चिह्न सुरक्षित हैं।

(ख) भूगोल :

भोजपुरी क्षेत्र लगभग ५०,००० वर्गमील में फैला हुआ है। यह क्षेत्र २८°४ से २३°६ अक्षांश और ८०°८ से ८५°९ तक के देशान्तर के मध्य पड़ता है। भो० क्षे० के दक्षिणी छोर पर स्थित राँची से कर्करेखा गुजरती है।

भोजपुरी क्षेत्र मुख्य रूप से उत्तर भारत के मैदानी इलाके में आता है। इस क्षेत्र को हिमालय और विन्ध्याचल के बीच की भूमि कहना चाहिए। यह क्षेत्र हिमालय और उसकी तराई से निकलनेवाली गण्डक, सरयू, तमसा, घाघरा, गोमती और गंगा तथा विन्ध्याचल के अमरकण्टक नाम की पहाड़ी से निकलनेवाली सोन नदी के द्वारा लाई गई मिट्टी से बना है। इन नदियों से क्षेत्र का भौतिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध है। ये नदियाँ यातायात की दृष्टि से भी

---

१. हेमू और बैरम खाँ के बीच होनेवाले युद्ध के सविस्तर विवरण के लिए दे० राहुल सांकृत्यायन : अकबर, पृ० ६—८।

२. दे० जर्नल ऑव रायल एशियाटिक सोसाइटी ऑव बंगाल, १८७० ई०, आइने अकबरी : ब्लॉचमैन द्वारा अनूदित, भाग १।

३. इतिहास-सम्बन्धी लोकोक्तियों के प्रसंग में चेतसिंह-सम्बन्धी घटना का उल्लेख विस्तार से किया गया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाभप्रद हैं। इनके किनारे तीर्थस्थान, ऐतिहासिक स्थल और औद्योगिक नगर स्थित हैं। भोजपुरी लोग इन नदियों को माता कहते हैं। विशेष अवसरों पर बड़े उल्लास और श्रद्धा के साथ भोजपुरी लोग नदियों के किनारे एकत्र होकर स्नान, ध्यान, पूजा और गान-वाद्य का आयोजन करते हैं। जब कभी किसी भोजपुरी परिवार पर कोई विपत्ति आती है, तब उस परिवार की वृद्धा इन नदी-रूपी माताओं से दुःख दूर करने के लिए विनती करती है और इसके बदले में इन्हें पीली साड़ी (भो० शब्द 'पियरी') समर्पित करने का वचन देती है।

सामान्यतः भोजपुरी क्षेत्र शीतोष्ण कटिबन्ध में आता है। सभी वस्तुएँ अपने पूरे ऐश्वर्य के साथ इस क्षेत्र में अवतरित होती हैं और अपने आगमन से इस क्षेत्र के वनस्पति-जगत् को प्रभावित करती हैं। तापमान की दृष्टि से भोजपुर-क्षेत्र मध्यम वर्ग में आता है।

भोजपुरी क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। प्राचीन काल में यहाँ बड़े-बड़े विशाल वन-प्रान्तर थे। इसका संकेत भोजपुरी क्षेत्र के आरा, सारन, चम्पारन, देवरिया[1] आदि स्थानों के प्राचीन नामों से मिलता है। 'आरण्य' में वृक्षों की श्रेणियों, 'सारंगारण्य' में हरिण और 'चम्पारण्य' में चम्पा-वृक्षों का बाहुल्य था। इन जंगलों में भारत के प्रसिद्ध ऋषि-मुनियों का आश्रम था। विश्वामित्र ने आरा के समीपस्थ बक्सर (व्याघ्रसर) में तपस्या की थी। यहीं रामचन्द्र ने राक्षसों से यज्ञ की रक्षा की थी। यहीं पर गौतम मुनि का आश्रम सारन जिले में था। कहते हैं कि यहीं उन्होंने न्यायसूत्रों की रचना की थी।[2]

भोजपुरी क्षेत्र का उत्तरी छोर हिमालय की तराई में पड़ता है। इसके दक्षिणी भाग में विन्ध्याचल की पहाड़ियाँ फैली हुई हैं। इन पहाड़ी क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के खनिज पदार्थ, वृक्ष और वन्य जीव पाये जाते हैं। यहाँ पाये जानेवाले खनिज पदार्थों में चूना के पत्थर, मैंगनीज, अल्युमीनियम और संगमरमर प्रमुख हैं। भारतवर्ष में पाये जानेवाले प्रायः सभी प्रकार के वृक्ष भोजपुरी क्षेत्र में पाये जाते हैं। भोजपुर-क्षेत्र के प्रमुख जीव-जन्तु ये हैं—भेड़िया, गीदड़, भालू, हरिण, नीलगाय, नेवला आदि जंगली जानवर; गेहुँमन, करइत, धामन आदि सर्प; घड़ियाल, सूँस आदि जल के जानवर; गरुड, गिद्ध, चील, बाज आदि हिंसक पक्षी और मैना, कोयल, तोता, हारिल, नीलकण्ठ, कौआ, गौरैया आदि सामान्य पक्षी।

भोजपुरी जनता ने अपने चतुर्दिक् फैले उपर्युक्त प्राकृतिक जगत् के प्रति विभिन्न प्रकार से बौद्धिक और रागात्मक प्रतिक्रियाएँ और अनुभूतियाँ प्रकट की हैं। भोजपुरी लोक-साहित्य में विशेषतः लोकोक्ति-साहित्य में, क्षेत्रीय प्राकृतिक जगत् का स्वाभाविक और सुन्दर विवेचन हुआ है।

---

१. आरा < सं० आरण्य, सारन < सं० सारंगारण्य, चम्पारन < सं० चम्पारण्य, देवरिया < सं० देवारण्य।

२. प्राचीनकालीन वनों और आश्रमों के सविस्तर विवरण के लिए दे० श्रीरामलोचनशरण का स्वर्णजयन्ती-स्मारक ग्रन्थ, १९४२ ई०, पटना में संगृहीत महामहोपाध्याय पं० सकलनारायण शर्मा का 'वैदिक काल का विहार' शीर्षक निबन्ध।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

०. २. ३. भोजपुरी-भाषा-भाषी की संस्कृति

एक ही भू-खण्ड पर निवास करनेवाला और एक ही भाषा बोलनेवाला लोक-समुदाय एक विशिष्ट संस्कृति का उत्तराधिकारी बन जाता है। यह विशिष्ट संस्कृति लोक-समुदाय के चिन्तन, अनुभूति, सौन्दर्य-बोध, रहन-सहन, भाषा और साहित्य में प्रतिबिम्बित होती है। अतः, भोजपुरी भाषा और साहित्य के किसी भी अंग का अध्ययन, भोजपुरी-भाषा-भाषियों की विशिष्ट संस्कृति के परिचय के बिना अधूरा है।

भोजपुरी सरल स्वभाव के होते हैं। ये छल-कपट नहीं जानते। इनकी 'कथनी' और 'करनी' में भेद नहीं होता। ये सच्ची बात, अपने स्वार्थों की परवाह किये बिना, किसी से भी कह देने में झिझक का अनुभव नहीं करते। भोजपुरी-भाषा-भाषियों के उपर्युक्त स्वभाव पर प्रकाश डालनेवाली कुछ लोकोक्तियाँ निम्नांकित हैं :

साँच बात सदुल्ला कहे, सबके चित से उतरल रहे।

सदुल्ला (नाम) सच्ची बात कहता है, इसलिए सभी के चित्त से उतरा हुआ रहता है।

बात कहीं फरिछा, गुर लागे चाहे मरिचा।[1]

बात साफ-साफ कहनी चाहिए, चाहे वह गुड़ की तरह लगे, चाहे मिरचा की तरह।

बात कहीं अगाध के काम देखाईं गिध के।

बातें तो अगाध (पण्डित) की तरह करते हैं, पर काम करते हैं गिद्ध की तरह।

मन जाने पाप, माई जाने ना बाप।

किया हुआ पाप अपना ही मन जानता है, उसे न माँ जानती है और न बाप ही।

भोजपुरी वीर-बाँकुरे होते हैं। भारतीय इतिहास के विभिन्न कालों में भोजपुरियों के अदम्य साहस, दुर्द्धर्ष शक्ति और अद्भुत रण-कौशल का उदाहरण मिलता है। भोजपुरियों के प्रिय देवी-देवता काली, शिव, राम, हनुमान् आदि और लोक-गाथाओं के नायक आल्हा-ऊदल, विजयमल, लोरिक, कुँवरसिंह आदि विशेषतः अपने ओजस्वी व्यक्तित्व के कारण पूज्य और स्मरणीय हैं।[2] भोजपुरी लोगों की रहन-सहन की तरह उनके साहित्य और बोलचाल में भी उनकी वीर-भावना विशेष रूप से झलकती है। भोजपुरी जनता बड़े उल्लास के साथ शीलवान् राम से अधिक दर्प में जागते हुए राम और नटनागर कृष्ण से अधिक वीर बालक कृष्ण का स्मरण अपने गीतों में करती है। तत्सम्बन्धी भोजपुरी गीतों की कुछ कड़ियाँ इस प्रकार हैं :

जागे लछुमन राम जा दिन लंका में डंका बजे।

राम-लक्ष्मण उस दिन जागरित हुए, जिस दिन लंका में युद्ध का डंका बजा।

लरिका हो गोपाल कूदि पड़े जमुना में।

बालक होकर भी गोपाल (गेंद निकालने के लिए) यमुना में कूद पड़े।

मुगल और ब्रिटिश—दोनों शासनकालों में तत्कालीन राजकीय सेना में भोजपुरी जवानों की पर्याप्त संख्या रही है। भोजपुरी, हिम्मत और लाठी के धनी होते हैं। ये किसी भी परिस्थिति

---

१. पाठा० 'बात कहीं फरिचिह्न, रात होखे आ दिन।' अर्थात्, रात हो या दिन, साफ-साफ बात कहनी चाहिए।

२. भोजपुरी लोकगाथाओं में वर्णित वीर नायकों के स्वरूप के लिए दे० डॉ० सत्यव्रत सिन्हा : भोजपुरी लोकगाथा, अध्याय ३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में टूट सकते हैं कि किन्तु, दुश्मन के आगे झुक नहीं सकते। भारतीय स्वाधीनता-आन्दोलनों में भोजपुरियों ने तन-मन से सक्रिय भाग लिया। भोजपुरी-भाषा-भाषियों के इस विशिष्ट प्रजाति-तत्त्व का उल्लेख करते हुए ग्रियर्सन ने लिखा है : "यह हिन्दुस्तान की लड़ाकू जातियों में एक है। यह जाति एक सतर्क और सक्रिय जाति है। भोजपुरी युद्ध के लिए युद्ध को प्यार करते हैं। ये सम्पूर्ण भारत में फैले हुए हैं। इस जाति का प्रत्येक व्यक्ति किसी भी स्वतः उपस्थित सुअवसर से अपना भाग्य बनाने को तैयार रहता है। पूर्वकाल में इन्होंने अधिक संख्या में हिन्दुस्तानी सेना में भरती होकर उसे सशक्त बनाया था। साथ ही, दूसरी ओर इन्होंने सन् १८५७ ई० की क्रान्ति में महत्त्वपूर्ण भाग लिया था.....। आयरलैण्ड के निवासियों की तरह लाठी से प्रेम करनेवाले, मजबूत हड्डियोंवाले और लम्बे-तगड़े इन भोजपुरियों को हाथ में लाठी लिये हुए घर से दूर खेतों पर जाते हुए प्रायः देखा जा सकता है।"[1] ग्रियर्सन द्वारा वर्णित भोजपुरियों की 'लाठी' वस्तुतः उनकी वीरता की प्रतीक और प्रमाण है। लाठी के प्रति भोजपुरियों का यह प्रेम बहुत पुराना है। हर्ष के युग में भोजपुरी क्षेत्र के एक गाँव का नाम ही 'यष्टिग्राहक' था।[2] भोजपुरियों की वीरता, युद्धप्रियता और अक्खड़पन निम्नांकित लोकोक्तियों से संकेतित हैं :

सगरे के सौंव, भोजपुर के नौंव।
सभी जगहों के सौ (आदमी) के बराबर भोजपुर के केवल नौ (आदमी) होते हैं।
आरे जिला घर बा, कौन बात के डर बा।
आरा जिला में घर है, (इसलिए) किस बात का डर है।
तसलवा तोर कि मोर।
तसला तुम्हारा कि मेरा।[3]
प्र० जबरदस्ती किसी की सम्पत्ति हथियाना।
भागलपुर के भगोलिया, कहलगाँव के ठग।
पटना के देवालिया तीनों नामजद॥
सुनि पावे भोजपुरिया, तऽ तीनों के तूरे रग॥
भागलपुर के भगोड़े, कहलगाँव के ठग और पटना के दिवालिये प्रसिद्ध हैं। भोजपुरी लोग पता पाने पर इनकी नस तोड़ डालते हैं।
चूना चाम कुटले से ठीक होला।
चूना और चमड़ा कूटने से ही ठीक होते हैं। अर्थात्, दुष्ट दलित होने पर ही रास्ते पर आते हैं :
मरद मुए नाँव के, नीमरद मुए पेट के।
मर्द (वीर) नाम के लिए और कायर पेट के लिए मरते हैं।

---

१. लिंग्विस्टिक सर्वे ऑव इण्डिया, जिल्द १, भाग १, पृ० १५१, कलकत्ता, १९२७ ई०।
२. दे० राहुल सांकृत्यायन : 'बानभट्ट अउर राजा के भेंट' शीर्षक निबन्ध, भोजपुरी पत्रिका, अगस्त, १९५५ ई० में संगृहीत।
३. इस लोकोक्ति के पीछे एक कथा है। कहते हैं कि जब कभी भोजपुरी लोग दूसरे की सम्पत्ति पर जबरदस्ती अधिकार करना चाहते हैं, तब 'तसलवा तोर कि मोर', अर्थात् यह सम्पत्ति तुम्हारी है कि मेरी—कहकर पूछ-ताछ करते हैं। ऐतिहासिक लोकोक्तियों के प्रसंग में इस लोकोक्ति पर विस्तारपूर्वक विचार किया गया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाठी हाथ के, भाई साथ के ।

हाथ की लाठी और साथ रहनेवाला भाई, काम देते हैं ।

सई पुराचरन ना एकहुरा चरन ।

सौ पुरश्चरण (दुश्मन को मारने के लिए किया जानेवाला मन्त्रपाठ) लाठी के हूरे (लाठी का नीचेवाला मोटा अंश) की चोट के बराबर होता है ।

भोजपुरी लोग भाग्य से अधिक कर्म पर भरोसा रखते हैं। ये किसी भी प्रतिकूल परिस्थिति को भाग्य का फल मानने की अपेक्षा उसे अपने कर्मों के सहारे अनुकूल बनाना अधिक पसन्द करते हैं। कभी-कभी प्राकृतिक प्रकोप—जैसे बाढ़, अग्निकाण्ड, बीमारी, अकाल आदि इन्हें कर्म का कठोर पाठ पढ़ाते हैं। ऐसी भीषण परिस्थितियों का ये डटकर मुकाबला करते हैं। अकाल से मुक्ति पाने के लिए ये अपना घरबार छोड़कर हजारों की संख्या में देश और विदेश के दूरस्थ और दुर्लभ स्थानों की यात्रा करते हैं। ऐसी जगहों में जाकर ये बड़ी ईमानदारी से अपनी रोजी-रोटी की व्यवस्था करते हैं। अब भी विदेश के फिजी, ट्रिनीडाड, मॉरिशस, दक्षिण अफ्रीका, केनिया, बर्मा आदि देशों में भोजपुरी बस्तियाँ हैं। इन विदेशी स्थानों में भी ये भोजपुरी लोग अपनी सभ्यता और संस्कृति नहीं छोड़ते। एक तरह से ये विदेशों में भारतीय धर्म और संस्कृति के सबल प्रचारक हैं।

भोजपुरी लोग भूत और भविष्य की व्यर्थ चिन्ता नहीं करते। ये 'वर्त्तमान' और 'प्रत्यक्ष' में अधिक विश्वास रखते हैं। इसी विश्वास के कारण इनमें उपयोगितावादी दृष्टिकोण प्रमुख हो गया है। यही कारण है कि ऊपरी तड़क-भड़क और कृत्रिमता में भोजपुरियों की विशेष रुचि नहीं है। समासतः, ये भोजपुरी लोग व्यास के इस कथन 'प्रत्यक्षदर्शी लोकानां सर्वदर्शी भवेन्नरः' के साक्षी हैं। भोजपुरी लोगों के कर्मवाद और स्वालम्बन के आदर्श और उपयोगितावादी दृष्टिकोण निम्नांकित लोकोक्तियों में प्रतिबिम्बित होते हैं :

जब ले करीं बाबू-बाबू, तब ले चलाईं आपन काबू ।

जितना समय 'बाबू-बाबू' कहकर विनती करने में लगाया जाता है, उतने ही समय में खुद काम करके सफलता पाई जा सकती है।

करम के छोट होखे तऽ होखे, देह के छोट ना ।

भाग्यहीन हो भी जाय, तो कोई बात नहीं; किन्तु कद में छोटा नहीं होना चाहिए।

चलनी में दूध दूहे, करम के दोस ।

(वह) चलनी में दूध दूहता है और भाग्य को दोष देता है।

कि अपना बोअले, कि अपना जमले ।

या तो अपने बोने से (खुद खेती करने से) या अपनी ही सन्तान से सच्चा सुख मिलता है।

धाइ के चलबि ना, हारि के गिरबि ना ।

न तो दौड़कर चलूँगा, न हारकर गिरूँगा।

चाल चले सादा जे निबहे बाप-दादा ।

ऐसी रहन-सहन अपनानी चाहिए, जो कुल-मर्यादा के अनुकूल हो और जिसका निर्वाह बहुत दिनों तक हो सके।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जेहे हाथ, उहे साथ ।
जो हाथ में रहता है, उसे ही साथ का समझना चाहिए ।
काम पियारा होला, चाम ना ।
काम प्यारा होता है, चाम (रूप) नहीं ।
ए सूरदास ! करहिया में घी ना कड़कड़ाता—कहें आगें आवे तब तऽ जानी ।
(कथोपकथन) ओ सूरदास ! कड़ाही में घी कड़कड़ा रहा है—(उत्तर) किन्तु वह घी मेरे आगे आवे, तब तो जानूँ ।

भोजपुरी-भाषा-भाषी सरल और सादा जीवन व्यतीत करते हैं। यहाँ के लोगों का खान-पान और रहन-सहन सभी में सादगी दीख पड़ती है। धोती, कुरता और पगड़ी—भोजपुरियों की सामान्य पोशाक है। 'सतुवा और लिट्टी' (सत्तू और सत्तू-भरी मोटी रोटी), भोजपुरियों का प्रिय भोजन है। किन्तु इस वेश-भूषा, रहन-सहन और खान-पान में भी भोजपुरियों को वीरता आभासित होती है। प्रायः भोजपुरी, चुस्त धोती, ठेहुने तक का कुरता और सुगठित, किन्तु पिछले छोर से फहराती हुई पगड़ी धारण करते हैं। भोजपुरी जवानों की मूँछें सघन और नुकीली होती हैं। भोजपुरी क्षेत्र को उपर्युक्त भोजन-सामग्री के बनाने और खाने में देर और दिक्कत नहीं होती। भोजपुरी लोग यात्रा, मेले-ठेले, श्रम की वेला और लड़ाई-भिड़ाई के समय में भी सत्तू को गठरी साथ रखते हैं।

भोजपुरियों को अपनी जन्मभूमि के प्रति अनन्य श्रद्धा और अभिमान है। ये परदेश या विदेश में भी रहकर अपनी जन्मभूमि की सभ्यता और भाषा को नहीं भूलते। वे चाहे कलकत्ता के जूट मिलों में काम करें या अलीपुर में पुलिस-सेवा के लिए प्रशिक्षण लें या अफ्रिका के किसी क्षेत्र में रहें—वे इन सभी जगहों में भी अपनी होली-चैती, रामचरितमानस का पाठ, आल्हा-ऊदल के गीत, विरहे आदि का गान अवश्य करते हैं। साथ ही, "दो या दो से अधिक भोजपुरी-भाषा-भाषी, चाहे वे कितने ही ऊँचे या नीचे ओहदे पर हों, कहीं भी, कभी जब आपस में मिलते हैं, तब अपनी भोजपुरी को छोड़कर किसी दूसरी भाषा में बातचीत नहीं करते।"[१]

भोजपुरी लोग बड़े जिन्दादिल और मस्त होते हैं। निर्भीक और सरल होने के कारण ये हमेशा खुश रहते हैं। इनका पारिवारिक और सामाजिक जीवन आमोद-प्रमोद से भरा होता है। विवाह, पर्व, त्योहार, मेला और अन्य उत्सवों के अवसरों पर—भोजपुरियों की मस्ती विशेष रूप से देखते बनती है। ऐसा लगता है कि हमेशा खुश रहनेवाला इनका यह गुण भोजपुरी मिट्टी की ही विरासत है। भोजपुरी क्षेत्र के साधु-सन्त, वीर पुरुष और विद्वानों के व्यक्तित्व और कृतित्व में भी मस्ती, फक्कड़पन, विचार-स्वातन्त्र्य और तेजस्विता, प्रकट होती है। भोजपुरी महापुरुषों में कबीरदास उल्लेख्य हैं। भोजपुरी-संस्कार ने भी कबीर को मस्ती, फक्कड़ाना स्वभाव और सब कुछ को झाड-फटकार चल देनेवाला तेज दिया। दरअसल, प्रकारान्तर से कबीर ने अपनी इन पंक्तियों—'कबिरा खड़ा बाजार में लिये लुकाठी हाथ, जो घर फूँके आपना चले हमारे साथ', 'मन ना रँगाये रँगाये जोगी कपड़ा', 'लोका मति के भोरा', 'जो कासी तन तजै कबीरा, तौ रामहि कहा निहार रे', 'मैं कहता हौं आँखिन देखी, तू कहता कागद की लेखी'—में भोजपुरी संस्कृति को ही अभिव्यक्त किया है।

१, भोजपुरी के कवि और काव्य, सम्पादक का मन्तव्य, पृ० ५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी लोगों की मस्ती और आनन्दी स्वभाव, शादी-ब्याह, पर्व-त्योहार आदि विशेष अवसरों पर खूब दीख पड़ता है। इन अवसरों पर भोजपुरी खूब खुलकर खाते-पीते, उछलते-कूदते और गाते-बजाते हैं। भो० में तो होली के रंग में बूढ़ों तक को भी समेट लिया जाता है। एक भो० लोकोक्ति है :

भर फागुन बुढऊ देवर लागेलन।

पूरे फागुन तक बूढ़ों के साथ भी देवर का (मजाक का) सम्बन्ध रहता है। गाने-बजाने के शौकीन प्रायः सभी भोजपुरी होते हैं। श्रम के क्षणों में भी ये भोजपुरी गीत नहीं भूलते। भोजपुरी क्षेत्र की कुछ जातियाँ गाने-बजाने और नाचने में विशेष रुचि लेती हैं। उदाहरण के लिए, धोबियों द्वारा गाये जानेवाले एक विरहे की कड़ी दी जा रही है :

नागपुर ठनकेला नाग रे नगीनियाँ, सरग में ठनकेला चिल्होर,
पटहा पर ठनकेला धोबी के बलकवा, बिरहा गावेला घनघोर।

एक रे धोबी के दुइ रे बलकवा, एक साँवर एक गोर,
एक पर लादे रामा चुनि बीन बिरहा, एक पर मानर अवरु ढोल।

ओ नागिन! नागपुर में नाग ठनकता है और आकाश में चील। 'पटहा' (नगाड़ा) पर धोबी का बच्चा ठनक कर घनघोर (खूब) बिरहा गाता है। एक धोबी के दो बालक हैं —एक साँवला है और दूसरा गोरा, एक पर वह बीन-चुनकर बिरहे की गठरी लादता है और दूसरे पर मानर (ढोल के किस्म का आदिवासियों का प्रसिद्ध बाजा) और ढोल।

समासतः, भोजपुरी-भाषा-भाषी निर्भीक, व्यावहारिक, जिन्दादिल, ईमानदार और स्वाभिमानी होते हैं। इतिहास ने भी इन्हें दाय के रूप में सभी परिस्थितियों में हँसकर जीवन गुजारने की सीख दी है। भोजपुरी संस्कार पर संक्षिप्त और सुन्दर ढंग से प्रकाश डालनेवाली भानुकवि-रचित एक कविता का अंश इस प्रकार है :

घूरिया चढ़ावे जाने, पीठ ना देखावे जाने,
डीठ ना लगावे जाने, आन के बहुरिया।
आन पर लड़ावे जाने, जान के ना जान जाने,
चले के उतान जाने, तान के लउरिया।
बानी मरदानी जाने, बात साफ-साफ जाने,
पट सेनी राँड़ ना तऽ भर बाँह चुरिया।
हठ में हमीर, महावीर वीर लठ में जे,
बान्हे लट पट कनपट्टी ले पगरिया।
खाँटी बनल 'भानु' माटि के कसल,
इहे खाँटी हऽ जवान उमजल भोजपुरिया।

(भोजपुरी) धूल चढ़ाना जानता है, पीठ दिखाना नहीं जानता। वह दूसरों की बहू-बेटियों पर दृष्टि नहीं लगाता। वह जान को जान न समझकर उसे आन पर लड़ा देता है। वह लाठी तानकर और छाती निकालकर चलना जानता है। वह पुरुष की वाणी जानता है। वह साफ-साफ बातें जानता है या तो बाँहों में भरकर चूड़ी हो—नहीं तो चूड़ी फोड़कर राँड़ होना चाहिए (लो०)। वह हठ में हमीर है और महावीर है लाठी चलाने में। वह कनपट्टी तक 'लटपट पगड़ी' बाँधता है। इसकी गरदन मोटी और शरीर सुगठित होता है—ऐसा भानु कवि कहते हैं। दर्प में जागते हुए भोजपुरी जवान का यही रूप है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय १

लोकोक्तियों का विषय-वस्तुपरक वर्गीकरण तथा उसके आधार पर उनका अध्ययन

१. १ लोकोक्तियों का वर्गीकरण और उनका आधार
१. २ इतिहास-सम्बन्धी
१. ३ प्राकृतिक भूगोल-सम्बन्धी
१. ४ समाज-सम्बन्धी
१. ५ जात-पाँत-सम्बन्धी
१. ६ कृषि-सम्बन्धी
१. ७ नीति और लोक-व्यवहार-सम्बन्धी
१. ८ धर्म और दर्शन-सम्बन्धी
१. ९ लोक-विश्वास-सम्बन्धी
१.१० स्वास्थ्य-सम्बन्धी
१.११ व्यंग्य-विनोदगर्भित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१. १. लोकोक्तियों का वर्गीकरण और उनका आधार

हर भाषा की लोकोक्तियों की तरह भोजपुरी लोकोक्तियाँ भी प्लवमान साहित्य के रूप में प्राप्त हैं। इसलिए, विधिवत् अध्ययन के लिए इनका संकलन और वर्गीकरण आवश्यक है। यहाँ भोजपुरी लोकोक्तियों का वर्गीकरण और उनके आधार पर विचार करना अभीष्ट विषय है।

सामान्यतः तीन आधारों पर लोकोक्तियों का वर्गीकरण किया गया है। ये आधार हैं—(अ) विषय-वस्तु, (आ) प्रकरण और (इ) रूप।

(अ) विषय-वस्तु :

लोकोक्तियों का एक वर्ग ऐसा है, जिसमें वाच्यार्थ ही अभिप्रेत अर्थ होता है। जैसे—जाति, कृषि, प्रकृति, पशु-पक्षी आदि सम्बन्धी लोकोक्तियाँ। पर, दूसरे वर्ग में ऐसी लोकोक्तियाँ हैं, जिनमें व्यंग्यार्थ प्रमुख होता है और वाच्यार्थ गौण। लोकोक्तियों की 'विषय-वस्तु' के अन्तर्गत उपर्युक्त दोनों अर्थों का समावेश हो जाता है। इसलिए, लोकोक्तियों के वर्गीकरण के लिए 'विषय-वस्तु' को आधार मानना सुकर होगा। इस क्षेत्र में कार्य करनेवाले विद्वानों ने भी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इसी आधार को अपनाया है।[१] 'बिहार प्रोवर्ब्स' के सम्पादक जॉन क्रिश्चियन ने इसी आधार पर लोकोक्तियों का वर्गीकरण इस प्रकार से किया है[२] :

प्रथम वर्ग : मनुष्य की विफलता, त्रुटि और दोष-सम्बन्धी।

द्वितीय वर्ग : सांसारिक ज्ञान-व्यवहार, उपयुक्तता और चातुरी तथा चेतावनी एवं परामर्श-सम्बन्धी।

तृतीय वर्ग : कुछ जातियों और वर्गों की विशिष्टता और विशेषता-सम्बन्धी।

चतुर्थ वर्ग : सामाजिक और नैतिक विषय, धार्मिक रीति और लोक-विश्वास-सम्बन्धी।

पंचम वर्ग : कृषि और ऋतु-सम्बन्धी।

षष्ठ वर्ग : पशु और सामान्य जीव-जन्तु-सम्बन्धी।

---

१. दे० डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय : हिन्दी-साहित्य का बृहत् इतिहास, षोडश भाग, पृ० १३६-१४०; बैजनाथ सिंह 'विनोद' : भोजपुरी लोक-साहित्य, पृ० १७६ ; रामनरेश त्रिपाठी : ग्राम-साहित्य, भाग २, पृ० १-३ ; डॉ० कृष्णलाल हंस : निमाड़ी और उसका साहित्य, पृ० ३७२ ; डॉ० एस्० जी० चैम्पियन : रेसियल प्रोवर्ब्स, पृ० २३।

२. दे० बिहार प्रोवर्ब्स, पृ० ३५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किन्तु, कई कारणों से जॉन क्रिश्चियन अपने निर्धारित लीक पर नहीं चल पाये हैं। संक्षेप में उनके वर्गीकरण के अभाव ये हैं :

१. कई स्वतन्त्र विषय-वस्तुवाली लोकोक्तियाँ असम्बद्ध वर्ग में रखी गई हैं। उदाहरणार्थ :

कतनो कर जोगा टोनाँ बबुआ बैठिहैं उहे कोनाँ। (पृ० ३५९)

कितना भी जोग या टोटका क्यों न करो, लड़का फिर भी उसी कोने में बैठेगा।

कौआ कपूर खइले उज्जर होला। (पृ० ३६३)

दोनों लोकोक्तियों में क्रमशः स्वभाव और संस्कार की अपरिवर्त्तनशीलता की ओर संकेत है। किन्तु, सम्पादक ने इन्हें उपर्युक्त चतुर्थ वर्ग में रखा है।

२. कहीं-कहीं लोकोक्तियों के अभीष्ट अर्थ की जगह उनके गौण अर्थ (वाच्यार्थ) को अकारण प्रमुखता दे दी गई है। उदा०

कानी गैया के अलगे बथान। (पृ० ४९६)

कानी गाय का तो अलग स्थान ही रहता है।

दूर के ढोल सोहावन। (पृ० ३८२)

दूर का ढोल सुहावना होता है।

पहली लोकोक्ति प्रवृत्तिसूचक है और दूसरी लोकोक्ति अपने प्रयोग के प्रचलित प्रकरण के आधार पर 'यथार्थ' और 'आदर्श' के अन्तर की संकेतिका है। किन्तु, सम्पादक ने इन्हें क्रमशः चतुर्थ और षष्ठ वर्ग में रखा है।

३. द्वितीय वर्ग में विवेचित चातुरी-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ अर्थ की दृष्टि से प्रथम वर्ग में आती हैं। इसी तरह द्वितीय वर्ग की ही चेतावनी और परामर्श-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ चतुर्थ वर्ग (नैतिक) में रखी जा सकती हैं।

४. वर्गीकरण में धार्मिक एवं नैतिक दृष्टिकोण प्रमुख हैं। इसका एक कारण सम्पादक का 'मिशनरी' कार्य से सम्बद्ध होना भी है।

जॉन क्रिश्चियन अपने वर्गीकरण की उलझनों और अभावों को सकारण स्वीकार करते हैं।[1] लेकिन, ये अभाव प्रायः लोकोक्तियों के संश्लिष्ट व्यक्तित्व और विदेशी सम्पादक के भाषाज्ञान की कठिनाई से ही पैदा हुए हैं। फिर भी, पहली बार बिहारी लोकोक्तियों का वैज्ञानिक पद्धति से किया हुआ उनका यह वर्गीकरण अधिकांशतः ग्राह्य ही कहा जायगा।

वर्ण्य वस्तु के आधार पर राजस्थानी कहावतों का वर्गीकरण डॉ० कन्हैयालाल सहल ने भी किया है।[2] बहुत अंशों में डॉ० सहल का वर्गीकरण, जॉन क्रिश्चियन के वर्गीकरण का ही परिमार्जित रूप है। डॉ० सहल ने 'वर्ण्य विषय को लेकर'[3] राजस्थानी कहावतों का वर्गीकरण इस प्रकार किया है :

१. ऐतिहासिक कहावतें; २. स्थान-सम्बन्धी कहावतें; ३. राजस्थानी कहावतों में समाज का चित्र : (क) जाति-सम्बन्धी कहावतें, (ख) नारी-सम्बन्धी कहावतें ; ४. शिक्षा, ज्ञान और साहित्य-सम्बन्धी कहावतें : (क) शिक्षा-सम्बन्धी कहावतें, (ख) मनोवैज्ञानिक कहावतें,

---

१. दे० बिहार प्रोवर्ब्स, भूमिका, पृ० ३५।
२. दे० डॉ० कन्हैयालाल सहल : राजस्थानी कहावतें—एक अध्ययन, पृ० ५८-५९।
३. दे० वही, पृ० २१३-२१४।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ग) राजस्थानी साहित्य में कहावतें; ५. धर्म और जीवन-दर्शन : (क) धर्म और ईश्वर-विषयक कहावतें, (ख) लोक-विश्वास-सम्बन्धी कहावतें, (ग) जीवन-दर्शन-सम्बन्धी कहावतें; ६. कृषि-सम्बन्धी कहावतें; ७. वर्षा-सम्बन्धी कहावतें और ८. प्रकीर्ण कहावतें।

उपर्युक्त वर्गीकरण में भी किंचित् परिवर्त्तन की अपेक्षा है। वर्ग चार का 'ग' 'राजस्थानी साहित्य में कहावतें' अपने-आप में एक स्वतन्त्र विषय है, जिसकी किसी और वर्ग में चर्चा होनी चाहिए। इसी तरह वर्ग पाँच में विभाजित नीति-सम्बन्धी कहावतें धर्म के अन्तर्गत होकर भी अपने व्यंग्यार्थ की दृष्टि से एक अलग वर्ग का विषय हो सकती हैं। फिर भी, डॉ० सहल ने लोकोक्तियों के वर्गीकरण में जिस वैज्ञानिक पद्धति के निर्वाह करने की कोशिश की है, वह अध्येताओं के लिए नेत्रोन्मीलन का कार्य करती है।

(आ) प्रकरण :

इस आधार पर लोकोक्तियों का वर्गीकरण नहीं के बराबर हुआ है।[1] यह स्पष्ट है कि लोकोक्तियों का सोद्देश्य और सप्रसंग प्रयोग होता है। अतः, लोक-मानस के चेतन और अवचेतन स्तरों को अनुप्रेरित और प्रभावित करनेवाले विविध विषयों का अध्ययन लोकोक्तियों के प्रकरणों के आधार पर किया जा सकता है। लोकोक्तियों के प्रकरण या प्रसंग यह संकेत देते हैं कि प्रकृति, जीवन और मनुष्य के किस व्यापार, परिस्थिति और आचरण के सम्बन्ध में प्रयोक्ता सजग, सचेत और परिचित हैं और होना भी चाहते हैं। इसलिए, प्रकरण के आधार पर लोकोक्तियों का वर्गीकरण अपेक्षित है।

(इ) रूप :

रूप की दृष्टि से उन सारे तत्त्वों का अध्ययन होना चाहिए, जो लोकोक्तियों के निर्माण और प्रयोग के प्रयोजन में युक्त हैं। इन तत्त्वों के अध्ययन की सम्भावना प्रायः सभी विद्वानों ने प्रकट की है;[2] परन्तु डॉ० सहल प्रथम भारतीय अध्येता हैं, जिन्होंने रूप की दृष्टि से राजस्थानी कहावतों का विस्तृत अध्ययन किया है।[3] किन्तु, इनके इस वर्गीकरण में साहित्यशास्त्रीय दृष्टिकोण प्रमुख है।

'रूप' पर आधारित लोकोक्तियों का वर्गीकरण करना कठिन और अनुपयोगी है। यह इसलिए कि लोकोक्तियों की अभिव्यंजना में एक साथ कई तत्त्वों का सहयोग रहता है। प्रायः सभी लोकोक्तियों में लय, अलंकार और शब्द-सामर्थ्य के उदाहरण मिलते हैं। इसलिए, लोकोक्तियों का रूपात्मक वर्गीकरण सम्भव नहीं, तो कठिन अवश्य है। जिन विद्वानों ने लोकोक्तियों का इस तरह वर्गीकरण किया है, वह अवैज्ञानिक है। लोकोक्तियों का रूपात्मक अध्ययन सर्वथा उपयोगी है। विद्वानों ने भ्रमवश लोकोक्तियों के 'रूपात्मक अध्ययन' को 'रूपात्मक वर्गीकरण' शीर्षक के अन्तर्गत प्रस्तुत किया है। उदाहरणार्थ, डॉ० सहल का राजस्थानी लोकोक्तियों का 'रूपात्मक वर्गीकरण' लिया जा सकता है।[4]

---

१. 'बिहार प्रोवर्ब्स' के सम्पादक जॉन क्रिश्चियन ने लोकोक्तियों के विवेचन में उनके प्रकरणों का भी उल्लेख किया है, किन्तु उन्होंने 'प्रकरण' के आधार पर लोकोक्तियों का वर्गीकरण नहीं किया है।

२. दे० इ० आर० ए०, भाग १०, पृ० ४१२; एस्० डि० एफ्० एम्० एल्०, दूसरा भाग, पृ० ६१२।

३. दे० डॉ० कन्हैयालाल सहल : राजस्थानी कहावतें—एक अध्ययन, पृ० ५८।

४. दे० राजस्थानी कहावतें : एक अध्ययन, विषयानुक्रमणिका, पृ० ख-ग।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषय-वस्तु और प्रकरण के आधार पर भोजपुरी लोकोक्तियों का वर्गीकरण इस प्रकार किया गया है :

(क) विषय-वस्तु के आधार पर : इतिहास-सम्बन्धी, प्राकृतिक भूगोल-सम्बन्धी, सामाजिक जीवन-सम्बन्धी, जात-पाँत-सम्बन्धी, कृषि-सम्बन्धी, नीति और लोक-व्यवहार-सम्बन्धी, धर्म और दर्शन-सम्बन्धी, लोक-विश्वास-सम्बन्धी और स्वास्थ्य-सम्बन्धी।

(ख) प्रकरण के आधार पर : वाच्यार्थ के प्रकरण और व्यंग्यार्थ के प्रकरण।

जिन लोकोक्तियों के वाच्यार्थ और अभिप्रेत अर्थ में भिन्नता नहीं होती—उनके प्रकरण भी स्पष्ट रहते हैं। उदाहरण के लिए, वर्षा-सम्बन्धी लोकोक्तियों को लिया जा सकता है। किन्तु, व्यंग्य-विनोदगर्भित अधिकांश लोकोक्तियों के वाच्यार्थ गौण होते हैं और व्यंग्यार्थ मुख्य। ऐसी लोकोक्तियों का प्रकरण उनके व्यंग्यार्थ के आधार पर निश्चित किया जा सकता है। इसीलिए, अध्येता ने व्यंग्य-विनोद-सम्बन्धी लोकोक्तियों का वर्गीकरण उनके प्रयोग के प्रकरण के आधार पर किया है।

लोकोक्तियाँ अपने अक्षय भाण्डार और विशिष्ट स्वरूपों के कारण वर्गीकरण की दृष्टि से बड़ी टेढ़ी खीर सिद्ध हुई हैं। अतः, इस सम्बन्ध में वैज्ञानिक पद्धति अपनाने का दावा करने के बदले उसे यथाशक्ति ग्रहण और कार्यान्वित करने का प्रयत्न करना चाहिए।

भोजपुरी लोकोक्तियों में प्रतिबिम्बित भोजपुरी क्षेत्र के जीवन और भाषा की विशिष्टताओं का अध्ययन ही प्रस्तुत ग्रन्थ का मुख्य उद्देश्य है। विशेषतः, इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर अध्येता ने लोकोक्तियों का वर्गीकरण किया है।

१. २. इतिहास-सम्बन्धी

लोकोक्तियाँ परम्परा की संवाहिका और ऐतिहासिक चेतना की प्रतिनिधि होती हैं। इसलिए इनमें किसी देश या जनपद के राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास की प्रचुर सामग्री संचित रहती है। लोकोक्ति-साहित्य भी इतिहास के मुख्य अंगों—मुद्रा, अभिलेख और भग्नावशेष की भाँति परम्परा के उद्घाटन में विशेष रूप से सहायक होता है।[1]

सामान्यतः लोकोक्तियों में उन्हीं घटनाओं, व्यक्तियों और स्थानों के उल्लेख होते हैं, जिनसे जनता को वर्षों से आशा, उत्साह और गौरव अथवा आक्रोश और आतंक की अनुभूतियाँ प्राप्त होती रहती हैं। इसीलिए, लोकोक्तियों में प्राप्त ऐतिहासिक सामग्री या प्रसंग, अपने अस्तित्व के साथ, लोकचित्त के चढ़ाव-उतार और आकर्षण-विकर्षण की ओर भी संकेत करते हैं।

इतिहास-सम्बन्धी लोकोक्तियों का वर्गीकरण इस प्रकार किया गया है : क. घटना-सम्बन्धी, ख. व्यक्ति-सम्बन्धी, ग. स्थान-सम्बन्धी और घ. बाह्य सम्पर्क और प्राचीन परिस्थिति-सम्बन्धी।

---

१. "In ancient times men knew perfectly well between truth and falsehood, as abundant proverbs and sayings show. It was natural therefore that they should discriminate what was true and preserve it; and historical tradition must be considered in this light."—Pargiter : Ancient Indian Historical Traditions, p. 3.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(क) घटना-सम्बन्धी : किसी महत्त्वपूर्ण घटना का प्रभाव चिरकालिक और बहुव्यापी होता है। ऐसी घटनाओं के विश्लेषण से राजनीतिक उथल-पुथल, सामाजिक संस्कार और व्यक्तिगत उपलब्धियों और अभावों की सूचना मिलती है। समासतः, ये घटनाएँ ऐतिहासिक खोज और दृष्टिकोण के लिए सुदृढ आधार सिद्ध होती हैं। घटना-सम्बन्धी लोकोक्तियों के उदाहरण इस प्रकार हैं :

१. भागलपुर के भगोलिया, कहलगाँव के ठग,
पटना के देवालिया, तीनों नामजद।
सुन पावे भोजपुरिया तऽ तीनों के तूरे रग।

भागलपुर के भगोड़े, कहलगाँव के ठग और पटना के दिवालिये—ये तीनों नामजद होते हैं। अगर इनका पता भोजपुरियों को मिलता है, तो वे इन तीनों की नसें ढीली कर देते हैं।

भागलपुर बिहार-राज्य के प्रमुख नगरों में एक है। इस नगर के नामकरण के पीछे जनश्रुतियों[1] के अतिरिक्त एक घटना का भी उल्लेख किया जाता है। श्री डी० सी० गांगुली ने परमारवंशीय राजा लक्ष्मणदेव के अंग और कलिंग-विजय-अभियानों का उल्लेख करते हुए लिखा है—"सम्भव है कि लक्ष्मणदेव ने बंगाल पर आक्रमण करते समय ही अंग की सेना से संग्राम किया हो अथवा यह भी हो सकता है कि लक्ष्मणदेव ने रामपाल के अधीनस्थ अंग की सेना को आगे बढ़ने में रुकावट डालने पर विनष्ट करके भगा दिया हो।"[2] उपर्युक्त उद्धरण के आधार पर दुर्गाशंकरप्रसाद सिंह ने अनुमान लगाया है कि : "प्रथम तो इसी पराजय के कारण अंग के इस प्रदेश के निवासियों का नाम भगोलिया (भागनेवाला) पड़ गया हो और बाद में भगोलियों के बसने के कारण नगर का नाम 'भागलपुर' पड़ गया हो।"[3] किन्तु, दुर्गाशंकर-प्रसाद सिंह का यह अनुमान खण्डित हो जाता है, जबकि हमें राजा लक्ष्मणदेव के राज्यकाल (१०७७—११२० ई०) के पूर्व होनेवाले विक्रमशिला के आचार्य दीपंकर की जन्मभूमि के रूप में 'भंगलपुर' (भागलपुर) का उल्लेख एक भोटिया-ग्रन्थ में प्राप्त होता है।[4] इस 'भंगलपुर' का बाद में भागलपुर हो जाना सहज अनुमेय है।

उपर्युक्त लोकोक्ति का 'कहलगाँव' बिहार-राज्य के भागलपुर जिले का एक प्राचीन और प्रसिद्ध स्थान है।[5] कहलगाँव के ठगों के बारे में कोई लिखित प्रमाण नहीं मिलता है। इस सम्बन्ध में दो-एक अर्द्ध-ऐतिहासिक प्रमाण प्राप्त होते हैं। कहा जाता है कि मुगलकाल में अकबर के प्रसिद्ध सेनापति राजा मानसिंह ने, भारतवर्ष के पूर्वी क्षेत्रों में होनेवाले विद्रोहों को

---

१. यह कहा जाता है कि भागलपुर एक समय में भगेलू या भगलूखाँ नामक पहलवान का अखाड़ा था। यह स्थान लूट-मार के लिए बहुत बदनाम था। जनश्रुति बताती है कि उपर्युक्त भगेलूखाँ के नाम पर भागलपुर का नाम पड़ा।

२. दुर्गाशंकरप्रसाद सिंह : भोजपुरी के कवि और काव्य, पृ० ११-१२ पर उद्धृत 'हिस्ट्री ऑव दि परमार डाइनेस्टी' का अनूदित अंश।

३. भोजपुरी के कवि और काव्य, भूमिका, पृ० १२।

४. विस्तृत विवरण के लिए देखिए राहुल सांकृत्यायन : पुरातत्त्व-निबन्धावली, पृ० २७२-२७३।

५. कहलगाँव-सम्बन्धी पुरातात्त्विक विवरण के लिए देखिए 'आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑव इण्डिया', न्यू इम्पीरियल सीरिज, जिल्द २, पृ० २०४-२०५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दबाने के लिए, अपनी सैन्य यात्रा के क्रम में कहलगाँव में डेरा डाला था।[१] यहीं मानसिंह ने स्थानीय कारीगरों से भावी युद्ध के लिए कुछ तलवार और ढाल बनाने को कहा। कहते हैं कि कारीगरों ने एक सप्ताह के अन्दर कई हजार सुन्दर तलवारें बनाकर तैयार कर दीं। किन्तु, लड़ाई के मैदान में वे सारे हथियार भीतर से लकड़ी और ऊपर से चमकीले टीन के बने सिद्ध हुए। इसपर राजा मानसिंह बड़े क्रुद्ध हुए। उन्होंने कहलगाँववालों को इस छल के लिए दण्ड भी दिया।

कहलगाँव के ठगों के सम्बन्ध में एक और अनुमान लगाया जा सकता है। कहलगाँव गंगा के तट पर स्थित होने के कारण एक प्रसिद्ध बन्दरगाह के रूप में भी प्रसिद्ध रहा है। बंगाल और अन्य अगल-बगल के सामुद्रिक क्षेत्रों के लिए यहीं से व्यापारिक सामानों का निर्यात होता था। अतः, स्वभावतः उस समय कहलगाँव में माल-असबाबों की लूट-पाट करनेवाले डाकुओं या लुटेरों की भी बन आती होगी। सम्भवतः, इन लुटेरों के ही कारण कहलगाँव के ठग कालान्तर में प्रसिद्ध हुए होंगे।

लोकोक्ति में पटना के दिवालियों की भी चर्चा है। पटना आरम्भ से ही भारतवर्ष का राजनीतिक और व्यापारिक महत्त्व का केन्द्र रहा है।[२] हो सकता है, कभी पटना के व्यापारी दिवालिये के रूप में भी प्रसिद्ध रहे हों।[३] दिवाले के दो कारण होते हैं—घाटे के कारण व्यापार में लगी पूँजी का मारा जाना और दूसरों की देन चुकाने से बचने के लिए व्यापारियों का जान-बूझकर दिवाले की घोषणा करना। भोजपुरी इन दगाबाज दिवालियों की नसें तोड़ने को उतारू हों, तो कोई आश्चर्य नहीं; क्योंकि आरम्भ से भोजपुरी क्षेत्र अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध रहा है।

इस लोकोक्ति का एक पाठान्तर भी प्राप्त होता है।[४] इसमें 'भोजपुरिया' शब्द की जगह 'छपरहिआ' (छपरा-निवासी) शब्द आता है। छपरा बिहार के सारन जिले का मुख्य नगर है। छपरा और इसके पार्श्ववर्त्ती क्षेत्रों के प्राकृतिक और सामुदायिक संस्कार पर अपने विचार प्रकट करते हुए डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखा है : "इस भू-भाग का इतिहास ही निरन्तर बनते और मिटते रहने का है। इसलिए यहाँ के निवासियों में एक प्रकार का 'कुछ परवा नहीं' का भाव विकसित हो गया है। एक अजीब प्रकार की मस्ती और निर्भीकता इनलोगों के चेहरे पर दिखती है।"[५]

---

१. दे० राहुल सांकृत्यायन : अकबर, अध्याय २० (बंगाल-बिहार-विजय), पृ० २८६।

२. दे० डॉ० जगदीश नारायण सरकार : पटना इट्स एनवायरस इन दि सेवेनटीन्थ सेनच्यूरी—ए स्टडी इन इकोनॉमिक हिस्ट्री, ज० बि० रि० सो०, जि० ३४, भाग पहला और दूसरा।

३. "In Patna they say 'ओकर टाट उलटल है'—in allusion to the custom amongst bankers of a bankrupt turning up one corner of his mat and sitting on it, as a notice of his condition. ..... In connection with this it may be mentioned that Patna is famous for its bankrupts."—Sir G. Grierson : Bihar Peasant Life, p. 425.

४. उपर्युक्त लोकोक्ति के तीसरे चरण का पाठभेद—'सुन पावे छपरहिआ, त तीनों के तूरे रग'।

५. डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी : अशोक के फूल, पृ० ३५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसलिए, छपरहिये, अगर भगोड़ों, ठगों और दिवालियों के विनाश करने में अगुआ रहे हों, तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। छपरा ही नहीं, पूरा भोजपुरी क्षेत्र वीर और साहसी रहा है। भोजपुरी सैनिकों की वीरता का संकेत करते हुए राहुलजी ने लिखा है : ".....अवधी और भोजपुरी दोनों के बोलनेवाले लड़ने-भिड़ने में सबसे आगे रहनेवाले थे। अँगरेजों ने इसी गुण को पहचानकर उन्हें सबसे पहले बड़ी संख्या में अपनी फौजों में सिपाही रखा। इन्हीं के बल पर वह काबुल और माण्डले तक धावा बोलते रहे। सन् १८५७ ई० में जब ये लोग बिगड़ गये, तब एक बार अँगरेजों के (को) चारों ओर अँधेरा दिखलाई पड़ने लगा था।"[१]

घोड़े पर हौदा, हाथी पर जीन;
जल्दी से भाग गइल वारन हेस्टीन।

घोड़े पर हौदा और हाथी पर जीन रखकर वारेन हेस्टिंग्ज तेजी से भाग गया।

यह लोकोक्ति अँगरेजी-राज्यकालीन एक महत्त्वपूर्ण घटना पर आधारित है। इस लोकोक्ति का उल्लेख डॉ० वस्टीड ने 'इकोज ऑव ओल्ड कलकत्ता'[२] में किया है। सन् १७७३ ई० में बनारस-राज पूर्णतः ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन में ले लिया गया। इस समय बनारस-राज के महाराजा चेतसिंह थे। चेतसिंह एक चालाक, किन्तु प्रजाहितैषी शासक थे। ये तत्कालीन बड़े लाट वारन हेस्टिंग्ज के भी प्रिय पात्र थे। सदा ही ये नियमानुसार सरकार को कर दे देते थे। सन् १७७८ ई० के लगभग अँगरेजी-सरकार को तत्कालीन युद्ध के खर्च के लिए अधिक धन और सेना की आवश्यकता हुई।[३] इस सिलसिले में वारन हेस्टिंग्ज ने चेतसिंह से सहायता के रूप में पाँच लाख रुपये[४] और दो हजार घुड़सवार माँगे; किन्तु राजा ने दो हजार घुड़सवारों की जगह एक हजार घुड़सवार भेजे। इससे चेतसिंह पर हेस्टिंग्ज क्रुद्ध हो गया। उसने राजा पर पचास लाख रुपये का जुरमाना कर दिया। राजा यह रकम देने को तैयार नहीं हुए। इसपर राजा को चेतावनी देने के लिए हेस्टिंग्ज बनारस की ओर चला। उसने सन् १७८१ ई० के १६ अगस्त को चेतसिंह को कैद करने के लिए तीन अँगरेज-अफसर और सेना की दो कम्पनियाँ भेजीं। चेतसिंह अपने महल में कैद कर लिये गये। फलस्वरूप, चेतसिंह की सेना और काशी की जनता क्रुद्ध हो गई।[५] लोगों ने बड़ी संख्या में महल के चारों बगल इकट्ठा होकर सशस्त्र क्रान्ति

---

१. श्रीराहुल सांकृत्यायन : अकबर, पृ० ३।

२. इस ग्रन्थ का उल्लेख डॉ० सम्पूर्णानन्द ने अपने निबन्ध 'भारत के ब्रिटिशकालीन राजनीतिक जीवन में काशी का स्थान' (हंस, वर्ष ४, संख्या १२, पृ० २३) में किया है।

३. दे० डि० ग० ऑव यू० पी०, ओ० आ०, बनारस, इलाहाबाद, १९११ ई०, पृ० २०२-२०३।

४. "On the first intelligence of the war with France in July 1778, it was resolved in Council, that Raja Cheit Singh should be required to contribute an extra-ordinary subsidy for the expense which this new exigency had imposed on our government, and the sum was limited to five lacks of rupees for the current year."—Warren Hastings : Narrative of the late Transactions at Benares, p. 3.

५. क्रान्ति के विस्तृत विवरण के लिए दे० वारेन हेस्टिंग्ज : नैरेटिव्स ऑव दि लेट ट्रानजेक्शन्स ऐट बनारस, पृ० ४१।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर दी। बनारस शहर में स्थित अँगरेजी-कम्पनियाँ नष्ट कर दी गईं। सैकड़ों की संख्या में अँगरेजी सेना के सिपाही मौत के घाट उतार दिये गये।[1] कहा जाता है कि परिस्थिति का संकेत करते हुए उस समय चेतसिंह के सरदारों ने वारेन हेस्टिंग्ज को पकड़ने की सलाह दी। किन्तु, चेतसिंह अन्तःपुर और अँगरेजी-राज्य की गतिविधि को दृष्टि में रखते हुए इस सम्बन्ध में कुछ निश्चित नहीं कर सके।[2] वे एक दिन इमारत से चुपचाप भाग निकले और लतीफपुर होते हुए विजयगढ़ के दुर्ग में जा छिपे। इधर हेस्टिंग्ज भी जनता और चेतसिंह के सिपाहियों के विद्रोह से बहुत घबरा गया था। इसीलिए, भयभीत होकर हेस्टिंग्ज अपनी बची-खुची सेना के साथ बनारस से भागकर चुनार के किले में जा छिपा।

इस घटना के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए डॉ० सम्पूर्णानन्द ने लिखा है : 'वारेन हेस्टिंग्ज को भागने का अवसर न दे दिया गया होता, तो आज न केवल बनारस, किन्तु समस्त भारत के भविष्य की कुंजी उस समय बनारसवालों के हाथ में थी, यह नहीं कह सकते कि उसका उपयोग ठीक से हुआ या नहीं।"[3]

ई त ऽ गाँधी बाबा के सुराज हो गइल।

प्र० किसी बहुत दिनों से लगी हुई आशा की पूर्त्ति में विलम्ब होना।

इस लोकोक्ति में प्रयुक्त सुराज (स्वराज्य) शब्द का प्रसंगानुसार अर्थ है—आन्दोलन। यह प्रसिद्ध घटना है कि स्वाधीनता-आन्दोलन के क्रम में भारतीय जनता ने गान्धीजी के नेतृत्व में सन् १९२० ई० की मई में असहयोग-आन्दोलन किया था।[4] गान्धीजी नहीं चाहते थे कि तत्कालीन भारत-सरकार प्रथम विश्व महायुद्ध में भाग ले। इसके कई कारण थे। एक तो उस युद्ध में अँगरेज तुर्की-साम्राज्य पर चढ़ाई कर रहे थे, जो भारतीय नेताओं को पसन्द नहीं था। दूसरे कि अँगरेजों की ओर से युद्ध का सारा खर्च भारतीय खजाना ही वहन कर रहा था। इसलिए, अँगरेजी-शासन के विरोध में असहयोग-आन्दोलन शुरू हुआ। किन्तु, अँगरेजों ने बड़ी चालाकी और क्रूरता से गान्धीजी के नेतृत्व में चल रहे इस आन्दोलन को दबा दिया। गान्धीजी और उनके अनुयायियों को जेल में बन्द कर दिया गया। भोली-भाली जनता की दृष्टि में उस समय गान्धीजी तथा अन्य नेताओं का बार-बार जेल जाना और अँगरेजों द्वारा आन्दोलन का दबाया जाना, असफलता का सूचक था। ऐसा लगता है कि उपर्युक्त लोकोक्ति जन-सामान्य की इसी धारणा को लेकर बनी होगी।

---

१. एम्० ए० शेरिंग ने (द सेक्रेड सिटी ऑव हिन्दूज, पृ० २०७) मरे हुए और घायल लोगों की संख्या दो सौ पाँच बतलाई है।

२. यह प्रामाणिक तथ्य है कि चेतसिंह, राजा बलवन्तसिंह की एक क्षत्रिय-जाति की पत्नी से उत्पन्न सन्तान थे। बलवन्तसिंह की मृत्यु के बाद चेतसिंह ने चालाकी से और तत्कालीन गवर्नर जेनरल वारेन हेस्टिंग्ज को खुशामद करके, अपने को पिता का वैध उत्तराधिकारी घोषित किया था। किन्तु, अन्तःपुर में बराबर ही चेतसिंह के विरुद्ध कुचक्र चलते ही रहते थे। हेस्टिंग्ज द्वारा कैद होने पर चेतसिंह ने बनारस से भागने की जो योजना बनाई, उसके पीछे चेतसिंह के द्वेषी सगे-सम्बन्धियों और दरबारियों का भी हाथ था।

३. डॉ० सम्पूर्णानन्द : 'भारत के ब्रिटिशकालीन राजनीतिक जीवन में काशी का स्थान', हंस, वर्ष ४, संख्या १२, पृ० २४।

४. दे० जयचन्द्र विद्यालंकार : इतिहास-प्रवेश, ५वाँ संस्करण, पृ० ८४९—८५०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई तऽ जरमनवाँ के लड़ाई हो गइल ।

यह तो जर्मन की लड़ाई हो गई ।

प्र० किसी घटना-चक्र का बहुकालिक होना ।

यह लोकोक्ति भोजपुरी जनता के द्वितीय विश्व महायुद्ध-सम्बन्धी अनुभव की देन है । भो० क्षे० के लोगों को भी द्वितीय महायुद्ध के विध्वंसात्मक परिणामों का सामना करना पड़ा था । मिस्र, इराक और भारत के पूर्वीय सीमान्तों पर जर्मनी-जापान से मोर्चा लेनेवाली सैनिक दस्तियों में भोजपुरी सैनिकों की पर्याप्त संख्या थी । साथ ही, जापानियों के द्वारा रंगून और मणिपुर पर बम बरसाये जाने पर प्राण लेकर घर की ओर भागनेवालों में भोजपुरी व्यापारी और मजदूर भी थे । अणुबम के निर्माण में अचानक सफलता मिल जाने के कारण इस युद्ध में इंगलैण्ड, फ्रांस और अमेरिका की विजय हुई । पर इस युद्ध में बहुत दिनों तक और युद्ध के विविध स्थलों पर, जर्मनी और जापान अपेक्षाकृत अधिक शक्तिशाली सिद्ध हुए थे । इसलिए भो० क्षे० में यह लड़ाई 'जरमनवाँ' की लड़ाई के नाम से प्रसिद्ध हुई । उन दिनों भारतवर्ष में सर्वत्र आतंक के बादल छाये हुए थे । देश के पूर्वी इलाकों पर जापान ने एक प्रकार से कब्जा कर लिया था । कलकत्ता पर भी बम गिरने की आशंका बनी रहती थी ।[१] उस समय ऐसा लगता था कि यह लड़ाई कभी बन्द नहीं होगी । इस युद्ध की कालदीर्घता ही उपर्युक्त लोकोक्ति में ध्वनित है ।

(ख) व्यक्ति-सम्बन्धी : इतिहास के नियामक कारणों में व्यक्ति का भी प्रमुख स्थान है ।[२] ऐतिहासिक व्यक्तियों के पौरुष, कर्मठता, त्याग, उदारता आदि गुण जन-समूह के लिए स्मरणीय और अनुकरणीय होते हैं । ऐसे व्यक्ति अपनी लोकप्रियता के कारण सार्वदेशिक भी हो जाते हैं ।

लोक-साहित्य के सभी अंगों में ऐतिहासिक व्यक्तियों का वर्णन हुआ है । भोजपुरी लोकोक्तियों में महाराजा भोज, विक्रमादित्य, सिकन्दर आदि के नाम तुलना और उदाहरण के प्रसंगों में आये हैं । इन व्यक्ति-सम्बन्धी लोकोक्तियों के अध्ययन से यह पता चलता है कि ये महापुरुष अपने किस शौर्य और पराक्रम के कारण लोकमानस में सुरक्षित रहे । नीचे व्यक्ति-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ दी जा रही हैं :

कहाँ राजा भोज अउरू कहाँ भोजुआ तेली ।

कहाँ राजा भोज और कहाँ भोजुवा तेली (दोनों की तुलना नहीं हो सकती) ।

प्र० दो व्यक्तियों या वस्तुओं में अधिक अन्तर के कारण तुलना की सम्भावना न होना ।

---

१ एक भोजपुरी लोकगीत में द्वितीय विश्व महायुद्ध का बड़ा स्वाभाविक वर्णन हुआ है । उस गीत की कुछ कड़ियाँ इस प्रकार हैं :

"अब ना बाँची कलकाता विधाता सुनलऽ । अब ना बाँची.....
धनि जरमनि जपान, तुरलसि ब्रिटिश के शान,
हिटलर के नाम सुनि जीव घबड़ाता । विधाता सुनलऽ.....
+ +
सिंगापुर जीतके, बरमा रंगून जीतके, आई के चहुँपल कलकाता,
विधाता सुन लऽ, अब ना बाँची कलकाता ।"

—डॉ० विश्वनाथ प्रसाद द्वारा सम्पादित 'भोजपुरी के कवि और काव्य', पृ० ५६६ पर उद्धृत शिवनन्दन मिश्र द्वारा रचित गीत का अंश ।

२. 'मनुष्य की जीवन नैया खेने के लिए राष्ट्र की अपेक्षा व्यक्ति-विशेष की सृजनशक्ति, सजगता और महानता को ही मैं बहुत उपयोगी समझता हूँ ।'—अल्बर्ट आइन्सटीन, 'नवनीत' हिन्दी मासिक, अगस्त, १९६१ ई०, पृ० २२ ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'भोजप्रबन्ध' में राजा भोज की दानशीलता, त्याग और वीरता का सविस्तर परिचय मिलता है। भारतवर्ष के प्रायः सभी जनपदों में महाराजा भोज, नानी की कहानी में और कथा-कोविदों की उक्तियों में ऊँचा सिंहासन पाते आ रहे हैं। उपर्युक्त भोज-सम्बन्धी लोकोक्ति भी किंचित् परिवर्त्तन के साथ भारतवर्ष की प्रायः सभी भाषाओं में मिलती है।[१]

भो० लो० में राजा भोज का उल्लेख होना तो स्वाभाविक है। इस प्रदेश का नामकरण महाराजा भोज से सम्बद्ध है। किन्तु वे भोज, जिनका इस क्षेत्र के नाम से सम्बन्ध है, देश और काल की दृष्टि से कौन हैं—इसके सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। राहुल सांकृत्यायन ने भोजपुर के इतिहास पर विचार करते हुए लिखा है कि : ".....शान्तनशाह के दादा द्वितीय भोज या भारत के प्रतापी नरपति महाराज भोज प्रथम के नाम पर यह बस्ती बसाई गई।"[२] शाहाबाद गजेटियर के अनुसार भी भोजपुर नाम की दो बड़ी बस्तियों के नाम मालवा के राजा भोज के नाम पर ही पड़े हैं।[३] जॉन बीम्स[४], जॉर्ज ग्रियर्सन[५], डॉ० उदयनारायण तिवारी[६] आदि भाषाविदों ने भी उपर्युक्त मत का ही प्रतिपादन किया है। किन्तु, कुछ विद्वान् ऐसे भी हैं, जो यह मानते हैं कि भोजपुर का नामकरण विश्वामित्र के यजमान राजा भोज के नाम पर हुआ है।[७] ये भोज एक वैदिक-कालीन राजा थे। ये यज्ञ-याग और दान-पुण्य के लिए बड़े प्रसिद्ध थे। किन्तु, राहुल सांकृत्यायन के द्वारा प्रतिपादित राजा भोज को, जिनके पक्ष में मध्यकालीन और आधुनिक ऐतिहासिक आधार अधिक हैं, किसी-न-किसी रूप में भोजपुर नगर और क्षेत्र के नामकरण से सम्बद्ध मानना अपेक्षाकृत अधिक स्वीकार्य है।

लोकोक्ति का 'भोजुआ तेली' ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं मालूम पड़ता है। ऐसा लगता है कि लो० के एक पाठान्तर[८] में आया 'गँगुआ' तेली की जगह जनता ने 'भोजुआ' तेली को अनुप्रास के मोहवश भोज के सम्मुख ला खड़ा किया है। कई विद्वानों ने गँगुआ तेली को ऐतिहासिकता सिद्ध करने की कोशिश की है। 'महाराष्ट्र वाक्-सम्प्रदाय-कोश' के विद्वान् सम्पादकद्वय रामकृष्ण दाते और गणेश कर्वे ने यह सिद्ध किया है कि कहावत का राजा भोज 'मुंज भोज' है और गँगुआ तेली 'गांगेय'।[९] इस लो० से सम्बद्ध एक

---

१. उदा० (क) राजा भोज सम कहाँ गाँगू तेली कहिए।—सुन्दरविलास।
(ख) क्या राजा भोजने क्या गांगली धायन (तेलिन)।—गुजराती।
(ग) कहाँ राजा भोज कहाँ टूटा तेली।—बुन्देलखण्डी।
(घ) कहाँ राजा भोज और कहाँ गँगा तेली।—कोंकणी।
(ङ) कत राजा भोज कत गंगिया तेलिनी।—बँगला।

२. राहुल सांकृत्यायन : भोजपुरी लोकगीत में करुण रस, भूमिका, पृ० ४-६।

३. शाहाबाद ग०, गवर्नमेण्ट प्रेस, पटना, १९२४ ई०, पृ० १५८।

४. जे० आर० ए० एस्०, भाग ३, १८६८ ई०, पृ० ४८३—४८५।

५. एल्० एस्० इ०, भाग, ५, सन् १९०२ ई०, पृ० ४०।

६. भोजपुरी भाषा और साहित्य, प्रथम भाग पृ० ४।

७. डॉ० ए० पी० बनर्जी शास्त्री : प्रोसिडिंग्स ऑव सिक्स्थ ऑल इण्डिया ओरिएण्टल कॉनफ्रेन्स; पटना, दिसम्बर, १९३० ई०, पृ० १८६।

८. काहाँ राजा भोज, काहाँ गँगुआ तेली। (पाठान्तर)

९. दे० महाराष्ट्र वाक्-सम्प्रदाय-कोश, विभाग पहला, पृ० २४९-५०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रचलित संस्कृत-लोककथा का उल्लेख श्री पी० के० गोडे ने किया है। राजा भोज और गँगुआ या गंगू तेली की ऐतिहासिकता पर स्वर्गीय डॉ० हीरालाल और मौलाना नियाज फतेहपुरी[1] ने भी क्रमशः इतिहास और जनश्रुति के आधार पर राजा भोज और 'गँगुआ' तेली की ऐतिहासिकता पर अपने विचार प्रकट किये हैं। किन्तु, यह स्पष्ट है कि 'राजा भोज' और 'गँगुआ' तेली-सम्बन्धी इस लोकोक्ति की ऐतिहासिकता विवादास्पद है। 'महाराष्ट्र वाक्-सम्प्रदाय-कोश' के सम्पादकों द्वारा दिये गये प्रमाण अर्द्ध-ऐतिहासिक हैं। श्री पी० के० गोडे द्वारा उद्धृत भोज-विषयक कथा जनश्रुति पर आधारित प्रतीत होती है। डॉ० हीरालाल और नियाज साहब की मान्यताओं में कल्पना का अंश अधिक है। अतएव, डॉ० कन्हैयालाल सहल का यह कथन मान्य है कि "राजा भोज' और 'गंगू' तेली-विषयक जो भिन्न-भिन्न मत-मतान्तर मिलते हैं, उनके सम्बन्ध में अभी निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। यह इतिहास के आचार्यों की गवेषणा का विषय है।"[2]

अनकर धन पर बिकरम राजा।

दूसरे के धन पर विक्रम राजा बने हुए हैं।

प्र० दूसरे की कमाई पर इठलाना।

लोकोक्ति के 'बिकरम राजा' से इतिहास-प्रसिद्ध विक्रमादित्य का संकेत मिलता है। किन्तु, महाराजा विक्रमादित्य के देश, काल, नाम, उपाधि आदि के सम्बन्ध में विवादों का पोथा तैयार है। अभी यह भी तय नहीं हो पाया है कि 'विक्रमादित्य' विरुद है या विरुदधारी व्यक्ति। पर अभिलेखों, मुद्राओं और प्राचीन साहित्य में प्राप्त सामग्री (गाथासप्तशती, कथासरित्सागर और जैनसाधु मेरुतुंगाचार्य की कृतियों) के आधार पर अधिकांश इतिहासकारों ने यह सिद्ध किया है कि प्रथम विक्रमादित्य मालवाधिपति हैं, उनका काल ईसा-पूर्व ५७ है और इन्होंने ही शकों को खदेड़कर सबल मालव-गणतन्त्र की स्थापना के उपलक्ष्य में प्रसिद्ध विक्रम-संवत् की स्थापना की।[3] जनश्रुति भी विक्रमादित्य को एक पराक्रमी, उदार और 'मोतियनवाला'[4] सम्राट् मानती है। इसीलिए, सम्भवतः परवर्त्ती युग में महत्त्वाकांक्षी राजे भी अपने को विक्रम की उपाधि से विभूषित करने लगे। विक्रम-विरुदधारी राजाओं में मगध-सम्राट् चन्द्रगुप्त द्वितीय, स्कन्दगुप्त, यशोधर्मन, हर्षवर्द्धन, भोजपुरी सार्थवाह, वीर हेमू[5] आदि प्रसिद्ध रहे हैं। इनमें से चन्द्रगुप्त द्वितीय, स्कन्दगुप्त और वीर हेमू का भोजपुर-क्षेत्र से बहुत दिनों तक प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष सम्पर्क रहा है। अतः, यह सम्भावना प्रकट की जा सकती है कि भो० भाषा-भाषियों ने अपनी लो० में क्षेत्रीय विक्रमादित्यों का स्मरण किया है।

१-२. दोनों विद्वानों के कथनों के लिए द्रष्टव्य :
डॉ० कन्हैयालाल सहल : राजस्थानी कहावतें—एक अध्ययन, पृ० ११२ पर उद्धृत अंश।

३. दे० विक्रम-स्मृति-ग्रन्थ (वि० सं० २००१) में संगृहीत, क्रमशः डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी द्वारा लिखित 'सम्राट् समुद्रगुप्त' (पृ० १८३) और डॉ० राधाकुमुद मुखर्जी द्वारा लिखित 'चन्द्रगुप्त द्वितीय' (पृ० १९७), शीर्षक निबन्ध।

४. विक्रमादित्य के प्रति एक प्रचलित लोकोद्गार में कहा गया है : 'धन्य रे राजा बीर बिकरमाजित, जेकरा बगइचा में मोतियन के झार फरे।'

५. दे० (क) डॉ० राजबली पाण्डेय : हेमचन्द्र विक्रमादित्य (विक्रम-स्मृति-ग्रन्थ, २००१, पृ० २३२)।
(ख) राहुल सांकृत्यायन : अकबर, पृ० ६—८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जेकर बहिन अन्नर, सेकर भाई सिकन्नर ।[1]

जिसकी बहन अन्दर है, उसका भाई सिकन्दर के समान है। अर्थात्, जिसकी बहन गृहस्वामिनी है (होती है) उसका (बहन के यहाँ) सिकन्दर की तरह सम्मान होता है।

उपर्युक्त लोकोक्ति में प्रयुक्त 'सिकन्नर' सिकन्दर का विकसित रूप है। भोजपुरी लोक-समुदाय का सिकन्दर के साथ परिचय इतिहास और जनश्रुति के माध्यम से हुआ होगा। यह कहा जाता है कि मगध-सम्राट् नन्द की वीरता और सैन्य-शक्ति के भय से आतंकित होकर सिकन्दर ने भारत के उत्तरी-पूर्वी भाग पर चढ़ाई करने का साहस नहीं किया। यह स्पष्ट है कि नन्द की सेनाओं में भोजपुरी सैनिक भी पर्याप्त संख्या में होंगे। अतः, प्रकारान्तर से सिकन्दर को आतंकित करने का श्रेय भोजपुरी क्षेत्र को भी है। किन्तु, भोजपुरी लोग स्पष्टवादी और तटस्थ विचारक होते हैं। इसका प्रमाण उपर्युक्त लोकोक्ति है। इसमें सिकन्दर को वीर और शक्तिशाली व्यक्ति के उपमान के रूप में याद किया गया है। इससे भोजपुरी क्षेत्र में सिकन्दर की लोकप्रियता का भी पता चलता है।

धन राजा मेदनियाँ, घर-घर बाजे मथनियाँ ।

राजा मेदनी धन्य हैं, जिनके राज्य में घर-घर मथनी बजती है। यहाँ मथनी बजने का अर्थ है—सुख-सम्पदा का होना।

उपर्युक्त लोकोक्ति पलामू जिले के प्रसिद्ध प्रजापालक राजा मेदनीराय की प्रशस्ति-स्वरूप है। चेरोवंशी मेदनीराय (सन् १६५९ ई० से सन् १६७२ ई० तक) बिहार के पलामू जिले के एक प्रसिद्ध राजा थे।[2] ये बड़े वीर और उदार राजा थे। इनके समय में मुसलमानों ने कई बार पलामू पर चढ़ाई की। मेदनी-वंशीय राज्य सन् १८१४ ई० में समाप्त हो गया, जबकि इसे अन्तिम रूप से अँगरेजी-शासन के अधीन कर लिया गया।

खुदा करे गुण्डे पकड़े जायँ, लाल खाँ के खूँटे में जकड़े जायँ ।

खुदा ऐसा करे कि ये सभी गुण्डे पकड़ लिये जायँ और लाल खाँ के खूँटे में जकड़कर बाँधे जायँ।

---

१. पाठा० 'जेकर भाई अन्नर, सेकर भाई सिकन्नर।'
डॉ० उदयनारायण तिवारी ने इस लोकोक्ति का अर्थ इस प्रकार दिया है : 'जिसका भाई अन्न-वाला है, वह सिकन्दर के समान है। 'हिन्दुस्तानी' (पत्रिका) अप्रैल, १९३९ ई०, पृ० २०३। डॉ० तिवारी ने 'अन्नर' का अर्थ अन्नवाला लगाया है। किन्तु, अध्येता द्वारा उद्धृत लोकोक्ति में प्रयुक्त 'बहिन' की संगति में 'अन्नर' का 'अन्दर' अर्थ सटीक लगता है। इस अर्थ में व्यंजना भी अधिक है। साथ ही, भोजपुरी भाषा की प्रकृति के अनुसार अन्नर का 'अन्दर' से विकसित होना अपेक्षाकृत अधिक ग्राह्य है।

२ "Medni Rai—was the most prominent chief of the dynasty (chero dynasty). After defeating the Maharaja of Chotanagpur, he penetrated as far as Orissa, and made himself lord paramount of the Southern portion of Gaya and major part of Hazaribagh and Sirguja."—List of Ancient monuments protected under act VII. of 1904 in province of Bihar and Orissa (Govt. of India Central Publication branch, Calcutta, 1931), pp. 200-201.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह लोकोक्ति काशी और उसके आस-पास के गाँवों में प्रचलित है। इस उक्ति से ईस्ट इण्डिया कम्पनी-कालीन शासन-व्यवस्था पर प्रकाश पड़ता है। बनारस के प्रसिद्ध ऐतिहासिक 'ढाई कँगूरे की मस्जिद' के पास लाल खाँ का चौहद्दा है। यह चौहद्दा काशी के तत्कालीन राजा बलवन्तसिंह के समय के नामी नायब लाल खाँ का निवास-स्थान था। कहते हैं कि ये दुष्टों को पकड़वाकर खूँटों के बीच जकड़कर बाँध देते थे। जबतक इन गुण्डों के पैर खूब दुखने नहीं लगते थे, तबतक वे छोड़े नहीं जाते थे। आज भी इस नायब की कब्र भारत-सरकार के संरक्षण में राजघाट के किले में स्थित है।

अमर सिंह के कम्मर टूटल, कुँवर सिंह के बाँहीं ;
पूछ आवऽ अमर सिंह से लड़िहैं कि नाहीं ।।

अमरसिंह की कमर टूट गई और कुँवरसिंह की बाँह, जरा अमरसिंह से पूछ तो आओ कि वे लड़ेंगे या नहीं।

ढाल, छुरा, तरुवारि, गइल कुँवर के साथ ;
ढोल, मँजीरा खँजड़ी, रहल उजैनी हाथ ।।

ढाल, छुरा और तलवार—ये सभी अस्त्र-शस्त्र कुँवरसिंह के साथ ही चले गये, अब उनके ही वंशज उज्जैनी राजपूतों के हाथ में ढोल, मँजीरा और खँजड़ी रह गई हैं।

उपर्युक्त दोनों लोकोक्तियाँ विश्व-विश्रुत सन् १८५७ ई० में घटित प्रथम भारतीय स्वाधीनता-आन्दोलन के वीर सेनानी बाबू कुँवरसिंह और उनके ही भाई अमरसिंह के अदम्य साहस, आश्चर्यपूर्ण रण-कौशल और देशभक्ति की सूत्रात्मक व्याख्याएँ हैं। कुँवरसिंह भोजपुर की वीर-प्रसूता भूमि के श्रेष्ठ लाल थे। ये भोजपुर के जातीय गुण के, जो टूटना सिखलाता है, पर झुकना नहीं, उज्ज्वल प्रमाण थे। बाबू साहब ने अस्सी वर्ष की उम्र में भी "....बुढ़ौती के भार की परवाह न कर केवल बिहार में ही नहीं, बिहार की सीमा के बाहर भी अत्यन्त दृढता से विदेशी सत्ता का मुकाबला कर कई स्थानों पर विजय का यश प्राप्त किया था।....परिपक्व युद्धनीति और कुशल योद्धा के रूप में बाबू कुँवरसिंह विभिन्न परिस्थितियों के अनुकूल अपनी गतिविधि और युद्धनीति को क्षिप्र गति से बदलते रहे और दुश्मनों की सुव्यवस्थित युक्तियों को व्यर्थ कर उन्हें किंकर्त्तव्यविमूढ कर देते थे।"[1] ऐसे वीर का यश, काल और देश को लाँघ गया, किन्तु शरीर एक दिन काल-कवलित हुआ ही।

कुँवरसिंह की मृत्यु की घटना इस प्रकार है—२२ अप्रैल, सन् १८५८ ई० को कुँवरसिंह, ससैन्य अपनी मातृभूमि जगदीशपुर की ओर लौट रहे थे। रास्ते में गंगा को पार करने के लिए बलिया (उत्तरप्रदेश का पूर्वी जिला) से दस मील पूरब शिवपुर घाट पर बाबू साहब पहुँचे।[2] कुँवरसिंह यहाँ तो गंगा पार कर गये; किन्तु गंगा पार करते हुए एक तोप के गोले से उनकी बाँह क्षत-विक्षत हो गई और इस बारे में यह कहा जाता है कि उस वृद्ध सरदार ने अपनी ही तलवार से क्षत-विक्षत बाँह काटकर, गंगा के पवित्र जल में अन्तिम भेंट के रूप में चढ़ा दी।[3] सन् १८५८ ई० के २२ अप्रैल को कुँवरसिंह ससैन्य जगदीशपुर पहुँच गये।

---

१. डॉ० कालीकिंकर दत्त : कुँवरसिंह-अमरसिंह, प्राक्कथन।
२. डॉ० कालीकिंकर दत्त : कुँवरसिंह-अमरसिंह, पृ० १९३ पर उद्धृत सन्दर्भ।
३. सुरेन्द्रनाथ सेन : अठारह सौ सत्तावन (भारत-सरकार का प्रकाशन), पृ० २७०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यहाँ बाबू साहब अपनी बाँह खोकर भी बहुत दिनों तक अँगरेजों से लड़ते रहे, किन्तु २४ अप्रैल को लेफ्टिनेण्ट गैण्ड की फौज पर विजय प्राप्त करने के तीन दिन बाद वे मर गये।[1]

कुँवरसिंह मर गये, पर उनके वीर भाई अमरसिंह जिन्दा थे। अमरसिंह भी स्वाधीनता-संग्राम में प्रायः कुँवरसिंह के साथ थे।[2] अपने भाई के मरने के बाद ये बहुत दिनों तक जगदीशपुर के आसपास अँगरेजी-सेना से लोहा लेते रहे। अमरसिंह छापामार युद्ध के लिए बड़े प्रसिद्ध थे। किन्तु, नाना साहेब की फौज के सेनापति का भार ग्रहण करने के लिए तराई (नेपाल)-प्रदेश में इन्हें (अक्टूबर, १८५९ ई०) जाना पड़ा। दुर्भाग्यवश, सन् १८५९ ई० के दिसम्बर के अन्त में वे महाराज जंगबहादुर के द्वारा पकड़ लिये गये। संग्रहणी रोग से पीडित होने के कारण अमरसिंह को गोरखपुर के अस्पताल में सन् १८६० ई० की २६ जनवरी को भेजा गया और वहीं उनकी मृत्यु हो गई। लोकोक्ति में प्रयुक्त 'कमर टूटना' एक मुहावरेदार प्रयोग है, जिसका अर्थ होता है—असहाय हो जाना। कुँवरसिंह को खोकर अमरसिंह असहाय ही हो गये थे।

उपर्युक्त लोकोक्ति उन अस्त्र-शस्त्रों की याद दिलाती है, जो कि सन् सत्तावन के आन्दोलन में वीर नेताओं और सेनाओं के हाथ में शोभते थे। कुँवरसिंह घोड़े पर चढ़कर हाथ में तलवार और ढाल लेकर युद्ध के लिए प्रस्थान करते थे। उस समय विद्रोहियों के द्वारा पलीते-वाली बन्दूकें और छोटी-मोटी पिस्तौलें भी प्रयोग में लाई जाती थीं। किन्तु, अधिकांश लोग तलवार, बरछे आदि हथियारों का इस्तेमाल करते थे। यही कारण है कि लोकोक्ति में तलवार-ढाल आदि का ही उल्लेख हुआ है। स्वाधीनता-आन्दोलन के बाद तत्कालीन शासकों ने जगदीशपुर के आसपास के गाँवों से नृशंसतापूर्ण ढंग से सैकड़ों की संख्या में हथियार छीने।[3]

(ग) स्थान-सम्बन्धी : राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और भौगोलिक कारणों से किसी प्रदेश के नगर, जनपद और गाँव प्रसिद्ध हो जाते हैं। प्रसिद्ध स्थान लोकोक्तियों को भी आकृष्ट करते हैं। लोकोक्तियों में स्थानों की ऐतिहासिकता और तत्सम्बन्धी जन-सामान्य की धारणाएँ संचित रहती हैं।

लोकोक्तियों में उल्लिखित प्रदेशों, नगरों और ग्रामों को क्षेत्र के आधार पर दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—(अ) भोजपुरी और (आ) भोजपुरीतर।

(अ) भोजपुरी

भोजपुर : बावन गली, तिरपन बाजार, दिया जरे छप्पन हजार।

भोजपुर नगर में बावन गलियाँ और तिरपन बाजार थे और यहाँ छप्पन हजार दीपक जलते थे।

भोजपुर नगर की प्राचीन स्थिति के सम्बन्ध में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद रहा है। किन्तु, अधिकांश देशी और विदेशी इतिहासकारों, पुरातत्त्वज्ञों और भाषाविदों ने यह स्वीकार कर

---

१. डॉ० कालीकिंकर दत्त : कुँवरसिंह-अमरसिंह, पृ० १९५।

२. ऐसा कहा जाता है कि आरम्भ में अमरसिंह कुँवरसिंह का साथ नहीं देना चाहते थे। परन्तु, बाद में वे भ्रातृप्रेम और देशप्रेम के कारण युद्ध में उतरे तत्सम्बन्धी विस्तृत विवरण के लिए देखिए—डॉ० कालीकिंकर दत्त : कुँवरसिंह-अमरसिंह पृ० ११९-१२०।

३. छीने हुए हथियारों की सूची के लिए देखिए—डॉ० कालीकिंकर दत्त : कुँवरसिंह-अमरसिंह, परिशिष्ट १२, पृ० २७८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिया है कि प्राचीन भोजपुर नगर, शाहाबाद जिले के बक्सर सबडिवीजन में स्थित डुमराँव स्टेशन से दो मील उत्तर, वर्त्तमान पुराने और नये भोजपुर गाँव के आसपास ही कहीं था। इस नगर को क्रमशः मालवा के धारवंशीय राजा देव और रुद्रप्रताप नारायण ने बसाया था। प्रस्तुत लोकोक्ति में भोजपुर नगर के जिस प्राचीन वैभव और ऐश्वर्य का वर्णन किया गया है, वह प्राप्त प्रमाणों के आधार पर अर्द्ध-ऐतिहासिक सिद्ध होता है। वर्त्तमान गंगा नदी तक फैले भोजपुरदह, पुराने टीले, गड्ढे आदि के आधार पर पुरातत्त्वज्ञों और इतिहासकारों ने यह अनुमान लगाया है कि प्राचीन भोजपुर नगर विस्तृत और विशाल था। एक प्रचलित जनश्रुति के अनुसार यह नगर चौदह कोस में बसा हुआ था। यहाँ राजा भोजदेव ने मन्दिर, महल, रंगस्थल, सरोवर, नवरत्नमहल[1] और सभा-भवन बनवाये थे। नवरत्नमहल तो आज भी अपनी नष्ट-भ्रष्ट अवस्था में स्थित है।

भोजपुर में जइहऽ जन, जइहऽ तऽ रहिहऽ जन, रहिहऽ तऽ खइहऽ जन।
खइहऽ तऽ सूतिहऽ जन, सूतिहऽ तऽ टोइहऽ जन, टोइहऽ तऽ रोइहऽ जन॥[2]

भूलकर भी भोजपुर मत जाना, जाना भी तो वहाँ रहना नहीं, रहना भी तो खाना नहीं और खाना भी तो सोना नहीं और सोना भी तो टटोलना नहीं और टटोलना भी तो रोना नहीं।

ऐसा लगता है कि इस लोकोक्ति का जन्मदाता कोई भुक्तभोगी होगा, जिसे किसी यात्रा के क्रम में भोजपुर में ठहरना पड़ा होगा और बटमारों या चोरों का शिकार बनना पड़ा होगा। ये बटमार वैदिक काल[3] से आजतक सक्रिय रहे हैं। सम्भवतः, किसी समय भो० क्षे० में भी इन लुटेरों का प्रभुत्व रहा होगा। इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि प्राचीन काल में भोजपुर और इसके आस-पास के नगरों और ग्रामों से होकर महापथ गुजरते थे।[4] अवश्य ही, इस पथ से गुजरने के समय, सार्थवाह, तीर्थयात्री, राजकीय हरकारे और विद्यार्थी यदा-कदा भोजपुर में भी पड़ाव डालते ही होंगे और स्वभावतः इन पथिकों को भी बटमारों और लुटेरों का सामना करना पड़ता होगा।

आज भी बटमार और उचक्के, इस इलाके में पर्व, उत्सव आदि के विशेष अवसरों पर लगनेवाले सामान्य और पशु आदि के विशेष मेलों या घाट-बाट में परदेशी व्यापारियों और लोगों को तंग करते हैं।[5] भोजपुरी लोग शरीर से हृष्ट-पुष्ट होते हैं। ये कभी-कभी अपनी शक्ति का

---

१. नवरत्नमहल की ऐतिहासिकता के लिए देखिए—ब्लॉचमैन : 'महम्मडन हिस्टोरियन्स ऑन छोटानागपुर', इण्डियन एण्टीक्वेरी, भाग २।

२. पाठा० (क) भोरे भोजपुर जइहऽ मत, जइहऽ तऽ रहीहऽ मत रहीहऽ तऽ खइहऽ मत।
खइहऽ तऽ सुतीहऽ मतऽ, सुतीहऽ तऽ टोइहऽ मत, टोइहऽ तऽ रोइहऽ मत॥
(ख) बलिया भोजपुर जइहऽ मत, दुअरे बइर लगइहऽ मत।
पुलिस मितइन करिहऽ मत, मेहरारु से भेद बतइहऽ मत।

३. अथर्ववेद (१२।१।४७) में बटमारों का उल्लेख इस प्रकार हुआ है : 'ये ते पन्थानो बहवो जनायना : रथस्य वर्त्मानसश्च यातवे। ये संवरन्त्युभये भद्र पापास्तं पन्थानं जयेमान मित्र-मतस्करम् यच्छिवं तेन नः मृड।'

४. दे० डॉ० मोतीचन्द्र : सार्थवाह, भूमिका, पृ० ३।

५. घाट-बाट के चोरों के सम्बन्ध में एक भो० लो० इस प्रकार है :
'साहु के दाव हाट में, चोर के दाव घाट में।'
साहुकार का दाव बाजार-हाट में लगता है और चोर का घाट में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रदर्शन भी कई ढंग से करते हैं। भोजपुरियों की हठधर्मिता के सम्बन्ध में यह कहावत बड़ी प्रसिद्ध है :

तसलवा तोर कि मोर ?

यह तसला तुम्हारा है कि मेरा ?

मेले आदि स्थानों में मौका पाकर चोर या ठग आदि परदेशी व्यापारियों से अनुचित रुपये-पैसों की माँग करते हैं। वे इस माँग को एक प्रतीकात्मक वाक्य-शैली में अभिव्यक्त करते हैं। उपर्युक्त लोकोक्ति उसी वाक्य-शैली का उदाहरण है। यह लोकोक्ति चोरों, बदमाशों आदि की हठधर्मिता-सम्बन्धी आचरण का चित्र प्रस्तुत करती है। कहते हैं कि पहले ये बदमाश हाट-बाट में मौका पाकर दूरागत व्यापारियों के पड़ाव पर ही पहुँच जाते थे। ये व्यापारियों को तसले में भोजन बनाते देखकर 'तसले' के व्यंग्यार्थ 'धन' आदि को लक्ष्य में रखकर उनसे पूछते थे कि 'तसलवा तोर कि मोर ?'—यह तसला तुम्हारा है या मेरा ? व्यापारी अगर 'तोर' में उत्तर देते थे, तब उन्हें बदमाशों को धनादि देना पड़ता था और उत्तर 'मोर' में होता था, तो ये दुर्द्धर्ष लुटेरे उन्हें तरह-तरह से तंग करते थे।[1] इस तरह दोनों हालत में इन लूट-पाट मचानेवालों से व्यापारियों को मुक्ति नहीं मिलती थी।

प्राचीन काल में व्यापारियों द्वारा उठाई जानेवाली परेशानियों की ओर संकेत करनेवाली एक और लोकोक्ति इस प्रकार है :

ऊगे तारा तऽ चले सोनारा।

शुक्र तारे के उदय होने पर सोनार (साहूकार आदि) यात्रा प्रारम्भ करता है।

भो० क्षेत्र के सार्थवाह अपनी बुद्धि, धैर्य और वीरता के लिए सदा से ही प्रसिद्ध रहे हैं। प्राचीन काल में आवागमन की विभिन्न कठिनाइयों के कारण व्यापारियों का काफिला रात के पिछले प्रहर में सुबह के तारे[2] के उदय होने पर शेष फासला तय करने के लिए यात्रा प्रारम्भ करता था। इसका कारण यह था कि उस समय बहुत ऊँचे-नीचे पथ होते थे और मार्ग में हमेशा चोर-डाकुओं का भय बना रहता था।

काशी : राँड़ साँड़ सीढ़ी सन्यासी एह से बचे तऽ सेवे काशी।

राँड़ (बदचलन विधवाओं या स्त्रियों), साँड़, सीढ़ी और संन्यासी—इनकी चपेट में आने से जो बच जाता है, वह निर्भय होकर काशी में रहता है।

हिन्दू-धर्मग्रन्थों के अनुसार काशी, एक अविमुक्त तीर्थ और मोक्षदायक स्थान है। हिन्दू-धर्म के अनुसार काशी में मरने से मुक्ति मिलती है (काश्यां मरणान्मुक्तिः)। ऐसा भी कहा गया है कि काशी जाकर महादेव शिवशंकर की पूजा और कपिलाह्रद में स्नान करने से राजसूय यज्ञ करने का फल मिलता है। हिन्दू-धर्म के इन्हीं विश्वासों के कारण काशीवास और काशीतीर्थ

---

१. (क) प्राचीन काल में चोर-डाकू और बटमारों की स्थिति-सम्बन्धी विस्तृत विवरण के लिए दे० डॉ० मोतीचन्द्र : सार्थवाह, पृ० ३ और १६४। ब्रिटिशकालीन भारत में भी इन ठगों ने खूब उत्पात मचाया था।

(ख) तत्कालीन शासक लार्ड विलियम बेण्टिक ने इन ठगों के निवारणार्थ महत्त्वपूर्ण कदम उठाये थे। बेण्टिक के सुधार के लिए दे० पी० ई० राबर्ट्स : ब्रिटिशकालीन भारत का इतिहास (हिन्दी-संस्करण, १९५५ई०, प्रकाशक : एस्० चन्द ऐण्ड कं०, दिल्ली), पृ० २२४।

२. यहाँ शुक्र तारा की ओर संकेत है। यह उषःकाल में दीख पड़ता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का बड़ा महत्त्व है। यहाँ के मन्दिरों में और घाटों पर प्रतिदिन भारत के सभी भागों से आनेवाले हिन्दुओं की भीड़ लगी रहती है।

प्रसिद्ध तीर्थस्थान होने के कारण काशी में साधु-संन्यासियों और पण्डों एवं पुजारियों की पर्याप्त संख्या है। यहाँ विभिन्न सम्प्रदायों के मठ भी हैं। काशी के धार्मिक स्थानों में ढोंगी और चरित्रहीन संन्यासियों और लोभी पण्डों का भी खूब बोलबाला रहता है। लोकोक्ति में काशी के इन्हीं साधु-संन्यासियों से बचने की सलाह दी गई है।[1]

काशी में साँड़ों का भी बाहुल्य है। कारण यह है कि ये साँड़, काशी के प्रमुख देवता शिव के वाहनस्वरूप माने जाते हैं। इसलिए, सभी लोग इन मस्त साँड़ों को यथाशक्ति और यथाभक्ति खाने-पीने की सामग्री दे देते हैं। इसके साथ ही काशी में श्राद्ध आदि संस्कारों के अवसर पर वृषभ-दान का भी बड़ा महत्त्व है। दक्षिण के पेशवा राजा या रईस काशी में आकर साँड़ छोड़ने में खूब रुचि लेते थे। ये इन साँड़ों के खान-पान की व्यवस्था के लिए भी काशी में अपने आदमी रखते थे। अँगरेजी-शासन में काशी में 'गौरैयाशाही' घटना इन्हीं साँड़ों को लेकर हुई थी।[2] अँगरेजी-शासन की ओर से जब इन साँड़ों की बढ़ती हुई संख्या को रोकने का प्रयत्न किया गया था, तब साँड़ों की देख-रेख करनेवाले पेशवा के लोगों और काशी की जनता ने भी अँगरेजी-शासन का कड़ा विरोध किया था। यहाँतक कि एक अँगरेज-पदाधिकारी पर लोगों ने गौरिया (मिट्टी का हुक्का) लेकर प्रहार किया था।

काशी में मोक्षाभिलाषिणी विधवाओं की भी संख्या बहुत है। यहाँ पहले कई ऐसे मन्दिर या मठ थे, जहाँ विधवाएँ—विशेषतः बंगाल-राज्य की विधवाएँ, अपनी धनराशि जमा करती थीं और उसी से काशी में अपना शेष जीवन काटती थीं।[3] इन विधवाओं में कितनी दुराचार में भी फँस जाती थीं। लोकोक्ति में ऐसी ही विधवाओं (राँड़ों) की ओर संकेत है।

काशी की शोभा-श्री नगर के पार्श्व से बहती हुई धनुषाकार गंगा और उसके किनारे पर बने घाटों से निखरती है। नगर के अधिकांश मन्दिर और तीर्थक्षेत्र गंगा के किनारे स्थित हैं। इसलिए तीर्थयात्री, पूजा, स्नानादि के लिए सीढ़ियों से उतरकर घाटों पर एकत्र होते हैं। घाट की सीढ़ियाँ कहीं-कहीं काफी ढालू हैं और टूट-फूट भी गई हैं। ऐसी सीढ़ियों पर चढ़ने-उतरने में बराबर फिसलने का डर रहता है।[4] इसीलिए लोकोक्ति में काशी की सीढ़ियों से भी बचने की नेक सलाह दी गई है।

क्षेत्रे भोजन मठे निद्रा।

(काशी में) विद्यार्थी क्षेत्रों में भोजन करते हैं और मठों में आकर सोते हैं।

---

१. गंगापुत्रों अथवा पण्डों के इतिहास और उनसे उत्पन्न विषम स्थिति के निवारणार्थ काशी के पण्डितों और नागरिकों द्वारा किये गये प्रयत्न-सम्बन्धी विवरण के लिए दे० 'हंस' (काशी-अंक), वर्ष ४, संख्या १२, पृ० ११३-११४; डॉ० मोतीचन्द्र ('काशी की प्राचीन शिक्षा-पद्धति और पण्डित') श्रीसम्पूर्णानन्द-अभिनन्दन-ग्रन्थ में संगृहीत निबन्ध, पृ० ५७।

२. दे० 'हंस' (काशी-अंक) वर्ष ४, संख्या १२, पृ० ४४।

३. दे० डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ऑव यू० पी० ऑव आगरा ऐण्ड अवध, बनारस डिस्ट्रिक्ट, जिल्द २४, पृ० ६१, इलाहाबाद, १९०७ ई०।

४. दे० डॉ० आर० एल्० सिंह : बनारस—ए स्टडी इन अरबन ज्योग्राफी, पृ० ४४-४५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वेद पढ़ब स्मृति अभ्यासिब, पुराण देखब धर्म करब।

हम वेद पढ़ेंगे, स्मृतियों का अभ्यास करेंगे, पुराण देखेंगे और धर्म करेंगे।

उपर्युक्त दोनों लोकोक्तियाँ पण्डित दामोदर (१२वीं शताब्दी) द्वारा रचित 'उक्ति-व्यक्तिप्रकरण' (१५।१६।१७) से गृहीत हैं। वर्त्तमान समय में भोजपुरी जनता उक्त ग्रन्थ के दोनों वाक्यों को लोकोक्ति के रूप में व्यवहृत करती है। ये लोकोक्तियाँ काशी की प्राचीन शिक्षा-पद्धति और शिक्षा-केन्द्रों पर प्रकाश डालती हैं। बनारस के प्राचीन शिक्षा-केन्द्रों के स्वरूप और उनकी प्राचीनता पर विचार करते हुए डॉ० मोतीचन्द्र ने लिखा है : "लगता ऐसा है कि बनारस को शिक्षा-केन्द्र बनाने का श्रेय तक्षशिला के उन भूतपूर्व विद्यार्थियों को था, जिन्होंने बनारस में आकर लोगों की शिक्षा का काम अपने हाथों में लिया (जातक ४। १, ४, ६, ३, २, १००)। खुद्दक अट्ठकथा में तो यहाँतक कहा गया है कि बनारस की शिक्षा-संस्थाएं तक्षशिला की शिक्षा-संस्थाओं से भी प्राचीन थीं। धम्मपद अट्ठकथा में भी इस बात का उल्लेख है कि बनारस शिक्षा के क्षेत्र में इतना प्रसिद्ध हो चुका था कि तक्षशिला के शंख नामक एक ब्राह्मण ने अपने पुत्र सुशीम को शिक्षा-प्राप्ति के लिए बनारस भेजा। कुछ दिनों बाद बनारस में भी संसार-प्रसिद्ध आचार्य होने लगे, जिनका काम विद्यार्थियों को शिक्षा देना था। बनारस के लोगों को भी शिक्षा के प्रति इतना अनुराग था कि भोजन की व्यवस्था करके वे गरीब विद्यार्थियों को शिक्षा दिलवाते थे (जातक, १।१०९)।[1] उस समय कुछ ऐसे भी विद्यार्थी होते थे, जो दक्षिणा देते थे। दक्षिणा देनेवाले विद्यार्थियों को 'आचारिय भागदायक' कहा जाता था और दक्षिणा नहीं देनेवाले को 'धमंते वासिक'। 'धमंते वासिकों' की परम्परा बौद्धकाल से आजतक किसी-न-किसी रूप में चली आ रही है। बुद्धकाल, शकसातवाहन-काल, गुप्तकाल और दसवीं सदी तक की ऐतिहासिक सामग्री में काशी के विद्वान् पण्डितों और गुरु-गृहों और मठों में रहकर शिक्षा लेनेवाले विद्यार्थियों के सम्बन्ध में पर्याप्त सूचना मिलती है। 'उक्तिव्यक्तिप्रकरण' में ऐसे पुष्कल उल्लेख हैं, जो काशी के मठों और उनमें पढ़ने-पढ़ानेवाले पण्डितों और विद्यार्थियों का बड़ा स्वाभाविक और प्रामाणिक चित्र प्रस्तुत करते हैं।[2]

शिक्षा-आदर्श के सम्बन्ध में दी हुई लोकोक्ति विशेषतः काशी में दुहराई जाती है। शिक्षा के इसी उद्देश्य को लेकर भारतवर्ष के कितने ही महान् पण्डितों, दार्शनिकों और याज्ञिकों ने काशी में रहकर समस्त भारतीय धर्म, दर्शन और साहित्य का अध्ययन-चिन्तन किया है।[3] काशी के प्रायः प्राचीन शिक्षा-केन्द्रों का अस्तित्व नहीं रहा। परन्तु, किसी-न-किसी रूप में आज भी संस्कृत-वाङ्मय का अध्ययन-अध्यापन काशी की शिक्षा-संस्थाओं में समुचित

---

१. 'काशी की प्राचीन शिक्षा-पद्धति और पण्डित', श्रीसम्पूर्णानन्द-अभिनन्दन-ग्रन्थ, पृ० ४१।

२. 'उक्तिव्यक्तिप्रकरण' की कुछ प्रश्नोत्तरियों से काशी की शिक्षा-पद्धति पर प्रकाश पड़ता है। उदाहरण :

'सखे, तुमने वेद कहाँ पढ़ा ? देवशर्मा उपाध्याय से।'
'इन्धन जलाना कहाँ सीखा ? उपाध्याय की पत्नी से।'
'तुम्हें भोजन कहाँ से मिलता है ? द्विजवरों के घरों से।' (हिन्दी-अनुवाद)

३. काशी के पण्डितों के लिए दे० (क) डॉ० हजारीप्रसाद विवेदी : 'उत्तर-मध्यकालीन काशी की संस्कृत-शिक्षा', 'आज', काशी-विशेषांक, १७ फरवरी, १९५७ ई०, पृ० ८; (ख) डॉ० मोतीचन्द्र : 'काशी की प्राचीन शिक्षा-पद्धति और पण्डित' (श्रीसम्पूर्णानन्द-अभिनन्दन-ग्रन्थ में संगृहीत निबन्ध, पृ० ५१)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रूप में हो रहा है। बनारस के छोटे-बड़े विद्यालयों में आज भी ऐसे विद्यार्थी मिल जायेंगे, जो सिर घुटाये, लेटी शिखा रखे और धोती पहने व्याकरण के सूत्र कण्ठस्थ करते रहते हैं। इन विद्यार्थियों को अब भी नगर और देश के धनी और दयालु नागरिकों से भोजन, आवास आदि की सुविधा प्राप्त होती है।

काशी बसले का होखल जब घर नौरंगाबाद !

काशी को निवासस्थान बनाने से क्या (लाभ), जब घर औरंगाबाद में हो !

प्र० उपयुक्त साधन अपनाने पर भी अभीष्ट सफलता नहीं प्राप्त करना।

यह प्रसिद्ध घटना है कि मुगल-साम्राज्य का सबसे अधिक धर्म-भीरु और असहिष्णु बादशाह औरंगजेब ने बड़ी क्रूरता से काशी पर आक्रमण किया था।[1] इस बादशाह ने हुक्म देकर काशी के प्रसिद्ध विश्वनाथ-मन्दिर को तुड़वाया और काशी का नाम मुहम्मदाबाद रखकर अपनी धर्मान्धिता का भरपूर परिचय दिया था। औरंगजेब ने काशी के 'दारानगर' (शाहजहाँ के बड़े लड़के दारा के नाम पर बसा मुहल्ला) के मुकाबले में नगर के एक मुहल्ले का नाम 'औरंगाबाद' रखा। 'औरंगाबाद' (नौरंगाबाद) काशी का कलंक माना जाता है। उपर्युक्त लोकोक्ति मुगलकाल की इन्हीं विध्वंसकारी घटनाओं की प्रतिक्रिया के रूप में बनी जान पड़ती है।

सासाराम[2] : कहाँ जातारऽ तऽ ससराँव, तऽ एक जोड़ी जाँत लेले अइहऽ।

(प्रश्न) कहाँ जा रहे हैं ? (उत्तर) तो सासाराम, तब एक जोड़ी चक्की लेते आइएगा।

प्र० जरा-सा भी अनुकूल अवसर पाने पर स्वार्थ सिद्ध करने की भावना रखना।

सासाराम, बिहार के शाहाबाद जिले के पहाड़ी क्षेत्रों में स्थित एक मुख्य नगर है। पुरातत्त्व की दृष्टि से इस स्थान का बड़ा महत्त्व है। साथ ही, यह पत्थर के छोटे-मोटे उद्योग-धन्धों के लिए भी प्रसिद्ध है। विन्ध्याचल की शृंखला में पड़नेवाली कैमूर की पहाड़ियाँ सासाराम तक चली आई हैं। इन पहाड़ियों में लाल बलुआ पत्थर पाये जाते हैं। ये पत्थर बड़े मजबूत और टिकाऊ होते हैं, इसलिए ये बहुत दिनों से किले आदि बनवाने के काम में लाये जाते रहे हैं। साथ ही, इनसे गृहस्थों के उपयोग में आनेवाले—चक्की, ऊखल, सिल-पाटी आदि पत्थर के सामान भी बनाये जाते हैं। उपर्युक्त लोकोक्ति में सासाराम की बनी चक्की की प्रसिद्धि पर प्रकारान्तर से प्रकाश डाला गया है।

जगदीशपुर : लऊर ना अऊर चले, चल मियाँ जगदीसपुर।

(वे) लाठी तो चलाना जानते नहीं और मियाँजी से कहते हैं कि जगदीशपुर चलो।

जगदीशपुर, आरा जिले के अन्तर्गत एक इतिहासप्रसिद्ध नगर है। प्रथम स्वाधीनता-संग्राम (सन् १८५७ ई०) की लहर जगदीशपुर में सबसे अधिक फैली थी। इसका कारण यह था

---

१. दे० डॉ० यदुनाथ सरकार : औरंगजेब (हिन्दी-संस्करण), पृ० १९३-१९४।

२. (अ) सासाराम-सम्बन्धी एक और लोकोक्ति का वर्णन यथास्थान आगे किया गया है (दे० पृ० ६०)।

(आ) 'सासाराम' का विकास दो शब्दों से माना जाता है, सं० सहस्रग्राम>सासाराम> ससराँव; सं० सहस्र अर्जनपुर>सासाराम (दे० बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, शाहाबाद, पृ० ८७८, पटना १९६६ ई०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि यहीं के वीर कुँवरसिंह ने अँगरेजी-शासन के विरुद्ध अदम्य उत्साह और साहस के साथ लोहा लिया था। इस तरह कुँवरसिंह के कारण यह जगदीशपुर स्वाधीनता-संग्राम की रंगभूमि के रूप में दुनिया में प्रसिद्ध हुआ। आज भी युद्ध की घड़ियों में 'जगदीशपुर' प्रेरणादायक शब्द के रूप में याद किया जाता है। उपर्युक्त लोकोक्ति जगदीशपुर के इसी महत्त्व पर प्रकाश डालती है।

अइसन देश कुआड़ी, आधा देश उघारी।

कुआड़ी एक ऐसा देश है, जहाँ के अधिकांश वासी नंगे बदन रहते हैं (अर्थात्, गरीब हैं)।

कुआड़ी : यह एक स्थानीय (सीमित क्षेत्र में प्रचलित) लोकोक्ति है। कुआड़ी, बिहार के सारन जिले के अन्तर्गत एक परगना है। यहाँ के निवासियों में कोयरी जाति के लोगों की संख्या अधिक है। सम्भवतः, कोयरी का निवासस्थान होने के कारण इस गाँव का नाम 'कुआड़ी' पड़ा हो। यहाँ के अधिकांश निवासी गरीब हैं। इनकी भोजन-समस्या तो सस्ते अनाजों से सुलझ जाती है, किन्तु वस्त्र की समस्या ज्यों-की-त्यों बनी रहती है।

प्रत्येक भाषा में कुछ ऐसी लोकोक्तियाँ होती हैं, जिनमें समुच्चयात्मक शैली में कई स्थानों की विशेषताएँ गिना दी जाती हैं। ऐसी लोकोक्तियों में जनसमुदाय का किसी विशिष्ट स्थान के प्रति उद्गार या प्रतिक्रिया भी विजडित रहती है। ऐसी लोकोक्तियों के उदाहरण इस प्रकार हैं :

रामनगर में रामलीला, डोल डुमराँव।
कोचस में कंसलीला, तजिया ससराँव॥

रामनगर की रामलीला, डुमराँव का डोल पर्व, कोचस की कंसलीला और सासाराम का ताजिया प्रसिद्ध है।

रामनगर : यह नगर गंगा के किनारे बसा हुआ है। गंगा के इस पार काशी है और उस पार रामनगर है। काशी-राज के सभी राजाओं का यह निवासस्थान रहा है। काशी के प्रायः सभी राजा, धार्मिक और आचारवान् रहे हैं। रामनगर की रामलीला बहुत प्रसिद्ध है। इसके समारम्भ और बृहत् आयोजन का पूरा श्रेय काशिराज को है। इस लीला के आरम्भ के सम्बन्ध में उदयशंकर शास्त्री ने लिखा है : "रामनगर में जब से काशिराज (काशी के राजा) का शासन स्थिर हुआ है, लीला का श्रीगणेश भी तभी से हुआ है। इस लीला के आयोजन की प्रेरणा काशिराज को काष्ठजिह्वा (देव) से मिली थी। श्रीकाष्ठजिह्वास्वामी काशिराज के गुरु थे।"[१]

भाद्र मास की अनन्त चतुर्दशी को रामनगर की रामलीला शुरू होती है। यह लीला 'रामचरितमानस' में वर्णित प्रसंगों के अनुसार होती है। इस लीला में मंगलाचरण, रावण-जन्म, देवगण की स्तुति, वैकुण्ठ तथा क्षीरसागर की झाँकी, राम-जन्म, विश्वामित्र के साथ राम-लक्ष्मण का जाना, ताड़का-सुबाहु का वध, अहल्या का उद्धार आदि दृश्य विशेष रूप से हृदयस्पर्शी होते हैं।

---

१. 'आज' (हिन्दी-दैनिक), काशी-विशेषांक, (१४ अक्तूबर, १९५६ ई०) में प्रकाशित 'रामनगर की रामलीला' शीर्षक निबन्ध।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह लीला सायंकाल दो-तीन घण्टे एक महीने तक होती रहती है। इस लीला के अवसर पर हजारों की संख्या में पण्डित, महात्मा, भक्त और श्रद्धालु जनता की भीड़ इकट्ठी होती है। यहाँ और दिनों की अपेक्षा क्षीरसागर, धनुष-यज्ञ, भरत-मनावन, लंका-दहन और भरत-मिलाप की झाँकियों के दिन अधिक भीड़ होती है। दशमी के दिन काशिराज की सवारी बड़े साज-शृंगार और भक्ति-भाव से सजकर निकलती है। इस दिन का दृश्य आह्लादकारी होता है। महाकवि भारतेन्दु ने इसी लीला को दृष्टि में रखते हुए लिखा है :

कलियुग त्रेता कियो नर सब देव कीन्हे
आजु कासीराज जू अयुध्या कीनी कासी है।

महाराज जयप्रकाश सिंह ने गढ़ के अहाते में सन् १८४० ई० के लगभग यहाँ एक मन्दिर बनवाया था। यह बिहारीजी के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है।

डुमराँव : यह आरा जिले के अन्तर्गत पूर्वी रेल-मार्ग पर स्थित एक नगर है। यह नगर भोजपुरी क्षेत्र का प्रतिनिधि केन्द्र है। यहाँ सुप्रसिद्ध 'डुमराँव-राज' का मुख्य कार्यालय है। भादों की जन्माष्टमी को यहाँ 'डोल' उत्सव बड़े जोश और हुलास से मनाया जाता है।[1] इस दिन कृष्ण की मूर्त्ति एक डोली में रखकर सजाई जाती है। इस मूर्त्ति को लेकर बहुत बड़ा जुलूस निकलता है। इस जुलूस में विशेषत: कृष्ण का कीर्त्तन और भजन होता है। साथ ही, जुलूस में खेलकूद भी होता रहता है। इसमें भोजपुरियों का विशेष रूप से मन लगता है। क्योंकि, इसमें भोजपुरी संस्कार (अर्थात्, वीरता का प्रदर्शन करना) को अभिव्यक्त करने का प्रचुर अवसर मिलता है।

डुमराँव का डोल-उत्सव विशेष रूप से प्रसिद्ध है। इसलिए कि यहाँ और इसके अगल-बगल के इलाकों में राजपूती शान-शौकत का वातावरण है।

कोचस : यहाँ की कृष्ण-लीला बड़ी प्रसिद्ध है। यह लीला गाँव के एक प्राचीन मन्दिर के प्रांगण में आयोजित होती है। समारोह के खर्च के लिए पूरे गाँव से और अगल-बगल के

---

१. (अ) पश्चिमी भोजपुरी क्षेत्र में इस पर्व को दधिकाँदो भी कहते हैं। दधिकाँदो के दिन लोग हलदी-मिला दही एक दूसरे पर फेंकते हैं। 'कहते हैं कि श्रीकृष्ण-जन्म के समय गोपों और गोपिकाओं ने आनन्द में मग्न होकर हलदी-मिला दही एक दूसरे पर इतना अधिक फेंका था कि गोकुल की गलियों में दही का कीचड़-सा हो गया था।'—हिं० श० सा०, दूसरा भाग, का० ना० प्र० सभा, १९२०, पृ० १४९९।

(आ) "Dumraon Raj has sponsored a number of religious and charitable institutions. Dumraon town and the subuls are full of beautiful temples and tanks with separate pucca ghats for men and women. The largest and by far the most important one is the temple of 'Shri Bihariji' (Lord Krishna with Radhika Rani) built about 1840 by Maharaja Jai Prakash Singh and situated within garh compound. The temple is a great attraction for people from far and near."—Bihar District Gazetters : Shahabad, p. 836-837, Patna, 1966.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाँवों से भी चन्दा इकट्ठा किया जाता है। लीला की प्रारम्भिक तिथि और वर्ष के सम्बन्ध में कोई प्रामाणिक सूचना नहीं मिलती। पूछ-ताछ से पता चलता है कि यह लीला बहुत दिनों से होती आ रही है। ऐसे तो यहाँ कृष्ण की सभी लीलाएँ अभिनीत होती हैं; किन्तु अपेक्षाकृत कंसलीला अधिक उत्साह और हर्ष के साथ मनाई जाती है। इसका कारण यह है कि इस लीला के मूल भाव के साथ भोजपुरी क्षेत्र की अन्तश्चेतना का साम्य है। 'दुष्ट-दलन' में भोजपुरी लोग हमेशा से विशेष रुचि रखते आये हैं।

सासाराम : यह आरा जिले का एक मुख्य नगर है। यह एक ऐतिहासिक स्थान भी है। यहीं अफगान बादशाह शेरशाह, हसन खाँ सूरी और अलवल खाँ के मकबरे हैं। यहाँ की जनता विशेषतः मुस्लिम-जनता बड़े उत्साह से मुहर्रम के अवसर पर ताजिया का जुलूस निकालती है। ताजिया तो केवल मुसलमानों के द्वारा बनाया जाता है, किन्तु उसके जुलूस में हिन्दू भी शामिल होते हैं। एक प्रकार से सासाराम का ताजिया हिन्दू-मुस्लिम-एकता के साथ भोजपुरी जनता की युद्धप्रियता का भी द्योतक है।

दाऊदनगर : जग में जगदीशपुर शहर ससराँव,
चट्टी में दाऊदनगर भोजपुर में डुमराँव।

संसार-भर में जगदीशपुर, शहरों में सासाराम, चट्टियों में दाऊदनगर और भोजपुरी क्षेत्र में डुमराँव प्रसिद्ध स्थान हैं।

इस लोकोक्ति में आये जगदीशपुर, सासाराम और डुमराँव भोजपुरी क्षेत्र के अन्तर्गत हैं, इनके सम्बन्ध में पहले विचार हो चुका है। अतः, यहाँ दाऊदनगर पर ही विचार किया जायगा। दाऊदनगर बिहार-राज्य के गया जिले के अन्तर्गत भोजपुरी क्षेत्र की सीमा पर स्थित एक प्रसिद्ध स्थान है। पठान बादशाह दाऊद खाँ ने औरंगजेब के शासनकाल में सन् १६६३ ई० में पलामू के राजा पर विजय पाने के स्मृति-स्वरूप इस नगर को बसाया था।[1] यह नगर व्यापार का एक मुख्य केन्द्र है। दाऊदनगर शाहाबाद और गया जिले की सीमा पर स्थित है, इसीलिए यहीं से दोनों जिलों में व्यापारिक सामानों का आयात-निर्यात होता है। यहाँ अनाजों की मण्डियाँ, पीतल के बरतनों के कारखाने और गलीचे, कम्बल और हाथ के बुने कपड़ों की भी दूकानें हैं।[2]

(आ) भोजपुरीतर :

व्यापार, रोजगार, तीर्थयात्रा, देश-दर्शन, वैवाहिक सम्बन्ध आदि के माध्यम से भोजपुरी जनता देश और विदेश के नगरों और ग्रामीण क्षेत्रों के सम्पर्क में आती है। भोजपुरी लोग सैनिक, मजदूर और व्यापारी के रूप में कलकत्ता, बम्बई, दार्जिलिंग, शिलांग और रंगून में ही नहीं, अफ्रीका के कितने ही देशों में जा पहुँचते हैं और वहाँ जाकर कुछ लोग बस भी जाते हैं।[3] अतः, भोजपुरी लोकोक्तियों में भोजपुरीतर स्थानों की विशेषताओं के सम्बन्ध में मार्मिक अनुभूतियों का मिलना सर्वथा स्वाभाविक है। भोजपुरीतर स्थान-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

---

१ बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, गया, पृ० ३६, पटना, १६५७ ई०।

२ बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, गया, पृ० १४६-१५०, पटना, १६५७ ई०।

३. व्यापार, नौकरी और खेती करने के सिलसिले में भोजपुरी लोगों की बहुसंख्या, भारतवर्ष के प्रायः नगरों—विशेषतया कलकत्ता और बम्बई और विदेशों में बर्मा, फीजी, मॉरिशस, ट्रान्सवाल, ट्रिनीडॉड, गायना और दक्षिणी अफ्रिका में बसी हुई है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दाउदनगर :

मगह : उसिना चाउर दाल खमोरी, मगह देश जनि जइहऽ मुरारी ।

हे मुरारी ! मगह देश मत जाना; क्योंकि वहाँ उबाला हुआ चावल और सड़ी दाल मिलती है ।

मगह, भोजपुरी प्रदेश का पड़ोसी क्षेत्र है । अतः, सदा से ही इन दोनों क्षेत्रों में सांस्कृतिक और भाषाई आदान-प्रदान होता रहा है । भोजपुरी और मगही—ये दोनों क्षेत्र एक दूसरे के पड़ोसी होने के कारण अपने आचार और रीति के अनुसार एक दूसरे की उपलब्धि और अभाव के सम्बन्ध में धारणाएँ रखते चले आ रहे हैं ।

मगह कृषि की दृष्टि से मध्यम कोटि का क्षेत्र है । धान, चना, अरहर, मटर आदि मगह की मुख्य फसलें हैं । इसलिए, यहाँ के बाशिन्दों के खान-पान में भात और दाल का विशेष स्थान है । मगह में चावल प्रायः पानी में उबाले धान से बनाया जाता है । इस चावल के तैयार करने में पानी और बरतन की आवश्यकता होती है । किन्तु, इससे स्वभावतः छुआछूत का प्रश्न भी पैदा हो जाता है । वैष्णव या संन्यासी 'उसना' चावल नहीं खाते हैं । अनुमान किया जा सकता है कि इसी कारण वैष्णव भोजपुरी समाज में मगह को किंचित् निम्न स्थान दिया जाता है । कुछ प्राचीन जनश्रुतियों और अर्द्ध-प्रामाणिक सूचनाओं के आधार पर मगह के प्रति उदासीनता की भावना के मूल कारणों के सम्बन्ध में सोचा जा सकता है । पहला तो यह कि मगह गंगा के दक्षिण में पड़ता है ।[1] दूसरा कि बहुत दिनों तक यह मगह बौद्धधर्म से प्रभावित रहा है । अतः, कर्मकाण्डियों की दृष्टि में मगह की हीनता सहज सिद्ध हो जाती है ।[2] वैदिक-कालीन इतिहास के आधार पर महामहोपाध्याय पं० सकलनारायण शर्मा ने मगध के सम्बन्ध में लिखा है : "दक्षिणी बिहार में जंगल और पहाड़ बहुत हैं । उनमें कोल-भील[3], सौंताल (सन्थाल) अधिक रहते थे, ...वे ईश्वर और परलोक नहीं मानते थे । वे अनार्य और नास्तिक थे ।" वेदों में

---

१. दक्षिण दिशा के स्वामी यमराज हैं । इसलिए, उक्त दिशा अशुभ समझी जाती है ।

२. (अ) अब भी कुछ तीर्थयात्री मगह-क्षेत्र की गंगा से आनुष्ठानिक कार्य के लिए जल नहीं भरते । मगध के प्रति हेय दृष्टि रखने के कारण का उल्लेख करते हुए राहुल सांकृत्यायन लिखते हैं : "बौद्ध महापुरुष और महान् दार्शनिकों के पैदा करने में मगध-ब्राह्मण (बाभन)-कुल सबसे आगे रहा ; इसी के लिए बौद्धविद्वेषी ब्राह्मणों के प्रभुत्व में उन्हें और उनके मगध देश को नीच कहना और लिखना शुरू किया गया ।" (प्राचीन पुरातत्त्व-निबन्धावली, पृ० ११०) ।

(आ) "Dawn to the time of Manu, Magadha has not been included in the list of the Brahmanistic land."—Bihar Gazetters, Gaya, p. 20, Patna, 1957.

३. तुलना कीजिए : "Besides the imprints of the river valley civilisation, we find in the hilly tracts of the District of Gaya various signs of the habitant of the indigenous people. Even today, the people inhabiting those localities talk of the kola people who formerly lived there before the advent of the Aryans."—Bihar District Gazetters, Gaya, p. 20, Patna, 1957.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनके देश का नाम कीकट[1] (कुछ नहीं करनेवाला) है। वे गौएँ पालते थे। उनके दूध से यज्ञादिक नहीं होते थे।...'मग' शब्द का अर्थ सूद है। उसका लेनेवाला मगध है।[2] इसमें 'ध' का अर्थ धारण करनेवाला है। ऋग्वेद में विश्वामित्र के नाम से एक मन्त्र है[3] कि मग—सूद के लिए धन देनेवालों का धन छीन लें और यज्ञों में खर्च करें।[4] सम्भवतः, उपर्युक्त प्राचीन कारणों से भी 'उसना चावल' और 'सड़ी दाल' खानेवाले देश (मगह) के प्रति उपेक्षा की भावना[5] को विकसित होने में अनुकूल खाद मिली हो।

बंगाल : छाजा बाजा केश, तीन बँगाला देश।

छज्जा, बाजा और केश-विन्यास—ये तीनों बंगाल की विशेषताएँ हैं।

इस लोकोक्ति से बंगाल के सामाजिक जीवन, रहन-सहन, खान-पान और गृह-स्थापत्य पर प्रकाश पड़ता है। बंगालियों का जीवन बड़ा नैसर्गिक है। यहाँ की स्त्रियों के केश बड़े लम्बे होते हैं। प्राकृतिक सुषमा से घिरे रहने के कारण बंगालियों की संगीत में विशेष रुचि है। बंगाल में बड़े-बड़े संगीतज्ञ भी हुए हैं।

बंगाल के ग्रामों और नगरों में भवनों या गृहों के निर्माण के समय छज्जों की सुन्दरता पर विशेष ध्यान दिया जाता है।[6] बंगाल धान का क्षेत्र है। इसलिए, यहाँ के जनपदीय क्षेत्रों में छावनी प्रायः पुआल की होती है। इस छावनी में वर्षा से बचने के लिए ढालू ओलती बनाई जाती है। मुस्लिम-काल में बंगाल की स्थापत्य-कला को इस विशेषता को और भी प्रोत्साहन मिला। इस सम्बन्ध में डॉ० भगवत शरण उपाध्याय का कथन इस प्रकार है :—"मुसलमान भारत में बस चुके थे और उनका शिल्प देशीय वास्तु को प्रभावित करने लगा था। बंगाल के मन्दिरों पर उनका पर्याप्त प्रभाव पड़ा। उनकी झुकी कोर्निस (कपोत) वहाँ की सुन्दर कुटियों की बाँस की वलभियों (वल्लभियों) के अनुकरण में बनी।"[7]

---

१. 'कीकट'-सम्बन्धी प्राचीन धारणाओं और अर्थों के लिए दे० ऋ० ३।५३।१४; अथ०, भाग २२।१४; निरुक्त ६।३२ और हरप्रसाद शास्त्री : मगधन लिटरेचर, कलकत्ता, १९२३ ई०, पृ० २।

२. डॉ० देवसहाय त्रिवेद ने 'मगध' के विभिन्न अर्थों का उल्लेख करते हुए लिखा है : 'मगध शब्द का अर्थ होता है—चारण, भिक्षमंगा, पापी, ज्ञाता, ओषधि-विशेष तथा मगध-देशवासी। मगध का अर्थ होता है श्वेत जीरक, वैश्य-पिता और क्षत्रिय-माता का वर्णसंकर (मनुस्मृति, १०-११) तथा कीकट देश।'—प्राक् मौर्य बिहार, द्वादश अध्याय, पृ० ७८।

३. वह मन्त्र है :
किं ते कृण्वन्ति कीकटेषु गावो ना शिरं दुह्वे न जवन्ति धर्म्मम्।
आनोचर प्रमगन्दस्य वेदोनैयाशाखं मघवन रन्धयान :॥—ऋ० ३।५३।

४. 'वैदिक काल का बिहार' (संगृहीत निबन्ध), जयन्ती-स्मारक ग्रन्थ (श्रीरामलोचन शरण 'बिहारी' की स्वर्ण-जयन्ती, १९४२ ई०), पृ० ४७।

५. एक और लोकोक्ति में मगह की हँसी इस प्रकार उड़ाई गई है :
'मगह के देसवा बड़ बुड़बकवा, शुकवा के कहे मुरुकवा।'
मगह देश (वासी) बड़ा नादान है, यह शुकतारा को 'मुरुकवा' कहता है।

६. छाजा = छप्पर। छप्पर के मकान बंगाल में सुन्दर होते हैं।

७. हिन्दी-साहित्य का बृहत् इतिहास, प्रथम भाग, खण्ड ४, अध्याय १, पृ० ५७२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवकुर : देवकुर गइले दूना दुख ।
देवकुर जाने पर दुःख और दूना हो गया ।

प्र० दुःख को दूर करने के प्रयत्न में दुःख का और बढ़ना ।

इस लोकोक्ति में प्रयुक्त 'देवकुर' के दो अर्थ ध्वनित होते हैं, पहला देव-स्थान और दूसरा 'देवकुर' नाम का तीर्थ-स्थान ।[1] भोजपुरी क्षेत्र में प्रायः सभी गृहस्थों के घरों में एक ऐसी कोठरी होती है, जिसमें देवी-देवताओं की मूर्त्तियाँ रहती हैं और उसी में घरवाले पूजा-पाठ करते हैं। जॉन क्रिश्चियन ने 'देवकुर' का उपर्युक्त दूसरा अर्थ लगाया है ।'[2] 'यह देवकुण्ड हिन्दुओं का एक प्राचीन तीर्थ-स्थान है । यह गया जिले के गोह थाने के अन्तर्गत है । इस जगह के सम्बन्ध में क्रिश्चियन ने लिखा है : 'देवकुर या देवकुण्ड गया का एक नगर है । यह सोन के किनारे की पुरानी भूमि पर स्थित है । यहीं उत्तरी प्रदेशों से राजगिरि की ओर जानेवाले तीर्थयात्री नदी पार करते थे । यह एक पवित्र स्थान है ।'[3] यहाँ अति प्राचीन शिव का एक मन्दिर और सरोवर है । प्राचीन जनश्रुति के अनुसार यहाँ च्यवन ऋषि का आश्रम था । सम्प्रति शिवरात्रि के अवसर पर यहाँ तीर्थयात्री एकत्र होते हैं ।[4] अग्निपुराण के कई सूत्रों के आधार पर यह सिद्ध होता है कि प्राचीन काल में 'पञ्चक्रोशं गयाक्षेत्रम्' (अग्निपुराण, ११४।३३) अनेक मन्दिरों, कूटक्षेत्रों, वापियों, घाटों और कुण्डों[5] से भरा हुआ था । अतः, इन तत्कालीन कुण्डों की तरह देवकुण्ड का अस्तित्व भी रहा होगा । सोन के किनारे और राजगिरि-जैसे तीर्थ-क्षेत्र की ओर जानेवाले मार्ग में पड़ने के कारण, इस देवकुर (देवकुण्ड) का तो और भी धार्मिक महत्त्व सिद्ध हो जाता है । हो सकता है कि कभी 'देवकुर' की यात्रा के उपरान्त किसी की अभीष्ट मनःकामना पूरी नहीं हुई होगी और उसे यात्रा में शारीरिक और आर्थिक संकट भी झेलने पड़े होंगे । तब प्रतिक्रिया-स्वरूप उस व्यक्ति ने अपना अनुभव उक्त लोकोक्ति के रूप में प्रकट किया होगा ।

बहराइच : अन्हरा के सूझे बहराइच ।
अन्धों को बहराइच ही दीखता है ।

प्र० हमेशा अभीष्ट वस्तु या मनःकामना के ही बारे में सोचना ।

बहराइच उत्तरप्रदेश का एक मुख्य नगर है । यह एक धार्मिक और ऐतिहासिक स्थान है । इस नगर के नाम के सम्बन्ध में अनेक जनश्रुतियाँ प्रसिद्ध हैं । यह कहा जाता है कि ब्रह्मा ने इसको अपने निवासस्थान के लिए चुना था, इसलिए यह 'ब्रह्माइच' कहलाया । डॉ० धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार 'ऐतिहासिक दृष्टि से यह नाम (बहरायच) 'भर' जाति के नाम पर पड़ा था । 'आयच' प्रत्यय की व्युत्पत्ति अस्पष्ट है । जनश्रुति के अनुसार, इस नगर का मूल

---

१. (अ) देवकुर < देवकुल, दे० मोनियर विलियम्स : ए संस्कृत-इंगलिश डिक्शनरी, पृ० ४९२ ।
(आ) देवकुर < देवकुण्ड ।—दे० वही ।

२. जॉन क्रिश्चियन : बि० प्रो०, लन्दन, १८९१ ई०, पृ० १८७-१८८ ।

३. वही ।

४. दे० बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, गया, पृ० ३१४, पटना, १९५७ ई० ।

५. दे० योगेन्द्र मिश्र : बिहार इन दि अग्निपुराण, ज० बि० रि० सो०, मार्च, १९५४ ई० ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाम ब्रह्मायच था, किन्तु इतिहास तथा ध्वनि-विज्ञान से इसकी पुष्टि नहीं होती।'[१] डॉ० वर्मा का उक्त मत अपेक्षाकृत अधिक ग्राह्य है।

यह स्थान बहुत प्राचीन है। रामायण-काल में यह लव की राजधानी था। बुद्धकाल में भी यह बौद्धधर्म का केन्द्र रहा है। श्रावस्ती, बहराइच के करीब है। मुसलमानी शासनकाल में भी यह महमूद गजनी के भतीजे सईद सालार मसऊद के निवासस्थान और दरगाह के रूप में प्रसिद्ध हो गया था।

उपर्युक्त लोकोक्ति से यह ध्वनित होता है कि बहराइच अन्धों का प्रिय स्थान है। इसका कारण बताते हुए डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय ने एक किंवदन्ती का उल्लेख किया है।[२] ऐसी किंवदन्ती प्रसिद्ध है कि मसऊद गाजी की कब्र के किनारेवाले तालाब में स्नान करने से अन्धों को भी दिखाई पड़ने लगता है। यह तालाब वस्तुतः प्राचीनकालीन सूर्यकुण्ड है।[३] मसऊद गाजी के आने के पहले इस कुण्ड के किनारे महादेव का मन्दिर भी था। एक जनश्रुति के अनुसार बहराइच महाभारत के प्रसिद्ध वीर और सूर्यपुत्र कर्ण के शासन के अधीन रहा है। इससे भी बहराइच का सूर्य-मन्दिर या सूर्य-कुण्ड के स्थान के रूप में प्रसिद्ध होने का अनुमान पुष्ट होता है।[४]

सूर्य प्रकाश के देवता हैं और विभिन्न शारीरिक संकटों का विनाश करनेवाले हैं। चक्षु और सूर्य की पारस्परिक समानता की ओर एक मन्त्र (वैदिक)-निर्देश आता है, जहाँ कहा गया है कि मृतक की चक्षु सूर्य में चली जाती है। अथर्ववेद में सूर्य को चक्षुओं का पति बताया गया है और उल्लेख आता है कि वे प्राणियों के एक नेत्र हैं....।[५] इसलिए उपर्युक्त लोकोक्ति में वर्णित बहराइच का अन्धों के लिए प्रिय होना सहज सिद्ध है।[६]

कलकत्ता : घोड़ा गाड़ो नोना पानी अऊर राँड़ के धक्का।
एह तीनों से बचल रहे, तऽ केलि करे कलकत्ता॥

घोड़ा-गाड़ी, खारा पानी और बदचलन औरतों की संगति—इन तीनों से जो बचा रहता है, वह कलकत्ता में मौज करता है।

यह लोकोक्ति कलकत्ता से सम्बद्ध है। भारत में अँगरेजों के आगमन के बाद कलकत्ता विश्व के अन्तरराष्ट्रीय नगर के रूप में चमका। यहाँ पहले जब ट्राम, मोटर आदि आधुनिक सवारियों का चलन कम था, तब घोड़ा-गाड़ी (फिटिन, बग्घी, टमटम) की सवारी प्रचलित थी। इसलिए, उस समय कलकत्ता की भरी सड़कों पर चलनेवाले लोगों को इन घोड़ा-गाड़ियों के धक्के और टक्कर का भय बराबर बना रहता था।

---

१. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा : अवध के जिलों के नाम, 'हिन्दुस्तानी' (पत्रिका), अप्रैल, १९३६ ई०, पृ० १३१।
२. भोजपुरी लोक-साहित्य का अध्ययन, पृ० ४३३।
३. दे० इम्पीरियल ग० ऑव इण्डिया, जिल्द २, कलकत्ता, १९०८ ई०, पृ० ४०९।
४. सूर्यकुण्ड-सम्बन्धी विस्तृत विवरण के लिए दे० आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑव इण्डिया, न्यू सीरिज, जिल्द २, इलाहाबाद, १८९१ ई०, पृ० २९३।
५. वैदिक देवशास्त्र : प्रो० ए० ए० मैकडॉनल-रचित वैदिक माइथोलॉजी का स्वतन्त्र हिन्दी-रूपान्तर :, श्रीभारतभारती लिमिटेड प्रकाशन, दिल्ली १९६१ ई०, पृ० ६०।
६. प्रवाद है कि संस्कृत के प्रसिद्ध कवि मयूरभट्ट कुष्ठरोग से पीड़ित होने पर, सूर्य की आराधना के लिए बहराइच आये थे और यहीं उन्होंने 'सूर्यशतक' की रचना की थी। उपर्युक्त प्रवाद से भी सूर्यस्थान के रूप में बहराइच की प्राचीनता सिद्ध होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कम्पनी-शासन में कलकत्ता की पेयजल-व्यवस्था ठीक नहीं थी। कलकत्ता में रहनेवाले परदेशियों को खारा पानी पीने में बहुत दिक्कत होती थी। कुछ लोग तो इस पानी के पीने से बीमार भी पड़ जाते थे।[1] नगर में निगम की स्थापना के बाद पेयजल की व्यवस्था कुछ ठीक हो गई। यह कलकत्ता गुण्डागर्दी के लिए भी प्रसिद्ध है। नगर में वेश्याओं और गुण्डों की बहुसंख्या के कारण व्यभिचार और अवैध रोजगारों को प्रोत्साहन मिलता है। परदेशी यात्री कभी-कभी इन दुष्ट नारियों के फेर में पड़ जाते हैं और प्राण और धन भी गँवा बैठते हैं।

जे गइल कलकत्ता से खेह खाइल अलबत्ता।
जो कलकत्ता गया, वह खूब दुर्गति में फँसा।

पेशे की खोज में बहुत-से लोग कलकत्ता जाते हैं। किन्तु, आर्थिक संकट और ऊँची शिक्षा के अभाव में प्रायः ये लोग कलकत्ता जैसे शहर में शुरू-शुरू में नौकरी नहीं मिलने पर बिना खाये-पिये खुली सड़कों पर कई दिन गुजार देते हैं। उपर्युक्त लोकोक्ति सम्भवतः ऐसे ही परदेशी भोजपुरियों के अनुभव पर आधारित है।

(घ) बाह्य-सम्पर्क और प्राचीन परिस्थिति : भोजपुरी लोकोक्तियों में प्रयुक्त कुछ ऐसी शब्द-सामग्री है, जो ऐतिहासिक अध्ययन की दृष्टि से सर्वथा उपयोगी है। इन शब्दों और उनकी अर्थ-सामर्थ्य के माध्यम से भोजपुर-क्षेत्र की संस्कृति के समन्वयात्मक और संश्लिष्ट पक्ष का यथार्थ परिचय मिलता है। इन शब्दों और उनके विशेष प्रयोगों की गहराई में उतरने से यह संकेतित होता है कि भोजपुर-क्षेत्र का वर्त्तमान जीवन अतीत काल की कितनी ही अनमिल-अनगढ़ प्रथाओं और परिस्थितियों को पचाकर प्रकाश में आया है।

इस क्षेत्रीय इतिहास के जिन भूले-बिसरे अंशों का परिचय जिस शब्द-भाण्डार से मिलता है, उसे विषयानुसार तीन वर्गों में विभाजित कर सकते हैं—(अ) बाह्य सम्पर्क-सम्बन्धी, (आ) प्रशासन-सम्बन्धी और (इ) राजस्व और मुद्रा-सम्बन्धी।

(अ) बाह्य सम्पर्क-सम्बन्धी :

तुर्क : तुरुक, तोता औ खरगोस, ई तीनों ना माने पोस।
तुर्क, तोते और खरगोश ये तीनों पोस नहीं मानते हैं।
प्र० कृतघ्नता।

तुरुक ताड़ी, बैल खेसाड़ी।
तुर्क ताड़ी से और बैल खेसाड़ी[2] से प्रसन्न होते हैं।

---

१. पानी और हवा के कारण शुरू-शुरू में भोजपुरी लोग भी कलकत्ता जाकर बीमार पड़ जाते हैं। एक भोजपुरी लोकगीत में कलकत्ता से बीमार और काला होकर घर लौटे हुए पति की दशा पर उसकी पत्नी द्वारा हार्दिक क्षोभ प्रकट किया गया है। गीत की कड़ी इस प्रकार है :
"रेलिया से अइलऽ हो जहजिया से अइलऽ हो कि कल में ढाढ़ा लागसु ना।
पोअलऽ चाँपा कल के पनियाँ, कल में ढाढ़ा लागसु ना।
राजा करिया होके अइलऽ हो कि कल में ढाढ़ा लागसु ना।"

२. खेसाड़ी वा खेसारी एक दलहन है। प्रायः गरीब लोग इसे खाते हैं। यह पशु के चारे के रूप में भी व्यवहृत होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी क्षेत्र में 'तुरुक' (तुर्क) शब्द मुसलमान-जाति के पर्याय के रूप में और कभी-कभी नीच व्यक्ति के उपमान के रूप में व्यवहृत होता है। इस सम्बन्ध में जॉन क्रिश्चियन का विचार है कि आरम्भ में भारतवर्ष में आगन्तुक मुसलमान तुर्क थे। जिस प्रकार कि यूरोपियनों में आरम्भ के आगन्तुक फ्रेंच थे, जो भारत में फिरंगी कहलाये, उसी प्रकार मुसलमानों में तुर्क थे, जो बाद में भी तुर्क कहलाये।[१] किन्तु, इसके पीछे भारतीय जनता विशेषतः हिन्दुओं की एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया का संकेत भी मिलता है। शकों के बाद भारतवर्ष पर सबसे बड़े आक्रमण तुर्कों द्वारा ही हुए। इन आक्रमणों से तत्कालीन समाज के धर्म और जन-धन की बहुत हानि हुई।[२] तुर्क बड़े लड़ाकू और चुस्त होते थे। भोजपुरी क्षेत्र में तुर्कों का प्रवेश बारहवीं शताब्दी के अन्त में हुआ, जबकि तुर्क सरदार मोहम्मद बिन बख्तियार खिलजी ने मगध के इलाकों पर धावा करना शुरू किया।[३] तुर्कों के इन हमलों ने कितने ही मन्दिरों, पुस्तकालयों, मठों आदि को धराशायी कर दिया। इन तुर्कों से गाहड़वालवंशीय राजाओं ने बदला लेने की कोशिश की थी। स्पष्टतः, इस्लाम के झण्डे के नीचे आनेवाली अन्य जातियों की अपेक्षा तुर्क अपनी धार्मिक असहिष्णुता, कट्टरपन, रहन-सहन और खान-पान के कारण हिन्दुओं के जीवन और उनके संस्कारों को बहुत कम अनुप्राणित कर सके और वे स्वयं भी भारतीय जीवन से यथेष्ट रूप में प्रभावित नहीं हो सके। अतः, एक दूसरे से दूर-दूर रहने की प्रवृत्ति ने एक दूसरे के प्रति सन्देह और घृणा की भावना रखने को प्रोत्साहित किया। इन्हीं कारणों से हिन्दू तुर्केतर मुसलमानों को भी तुर्क कहकर अपने अवचेतन मानस का परिचय देते हैं।

महाराष्ट्र से सम्पर्क : देशी घोड़ी, मरहठी चाल।

घोड़ी तो देशी है, पर चाल में अनुकरण करती है महाराष्ट्री घोड़ियों का।

प्र० अन्धानुकरण करना।

इस लोकोक्ति से यह इंगित होता है कि भोजपुरी क्षेत्र में महाराष्ट्री घोड़ियाँ या घोड़े अपनी सुन्दर चाल-ढाल के कारण बड़े लोकप्रिय रहे हैं।[४] अनुमान किया जा सकता है कि मराठी घोड़ी का भोजपुरी क्षेत्र में आगमन व्यापार या राजाओं के अभियान के माध्यम से हुआ होगा। प्राचीन काल में ही भोजपुरी क्षेत्र और पश्चिमी प्रान्तों के बीच व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित हो गया था। जबकि बाजीराव के पुत्र बालाजी पेशवा मुसलमानों से लोहा लेने के लिए बिहार के रास्ते से बंगाल पहुँचे,[५] तब उक्त क्षेत्रों के बीच गहरा राजनीतिक सम्बन्ध

---

१. दे० बिहार प्रोवर्ब्स, पृ० १२५।

२. दे० अलबेरुनीज इण्डिया, भा० १५-२२।

३. जयचन्द विद्यालंकार : इतिहास-प्रवेश, ५वाँ संस्करण, सलतनत-पर्व, पृ० ३५६।

४. (अ) "The chief breeds (of horses) in Bombay are those of the Deccan and of Kathiawar in both of which provinces government maintains establishments of Stallious."
—Hunter : India. p. 412.

(आ) "कौटिल्य ने कहा है कि कम्बोज, सिन्धु, आरट्ट (पश्चिमी पंजाब, अब पाकिस्तान) तथा बनायु (पश्चिमोत्तर सीमाप्रान्त) नामक स्थान के घोड़े उत्तम माने जाते थे; वाह्लीक, पापेय, सौवीर एवं तैतिला के घोड़े मध्यम श्रेणी .....के माने जाते थे।"

५. दे० जयचन्द्र विद्यालंकार : इतिहास-प्रवेश, ५वाँ संस्करण, पृ० ५५५; महामहोपाध्याय पाण्डुरंग वामन काणे : धर्मशास्त्र का इतिहास, द्वितीय भाग, पृ० ६४७, लखनऊ, १९६५ ई०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन् १७४० ई० के लगभग स्थापित हुआ। सम्भवतः, उक्त समय में ही प्रसिद्ध मराठी अश्वारोहियों का जत्था भी भोजपुरी क्षेत्र होकर गुजरा होगा और भोजपुरी जनता ने मराठी घोड़ों की विशेषता परखी होगी।

गुजरात से सम्पर्क : खर के टाटी गुजराती ताला।

टट्टी तो खर की है, पर ताला गुजराती है।

प्र० बेमेल कार्य या दिखावटीपन पर व्यंग्य।

यह लोकोक्ति परोक्षतः भोजपुरी क्षेत्र और गुजरात के प्राचीन सम्बन्ध की ओर संकेत करती है। अवश्य ही भोजपुरी क्षेत्र में कभी-न-कभी गुजराती ताले अपनी सुन्दर और मजबूत बनावट के लिए प्रसिद्ध रहे होंगे। वर्त्तमान काल में भी गुजरात के खम्भात (काम्बे) नाम के स्थान के बने ताले बहुत प्रसिद्ध हैं।

(आ) प्रशासन-सम्बन्धी :

दीवान : जब ले रसरी खेत पर, तब ले देवान देवान।

नाप के सिलसिले में खेत पर जरीब गिरने के समय तक ही दीवान की इज्जत दीवान की तरह होती है।

प्र० किसी वस्तु या व्यक्ति को स्वार्थवश सम्मान देना।

मुगलकाल में शासन-प्रणाली ने एक नया रूप ग्रहण किया था। प्रशासकीय सुविधा के लिए देश को सूबों में बाँटा गया था। इस सूबे का मालिक सूबेदार होता था, जिसे 'नाजिम' भी कहते थे। सूबेदार के नीचे दीवान, काजी आदि अधिकारी होते थे। दीवान केन्द्र और सूबा—दोनों में होते थे। केन्द्र का दीवान 'दीवान सलतनत' और सूबे का दीवान 'दीवान सूबा' कहलाता था।[1] दीवान वित्त और भू-कर-विभाग का स्वामी होता था। मुगलकाल में राजा टोडरमल दीवान-कुल के रूप में बड़े प्रसिद्ध थे। इन्होंने ही वैज्ञानिक पद्धति से सूबों की जमीन की नाप करवाई थी और भू-कर निश्चित किया था। अकबर ने इन्हें दीवान का खिताब दिया था। हाल-हाल तक जमीन्दारों की कचहरी के अमीन, पटवारी आदि गाँवों में जमीन नापने जाते रहे हैं। ग्रामीण इन्हें सम्मानार्थ दीवान कहते थे। ऐसा लगता है कि 'टोडरमल' को दृष्टि में रखकर ही कालान्तर में जनता के अवचेतन में 'दीवान' और भू-मापन' में अन्योन्याश्रय सम्बन्ध स्थापित हुआ होगा। अँगरेजी-राज में भी जमीन्दारों के मामूली अमीन को भी 'दीवान' कहने के पीछे सामान्य लोगों की खुशामदी प्रवृत्ति के साथ, जमीन की नाप-जोख के पुराने इतिहास का भी आभास मिलता है।

काजी : जब हम तूँ राजी तऽ का करिहें काजी।[2]

जब हम-तुम राजी हैं, तो काजी क्या कर ही सकता है।

प्र० आपस की एकता के कारण दूसरे के विरोध की परवा न करना।

मुगलकाल में काजी का पद धार्मिक और प्रशासकीय दोनों दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण था। ये काजी भी छोटे और बड़े दोनों प्रकार के होते थे। शाही काजी, 'काजी उलकजात' की नियुक्ति करता था। वह बादशाह को धार्मिक और अनुष्ठान-सम्बन्धी मामलों में सलाह देता था। ये

---

१. दीवान की नियुक्ति और अधिकार के लिए दे० यदुनाथ सरकार : औरंगजेब (हिन्दी-संस्करण) बम्बई, १९५१ ई०, पृ० ६३५-३३६।

२. पाठा० जब मियाँ बीबी राजी तऽ का करिहें गाँव के काजी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काजी शव-दाह, विवाह, जन्म आदि संस्कारों और धार्मिक समारोहों में उपस्थित होते थे। ये काजी धार्मिक मामलों का भी फैसला करते थे, किन्तु कभी-कभी फौजदारी मामलों का भी निबटारा करते थे।[1]

परगना : जेकर मारे परगन रोवे, से कर भाई गद-गद रोवे।

जिसके मारने से 'परगन' रोता है, उसका भाई आँसू टपका-टपकाकर रोता है।

प्र० शक्ति रहने पर भी होनता प्रकट करना।

प्राचीन काल में प्रशासकीय व्यवस्था के लिए राज्य को कई शासनिक इकाइयों मे विभाजित किया गया था। मोटे रूप से राज्य को केन्द्र और प्रदेश—इन दो भागों में बाँटा जाता था। प्रादेशिक शासन भी कई इकाइयों में विभक्त होता था। मुगलकाल में राज्य सूबों में, सूबे परगनों में और परगने सरकारों में बँटे होते थे। भो० क्षे० में सुदृढ शासन-व्यवस्था की स्थापना करने का श्रेय शेरशाह को है। शेरशाह ने प्रजा और शासन दोनों को दृष्टि में रखते हुए जागीर-प्रथा का विनाश कर परगनों का जीर्णोद्धार किया।[2]

(इ) राजस्व और मुद्रा-सम्बन्धी : इतिहास के विभिन्न कालों में सोने, चाँदी और ताँबे के अनगिनत सिक्के प्रचलित हुए। भारतवर्ष में विदेशी शासनों की स्थापना के बाद नई मुद्राएँ अस्तित्व में आईं। अब राजाओं और साहूकारों के खजानों और टकसालों में प्राचीनकालीन निष्क, सुवर्ण, कार्षापण आदि मुद्राओं की जगह, सूका, टका, दोकड़ा, दमड़ी, छदाम, कौड़ी आदि सिक्कों का बोलबाला हुआ। लोकोक्तियों में इन सिक्कों का उल्लेख इस प्रकार हुआ है :

सूका : सूका के बाछी, जनम के हतेया।

चार आने की बाछी थी, किन्तु उसकी हत्या से जन्म-भर के लिए पाप लगा।

प्र० मामूली घटना का चिरकालिक और व्यापक दुष्परिणाम होना।

'सूका' एक प्राचीनकालीन मुद्रा है। कुछ विद्वान् इसे संस्कृत-शब्द 'सपादक' का विकसित रूप मानते हैं।[3] किन्तु, टर्नर ने इसकी व्युत्पत्ति सं० शुक्र (श्वेत के अर्थ में) से सुझाई है (शुक्र>शुक्ल>सुक्का)।[4] यह गिल्लट के रंग का सिक्का था। इसलिए उपर्युक्त 'शुक्र' से इसका सम्बन्ध माना जा सकता है।

दमड़ी : दमड़ी के मुरगा टका चोंथाई।

मुरगा तो एक दमड़ी का है, पर उसकी नोंच-चोंथ में एक टका खर्च हो जाता है।

प्र० साध्य से अधिक साधन पर खर्च होना।

टका के इतिहास के सम्बन्ध में राहुलजी का कहना है : "हमारे यहाँ चाँदी के सिक्के को टंका कहते थे, इसी कारण टंका बनानेवाले स्थान का नाम टंकशाल या टकसाल पड़ा। शेरशाह

---

१. दे० प्रो० के० के० बसु : एडमिनिस्ट्रेशन ऑव जस्टिस इन भागलपुर इन प्रि० ब्रिटिश डेज, ज० वि० आर० एस०, जिल्द २०, भाग ३-४, पृ० २७६।

२. दे० (अ) जयचन्द्र विद्यालंकार : इतिहास-प्रवेश, पृ० ४७२।
(आ) आइने अकबरी : रायल एशियाटिक सोसायटी ऑव बंगाल द्वारा प्रकाशित, भाग २।

३. सं० हि० श० सा०, पाँचवाँ संस्करण, पृ० १२०१।

४. ने० डि०, पृ० ६११।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के समय से टंका का नाम हमारे देश से उठ गया; लेकिन बंगाल और उड़ीसा में आज भी रुपये को टका कहते हैं। हिन्दीभाषी पूर्वी क्षेत्र में टका दो पैसे को कहते थे। तिब्बत और मध्यएशिया में हाल तक चाँदी के सिक्के को टंका कहा जाता रहा है।[1] यह टका मुस्लिम और अँगरेजी-काल में भी चालू था। इस टका का मान दो पैसों के बराबर था। टका का आकार गोल होता था। इसलिए जो टिकली आकार में टका की तरह होती थी, वह जनपदों में 'टकही' कहलाने लगी। एक लोकोक्ति में कहा गया है :

हाथ में ना गोड़ में टकही लिलार में।

उसके हाथ और पैर में कोई आभूषण नहीं है, पर टकही (टिकली) ललाट पर शोभ रही है।[2]

प्र० अनुचित प्रदर्शन करना।

दाम : दाम सँवारे काम बड़ी बहू का नाम।

काम के सँवारने में दाम का सहयोग है, पर इसका श्रेय बड़ी बहू को मिल ता है।

प्र० किसी कार्य का श्रेय पहले के बदले दूसरे को मिलना।

लोक-व्यवहार में 'दाम' कीमत या मूल्य के अर्थ में प्रयुक्त होता है। किन्तु, दाम द्रम्य या द्राख्मा के रूप में एक ग्रीक सिक्का था, जो वाख्त्रिय—ग्रीक के चाँदी के सिक्कों के रूप में एक रुपये के करीब होता था।[3] मुगलकाल में दाम ताँबे का सिक्का रह गया था और उसका मान पैसे के चौबीसवें भाग या एक दमड़ी के तीसरे भाग के बराबर था।

दमड़ी : दमड़ी के पान बनिआइन खास।

दमड़ी के कीमत का पान बनिआइन खाती है।

प्र० किसी की कंजूसी पर व्यंग्य।

मुद्रा-सम्बन्धी लोकोक्तियों में दमड़ी या दमरी-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ अधिक हैं। हो सकता है कि यह मुद्रा की छोटी इकाई होने के कारण विनिमय की सुविधा की दृष्टि से अन्य सिक्कों की अपेक्षा अधिक लोकप्रिय हुई हो। यह दमड़ी ३½ दाम के बराबर होती थी। इसलिए, उपर्युक्त लोकोक्तियों में किंचित् मूल्य के ही अर्थ में 'दमड़ी' प्रयुक्त हुई है।

दोकड़ा : दमड़ी के भागवत, दोकरा के पुरान।

भागवत एक दमड़ी का है और पुराण एक दोकड़े का है।

दोकड़ा, दमड़ी की तरह एक पुराना सिक्का था। दोकड़ा और छदाम के मान में अन्तर नहीं था। यह दोकड़ा ६½ दाम के बराबर होता था।

कौड़ी : पइसा ना कौड़ी बीच बाजार में दौड़ा दौड़ी।

पैसा-कौड़ी तो पास में है नहीं, व्यर्थ बीच बाजार में दौड़ा-दौड़ी हो रही है।

द्रव्य के रूप में कौड़ी का व्यवहार भारत, चीन आदि देशों में बहुत प्राचीन काल से होता आया है। भास्कराचार्य की 'लीलावती' में इसके मूल्य का विवरण मिलता है। डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने एक लघु टिप्पणी में कौड़ी की ऐतिहासिकता पर इस प्रकार

---

१. राहुल सांकृत्यायन : अकबर, पृ० २६६।

२. जॉन क्रिश्चियन ने (वि० प्रो०, पृ० ३३) लोकोक्ति में प्रयुक्त 'टकही' का लक्ष्यार्थ 'दो पैसे की टिकली' किया है। किन्तु, यह अर्थ भ्रमपूर्ण है, जैसा कि उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है।

३. राहुल सांकृत्यायन : अकबर, पृ० १३२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाश डाला है—".....कौड़ी बंगाल का अत्यन्त प्राचीन सिक्का था, जो मौर्यकाल से १९वीं शताब्दी तक चालू रहा। सन् १८०१ ई० तक सिलहट जिले की ढाई लाख की मालगुजारी में कौड़ी ही सरकारी खजाने में जमा की जाती थी। सन् १८१३ ई० से यह प्रथा बन्द हुई। चार कौड़ियों का एक गण्डा होता था। भारतवर्ष में कौड़ियाँ मालद्वीप (मालावार के पास एक द्वीप, जिसका पुराना नाम कपर्दकद्वीप था) से आती थीं।"[१] विनिमय में एक पैसे के बराबर प्रायः अस्सी कौड़ियाँ मानी जाती थीं।[२]

१. ३. प्राकृतिक भूगोल-सम्बन्धी

सामान्यतः भारतीयों का जीवन प्रकृति की गोद में पलता है। इस देश का अधिकांश लोक-समुदाय खुले आकाश के नीचे और विभिन्न वनस्पतियों से पूर्ण विस्तीर्ण मैदानों में अपने कर्म और अवकाश के क्षण गुजारता है। इसीलिए, सहज ही इस समुदाय का प्रकृति की विभूतियों—मेघ, वायु, धूप, वनस्पति, जीव-जन्तु आदि के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हो जाता है।

सभ्यता के आदिकाल से ही भारत के मनीषी भौतिक परिवेश के प्रति जागरूक और जिज्ञासु रहे हैं। इन्होंने प्रकृति के विभिन्न रूपों और व्यापारों को ज्ञान, विज्ञान और साहित्य के विविध स्तरों पर समझाने की कोशिश की है। मनीषियों के साथ, सामान्य जनता-जनार्दन भी प्राचीन काल से ही अपने सहज ज्ञान और सुलभ माध्यमों द्वारा, प्राकृतिक जगत् पर विचार करती रही है। लोकवार्त्ता और लोकमानस के सूक्ष्म अध्ययन से यह सिद्ध होता है कि वेद, पुराण, विविध शास्त्रों और प्राचीन साहित्य में ऋतु, वायु, वनस्पति और जीव-जन्तु-सम्बन्धी चिन्तन की जो परम्परा है, वह जनसामान्य के अनुभव और धारणा से भी प्रभावित और पोषित हुई है। अथर्ववेद के 'पृथ्वी' और 'नदीसूक्त,' 'भुवनकोश' और 'वाराहमिहिरसंहिता' के प्राकृतिक भूगोल-सम्बन्धी विवेचन-विश्लेषण में लोकज्ञान और लोकविश्वास का भी निश्चय-पूर्वक महत्त्वपूर्ण दान रहा है।

यहाँ हमारे अध्ययन का प्रतिपाद्य विषय, भोजपुरी लोकोक्तियों में प्राप्त प्राकृतिक भूगोल सम्बन्धी जनसामान्य का अनुभव है। प्राकृतिक भूगोल-सम्बन्धी लोकोक्तियों का अध्ययन इन वर्गों के अन्तर्गत किया गया है : (क) जलवायु, (ख) वनस्पति और (ग) जीव-जन्तु।

(क) जलवायु : जलवायु की दृष्टि से भोजपुरी क्षेत्र शीतोष्ण कटिबन्ध में आता है। किन्तु, पूरे भोजपुरी क्षेत्र का जलवायु पूर्णतः एक-सा नहीं है। कारण यह है कि यह क्षेत्र चौड़ाई की अपेक्षा लम्बाई में अधिक विस्तृत है, अतः सर्वत्र सामुद्रिक और अक्षांशीय सामीप्य और दूरी एक समान नहीं है। फिर भी, अधिकांश भोजपुरी क्षेत्र समतल भू-भाग पर स्थित है। यहाँ पावस, शरद्, हेमन्त, शिशिर, वसन्त और ग्रीष्म—ये छह ऋतुएँ अपने पूरे ऐश्वर्य से अवतरित होती हैं और क्षेत्रीय जीवन के विविध पक्षों पर अनुकूल और प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं। जलवायु-सम्बन्धी लोकोक्तियों का अध्ययन, इन दो वर्गों के अन्तर्गत किया गया है : (अ) वर्षा ऋतु और (आ) अन्य ऋतुएँ।

---

१. पृथिवीपुत्र, टिप्पणियाँ, पृ० २१९।

२. दे० टवर्नियर्स ट्रेवेल्स इन इण्डिया, भाग १ : अँगरेजी-संस्करण, ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, १९३५ ई०, अपेण्डिक्स, पृ० ३२७; डॉ० डी० पन्त : कॉमर्सियल पॉलिसी ऑव दि मोगल्स, बम्बई, १९३० ई०, पृ० ७५-७६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(अ) वर्षा ऋतु : भोजपुरी लोकोक्तियों में वर्षा ऋतु पर सबसे अधिक विचार हुआ है। इसका कारण है। जनसमुदाय की प्रमुख जीविका कृषि है। यह कृषि अन्य ऋतुओं की अपेक्षा वर्षा की गतिविधि पर अधिक निर्भर करती है। वराहमिहिर कहते हैं: 'अन्न ही जगत् का प्राण है और यह अन्न वर्षाकाल के वश में है। इसलिए यत्न के साथ वर्षाकाल की परीक्षा करनी चाहिए।'[१] जनपदों में भी जेठ के उतरते ही किसानों की आँखें आकाश पर जा टिकती हैं। इस समय बूढ़े-पुराने, ग्रह-नक्षत्र, मेघ, विद्युत्, वायु आदि की गतिविधियों का अध्ययन करने लगते हैं। वर्षा-सम्बन्धी प्रायः लोकोक्तियाँ किसानों के ऐसे ही अध्ययन और अनुभव पर आधारित हैं। वर्षा-विज्ञान-सम्बन्धी लोकोक्तियों को इन वर्गों में बाँटा गया है: (१) निमित्त-सम्बन्धी, (२) नक्षत्र-सम्बन्धी और (३) मास-सम्बन्धी।

(१) निमित्त-सम्बन्धी : शास्त्रों की तरह लोकोक्ति-साहित्य में भी वृष्टि और अनावृष्टि के आगमन, मात्रा, दिशा और काल का निश्चय विभिन्न निमित्तों के आधार पर किया गया है। सुविधा की दृष्टि से इन निमित्तों को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है—(क) आकाश-स्थित, (ख) अन्तरिक्ष-स्थित और (ग) भूमि-स्थित।

(क) आकाश-स्थित : वृष्टि और अनावृष्टि सूर्य, चन्द्र, शुक्र, अगस्त्य, मंगल आदि ग्रहों और नक्षत्रों की गतिविधि से भी आभासित होती है। लोकोक्तियों में उपर्युक्त आकाश-स्थित ग्रहों और नक्षत्रों की गतिविधि पर जो विचार हुआ है, वह नीचे दिया जा रहा है।

सूर्य : सूर्य वृष्टि का मूल कारण है। इसी के ताप से समुद्र की सतह पर वाष्प जन्म लेते हैं। सूर्य के ताप की मात्रा जितनी अधिक होती है, उतना ही अधिक वाष्प निर्मित होता है। सूर्य-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ निम्नांकित हैं:

जतना तपी, ओतने बरसी।
सूर्य जितना तपेगा, वर्षा उतनी ही अधिक होगी।

आगे मेघ पीछे भान, बरखा होखे ओस समान।
अगर मेघ के पीछे सूर्य निकले, तो वर्षा ओस के समान होगी।

सावन शुक्ला सप्तमी, छिपके ऊगे भान।
तबतक मेघा बरसे, जबतक देवउठान॥

सावन के शुक्ल पक्ष की सप्तमी को अगर सूर्य मेघों से घिरे आकाश में उदित हो, तो इससे प्रकट है कि 'देवउठान' (कार्त्तिक शुक्ल-एकादशी) तक मेघ बरसेंगे।

छपके ऊगे तो बया भये, निरमल रैन करन्त।
कि जल देखबऽ सागरा, कि कामनी कूप भरन्त॥

सावन शुक्ल-सप्तमी को सूर्योदय मेघों के मध्य में हो, किन्तु रात्रि में आकाश निर्मल हो, तब तो सागर में जल दीखेगा या स्त्रियों के द्वारा कुओं से पानी भरते समय।

---

१ "अन्नं जगतः प्राणाः प्रावृट्कालस्य चान्नमादत्तम्। यस्मादतः परीक्ष्यः प्रावृट्कालः प्रयत्नेन।"
—बाराहीसंहिता, २१।१।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चन्द्र : सूर्य की तरह चन्द्रमा की गतिविधि के आधार पर वृष्टि और अनावृष्टि का आभास होता है। एक लोकोक्ति है :

सावन शुक्ला सप्तमी, चन्दा ऊगे तुरन्त।
किया जल मिले समुन्दरे, किया नागरि कूप भरन्त॥

सावन शुक्ल-सप्तमी को शीघ्र ही चन्द्रमा आकाश में दिखाई पड़े, तो स्पष्ट है कि जल या तो समुद्र में मिलेगा, नहीं तो स्त्रियों के द्वारा कुओं से पानी भरते समय।

अगस्त्य : अगस्त्य (नक्षत्र) के उदय से अनावृष्टि की सूचना मिलती है। किसान इस नक्षत्र को आकाश में देखते ही वर्षा से नष्ट-भ्रष्ट हुए अपने घर-आँगन की छावनी और लिपाई-पुताई का काम आरम्भ कर देते हैं। अगस्त्य-सम्बन्धी एक लोकोक्ति है :

ऊगे अगस्त बन, फूले काँस, अब नइखे बरखा के आस।

आकाश में अगस्त्य का उदित हो गया और वन में काँस भी फूले, इसलिए अब वर्षा की आशा नहीं रही।[1]

शुक्र : यह नक्षत्र सावन में उदित होकर वृष्टि की सूचना देता है। किसान सावन में (शुक्रोदय से) वृष्टि के प्रति आश्वस्त हो जाते हैं। एक लोकोक्ति है :

सावन शुक्र न दीसे, निहिचे पड़े अकाल।

सावन में शुक्र दिखाई न पड़े, तो निश्चय ही अकाल पड़ेगा।

(ख) अन्तरिक्ष-स्थित : इस वर्ग में मेघ-गर्जन, बिजली, वायु, इन्द्रधनुष आदि निमित्त उल्लेखनीय हैं।[2]

मेघ : मेघ वृष्टि का क्रियात्मक रूप है। इसकी शक्ति अमोघ है। यही लोक के सौभाग्य का कारण है। यह जब भूमि पर जल उड़ेलता है, तब ऊँची-नीची जगहें समतल हो जाती हैं। वायुमण्डल की प्रतिक्रिया और परिवर्त्तन के कारण मेघ अनेक रूप-रंग धारण करता है। उसके ये रूप-रंग वृष्टि-अनावृष्टि के सूचक होते हैं। मेघ-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

करिया बादर जिउ डरावन, भूअर बादर पानी लावन।

काला बादल जी को डराता है और भूरा बादल पानी लाता है।

तीतर बरनी बादरी बिधवा काजर रेख।
ई बरसे उ घर करे एह में मीन ना मेख॥

तीतर वर्ण की बदली हो और विधवा की आँखों में काजल की रेखाएँ हों, तब इस बात में मीन और मेख की गुंजाइश नहीं है कि बदली बरसेगी और विधवा नया घर करेगी (विवाह करेगी)।

माघ में बादर लाली धरे साँचे जानहु पत्थर परे।

माघ में बादल लाल रंग के हों, तो यह सच मानना कि पत्थर पड़ेंगे।

लाल पीयर जब होय अकास, तब ना बा बरखा के आस।

जब आकाश लाल-पीला (रंग का) होने लगे, तो वर्षा की आशा छोड़ देनी चाहिए।

---

१. तु० 'उदित अगस्त पंथ जल सोखा।'—तुलसीदास : रामचरितमानस।

२. वराहमिहिर ने अन्तरिक्ष-स्थित निमित्तों का उल्लेख करते हुए लिखा है : 'पवनसलिलविद्युद्-गर्जिताभ्रान्वितो यः स भवति बहुतोयः पञ्चरूपाभ्युपेतः।' —वाराहीसंहिता, २१।३७।
जो गर्भ पवन, जल, बिजली, गर्जन और मेघ रूप पंच-निमित्त से युक्त है, वह अधिक जल देता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गरजे सो बरसे नहीं, बरसे घोर अन्हार ।

गर्जन करनेवाले बादल नहीं बरसते हैं। बरसनेवाले बादल घोर अन्धकार लिये होते हैं।

मेघ-गर्जन : मेघ-संघटन से विद्युत् निष्पन्न होती है। इस विद्युत् से वायुमण्डल में तापक्रम का विकास होता है। अधिक ताप पाकर वायु एकाएक गरम होकर चारों ओर दौड़ने लगती है। फलस्वरूप, आकाश में मेघ-गर्जना होती है। मेघ-गर्जन के समय और मात्रा से वृष्टि का होना या न होना आभासित होता है। उदा०

पूनो परबा गाजे, तऽ दिना बहत्तर नाजे ।

यदि असाढ़ी पूनो और प्रतिपदा को चमक के साथ मेघ-गर्जन हो, तो ढाई महीने तक वर्षा होने की सम्भावना रहती है।

सावन शुक्ला सप्तमी जों गरजे अधि रात ।
तूँ जइह पिया मालवा, हम जैबों गुजरात ।।

सावन शुक्ल-सप्तमी को अगर आधी रात में मेघ-गर्जन हो, तो हे पिया ! आप मालवा की ओर जायेंगे और मैं गुजरात की ओर।

इन्द्रधनुष : जब सूर्य का प्रकाश जल की बूँदों पर खण्डित होता है, तब इन्द्रधनुष का निर्माण होता है। इन्द्रधनुष-सम्बन्धी लोकोक्ति इस प्रकार है :

ऊगत ऊगे महि भरे बिसवत ऊगे जाय ।

यदि इन्द्रधनुष सूर्योदय के साथ ही दिखाई पड़े, तो वह अतिवृष्टि का सूचक है और सूर्यास्त के समय दिखाई पड़े, तो वह अनावृष्टि का सूचक है।

विद्युत् : मेघ विद्युत्-सम्पन्न होते हैं। वैदिक ग्रन्थों में कहा गया है कि जल का मूलभूत कारण विद्युत् है।[२] इस तडित्वन्त मेघों से पूरित नभवाले प्रदेश की भूमि जल से सराबोर हो जाती है। इसलिए, आकाश में बिजली के कड़कने और कौंधने से किसान प्रसन्न होते हैं। उदा०

चमके पच्छिम उत्तर ओर, तब जनिहऽ बरखा बा जोर ।

जब बिजली पश्चिम और उत्तर दिशा में चमके, तब समझना चाहिए कि वर्षा जोरों से आनेवाली है।

पूनो परबा गरजे गाजे तऽ दिना बहत्तर नाजे ।

सावन की पूर्णिमा और प्रतिपदा को गर्जन हो और बिजली चमके, तो समझना चाहिए कि लगातार ढाई महीने तक वर्षा होगी।

वायु : वायु समुद्र से उठे हुए वाष्पों को ऊपर ले जाती है और वायुमण्डल की ठण्डक से उनका स्पर्श कराती है। इस क्रिया से वाष्प जल-कणों में बदल जाते हैं। वे जल-कण भारी हो जाने के कारण वायुमण्डल में ठहर नहीं पाते। वे शीघ्र ही वर्षा की बूँदों के रूप में पृथ्वी

---

१. तु० "सन्ध्याकाले स्निग्धा दण्डतडिन्मत्स्यपरिवेषाः ।
सुरपतिचापैरावतरविकिरणाश्चाशु वृष्टिकराः ।।"—वाराहीसंहिता, ३०।८।
अर्थात्, सन्ध्याकाल में दण्ड, तडित, मत्स्य, मण्डल, परिवेष, इन्द्रधनुष, ऐरावत और सूर्य की किरणें—इन सबका स्निग्ध होना शीघ्र वर्षा को लाता है।

२. "वृष्टिर्वै याज्या विद्युद्देव, विद्युद्धीदं वृष्टिमन्नाद्यं सम्प्रयच्छति ।"—ऐतरेय ब्राह्मण, २।४१।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को भेंटते हैं। इसीलिए, लोक-समुदाय ने वायु-विवेचन में विशेष रुचि ली है। लोकोक्तियों में दिशा, काल, गति और प्रभाव के आधार पर वायु का विवेचन और नामकरण हुआ है।

पुरवाई : वर्षा कराने में इस पुरवा हवा का विशेष हाथ है। यह लगभग आधे जेठ से निश्चय रूप से बहने लगती है। पूर्वा नक्षत्र में पुरवाई का चलना विशेष महत्त्व रखता है। यह पुरवा हवा सावन या फागुन में चलती है, तो अकाल पड़ता है और गेहूँ में 'गेरुई' (फसल का एक रोग) लगती है। उदा०

पहिला पवन पुरुब से आवे, बरसे मेघ अन्न सरसावे।

अगर वर्षा-ऋतु में दिन के आरम्भ में पुरवा हवा बहे, तो अन्न को सरसानेवाले मेघों के आने की सम्भावना रहती है।

जो पुरवा पुरवइया पावे सखलि नदिया नाव चलावे।

अगर पूर्वा नक्षत्र में पुरवा बहे, तो वह सूखी नदियों में भी नाव चलाने-भर का जल उड़ेल देती है।

भूइँयां लोट चले पुरवाई, ते दिन सावन धूरि उड़ाई।

जब पुरवा पृथ्वी पर बवण्डर बाँधती हुई चले, तब वर्षा-ऋतु के आने की आशा रहती है।

जै दिन जेठ बहे पुरबाई, तै दिन सावन धूरि उड़ाई।

जितने दिनों तक जेठ में पुरवा बहेगी, उतने दिनों तक सावन में (जब कि वर्षा होनी चाहिए) धूल उड़ेगी।

फागुन मास बहे पुरवाई, तब गेहूँ में गेरुई धाँई।

जब फागुन के महीने में पुरवा बहती है, तब गेहूँ में 'गेरुई' (फसल का रोग) का आक्रमण होता है।

ईशान : ईशान कोण को भोजपुरी क्षेत्र में 'चमरी कोन' भी कहते हैं। इस कोण से उत्तरी-पूर्वी वायु चलती है। यह वायु वर्षा लानेवाली होती है। इसके चलने पर किसानों को भरपूर वर्षा होने की आशा बँध जाती है। उदा०

चमरी कोन बहे मजबूत, हराई में पानी पीअ मोरे पूत।

ईशान कोण की वायु तेजी से बह रही है, इसलिए हे पुत्र! 'हराई' में पानी पियो।

उत्तरा : (उत्तर दिशा की वायु)—यह वायु धान की फसल के लिए अत्यन्त लाभप्रद होती है। अगर यह यथासमय बहती है, तो यह विश्वास हो जाता है कि धान की जड़ों को खूब पानी मिलेगा। उदा०

उतरा में जे बहे उतरही, अँगने गगरी भर बउरही।

उत्तरा नक्षत्र में अगर उत्तरी वायु चले, तो हे पगली! (भोली) आँगन में ही पानी भर लो।

पछैया (पश्चिमी वायु) : यह पछैया बड़ी गर्वीली हवा है। इसका आषाढ में बहना, धान की खेती के लिए अनिष्टकारक है। यह सावन में जरा भी बह जाती है, तो अविलम्ब वर्षा होती है। उदा०

जो चले पछैया बाउ, मिली माँड़ ना कतहुँ जाउ।

अरग पछिया हवा चल गई, तो कहीं भी जाओ, माँड़ नहीं मिलेगा (धान की फसल खराब होगी)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सावन पछेया सींकि डोलावे बरसत मेघ कवन बिलमावे ।

सावन में सींक डुलाने के लायक तक भी पछिया हवा बहे, तो मेघ को बरसने से कौन रोक सकता है ?

नैऋत कोण : इस कोण से बहनेवाली वायु (दक्षिणी-पश्चमी) प्रकृति के सौभाग्य को नष्ट कर देती है ।[1] इसलिए इसे भोजपुरी भाषा में 'हड़बहवा' कहते हैं । एक लोकोक्ति है :

जब बहे हड़बहवा कोन, तब लादे बनजरवा नोन ।

जब नैऋत वायु बहती है, तब बनजारे नमक लादते हैं (वे वर्षा के नहीं होने की आशा में नमक का आयात-निर्यात करते हैं) ।

दक्षिणी हवा : यह हवा बड़ी कृपण है । इसके चलने से वर्षा होने में बहुत थोड़ी सहायता मिलती है । इसलिए, लोग इसे 'कुलच्छनी' (कुलक्षणी) कहते हैं । उदा०

जो हरि होइहैं बरसनहार, का कर पाई दखिना बयार ।

अगर ईश्वर बरसनेवाले होंगे, तो दक्षिणी हवा क्या कर सकती है ?

दखिनी कुलछनी, माघ पूस सुलछनी ।

दक्षिणी हवा कुलक्षणी होती है,[2] किन्तु माघ-पूस में चलनेवाली दक्षिणी हवा सुलक्षणी होती है ।

आग्नेय कोण : पूर्व और दक्षिण दिशा से बहनेवाली इस हवा में वायुमण्डल को शुष्क करने की शक्ति रहती है । इसलिए, लोग इसे 'बाँड़ा' (दीन-हीन) कहते हैं । एक लोकोक्ति में कहा गया है :

सात दिन जे चले बाँड़ा, सूखे जल सातो खाँड़ा ।

अगर सात दिनों तक आग्नेय कोण की हवा लगातार बहती है, तो सातो खण्डों में जल सूख जाता है ।

(ग) भूमि-स्थित : वनस्पति और जीव-जन्तु खुले आकाश में और विस्तृत भूमि पर जन्म और विकास पाते हैं । आद्योपान्त इनका पूरा जीवन नैसर्गिक है । ये ऋतु के सूक्ष्म-से-सूक्ष्म परिवर्त्तनों से प्रभावित होते हैं । अतः, वनस्पति और जीव-जन्तुओं को विभिन्न चेष्टाओं के आधार पर वृष्टि-सम्बन्धी लक्षणों को निश्चित करना स्वाभाविक है । लोकोक्तियों में भूमिस्थित निमित्तों का विवेचन इस प्रकार हुआ है :

काँस : काँस का फूलना वर्षान्त का सूचक है । शरद् ऋतु के आते ही तलहटियों, कछारों और खेतों की ऊँची क्यारियों पर काँस फूलकर धवलता का समारोह मनाते हैं । इसलिए, इनके फूलते ही किसानों को वर्षा ऋतु के जाने की सूचना मिलती है । इस सम्बन्ध में प्रचलित लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

---

१. नैऋत वायु के दुष्परिणामों के लिए दे० बाराहीसंहिता, २७।८।

२. तु० "तालीपत्रलतावितानतरुभिः शाखामृगान्नर्त्तयन्
योगेऽस्मिन् प्लवति ध्वनन सुपरुषो वायुर्यदा दक्षिणः ।
सर्वोद्योगसमुन्नताश्च गजवत्तालाङ्कुशैर्धर्षिताः
कीनाशा इव मन्दवारि कृषिकान्मुञ्चन्ति मेघास्तदा ।।—बाराहीसंहिता, २७।३।
अर्थात्, जब इस योग में निठुर दक्षिणी पवन शब्द करते-करते तालवृक्ष, लताओं के समूह-सहित बानरों को नचाता रहता है, तब...मेघ, कृपण मनुष्य के समान थोड़ी वर्षा करते हैं ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊगे अगस्त बन फूले काँस, अब नइखे बरखा के आस ।

आकाश में अगस्त का उदय हुआ और वन में काँस फूल गये, इसलिए अब वर्षा की आशा नहीं रही ।

कासी-कूसी चउठ के चाँन, अब का रोपबऽ धान किसान ।

काँस-कूस दीखने लगे और भाद्र की चतुर्थी (शुक्ल) भी आ गई । इसलिए, हे किसान ! अब धान क्या रोपोगे ?

पशु-पक्षी : लोमड़ी—यह एक लोक-विश्वास है कि लोमड़ी की बोली वर्षा की समाप्ति की सूचिका होती है । एक लोकोक्ति में कहा गया है :

बोलल लुखरी फूलल काँस अब नाहीं बरखा के आस ।

लोमड़ी बोली और काँस फूले, इसलिए वर्षा की आशा नहीं रही ।

पक्षी : गौरैया : पानी कलसा गरम होय चिरई नहाये धूर ।
अंडा ले चूँटी चढ़े बरखा होय भरपूर ।।

अगर कलशे का जल गरम होता हो, चिड़िया धूल में स्नान करती हो और चींटियाँ अण्डा लेकर दीवार पर चढ़ती हों, तो भरपूर वर्षा होने की सम्भावना रहती है ।

(२) नक्षत्र-सम्बन्धी : एक संवत्सर में सूर्य जिस आकाश-मार्ग से नक्षत्रमण्डल को पार करता है, वह बारह भागों में विभाजित किया गया है । ये बारह भाग ही बारह राशियाँ हैं । इन राशियों को भी सत्ताईस भागों में बाँटा गया है । इन सत्ताईस भागों के नामकरण नक्षत्रों के आधार पर हुए हैं ।

लोकोक्तियों में वृष्टि और अनावृष्टि की दृष्टि से नक्षत्रों पर विचार किया गया हैं; किन्तु जिन नक्षत्रों का सम्बन्ध वृष्टि और कृषि से अधिक है, उनकी-विशेषता पर लोकोक्तियों में अधिक विचार किया गया है ।

आर्द्रा नक्षत्र : इस नक्षत्र में वायुमण्डल में आर्द्रता आ जाती है; इसलिए इस नक्षत्र का 'आर्द्रा' नाम पड़ा है । वर्षा-ऋतु का आगमन आर्द्रा नक्षत्र में होता है । इस नक्षत्र में होनेवाली वर्षा की आशा में कृषक धान का बीज डालते हैं । धान के अतिरिक्त अन्य खरीफ फसलों के लिए भी यह नक्षत्र लाभदायक है । आर्द्रा-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

आवत आदर न कइलन, जात ना देलन हस्त ।
येही में दूनों गइलन, पाहुन आ गिरहथ ।।

आर्द्रा नक्षत्र ने अपने आगमन के समय और हस्ती नक्षत्र ने अपने गमन के समय जल नहीं दिया, तो इससे गृहस्थ नष्ट हो जाते हैं । इसी प्रकार, अतिथि को उसके आगमन के समय आदर और प्रस्थान के समय अभिवादन नहीं मिलते हैं, तो वह फिर लौटकर नहीं आता है ।

आवत करे कुछ आदरा, जात करे कुछ हस्त ।
माघ मास के बुनी बिनु, निरधन होय गिरहथ ।।

आर्द्रा अपने आगमन के समय और हस्त अपने गमन के समय कुछ वृष्टि करती है । माघ मास की वर्षा के विना गृहस्थ निर्धन हो जाते हैं ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अदरा धान पुनरबस पइया, गइल किसान जे बोये चिरैया ।

धान की बोआई आर्द्रा नक्षत्र में होती है, तो दाने खूब बैठते हैं। पुनर्वसु में होती है, तो दाने नहीं भरते हैं और पुष्य नक्षत्र में होती है, तो किसान की पूँजी भी बैठ जाती है।

पुनर्वसु : आर्द्रा की तरह यह नक्षत्र भी धान की बोआई के लिए लाभप्रद है। लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

जो बरसे पुनरबस स्वाती, चरखा चले ना बोले ताँती ।[1]

अगर पुनर्वसु और स्वाति नक्षत्र में वर्षा होती है, तो न चरखा ही चल पाता है और न धुनकी की ताँत आवाज करती है।

जेकर बनल असढ़वा रे सेकर बरहो मास ।

जिसकी खेती आषाढ में ठीक से हो जाती है, उसे सालों-भर मौज ही रहता है।

पुष्य : किसान किसी भी तरह से धान की बोआई पुष्य नक्षत्र में समाप्त कर देते हैं। इस नक्षत्र के बाद धान की बुआई नहीं होती। कहा गया है :

पुख-पुनरबस बोअऽ धान, मघा असरेखा कादो सान ।

पुष्य और पुनर्वसु में धान को बोआई करो और मघा और आश्लेषा में धान रोपने के लिए खेत तैयार करो।

पूख पुनरबस भरे ना ताल, फेनु भरिहैं लौट असाढ़ ।

अगर पुष्य और पुनर्वसु में ताल नहीं भरता है, तो फिर वह अगले आषाढ में ही भरता है।

मघा : इस नक्षत्र का जल कृषि के लिए बड़ा लाभदायक होता है। कहते हैं कि मघा में जल हो जाय, तो फल खूब होता है। उदा०

जो कहुँ मघा बरसावे जल, सभ छाड़ि के होई फल ।

अगर मघा ने जल दे दिया, तो और कुछ हो या न हो, फल तो खूब होगा।

मघा के जल बघा ।

मघा का जल बाघ के समान (शक्तिशाली) होता है।

मघा के बरसे, माता के परसे; भूखा ना तरसे ।

मघा के बरसने से और माता के परोसने से आदमी की भूख मिट जाती है।

पूर्वाफाल्गुनी : इस नक्षत्र में धान का रोपना समाप्त हो जाता है। पूर्वा में पुरवा हवा चल जाती है, तो पर्याप्त वर्षा हो जाती है। इस नक्षत्र की वर्षा से धान की खेती को काफी सहायता मिलती है। उदाहरण :

पुरवा रोपे पूर किसान, आधा खखरी आधा धान ।

अगर पूर्वाफाल्गुनी के पहले किसान धान की रोपाई नहीं कर लेता है, तो उसकी फसल में दाने कम होते हैं।

जो पुरवा पुरवइया पावे, सूखलि नदिया नाव चलावे ।

अगर पूर्वा नक्षत्र में पुरवा हवा बहती है, तो सूखी नदियों में नाव चलने लगती है।

---

१. 'जुलाहे चित्रा के और हवावाले स्थान स्वाति नक्षत्र के वश में होते हैं।' (वाराहीसंहिता, १५।१२-१३)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्तरा : इस नक्षत्र में धान की रोपाई करने पर पूरा नुकसान होता है। यथा :

उतरा में जनि रोपहु भइया, तीन धान होई, तेरह पइया ।

उत्तरा में धान मत रोपो; क्योंकि इस नक्षत्र में रोपे हुए धान में सोलह धान के पौधों में तेरह बेकार होंगे।

हस्त : कृषि की दृष्टि से इस नक्षत्र का बड़ा महत्त्व है। किसान इस नक्षत्र के आते ही खेती के कामों में जी-जान से लग जाते हैं। हस्त के जल से धान, ईख और दलहन को खूब लाभ पहुँचता है। हस्त नक्षत्र-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ निम्नांकित हैं :

चढ़ते बरसे आदरा, उतरत बरसे हस्त ।
बीच बरिसे माघा, चैन करे गिरहथ ।।

अगर आर्द्रा शुरू में, हस्त अन्त में और मघा मध्य में बरसे तो गृहस्थ चैन करते हैं।

हथिया बरिसे, चितरा मँड़राय; घर बइठे धनहा रिरियाय ।

अगर हस्त बरसे और चित्रा आकाश में बादल एकत्र करे, तो धान की खेती करनेवाले किसान घर बैठे ही खुशी के गीत गाते हैं।

हथिया बरसे तीन होला, सक्कर साली मास ।
हथिया बरसे तीन ना होला, तील कोदो कपास ।।

हस्त के बरसने से ईख, धान और तेलहन को लाभ होता है और तिल, कोदो और कपास को हानि पहुँचती है।

चित्रा : चित्रा की वर्षा प्रायः अशुभकारी होती है। इसकी वर्षा से मिट्टी की उर्वरा शक्ति नष्ट होती है, साथ ही खेतों में लगे पौधे 'गेरुई' (फसल का रोग) के शिकार बन जाते हैं। लोकोक्तियों में कहा गया है :

जब बरखा चितरा में होय, सगरी खेती जाए खोय ।

जब चित्रा में वर्षा होती है, तब पूरी खेती नष्ट हो जाती है।

चितरा बरसे माटी मारे आगे भाई गेरुई के कारे ।

चित्रा की वर्षा मिट्टी की शक्ति को नष्ट करती है और 'गेरुई' को बढ़ाती है।

स्वाति : इस नक्षत्र की वर्षा से कपास को छोड़कर शेष फसलों को लाभ होता है। कहा गया है :

एको पानी जो बरसे स्वाती, कुरमिन पेन्हे सोना-पाती ।

स्वाति नक्षत्र में एक बार भी वर्षा हो जाय, तो इतनी अच्छी फसल होगी कि कुरमिन भी सोना-पाती (एक आभूषण) पहन लेगी।

(३) मास-सम्बन्धी : ऐसी भी लोकोक्तियाँ हैं, जिनमें वृष्टि और अनावृष्टि के निमित्तों का उल्लेख निश्चित मास या तिथि को ध्यान में रखकर किया गया है। इस प्रसंग में उन्हीं महीनों और तिथियों पर विचार किया गया है, जिनका वर्षा ऋतु से सम्बन्ध है।

कार्त्तिक : कातिक बारह मेघा दरसे, सो मेघा असाढ़हि बरसे ।

कार्त्तिक की द्वादशी को दीख पड़नेवाले मेघ आषाढ में बरसते हैं।

अगहन : धन उ राजा धन उ देश, जहवाँ बरसे अगहन सेस ।

वे राजा और देश धन्य हैं, जहाँ अगहन के अन्त में वर्षा होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूस : पूस अन्हारी सत्तमी, बिन जल बादर होय।
सावन शुदि पूनो दिवस, बरखा निहिचय होय ॥

पूस कृष्ण-सप्तमी को यदि बादल हों, पर पानी नहीं बरसे, तो सावन शुक्ल-पूर्णिमा को वर्षा निश्चय होगी।

पानी बरसे आधा पूस, आधा गोहूँ, आधा भूस।

अगर पूस के मध्य में वर्षा हो, तो गेहूँ में दाने और छिलके बराबर होंगे।

माघ : माघ में बादर लाली धरे, साँचे जनिहऽ पत्थर परे।

माघ में लाल रंग के बादल हों, तो यह सच मानना चाहिए कि पत्थर (ओला) पड़ेगा।

माघ में जाड़ा, जेठ में धूप, बिरले खेत में होखी ऊखि।

अगर माघ में जाड़ा और जेठ में धूप खूब हो, तो ईख विरले ही होगी।

चैत : एक बूँद जल चइत चुए, लाखन बूँद सावन के मुए।

अगर चैत में थोड़ी भी वर्षा होती है, तो सावन में बहुत कम वर्षा होने की सम्भावना रहती है।[1]

आषाढ : आसाढ़ी शुदि नौमी, ना बादर ना बीज।
हर फाड़ि इन्हना करऽ, बइठल चाभऽ बीज ॥

आषाढ शुक्लनवमी को न बादल हों और न बिजली, तो हल को चीर-फाड़कर ईन्धन बना लो और घर बैठे ही बीज चबा डालो।

धुर असाढ़ के पंचमी, ना बादर ना बीज।
बेचऽ गाड़ी बरधिया, उपजी कुछ ना चीज ॥

आषाढ कृष्ण-पंचमी को न बादल हो और न बिजली, तो गाड़ी और बैल को बेच देना चाहिए; क्योंकि खेतों में कुछ नहीं पैदा होगा।

सावन : बरसे सावन तऽ होखे मनभावन।

सावन में वर्षा होती है, तो मन भी प्रसन्न हो जाता है।

सावन पछुवा भादो पुरवा, आसिन बहे ईसान।
कातिक कन्ता सींकियो ना डोले, कहाँ तू रखबऽ धान ॥

सावन में पच्छिमी हवा, भादों में पूरबी हवा और आसिन में ईशान कोण की हवा बहे और कार्त्तिक में जरा-सा भी हवा न बहे, तो हे कान्त ! तुम धान कहाँ रखोगे (अर्थात् अति वृष्टि के कारण खूब धान होगा)।

सावन सुकुला सत्तमी, चन्दा उगे तुरन्त।
किया जल मिले समुन्दरे, किया नागरि कूप भरन्त ॥

सावन शुक्ल-सप्तमी को अगर चन्द्रमा का शीघ्र उदय हो, तो जल या तो समुद्र में ही मिलेगा या स्त्रियों द्वारा कुँओं से पानी भरते समय।

---

१. वराहमिहिर ने अनावृष्टि का कारण बताते हुए लिखा है : 'यदि गर्भ-समय में अकारण ही पर्याप्त वर्षा हो, तो गर्भ का अभाव होता है, द्रोण के अर्धांश से भी अधिक वर्षण करने पर गर्भ नष्ट हो जाता है।' (वाराहीसंहिता, २१।३२)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(आ) अन्य वस्तुएँ : वर्षा-ऋतु के अतिरिक्त शेष ऋतुओं से सम्बद्ध लोकोक्तियाँ संख्या में कम हैं। इसका कारण स्पष्ट है। वर्षा का सीधा सम्बन्ध कृषि से है। इसलिए, कृषक-समुदाय वर्षा पर विशेष रूप से सोचता-विचारता है। किन्तु, वर्षा-ऋतु की तरह अन्य ऋतुएँ भी संवत्सर की सन्तान हैं। इनके आगमन से भी भूमि और मनुष्य-समाज की आकांक्षाएँ पूरी होती हैं। क्रमानुसार वर्षेतर ऋतुओं का अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है।

शरद्-ऋतु : शरद् शुभ्रता, शान्ति और शीतलता की ऋतु है। वर्षा-ऋतु में किसान कृषि को अपना पूरा परिश्रम समर्पित करता है। इस समय किसान जी-तोड़ मिहनत करता है। साथ ही, उसके बैल आदि भी पानी-कादो में निरन्तर चलते रहने के कारण सुस्त हो जाते हैं। अतः, शरद् के आते ही किसान निश्चिन्त होकर धुली चाँदनी और चौरस मैदान में दिन गुजारकर श्रम-भार का परिहरण करते हैं। इधर खेतों में धान के गबरू पौधे लहराते हैं और उधर कछारों-तलहटियों में काँस फूलकर वर्षा की समाप्ति की घोषणा करते हैं। इस ऋतु की विशेषता-सम्बन्धी लोकोक्तियों के उदाहरण इस प्रकार हैं :

आइल कनकट फूलल काँस, बराह्मन उछलल नव नव बाँस।

पितृ-पक्ष आया और काँस भी फूले; इसलिए (श्राद्ध का अन्न खानेवाले) ब्राह्मण अति प्रसन्न हैं।

आसिन मासे बहे ईसान, थर-थर काँपे गाय किसान।

आश्विन के महीने में ईशान कोण की वायु चलती है, तो जलवायु में इतनी ठण्ढक आ जाती है कि गाय और किसान थर-थर काँपने लगते हैं।

बिधि के लिखल ना होखे आन, आधा चितरा फूटे धान।

विधि का विधान नहीं बदल सकता है; इसलिए चित्रा नक्षत्र के उत्तर पक्ष में ही धान फूट सकता है।

हेमन्त (अगहन-पूस) : हेमन्त में शीत का आगमन होता है। इसलिए, इस मौसम में धूप प्रिय लगती है। इस ऋतु में धान के पौधे भी परिपक्व हो जाते हैं। साथ ही पंकिल खेतों में रब्बी फसल के बीज छींट दिये जाते हैं। हेमन्त ऋतु-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

लरिका भीरी जाइब ना, जवनका मोरे भाई;
बुढ़वा के तऽ छोड़ब ना, कतनो ओढ़े रजाई।

(जाड़ा कहता है) बच्चों के पास नहीं जाऊँगा और युवक तो मेरे भाई ही लगते हैं, किन्तु बूढ़ों को तो छोड़ नहीं सकता, चाहे वे कितनी रजाइयाँ ओढ़ें।[1]

पूस के दिन फूस बरोबरि।

पूस के दिन क्षण में ही गुजर जाते हैं (अर्थात्, पूस के दिन छोटे होते हैं)।

आ गइल अगहन, लागि गइल बेहरी।
भागि गइल मरद, धराइ गइल मेहरी।।

---

१. जाड़ा-सम्बन्धी एक भोजपुरी शिशुगीत की एक पंक्ति इस प्रकार है :
'जाड़ भाई, जाड़ भाई, तहरा डरे किकुरी लगाई।'
हे जाड़ा भाई! हम बच्चे तुम्हारे डर से किकुड़ जाते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अगहन आया और जमीन्दार ने कर माँगना शुरू किया। इसलिए, कर देने के डर से मर्द तो घर छोड़कर परदेश चला गया, किन्तु घर में उसकी स्त्री पकड़ा गई।[1]

शिशिर (माघ-फागुन) : माघ में शीत अति पर पहुँच जाता है। कहीं-कहीं रब्बी की फसलों पर तुषारपात भी हो जाता है। किन्तु, फागुन के आते-आते शीत समाप्त हो जाता है। गेहूँ भी तबतक पककर सोने का रंग पकड़ने लगता है। इस ऋतु के सम्बन्ध में लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

माघ मास जो पड़े ना सीत, महँगा अन्न जनिहः मोरे मीत।

माघ में शीत न पड़े, तो हे मेरे मित्र ! अन्न के महँगा होने की आशा रहती है।

आधे माघे कम्मर कान्हे।

आधा माघ में लोग कम्बल कन्धे पर डालकर चलते हैं।

वसन्त : वसन्त शोभा-श्री का काल है। इस ऋतु के आते ही वनस्पति-जगत् नये फूल, पराग और पत्तियों से लद जाता है। इस समय रब्बी की फसलें भी पूर्णतः पक जाती हैं। किसान भी खेती से फुरसत पाकर या नये फसल की खुशी में होली की तैयारियाँ करता है। इस ऋतु-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

आइल चइत फूलल गाल, माघ महीने उहे हाल।

चैत आया। लोगों के गाल फूल गये (शरीर पर मांस चढ़ गया); पर माघ महीने में फिर वही हाल (तंगी की हालत) होगा।

जब चइत राजा अइले, तब घुरओ पर दुइ दाना।

जब चैत राजा आते हैं, तब घूरे पर भी दो दाने दीख पड़ते हैं।

बसन्त आइल, ऊखि पाकल।

वसन्त आया, ईख पक गई।

आइल चइत सुहावन, फूहर मइल छोड़ावन।

चैत आया, अब फूहड़ के शरीर और घर-आँगन की गन्दगी दूर हो जायगी।

ग्रीष्म : ग्रीष्म बड़ी भीषण ऋतु है। इसके प्रचण्ड ताप से कितने सरोवरों-कूपों का जल सूख जाता है। यह जेठ में तो झुलसा देनेवाली आग बरसाती है, किन्तु ग्रीष्म में भी किसान आषाढ के नये बादल की आशा में बीज डालने के लिए खेत की जुताई आदि शुरू कर देते हैं। ग्रीष्म-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

जेठ के दुपहरिया, भादो के अन्हरिया ;
पूस के भिनसहरा अभागा काम करेले।

जेठ के दोपहर में, भादों के अन्धकार में (रात्रि में), पूस के भोर में अभागे ही काम करते हैं।

आइल असाढ़, तऽ भूमि भई सँवरी।
सैंया तूहूँ जोत लऽ बीघा चार अउरी॥

---

१. अगहन में फसलें कटकर खलिहान में आती हैं। इन दिनों किसान के पास रुपये-पैसे की कमी नहीं रहती। सम्भवतः इसीलिए, पहले जमीन्दार प्रायः अगहन में मालगुजारी वसूल करने के लिए अपने सिपाहियों को गाँवों में भेजते थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आषाढ के आने पर भूमि शस्यश्यामला हो गई ! हे प्रियतम, क्यों नहीं और चार बीघे खेत जोत लेते हो।

(ख) वनस्पति : लोकोक्तियों में वनस्पति-जगत् का उल्लेख दो रूपों में हुआ है; एक, विषय-वस्तु के रूप में और दूसरे, उक्ति के साधन के रूप में। जहाँ वनस्पति-जगत् लोकोक्तियों की विषय-वस्तु बनकर वर्णित है, वहाँ विभिन्न वनस्पतियों की गतिविधि पर विचार किया गया है। जहाँ वनस्पति-जगत्, लोकोक्तियों में उपमान, प्रतीक या उदाहरण के रूप में वर्णित है, वहाँ उसका महत्त्व गौण है। किन्तु, दूसरे रूप में वर्णित वनस्पतियों का भी यहाँ अध्ययन किया गया है। इसलिए कि ऐसी अभिव्यंजना से भी वनस्पतियों के साथ मनुष्यों के अविच्छिन्न सम्बन्ध पर परोक्ष रूप से कुछ-न-कुछ प्रकाश अवश्य ही पड़ता है।

सामान्यतः, लोकोक्तियों में दो प्रकार की वनस्पतियों का उल्लेख हुआ है। पहले प्रकार के अन्तर्गत शोभा और उपयोगी वृक्ष, फल-वृक्ष, पुष्प-पादप तृण-गुल्मादि हैं। दूसरे प्रकार के अन्तर्गत कृषि-वनस्पति है। कृषि-वनस्पति पर अलग से विचार किया गया है; यहाँ पहले प्रकार की वनस्पति पर विचार किया जा रहा है।

पीपल : यह एक धार्मिक वृक्ष है। ऐसा विश्वास है कि पीपल के पत्तों में देवता रहते हैं। इस वृक्ष की परिक्रमा की जाती है। यह शोभा-वृक्ष भी है। यह सदा हरा-भरा रहता है। पीपल-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

गोएँड़ा के पीपर दहीन अवले जा ला।

घर के समीपस्थ पीपल की खूब परिक्रमा की जाती है।

प्र० किसी आसान कार्य के करने में तत्परता दिखलाना।

बे बोलावे मूरख बोले, बे बयारे पीपर डोले।

बोलने के लिए नहीं कहने पर भी मूर्ख बोलता है और बिना हवा के भी पीपल के पत्ते हिलते-डुलते रहते हैं।

गूलर : यह लोकप्रिय वृक्ष है। पक्षी इसके पके फल को बड़े चाव से खाते हैं। गूलर के अन्दर छोटे कीड़े होते हैं। गूलर के फूल नहीं दीख पड़ते। कारण यह कि इसके फल के अन्दर ही फूल छिपे रहते हैं। इसलिए, दुर्लभ वस्तु की उपमा 'गूलर के फूल' से दी जाती है। गूलर-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ ये हैं :

ई गूलर के पिलुआ हवन।

ये गूलर के कीड़े (कूप-मण्डूक) हैं।

ई गूलर के फूल लीहन।

ये गूलर का फूल लेंगे।

प्र० कोई अनहोनी अभिलाषा प्रकट करना।

भूख में गूलर मेवा।

भूख में गूलर भी मेवा-सा लगता है।

प्र० जरूरत पड़ने पर तुच्छ वस्तुओं को भी चाव से अपनाना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बबूल : यह काँटेदार श्रेणी का वृक्ष है। यह किसान के कृषि-कार्य में बड़ा सहायक होता है। यह बाढ़ रोकने और खेतों की मजबूत सीमा बनाने के लिए भी पंक्तिबद्ध रूप में लगाया जाता है। बबूल-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ ये हैं :

छेरी छौआ ऊँट कोंहार, फेंड़ बबूर के गाड़ीवान।
फर जबासा बेसवा बानी, भइल मलिन जब बरसे पानी॥

बकरी के बच्चे.....बबूल आदि वर्षा होने पर मलिन हो जाते हैं।

घूघ मोरा रहेला ठेहुन तक, बोली मोरा परेला बबूर तक।

मेरा घूँघट घुटने तक रहता है, किन्तु मेरी बोली बबूल तक (गाँव की सीमा तक) जाती है।

प्र० रहन-सहन में लाज करना और बोल-चाल में लाज खोना।

पलास : वसन्त के आते ही यह लाल फूलों से लद जाता है। फूलों के झड़ने के बाद इसमें पत्ते निकलते हैं। पत्ते एक साथ तीन की ही संख्या में निकलते हैं। एक लोकोक्ति में कहा गया है :

परास में तीन पात।

पलास में तीन पत्ते होते हैं।

प्र० किसी की शक्ति का सीमित होना।

आम : यह एक लोकप्रिय फल-वृक्ष है। वसन्त में यह मंजरियों से लद जाता है। इसकी मंजरियों को फागुन में चलनेवाली पश्चिमी हवा से नुकसान पहुँचता है। इसकी मंजरियों में लगनेवाले रोग को भोजपुरी भाषा में 'मँगरा' कहते हैं। आम-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

खरबूजा चाहे धूप, आम चाहे मेह।

धूप से खरबूजा बढ़ता है और वर्षा से आम।

पकले आम सोहावन, पकले मरद घिनावन।

पक जाने पर आम का वृक्ष सुहावना लगता है; किन्तु पकने पर (बूढ़ा होने पर) मर्द घिनावना हो जाता है।

आम लगबे ना कइल कि मँगरा डेरा डलले।

आम का पौधा अभी लगा भी नहीं कि 'मँगरा' ने डेरा डाल दिया।

प्र० कार्यारम्भ के पहले उसके विनाश की तैयारी करना।

महुआ : इस वृक्ष का फूल अधिक उपयोगी होता है। महुआ भी वसन्त के आते ही फूलों से भर जाता है। इसके फूल रस से भरे और कुछ पियराई लिये होते हैं। गरीब लोग महुए के फूल को खाने और शराब बनाने के काम में लाते हैं। एक लोकोक्ति में कहा गया है :

कंक के महुए मीठ।

भुक्खड़ों के लिए महुआ ही सबसे मीठा होता है।

बेल : यह एक पवित्र वृक्ष माना जाता है। शंकर की पूजा बेलपत्र से ही की जाती है। एक लोकोक्ति में कहा गया है :

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बेल बड़वार, घन बाग लगावे, अपने जमीने जनि बाँस लगावे ।

बेल रोपने में बड़प्पन है । बाग घना लगाना चाहिए और अपनी जमीन में बाँस नहीं लगाना चाहिए ।

बेर : यह एक झाड़ीदार और काँटेदार वृक्ष होता है । इसके काँटों को दृष्टि में रखते हुए हमेशा दुहराई जानेवाली एक लोकोक्ति इस प्रकार हैं :

बइरी के फेड़ तर उघार कपार, ओह के जनिहऽ बड़ गँवार ।

बेर के पेड़ के नीचे जो खुले सिर जाय, उसे बड़ा गँवार समझना चाहिए ।

केला : केले का विस्तार कोंपलों से होता है । जहाँ एक केले के पास उसकी नई कोंपल निकली कि धीरे-धीरे पुराना वृक्ष सड़कर नष्ट होने लगता है । एक लोकोक्ति में कहा गया है :

केला, कँकड़ा, बिछी बाँस, ई चारों के जमले नास ।

केला, कँकड़ा, बिच्छू और बाँस का अपनी सन्तानों से ही विनाश होता है ।

बाँस : यह भी एक तृण है । इसकी बल्लियाँ बड़ी अच्छी बनती हैं । साथ ही, भोजपुरियों की लाठी, डण्डा, छड़ी आदि प्रिय चीजें इसी से बनती हैं । बाँस से ही गृह-काज के विविध सामान—सूप, डलिया, पंखे आदि बनते हैं । बाँस समूह में फैलते हैं । अतः, पक्षियों में विशेषकर कौए इसपर निवास करते हैं । बाँस-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

जेहि बाँस के बांस बाँसुरी, ओही बाँस के कलसुप दउरी ।

जिस बाँस से बाँसुरी बनती है, उसी से दउरी और सूप भी ।

प्र० जब एक ही स्रोत मे विभिन्न प्रकार की चीजें जन्म लें या जब एक पिता की सन्तानों में गुणगत अन्तर हो ।

बाँस के जरी बाँसे जामेला ।

बाँस की जड़ में बाँस ही जन्म लेता है ।

प्र० संगति या साहचर्य का बहुत प्रभाव पड़ना ।

राढ़ी : यह तृण कृषि का महान् शत्रु है । कुश की तरह इसकी जड़ भी मरजीवा होती है । जिस खेत में राढ़ी जन्म लेती है, उस खेत को फसलें मारी जाती हैं । इसका मूलोच्छेद करना एक दुस्तर कार्य है । कहा गया है :

खेत ना जोतीं राढ़ी, ना भइँस बेसाहीं पाड़ी ।

राढ़ी से भरे खेत को नहीं जोतना चाहिए और पाड़ी (भैंस का बच्चा) नहीं खरीदनी चाहिए ।

(ग) जीव-जन्तु : मनुष्य की तरह इस पृथ्वी पर अनगिनत जीव-जन्तु निवास करते हैं । सृष्टि-प्रक्रिया ने इन सभी प्राणियों को उनके रूप और आवश्यकता के अनुसार, आवास, भोजन और संवेदनशीलता प्रदान की है । ये सभी जीव आकाश, भूमि या जल में विचरण कर सृष्टि-चक्र के रहस्य और रूप का उद्‌घाटन और प्रसारण करते हैं । इन प्राणियों में कुछ ऐसे हैं, जिन्हें मनुष्य ने अपने विभिन्न प्रयोजनों की पूर्त्ति के लिए पालतू बना लिया है । अन्य शेष प्राणियों के साथ भी मनुष्य का किसी-न-किसी प्रकार का सम्पर्क बना हुआ है । इसलिए, यह जीव-जगत् मनुष्य-समाज के भौतिक जीवन की आवश्यकता और अनुभूति-लोक का विषय बन गया है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकोक्तियों में जीव-जन्तुओं का भी उल्लेख दो प्रकार से हुआ है—पहला विषय-वस्तु के रूप में और दूसरा विशेष भावों या प्रवृत्ति के प्रतीक के रूप में। पहले प्रकार की लोकोक्तियों में जीव-जन्तुओं के उद्भव, विकास और रहन-सहन पर प्रकाश डाला गया है। दूसरे प्रकार की लोकोक्तियों में जीव-जन्तुओं का उल्लेख किसी अभिप्रेत कथन को स्पष्ट, अलंकृत और उदाहृत करने के लिए किया गया है। प्रस्तुत प्रकरण में उपर्युक्त दूसरे प्रकार की लोकोक्तियाँ भी ली गई हैं। यह इसलिए कि ऐसी लोकोक्तियाँ भी न्यूनाधिक रूप से जीव-जन्तुओं की प्रकृति और लोक-समुदाय के साथ उनके सम्बन्ध पर प्रकाश डालती हैं। जीव-जन्तु-सम्बन्धी लोकोक्तियों को निम्नांकित वर्गों में बाँटा गया है :

(अ) मेरुदण्डीय—(क) पालतू पशु, (ख) हिंस्रक और वन्य पशु, (ग) पक्षिजगत् और (घ) सरीसृप।

(आ) अमेरुदण्डीय : कृमि और कीट-पतंग।

(अ) मेरुदण्डीय :

(क) **पालतू पशु** : इस वर्ग में वे पशु आते हैं, जो मनुष्य के विविध प्रयोजनों—खान-पान, कृषि—व्यापार आदि के लिए उपयोगी हैं। इन पशुओं का समाज के आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। लोकोक्तियों में इनकी अन्य जीव-जन्तुओं की अपेक्षा विशेष रूप से चर्चा हुई है। नीचे पालतू पशु-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ दी जा रही हैं :

गाय : भोजपुरी प्रदेश में गाय के लिए 'गाय' के अतिरिक्त प्रचलित पर्यायवाची शब्द हैं—धेन और धेनु। गाय खरीदने के पहले किसान, गाय की आँख, सींग, खुर, थन, कान, रंग और लम्बाई की परीक्षा करते हैं। दूध देनेवाली 'धेनु' ही गृहस्थ के आदर का पात्र होती है। कारण यह है कि गौ की उपयोगिता और सार्थकता बच्चा जनने और दूध देने में है। गाय जब बच्चा देने के योग्य हो जाती है, तब उसे 'धनपुरही' कहते हैं। वह जब गर्भ धारण कर लेती है, तब उसे 'गाभिन' कहते हैं। बच्चा देने के छह महीने के बाद की गौ को 'धेनु' या 'बकेन' कहते हैं।[1] बकेन गाय के दूध में गाढ़ापन या मीठापन आ जाता है। गाय-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

अच्छी गाय बेंसाहिए, जिसकी कज्जल बान।
सोलह सिंघ बत्तीस खुरी, नव थन तेरह कान॥

उसी अच्छी गाय को खरीदना चाहिए जिसकी आँखें काली हों, सींग सोलह (इंच लम्बी) हों, खुर बत्तीस (इंच लम्बा) हों, थन नौ (इंच लम्बा) हो और कान तेरह (इंच लम्बा)।

उदन्ते घोड़ी दुदन्ते गाय, माघे भैंस मउआरे खाय।

उदन्त घोड़ी, दो दाँतोंवाली गाय और माघ में ब्याई भैंस स्वामी का ही विनाश करती है।

---

१ रूप, रंग, वय और दूध देने के आधार पर गौ के अनेक नामकरण हुए हैं। भोजपुरी क्षेत्र में प्रयुक्त गौ-सम्बन्धी शब्दावली की एक पद्यात्मक सूची प्राचीन भोजपुरी कवि 'बिसराम' की कविता में इस प्रकार प्राप्त होती है :

"बहिला, गाभिन कत सारिल लइहन, मन भरि भरि दूध के सदेहु।
बाछी आछी आछी देखों, बछवा, बछेल, लेरुआ, बछुरुआ, मगन मन खेल।
लाली, गौली, धवरी, पिअरी, कतकारी, कजरि, सँवरि, कइली, कबरी, टिकारी।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हरियर खेती गाभिन गाय, तब जानि जब कंठे जाय ।

हरि खेती (खड़ी फसल) और गाभिन गाय को तब लाभप्रद समझना चाहिए, जब कि क्रमशः वे अन्न और दूध के रूप में मुँह में चले जाँय ।

खेती बेटी नित्ते गाय ना देखे ओकर जाय ।

उसी की खेती, बेटी और गाय नष्ट हो जाती हैं, जो इनपर प्रतिदिन निगरानी नहीं रखता है ।

गाय का पालन-पोषण सावधानी से करना चाहिए । कुसेवा से अच्छी गाय भी कम दूध देती है । साथ ही, गर्भावस्था में स्त्रियों की तरह गौ की भी विशेष रूप से सेवा-शुश्रूषा की जाती है ।

गाय बाभन के घूमले से पेट भरेला ।

गाय और ब्राह्मण की उदर-पूर्त्ति घूमते-फिरते रहने से ही होती है ।

बैल : कृषि के साधनों में बैलों का प्रमुख स्थान है । यही कारण है कि कृषक बड़ी सावधानी से बैलों का पालन-पोषण करते हैं । साथ ही, कृषक-समुदाय में बैलों के रूप-रंग और स्वभाव का बड़ी सूक्ष्मता से निरीक्षण-परीक्षण किया जाता है । शारीरिक गठन, रंग, दाँत और स्वभाव के आधार पर बैलों की उत्कृष्ट या निम्न कोटि निर्धारित की गई है ।

प्रायः बैल उजले, भूरे, लाल, काले और कई रंगों की परछाइयों के मेल से बने रंग-वाले होते हैं । उजले रंग के बैल को 'रूपा धौरा' (रूप्य की धवलतावाला), गहरा भूरापन रंग लिये हुए बैल को 'सोकन', और लाल रंग का मुँह और शेष अंगों पर हल्की ललाई लिये हुए बैल को 'बैरिया गोल' और काले रंग के बैल को 'करुआ' कहा जाता है ।

बैलों के दाँत दो तरह के होते हैं : एक दूध का दाँत और दूसरा चारा खाने का दाँत । जबतक चारा खाने का दाँत नहीं होता, तबतक बैल 'उदन्त' या 'बछड़ा' बना रहता है । दो वर्षों की उम्र में बैल को चारा खानेवाले दो दाँत हो जाते हैं । इस समय बैल को 'दुदन्ता' (दो दाँतवाला) कहते हैं । तीन वर्षों में बैल चार दाँतों का हो जाता है । इस समय इसे 'चौदन्ता' कहते हैं । इसी प्रकार चार वर्षों में बैल आठ दाँतों का हो जाता है । आठ दाँतों-वाले बैल को 'पूरल' (जिसके दाँत पूरे हो गये हों) कहते हैं । बैलों के रूप-रंग और स्वभाव पर आधारित लोकोक्तियाँ निम्नांकित हैं :

बैल बेसाहे चलल कन्त, बैल बेसहिहः दू दू दन्त ।
काछ कसौटी साँवर बान, ई छाड़ि किनिहः मति आन ।।
जब देखिहः रूपा धौरा, टका चारि दीहः उपरौरा ।
ओह पार जब देखिहः मैना एही पार से दीहः बैना ।।

हे स्वामी ! बैल खरीदने तो आप जा रहे हैं; किन्तु देखिएगा—दो दाँतोंवाला बैल खरीदिएगा । कुछ भूरा लिये हुए रंगवाला बैल छोड़कर दूसरा नहीं खरीदिएगा । किन्तु, जब आप खूब उजले रंग का 'रूपा धौरा' बैल देखिएगा, तब उसके लिए आप दो-चार रुपये अधिक दे दीजिएगा । जब आप टेढ़ी सींगवाला मैना बैल देखें, तब इसी पार से मोल-तोल करके उसके लिए अग्रिम दाम दे दीजिएगा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जब देखिहः बैरिया गोल, उठ बइठ के करिहः मोल ।
जब देखिहः करिइवा कन्त, कैल गोला देखिहः जनु दन्त ।।

हे कन्त ! जब आप लाल सिर और शरीरवाला बैल देखेंगे, तो सोच-समझकर उसका मोल-तोल करेंगे । किन्तु, अगर हे कन्त ! जब आप काला और हल्का पीला रंगवाला बैल देखेंगे, तो विना दाँत देखे भी उसे खरीद लेंगे ।

बैल लीहः कजरा, दाम दीहः अगरा ।

काली आँखोंवाला बैल लेना चाहिए और उसका अग्रिम दाम चुकाना चाहिए ।

बैल मुसरिहा जो कोई ले, राज भंग पलभर में कर दे ।

जिस बैल की पूँछ पर काली और उजली गड़ेरियाँ होती हैं, उस बैल को जो भी खरीदता है, उसका राज्य पलभर में भंग हो जाता है (अर्थात्, वह गरीब हो जाता है) ।

मिअनी बैल बड़ा शैतान, पल में करे खड़ा दोऊ कान ।

'मिअनी' वंश का बैल बड़ा चंचल होता है, पल में ही दोनों कान खड़ा करता है ।

सात दाँत उदन्त को, रंग जो काला होय ।
इनको कबहुँ न लीजिए, दाम चाहे जो होय ।।

सात दूध के दाँत और काले रंगवाले बैल को कभी नहीं लेना चाहिए—भले उसका दाम जो भी हो ।

परुआ बैल के हउ के असरा ।

जो बैल काम के समय छल करके पड़ जाता है, उसका कान हमेशा रुकने के सांकेतिक स्वर 'हउ' पर लगा रहता है ।

हर हेंगा में अइसन तइसन, पगूरी में रंथ ।

आलसी बैल हल-हेंगा में जोते जाने पर धीमा-धीमा चलते हैं, पर 'पागुर' (जुगाली) करने में रथ हो जाते हैं ।

प्र० आलसी पर व्यंग्य ।

बरधे पर कि मरदे पर ।

परिश्रम का भार या तो बैल पर रहता है, नहीं तो मर्द पर ।

कातिक मरले बरध, माघ के टूटल मरद, अघसे ना ।

कार्त्तिक माह में दुबले हो जानेवाले बैल और माघ में निर्बल हो जानेवाले मर्द उठकर खड़े नहीं होते ।

कार्त्तिक महीने में बैल धान की खेती से फुरसत पाते हैं। धान की खेती में बैलों को बहुत परिश्रम करना पड़ता है। इसी प्रकार माघ की ठण्डक में सामान्य लोग ठिठुर जाते हैं।

धूप धूर धुआँ हो जहँवा, बरध बरस पच्चीस जिए तहँवा ।

धूप, धूल और धुआँ—ये चीजें जहाँ अपेक्षित रूप से रहती हैं, वहाँ बैल पच्चीस वर्षों तक जीवित रहते हैं ।

बैलों को धूप जाड़ा से, धूल कीचड़ से और धुआँ मच्छड़ से बचाता है ।

भैंस-भैंसा : भैंस प्रायः सिलेटी काले और भूरे रंग की होती है। भैंस के नर-बच्चे को 'पाड़ा' और मादा को 'पाड़ी' कहते हैं। बचपन में पाड़ी स्वभावतः अपनी माता के साथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहना पसन्द करती है और इसलिए चरागाह में भी यह माँ के साथ ही रहती है। एक लोकोक्ति में कहा गया है :

खेत खाय पड़िया, भइंसि के मुँह झकझोरल जाय।

पाड़ी ने फसल खाई, पर व्यर्थ ही भैंस का मुँह झकझोरा जा रहा है।

प्र० दोषी के बदले निर्दोष को दण्ड देना।

भैंस सहवास की इच्छा के समय विशिष्ट प्रकार से चिल्लाती है, जिसे 'चिकोरना' कहते हैं। किसान भैंस की इस चिल्लाहट को सुनकर प्रसन्न होते हैं; क्योंकि उससे नये पशुधन और दूध पाने की आशा बँध जाती है। एक लोकोक्ति में कहा गया है :

चालिस के भइँस लिहलीं चोकरे के सेहूँ-सेहूँ।

चालीस रुपए में भैंस खरीदी गई, किन्तु 'चोकरने' में वह मरियल है।

प्र० आशा पर पानी फिरना।

भैंसा में भैंस की अपेक्षा अधिक जंगलीपन होता है। पालतू भैंसे बैल की तरह हल और गाड़ी में जोते जाते हैं। भैंसे काफी मजबूत और अड़ियल होते हैं। भैंसों का पारस्परिक युद्ध भी बड़ा भयानक होता है। ये घण्टों एक दूसरे पर प्रहार करते हैं। जबतक एक भैंसा दूसरे भैंसे को मारकर अपने क्षेत्र की सीमा पर उसे नहीं खदेड़ आता है, तबतक वह चैन नहीं लेता है। भैंसा-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

भादों भइँसा, चइत चमार।

भादों में भैंसा और चैत में चमार खा-पीकर मस्त हो जाते हैं।

भादों में भैंसे को खाने के लिए घास और लोटने के लिए कीचड़ मिल जाती है।

अघाइल भइँसा तब्बो अढ़ाई कट्ठा।

भैंसा खा-पीकर सन्तुष्ट हो जाता है, तब भी ढाई कट्ठे खेत में लगी फसल को चट करने की शक्ति रखता है।

भइँसा-भइँसा के लड़ाई, खोंता बिरनी के उजाड़।

भैंसों के पारस्परिक युद्ध में 'बिरनी' आदि कीड़ों के घर व्यर्थ ही नष्ट होते हैं।

प्र० दो बलवान् दुश्मनों के युद्ध से किसी असहाय व्यक्ति का नुकसान होना।

एक नाद दूइ भइँसा, ताघर कूसल कइसा।

जब नाद एक हो और भैंसे दो हों, तब उस घर में खैरियत कैसे रह सकती है!

भेंड़ : मांस और ऊन के लिए भेड़ें पाली जाती हैं। साथ ही, भेड़ के पाखाने से खेतों की ऊर्वरता बढ़ती है। भोजपुरी प्रदेश में भेड़ बहुत कम पाली जाती है। अतः, भेड़-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ भी बहुत कम प्राप्त होती हैं। भेड़-सम्बन्धी कुछ लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

खउरले बिना भेंड़ बिगड़ल बाड़ी।

बाल नहीं काटने के कारण भेड़ बिगड़ गई है।

प्र० सजा नहीं पाने पर बदमाश हो जाना।

भेंड़ी के लेड़ियो भला।

भेड़ का पाखाना भी अच्छा होता है।

प्र० किसी की निकृष्ट वस्तु से भी लाभ होना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घोड़ा : घोड़ा उपयोगी पशुओं में एक है। राजा से रंक तक के यहाँ घोड़े पाले जाते हैं। छोटे टट्टू के पालन-पोषण में विशेष दिक्कत नहीं होती; किन्तु अच्छी नस्ल के घोड़ों को पालना खर्चीला होता है। एक लोकोक्ति है :

खाई घोड़ा कि रोड़ा।

खायगा (धन खर्च होगा) घोड़ा या रोड़ा (गृह-निर्माण)।

घोड़े की दुलत्तियाँ बहुत खतरनाक होती हैं। सजातीय को छोड़कर अन्य छोटे प्राणी घोड़ों की दुलत्तियाँ बरदास्त नहीं कर सकते। यथा:

घोड़ा के पिछाड़ि अउर हाकिम के अगाड़ी ना जाये के।

घोड़े के पीछे और अफसर के आगे नहीं जाना चाहिए।

घोड़ा के लात आदमी के बात।

घोड़ों को लात से और आदमी को बात से सीख दी जाती है।

गाइ गुन बछरू पिता गुन घोड़।
नाहीं बहुत तऽ थोड़म थोड़॥

गाय के गुण का प्रभाव बछड़ों पर और पिता के गुण का प्रभाव घोड़े पर अधिक नहीं, तो कुछ अवश्य पड़ता है।

यह विश्वास है कि घोड़ा माता की अपेक्षा पिता के रूप-रंग को अधिक ग्रहण करता है।

गदहा : गदहा बड़ा निरीह, किन्तु सर्वथा उपयोगी पशु है। शायद अपनी सिधाई और कुरूपता के कारण यह मूर्खता का प्रतीक माना जाता है। भोजपुरी क्षेत्र में इसे धोबी अधिक पालते हैं। गदहा-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

गदहा डूबर सावन मास।

क्या कहीं गदहा सावन महीने में डुबला हो सकता है ?

प्र० धन-सम्पदा के रहते हुए भी गरीबी का बहाना करना।

ना धोबिया के दूसर जनवरवा ना गदहा के दूसरे मउआर।

धोबी के लिए गदहा के अतिरिक्त दूसरा जानवर नहीं है और गदहा को भी धोबी के अतिरिक्त दूसरा स्वामी नहीं।

प्र० दो वस्तुओं या व्यक्तियों में अन्योन्याश्रय सम्बन्ध होना।

गदहा के इयारी लात के सनसनाहटि।

गदहों की संगति से दुलत्तियों की सनसनाहट मिलती है।

प्र० बुरी संगति के कारण क्षति होना।

ऊँट : यह जीव अपनी बनावट और स्वभाव के कारण अन्य जीवों से बहुत भिन्नता रखता है। भोजपुरी क्षेत्र में ऊँट बहुत कम पाले जाते हैं। ऊँट-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ निम्नांकित हैं :

उजरा गाँवें ऊँट आइल लोग कहे कि बद्दू अइलन।

उजड़े गाँव में ऊँट आया, तो लोगों ने समझा कि उनका कोई पुरखा ही आ गया है।

प्र० अज्ञान के कारण मूर्खता करना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊँट रे ऊँट तोर कवन खाल सोझ बा ।

अरे ऊँट ! तुम्हारी कौन-सी खाल (अंग) सीधी है ?

प्र० सभी दृष्टियों से किसी का टेढ़ा होना ।

थाकल ऊँट सराये ताके ।

थका ऊँट सराय को देखता है ।

प्र० असमर्थ होने पर अभीष्ट की सहायता चाहना ।

प्राचीन काल से ही लम्बे और बीहड़ पथों पर ऊँट की ही सवारी की जाती रही है। इन पथों पर सराय बने होते थे। यात्री या व्यापारी आवश्यकतानुसार इन्हीं सरायों में पड़ाव डालते थे। इसलिए, यात्रा में सुस्ताने की इच्छा से 'ऊँट' बार-बार सराय की ओर नजर दौड़ाते थे।

हाथी : भारवाही और उपयोगी पशुओं में हाथी सबसे विशाल पशु है। इसे प्राय: धनी लोग पालते हैं। बिगड़ने पर हाथी खतरनाक हो जाता है। हाथी-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

अउर जनावर के लीदि ना, हाथी के चिरकिल ।

और जानवरों की लीद (पाखाना) के बराबर हाथी का थोड़ा-सा पाखाना होता है।

प्र० किसी विशाल वस्तु के लघु अंश और अन्य वस्तुओं के सम्पूर्ण अंश में बराबरी होना ।

हरहा हाथी, हाकिम चोर, बिगड़ला पर लागे ना ओर ।

बिगड़ैल हाथी और चोर हाकिम के क्रुद्ध होने पर उनकी गति-विधियों का पता नहीं चलता ।

(ख) हिंस्रक और अन्य पशु : भोजपुरी क्षेत्र में प्राय: वे ही हिंस्रक पशु दीखते हैं, जो यदा-कदा शिकार की खोज में सुदूर जंगलों से या पहाड़ी प्रान्तर से या भूले-भटके गाँवों में आ जाते हैं। इन पशुओं में कुछ ऐसे हैं, जो पूर्णत: वन्य हैं ; जैसे बाघ, हुँड़ार, भालू आदि और कुछ ऐसे भी हैं, जो पालतू और वन्य के बीच की श्रेणी के पशु हैं; जैसे बन्दर, बिल्ली, कुत्ता आदि। इन पशुओं के सम्बन्ध में प्रचलित लोकोक्तियाँ दी जा रही हैं ।

बाघ : यह हिंस्रक प्राणियों में सबसे अधिक खतरनाक होता है। इसके नाखून बड़े तेज और नुकीले होते हैं। बाघ-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ निम्नांकित हैं :

इहाँ बाघ देखलऽ हा, तऽ बकोट केकर हऽ ।

(प्रश्न) यहाँ बाघ देखा है, (उत्तर) तो 'बकोट' (नाखुन के दाग) किसके हैं ?

प्र० प्रमाण के लिए प्रत्यक्ष को प्रस्तुत करना ।

उहाँ बाघ के बच्चा बिआइल बा ।

वहाँ बाघ का बच्चा जनमा है ।

प्र० किसी स्थान का खतरनाक होना ।

हुँड़ार : यह भेड़िये का पर्यायवाची ग्रामीण नाम है। यह बड़ा चालाक होता है। मौका देखकर यह साँझ के झुटपुटे में किसान की बकरी, भेड़ और कुत्तों को उठा ले जाता है। बकरियों पर तो यह विशेष रूप से हमला करता है। हुँड़ार-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बूढ़ बकरी हुँड़ार से ठट्ठा ।

बूढ़ी बकरी भेड़िया से मजाक करती है ।

प्र० किसी कमजोर का बलवान् से उलझना ।

गइल हुँड़ार तऽ उठल अड़ार ।

भेड़िया जब शिकार उठाकर ले गया, तब घर का परदा हटा ।

प्र० वस्तु की हानि हो जाने के बाद उसके बचाव के लिए प्रयत्न करना ।

सियार : कथाओं या अन्य ग्रामीण उक्तियों में यह धूर्त्तता के प्रतीक रूप में चित्रित होता है । यह निशाचर और मांसखोर जानवर है । सियार-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ ये हैं :

सावन में जमले सियार भादो में आइल बाढ़ि ।

बापरे बाप अइसन बाढ़ कबहुँ ना देखलीं ।।

सावन में एक सियार का जन्म हुआ । भादों में बाढ़ आई । तब उस सियार ने बाढ़ देखकर कहा कि 'ऐसी बाढ़ मैंने कभी नहीं देखी है ।'

प्र० किसी के हास्यास्पद असत्य-भाषण पर ।

गीदर रखे मांस के थाती ।

सियार मांस को कहीं थाती के रूप में रख सकता है ?

प्र० भक्षक को रक्षक बनाने पर ।

बिल्ली : इसे दूध-दही बहुत प्रिय है । किन्तु, यह छोटे-मोटे प्राणियों के बच्चों पर भी धावा बोलती है । यह माघ में गर्भवती होती है । उदा०

कातिक कुतिया, माघ बिलाई, चैत चिरैया, सदा लुगाई ।

कातिक में कुतिया, माघ में बिल्ली, चैत में चिड़िया और औरत हमेशा गर्भवती हो सकती है ।

कूल बिआन बिलरिए खइलस ।

सभी जनमे हुए पक्षिशावकों को बिल्ली ही चट कर गई ।

प्र० हमेशा किसी क्रूर और लोभी के आक्रमण को चपेट में पड़ना ।

बन्दर : बन्दर एक परिचित प्राणी है । मनुष्य से एक पीढ़ी पहले का होने के कारण यह अधिकांश पशुओं की अपेक्षा अधिक बुद्धिमान् है । कथाओं और उक्तियों में यह चंचल, चालाक और ऊधमी स्वभाव के प्रतीक के रूप में प्रयुक्त होता है । बन्दर मदारी के हाथ पड़कर खूब खेल-तमाशे भी करता है । उदा०

जेकर बानर से खेलावे, आन खेलावे काटे धावे ।

बन्दरवाला ही बन्दर को खेला सकता है । दूसरों के खेलाने पर वह काटने दौड़ता है ।

प्र० दूसरों की वस्तु पर अनधिकार चेष्टा करने से असफल होना ।

नाचे कूदे बानर, माल मदारी खाय ।

नाचता-कूदता तो है बन्दर, किन्तु माल (परिश्रम का फल) उड़ाता है मदारी ।

प्र० दूसरे की कमाई को हथियाना ।

बानर पहिले आपन घर छावसु, तब दोसरा के छइहें ।

बन्दर पहले अपने घर की छावनी कर लें, तब दूसरों की छावनी करेंगे !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्र० किसी विध्वंसकारी व्यक्ति का दूसरों के निर्माण-कार्य करने की अभिलाषा प्रकट करना।

कुत्ता : कुत्तों की औसत आयु बहुत कम है। इसलिए ये कुछ ही महीनों में बड़े हो जाते हैं। कुत्ता-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

छव महीना के कुत्ता, बारह बरिस के पुत्ता।
छह माहों में कुत्ता जवान हो जाता है और बारह वर्षों में पुत्र।

जाति सोभाव ना छूटे, कुत्ता टाँग उठाके मूते।
जाति-स्वभाव नहीं जा सकता है। कुत्ता हमेशा टाँगें ऊपर उठाकर पेशाव करता है।

कुकुर के पेटे घीव ना पचे।
कुत्ते के पेट में घी नहीं पचता है।
प्र० किसी चुगलखोर पर व्यंग्य।

प्रवाद है कि कुत्ते घी खाते हैं, तो उनके शरीर के रोएँ झड़ने लगते हैं। इस तरह उनके रोओं का झड़ना घी खाने का द्योतक होता है।

(ग) पक्षिजगत् : आरम्भ से ही पक्षी मानव-समाज के संगी रहे हैं। इसलिए, ध्यान-पूर्वक इनकी रहन-सहन के अध्ययन में लोक-समुदाय ने यथेष्ट रुचि ली है। इन पक्षियों में कुछ पिंजड़े के वासी के रूप में और कुछ मुक्त जीव के रूप में गृहस्थों के घर-आँगन और खेत-खलिहान की शोभा बढ़ाते हैं। कुछ ऐसे भी पक्षी हैं जो वन्य और हिंस्रक हैं।

भोजपुर-क्षेत्र में विस्तृत मैदान, सघन कुंज और पेड़-पौधों की प्रचुरता है। इसलिए, इस क्षेत्र में अधिकांश पक्षी प्राप्त होते हैं। नीचे लोकोक्तियों में उल्लिखित पक्षियों के रूप-रंग और रहन-सहन पर विचार किया गया है।

तोता : यह वाग्मी होता है। इसलिए, यह पिंजड़े का बन्दी भी हो जाता है। किन्तु, मौका पाकर यह पिंजड़े से भाग भी निकलता है। लोकोक्तियों में तोता 'कृतघ्नता' के उदाहरण के रूप में प्रयुक्त हुआ है। तोता-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

तुरुक तोता ओ खरगोस, ई तीनों ना माने पोस।
तुर्क, तोते और खरगोस—ये तीनों पोस नहीं मानते।

बूढ़ सूगा का कहीं पोस मानेला।
बूढ़ा तोता क्या कहीं पालतू बनाया जा सकता है ?
प्र० अनावश्यक किसी वस्तु या प्राणी को अनुकूल बनाने की कोशिश करना।

राम कहऽ राम कहऽ तोता, राम भजन बिनु खइबऽ गोता।
हे तोते ! राम-नाम लेते रहो। राम-भजन के विना भवसागर में डूबने का भय है।
प्र० किसी लापरवाह व्यक्ति को कर्त्तव्य की याद दिलाना।

बूढ़ सुग्गा कुतुर कुतुर।
बूढ़ा सुग्गा कुतर-कुतरकर (फल) खाता है।
प्र० शक्तिहीन का आदर्शवादी बनना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोयल : यह वसन्त-ऋतु की गायिका के रूप में बहुत प्रसिद्ध है। किन्तु, यह अपनी धूर्त्तता के लिए भी कम प्रसिद्ध नहीं है। मादा कोयल अपने अण्डों को कौए के घोंसले में डाल देती है। कौआ ही कोयल के शिशुओं का पालन-पोषण करता है। इसलिए, संस्कृत में कोयल के लिए 'परभृत्'[1] शब्द का प्रयोग किया गया है। उदा०

कोइली के बचवा कोइली होइहें, कउवा मुँहें छाइ।

कोयल का बच्चा (कौए के घोंसले में पलकर भी) अन्ततः कोयल ही होगा। अन्त में, वह कौए के घोंसले से भागकर कौए के मुँह पर राख पोत जायगा।

प्र० किसी व्यक्ति की कृतघ्नता या उसके आनुवंशिक गुण का प्रकट होना।

गौरैया : यह पक्षी पूर्णतः मनुष्य का साथी है। जहाँ मनुष्य-समाज निवास करता है, वहीं यह (गौरैया) बिना पूछे अपना घोंसला घर के किसी स्थान में बना डालती है। कभी-कभी घोंसला बनाने के जोश में यह मनुष्य की सुविधा-असुविधा का भी ध्यान नहीं रखती है। उदा०

आन्हर गवरइया, भरसाईं में खोंता।

अन्धी गौरैया चूल्हे में ही घोंसला बना डालती है।

प्र० जोश में आकर विवेक खोना।

जलसूर बराहमन।

गौरैया ब्राह्मण की तरह जल-शूर है (ये थोड़े पानी या धूल में भी स्नान का आनन्द लेने से बाज नहीं आतीं)।

कौआ : यह अपने कर्कश स्वर और धूर्त्तता के लिए बड़ा प्रसिद्ध है। ये (कौए) समूह में ही रहना पसन्द करते हैं। पक्षिविज्ञान-वेत्ताओं का कहना है कि ये पंचायत-पद्धति से अपने पारस्परिक झगड़े निबटाते हैं। कौआ-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

कायथ कुरकुट कउवा, तीनों जात पोसउवा।

कायस्थ, कुरकुट और कौआ—ये तीनों जातियाँ स्वजाति को ही सहायक होती हैं।

कायथ कउवा रोर, जाति-जाति बटोर।

कायस्थ, कौआ और स्यार—ये स्वजाति को एकत्र करते हैं।

चिरई में कउवा, मनई में नउवा।

पक्षियों में कौआ धूर्त्त होते हैं और मनुष्य में नाई।

मोर : ये अपने इन्द्रधनुषी पंखों और 'केका' वाणी के लिए बहुत प्रसिद्ध हैं। वर्षा-ऋतु में मोर काले मेघों को देखकर विभोर होकर नाचते हैं। इनका सब कुछ सुन्दर है, किन्तु इनके पैर कुरूप होते हैं। यथा :

नाच-काछ अइले मोरवा, गोड़वा देखि झँवाय।

नाच-कूदकर आया हुआ मोर अपना पैर देखकर स्याह पड़ जाता है।

प्र० अपनी किसी भारी कमी के कारण एकाएक दुःखित होना।

जंगल में मोर नाचल, के देखल ?

जंगल में मोर नाचा, किसने देखा ?

प्र० एकान्त में होनेवाली बात का साक्षी न होना।

---

१. दे० मोनियर विलियम्स : संस्कृत-इंगलिश-डिक्शनरी, पृ० ५८६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तीतर : ये लड़ने-भिड़ने में तेज होते हैं। शौकीन लोग इसे पालते हैं। यह शकुन-पक्षी भी है। एक लोकोक्ति में कहा गया है :

तीतर के मुँह में लछमीनरायन।

तीतर के मुँह में (वाणी में) विष्णु का निवास है।

खंजन : यह भोजपुरी क्षेत्र में 'खँड़लिच' और 'धोबिनिया' के नाम से प्रसिद्ध है। अपने विशिष्ट स्वरूप के कारण यह मनुष्य की आँखों के उपमान के रूप में प्रयुक्त होती है। यह भी एक शकुन-पक्षी है।[1] खंजन-सम्बन्धी एक लोकोक्ति इस प्रकार है :

ना खँड़लिच के गोड़े लागे के, ना ढेले फेंके के।

खंजन को देखने के बाद उसको न तो प्रणाम ही करना चाहिए और न उसपर ढेला ही फेंकना चाहिए।

प्र० किसी मन्थरा-बुद्धि स्त्री के शत्रु और मित्र दोनों बनने में खतरा होना।

टिटिहरी : यह कुररी जाति का पक्षी है। इसके स्वर में क्रन्दन होता है। सम्भवतः, इसी कारण कुछ लोग इसकी बोली को अशुभ मानते हैं। इसकी रहन-सहन के सम्बन्ध में एक किंवदन्ती है। कहते हैं कि यह सोते समय अपने पाँव ऊपर की ओर कर देती है। यह इसलिए कि ऐसा करके यह आसमान को धरती पर गिरने से रोकना चाहती है। एक लोकोक्ति में कहा गया है :

टिटही के टेकले बादर थम्हीं।

कहीं टिटिहरी के पैरों पर आसमान ठहर सकता है ?

प्र० किसी बड़े अनिष्ट के निवारणार्थ हास्यास्पद प्रयत्न करना।

बगुला : यह दिनभर छिछले पानी में खड़ा-खड़ा मछलियों पर ध्यान लगाये रहता है। साधना में तो यह योगी है, पर कर्म में पाखण्डी। इसलिए, लोक-कथाओं में यह 'पाखण्डी चरित्र' का प्रतिनिधित्व करता है। उदा०

जब बकुला टाँग उठवलस तऽ दह के पाता लागल।

जब बगुले ने टाँगें उठाईं, तब झील की गहराई का पता चला।

प्र० किसी यथार्थ कारणों से रहस्य का उद्घाटन होना।

का बकुला तू लावऽ डीठि, कतने जाल खिचवलीं पीठी।

(मछली का बगले के प्रति कथन) बगुला ! तुम क्या आँखें गड़ाये बैठे हो, नहीं जानते कि इस पीठ पर कितने जालों की खरोंचें पड़ी हैं ?

प्र० किसी सतर्क व्यक्ति का छली या लोभी के प्रति कथन।

गरुड : यह बड़ा शक्तिशाली और साहसी पक्षी है। यह भगवान् विष्णु का वाहन और सर्पों का दुश्मन माना जाता है। एक लोकोक्ति है :

पोआ देखाय, गरुड़ के डेरवाय।

साँप के बच्चों को दिखाकर गरुड को डराना है।

प्र० मामूली साधनों से शक्तिशाली का सामना करना।

---

१ दे० वाराहीसंहिता : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई द्वारा प्रकाशित, सं० २०१२, पृ० १६४।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चील : यह घोर मांसाहारी पक्षी है। चील झपट्टा मारने में बहुत तेज होती है। उदा०

ऊपर धरीं तऽ सहदूल ले जाय, नीचे धरीं तऽ चील्ह कउवा खाय।

ऊपर कोई चीज रखी जाती है, तो उसे शार्दूल पक्षी ले जाता है और उसे नीचे रखी जाती है, तो उसे चील-कौआ चट कर जाते हैं।

प्र० हर परिस्थिति में संकट में पड़ना।

चील्ह के खोंता में मांस कहाँ।

चील के घोंसले में मांस नहीं रहता।

प्र० किसी भक्षक से किसी चीज की रक्षा होने की व्यर्थ आशा करना।

गीध : यह मुर्दाखोर जानवर है। बोलचाल में गीध क्रूरता के प्रतीक के रूप में प्रयुक्त होता है। एक लोकोक्ति में कहा गया है :

बात करीं अगाध के, काम करीं गीध के।

बातें तो (वे) अगाध (पण्डित) व्यक्ति की तरह करते हैं और काम गीध की तरह।

(घ) सरीसृप : मेरुदण्डीय जीव-जन्तुओं में सरीसृपों का ही परिवार भरा-पूरा है। इनमें कुछ जल में और कुछ जल और थल—दोनों में रहते हैं। यहाँ मगर, घड़ियाल, मछली, साँप आदि पर आधारित लोकोक्तियों पर विचार किया गया है।

मगर : यह बड़ा बलवान् और चालाक जलचर है। यह मौका पाकर मनुष्यों पर भी धावा बोलता है। इसे जल का राजा माना जाता है। एक लोकोक्ति में कहा गया है :

जल में रहके, मगर से बैर।

जल में रहकर मगर से बैर करना ठीक नहीं।

प्र० किसी क्षुद्र प्राणी का बलवान् से दुश्मनी ठानना।

घड़ियाल : ये नदी के मार्ग से बड़े तालाबों में भी पहुँच जाते हैं। जल में रहना इन्हें बहुत पसन्द है। उदा०

अबहीं पोखरा खनइबे ना कइल, तबले घरियार डेरा डलले।

अभी तालाब तो खोदा ही नहीं गया है कि घड़ियाल ने डेरा डाल दिया।

प्र० असमय किसी चीज को पाने के लिए उतावलापन दिखलाना या किसी चीज के सर्जन के पहले उसके संहार की तैयारियाँ करना।

मछली : भोजपुरी क्षेत्र में सिघरी और रोहू-किस्म की मछलियाँ अधिक पाई जाती हैं। मछुए 'सिघरी' को बंसी के छोर पर बाँधते हैं और उसीसे 'रोहू' को फँसाते हैं। एक लोकोक्ति में कहा गया है :

सिघरिया चाल चले, रोहुआ के सिर पर बीते।

सिघरी तो चाल चलती है और उसका फल रोहू को भुगतना पड़ता है (अर्थात्, मछुए की बंसी में रोहू ही फँसती है)।

प्र० किसी की गलती का दुष्परिणाम किसी अन्य के द्वारा भोगा जाना।

जब ले सिघरी पहाड़ ना ठेकिहैं, तब ले ना मनिहैं।

जबतक सिघरी पहाड़ तक नहीं जायगी, तबतक नहीं मानेगी।

प्र० अन्तिम दुर्दशा में पड़ने के बाद ही किसी दुष्ट व्यक्ति का शान्त होना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साँप : साँप मनुष्य-समाज के लिए बड़े हानिकारक सिद्ध हुए हैं। साँपों में विषधर साँपों की संख्या नगण्य है। विषधर सर्पों में गेहुमन और करायत प्रमुख हैं। सर्प-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

बिछी के काटल रोवे, साँप के काटल सोवे।

बिच्छू का काटा हुआ रोता है और साँप का काटा हुआ सोता (मर जाता) है।

साँप के काटल उठ के पानी ना माँगेला।

साँप से दंशित होने पर आदमी को पानी माँगने का भी अवसर नहीं मिलता।

उलटा साँप सपहेरिए काटे।

उलटा साँप सँपेरे को ही डँसता है !

प्र० अधीन व्यक्ति के द्वारा ही किसी का नुकसान होना।

(आ) अमेरुदण्डीय :

कृमि और कीट-पतंग : इस वर्ग में जोंक, केंकड़ा, बिच्छू, चींटी, घुन आदि परिगणित किये जाते हैं। इनके शरीर में मेरुदण्ड नहीं होता। निम्नांकित अमेरुदण्डीय प्राणियों का उल्लेख लोकोक्तियों में हुआ है।

जोंक : यह रक्तशोषक जीव है। इसके शरीर के दोनों सिरों पर रक्तचूषक रहते हैं। चुपचाप किसी की बुराई करनेवाले या मतलबी व्यक्ति को उपमा जोंक से दी जाती है। यथा :

ई त ऽ जोंक अइसन सटल बाड़न।

ये तो जोंक के समान चिपके हुए हैं।

केंकड़ा और बिच्छू : केंकड़ा जल-तटवासी है। यह घोंघों, छोटी मछलियों और पानी के छोटे कीड़ों को खाता है। एक शिकार को लेकर केकड़ों का आपस में भीषण युद्ध होता है।

बिच्छू अपनी जहरीली दुम के लिए प्रसिद्ध है। इसका डंक बड़ा असह्य होता है।

उपर्युक्त दोनों प्राणियों की एक ही प्रकृति है। दोनों को प्राण का खतरा अपनी सन्तान या सगोत्रीय से रहता है। सुरेश सिंह ने लिखा है—"केंकड़े कभी-कभी आपस में लड़ बैठते हैं और उस समय ये उतने खूँखार हो जाते हैं कि हारे हुए केंकड़े को जीतनेवाला केंकड़ा मारकर खा जाता है। बड़े केंकड़े वैसे भी भूख लगने पर छोटे केंकड़ों से अपना पेट भरते हैं और केंकड़ी तो इतनी गुस्सैल होती है कि जरा-सी बात पर ही दूसरे केंकड़ों की टाँग या चिमटे को काटकर खा जाती है।"[१] करीब-करीब यही बात बिच्छुओं के साथ भी घटित होती है। किन्तु, यह आश्चर्य की बात है कि यहाँ 'मत्स्यन्याय' पति-पत्नी के ही बीच होता है। सहवास के बाद नर से कद में बड़ी होने के कारण मादा बिच्छू क्रुद्ध होने पर नर को मारकर खा जाती है। किन्तु, मादा बिच्छू अपने बच्चों को बड़े प्यार से पीठ पर बिठाकर घुमाती-फिराती है। केंकड़ा और बिच्छू की उपर्युक्त प्रकृति पर प्रकाश डालनेवाली एक लोकोक्ति इस प्रकार है :

केरा केंकड़ा बिछी बाँस, ई चारो के जमले नास।

केला, केंकड़ा, बिच्छू और बाँस—इन चारों का अपनी सन्तान (सगोत्रीय से भी) से ही विनाश होता है।

---

१. जीव-जगत्, पृ० ६५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घुन : यह एक क्षुद्र प्राणी है। यह जौ या चना आदि में घुसकर उन्हें भीतर से पोला बना देता है। लोकोक्ति में अनाज और घुन में 'आधार-आधेय' का सम्बन्ध माना गया है। यथा:

जौ के साथ घूनो पिसाला।

जौ के साथ घुन भी पीसे जाते हैं।

प्र० किसी अपराधी के साथ सम्बन्ध होने के कारण निरपराध व्यक्ति को भी सजा मिलना।

१. ४. समाज-सम्बन्धी

लोकोक्तियाँ वाणी के मन्दिर में लोक-समुदाय की परम्परागत अनुभूतियों, विचारों और भावनाओं की सुरक्षित सम्पत्ति हैं। समाज में ही इनका जन्म, विकास और ह्रास होता है। इसलिए, सहज ही इनका अपने विचरण की भूमि के साथ निकट का सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। निस्सन्देह, लोकोक्तियों के अर्थ और रूप के विविध स्तरों में राष्ट्र के सामाजिक जीवन का व्यापक और यथार्थ चित्र प्रतिबिम्बित होता है। समासतः, लोकोक्तियाँ समाज के अतीत और वर्त्तमान की साक्षी होती हैं।

समाज-सम्बन्धी लोकोक्तियों का अध्ययन निम्नांकित वर्गों[१] के अन्तर्गत किया गया है—(अ) परिवार और नातेदार, (आ) वैवाहिक सम्बन्ध, (इ) वस्त्र और अलंकार, (ई) खान-पान और (उ) गृह-पात्र।

(अ) परिवार और नातेदार :

परिवार, भारतीय समाज की एक आधारभूत संस्था है। इसका प्राचीन काल से ही अस्तित्व रहा है। यह संस्था, व्यक्ति और समाज के कल्याण के लिए एक आवश्यक आधारभूमि प्रस्तुत करती है। यह यौन-सम्बन्ध को सुनिश्चित और नियमित करती है। यह सन्तति के पोषण और शिक्षण के लिए अपेक्षित वातावरण प्रस्तुत करती है।[२] समासतः, परिवार समाज के आर्थिक, धार्मिक और नैतिक जीवन को सन्तुलित और संवर्द्धित करता है।

भोजपुरी क्षेत्र के अधिकांश परिवार संयुक्त हैं। ऐसे परिवार की सम्बन्ध-परिधि बड़ी विस्तृत और जटिल होती है। इस परिवार के सदस्य सामान्यतः इन दो कारणों से विविध सम्बन्ध उपार्जित करते हैं—जन्म और विवाह। इन सम्बन्धों की स्थिति अधिकार और कर्त्तव्य के सम्बन्ध में लोकोक्तियों में भी विचार किया गया है। उदा०

(क) पुरुष-सम्बन्ध : समीपवर्त्ती और दूरवर्त्ती

(अ) समीपवर्त्ती : बाबा (पिता का पिता)—'दादा' परिवार का वरिष्ठ सदस्य होता है। पितृसत्तात्मक परिवार में व्यक्ति का पोषण और शिक्षण दादा और पिता के

---

१. समाज-सम्बन्धी लोकोक्तियों के अन्तर्गत जात-पाँत-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ भी परिगण्य हैं। किन्तु, संख्या और प्रकार की दृष्टि से इनका विशिष्ट महत्त्व है। इसलिए, जाति-सम्बन्धी लोकोक्तियों का अध्ययन अलग से किया गया है।

२. "The family is a group defined by a Sex relationship sufficiently precise and enduring to provide for the procreation and upbringing of children."—R. M. Maciver : Society—An Introduction Analysis (Macmillan & Co. Ltd. 1952), p. 238.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संरक्षण में होता है। अतः, परिवार के बच्चों पर दादा के व्यक्तित्व का पूरा प्रभाव पड़ता है। दादा का उल्लेख निम्नांकित लोकोक्तियों में हुआ है :

खाइब हम नाना के रोटी, कहाइब हम दादा के पोती ।

मैं रोटी तो नाना की खाऊँगी, किन्तु कहलाऊँगी दादा की पोती ही।

प्र० कृतघ्नता पर व्यंग्य।

चल लरिके दादा के बिरा आई ।

चलो लड़के, दादा को चिढ़ा आयें।

प्र० अनुचित दुस्साहस करना या किसी असमर्थ व्यक्ति पर बल-प्रदर्शन करना।

पिता : पिता परिवार का मूलाधार होता है। पत्नी और सन्तान के पोषण का भार पिता पर अपेक्षाकृत अधिक रहता है। सन्तान भी पिता द्वारा दिखाये मार्ग का अनुसरण करती है। समाज में सन्तान का स्थान पिता के कुल, आचार और स्थिति के आधार पर भी निर्धारित होता है। यथा:

बापे पूत परापत घोड़ा ना कुछुम तऽ थोड़म थोड़ा ।

पुत्र और घोड़े पर पिता के गुण-दोष का बहुत नहीं तो, कुछ प्रभाव अवश्य पड़ता ही है।

बाढ़े पूत पिता के धरमा, खेती उपजे अपने करमा ।

पुत्र, पिता के धर्म से उन्नति करता है और खेती अपने कर्म से उपजती है।

चाचा : (पिता के बड़े या छोटे भाई) संयुक्त परिवार में सन्तान को पिता के अभाव में चाचा का ही संरक्षण मिलता है। किन्तु, कभी-कभी पारिवारिक कलह के कारण चाचा और भतीजे का पारस्परिक सम्बन्ध दूषित हो जाता है। ऐसा होने पर चाचा और भतीजा एक दूसरे को हमेशा नीचा दिखाने की कोशिश करते हैं। उपर्युक्त स्थिति पर परोक्षतः प्रकाश डालनेवाली एक लोकोक्ति है :

चाचा चोर भतीजा काजी, चाचा के सिर पर जूता बाजी ।[1]

अगर चाचा चोर हो और भतीजा काजी हो, तो चाचा के सर पर जूता पड़ने की सम्भावना रहती है।

प्र० किसी से बदला लेने का अनुकूल अवसर पाना।

भाई : पारिवारिक जीवन में भाई का बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्राचीन साहित्य में सर्वत्र भ्रातृ-प्रेम की सराहना की गई है।[2] किन्तु, कभी-कभी सगे भाइयों के बीच भी वैमनस्य आ जाता है। यथा :

भाई अस हीत ना, भाई अस मुदई ना ।

भाई के समान कोई अपना नहीं होता और भाई के समान कोई दुश्मन भी नहीं होता।

भाई साथ के, हथियार हाथ के ।

साथ रहनेवाला भाई और हाथ का हथियार—दोनों सहायक होते हैं।

पुत्र : शास्त्रों के अनुसार पिता, पुत्र को उत्पन्न करके ही पितृ-ऋण से मुक्त होता है।[3] पुत्र, परलोक ही नहीं, इहलोक के लिए भी आवश्यक होता है। सुपुत्र कुल की मर्यादा की रक्षा,

---

१. पाठान्तर : 'चाचा चोर भतीजा पाजी, चाची के सिर पर जूतापाजी।'

२. छान्दोग्य-उपनिषद, ७।१५।२ ; वाल्मीकिरामायण, ६।१०१।१४।

३. दे० ऐतरेय ब्राह्मण, ३३।१ ; मनुस्मृति, ६।१०६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वृद्ध माता-पिता का पोषण और वंश की वृद्धि करता है। लोकोक्तियों में वर्णित पुत्र-सम्बन्धी धारणाएँ इस प्रकार हैं :

जइसन बेटा रानी के, ओइसन बेटा कानी के।
बेटा रानी को जैसा प्रिय होता है, वैसा ही एक कानी (स्त्री) को भी।[1]

कुबंश से निरबंश भला।
कुवंश (कुपुत्र) से निर्वंश होना अच्छा है।

घोड़ा बेटा के खियावल बेकार ना होला।
घोड़ा-बेटा को खिलाना-पिलाना व्यर्थ नहीं जाता।

बड़ बेटा बाप के, छोट बेटा महतारी के, माझिल बेटा धुनसारी के।[2]
बड़ा पुत्र पिता का प्यारा होता है, छोटा पुत्र माँ का प्यारा होता है और मझला (बीच का) पुत्र 'धुनसार' (भाड़) का।

(आ) दूरवर्त्ती : मामा—'मामा' स्मृति और पुराणकाल में एक सम्मानीय सम्बन्ध के रूप में वर्णित किया गया है। आज भी यह प्रिय सम्बन्ध के रूप में मान्य है। एक लोकोक्ति में कहा गया है :

ना मामा से काना मामा ठीक होला।
(सुन्दर) मामा के अभाव में काना मामा हो ठीक होता है।
प्र० अभीष्ट वस्तु की जगह सुलभ वस्तु को स्वीकार करना।

आपन मामा मरि गइले, जोलहा धुनियाँ मामा भइले।
अपने मामा तो मर गये, इसलिए जुलाहे-धुनिये (पराये) मामा हो गये हैं।
प्र० किसी निम्न व्यक्ति से सम्बन्ध बढ़ाने पर व्यंग्य।

मौसेरा भाई : चचेरा भाई की अपेक्षा कभी-कभी मौसेरा भाइयों में अधिक बनती है। यह इसलिए कि चचेरा भाई सम्पत्ति का हिस्सेदार होता है, किन्तु मौसेरा भाई तो 'भाई' होकर भी 'हिस्सेदार' नहीं होता। सम्भवतः, इसलिए दो हिले-मिले चोरों के बीच मौसेरा भाई-सा सम्बन्ध माना जाता है। उदा०

चोर चोर मौसिआउत भाई, साँझे हँसुआ धइल पजाई।
दो चोरों में मौसेरा भाई का-सा सम्बन्ध होता है। इसलिए, वे शाम में ही (चोरी करने के लिए) हँसुआ तेज कर लेते हैं।
प्र० दो समान स्वार्थों के कारण परस्पर मैत्री-भाव रहना।

---

१. तु० 'इदं तत्स्नेहसर्वस्वं सममाढ्यदरिद्रयोः।
अचन्दनमनौशीरं हृदयस्यानुलेपनम्॥' —मृच्छकटिक, १०।२३।
अर्थात्, पुत्र धनी और निर्धन दोनों के लिए समान रूप से स्नेह का सर्वस्व है। यह हृदय को चन्दन और उशीर के बिना ही ठण्डक और शान्ति देता है।

२. तु० (क) 'प्रायेण हि नरश्रेष्ठ ज्येष्ठा पितृषु वल्लभा।
मातॄणां च कनीयांसस्तस्माद्वृद्धे कनीयसम्॥'—वाल्मीकिरामायण, १।६१।२९।
(ख) शतपथब्राह्मण में वर्णित शुनःशेप भी परिवार का मँझला बेटा था। इसके माता-पिता ने अपने इस पुत्र को बेच दिया था।—दे० ऐ० ब्रा०, ७।१३—१८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दामाद : शास्त्रों के अनुसार दामाद श्रेष्ठ दान का अधिकारी होता है। सबसे निकट का सम्बन्धी होने के कारण दामाद की ससुराल में खूब खातिर होती है। किन्तु, ससुराल में अधिक दिनों तक रहनेवाले दामाद की इज्जत नहीं होती। यथा:

कइसन दुनियाँ बाउर, लइका के बहुरी दमादे के जाउर।

संसार अजीब है—वह पुत्र को खाने के लिए भूँजा जो देता है और दामाद को खीर।

ससुराल सुख के सार, जो रहे दिन दो चार।

ससुराल सुख का सार है, बशर्ते कि वहाँ दो-चार दिन ही रहा जाय।

आज भइनी बासुदेव, काल्ह भइनी बसुवा।
पीठी पर लात धऽके, सास उतारस हँसुआ॥

(दामाद का कथन) ससुराल में पहले दिन मैं 'वासुदेव' कहा जाता हूँ, दूसरे दिन 'बसुआ' कहा जाता हूँ और तीसरे दिन तो मेरी पीठ पर ही लात रखकर मेरी सास ऊँचे पर से हँसुआ उतारती हैं।

(ख) नारी-सम्बन्ध : समीपवर्त्ती और दूरवर्त्ती :

(अ) समीपवर्त्ती : माता—माता नारी-जीवन का सार्थक और महान् रूप है। यह सन्तान के लिए एक ईश्वरीय देन है। एक प्रसिद्ध सूक्ति में कहा गया है : 'हर जगह नहीं रह सकते थे भगवान्, इसलिए उन्होंने माता बनाई।'[1] माता, निष्काम भाव से सन्तानों के योग-क्षेम और पालन-पोषण में जुटी रहती है। इसीलिए, उपनिषदों में माता को देवता कहा गया है।[1] लोकोक्ति-जगत् में भी माता की ममता और करुणा को दुर्लभ वस्तु माना गया है। उदा०

माई के मनवाँ गाई अइसन, पूत के मनवाँ कसाई अइसन।

माँ का मन गाय की तरह (सरल-सीधा) होता है और पुत्र का मन कसाई (क्रूर) की तरह।

इस लोकोक्ति का संकेतार्थ यह है कि माता, हर स्थिति में करुणामयी रहती है, भले पुत्र कसाई-सा (क्रूर) क्यों न हो जाय।

मघा बरसे—माता परसे—भूखा ना तरसे।

मघा नक्षत्र की वर्षा और माता के स्पर्श से सभी क्षुधा और ताप समाप्त हो जाते हैं।

माई निहारे ठठरी, जोइया निहारे मोटरी।

परदेशी पुत्र के घर आने पर माँ पुत्र का शरीर देखती है, और पत्नी गठरी।

जइसन माई, ओइसन धीया; जइसन काँकर, ओइसन बीया।

जैसी माँ होती है, वैसी उसकी पुत्री भी होती है; जैसी ककड़ी होती है, वैसा उसका बीज होता है।[2]

सौतेली माँ : पारिवारिक जीवन में सौतेली माँ प्रायः अभिशाप सिद्ध हुई है। यथा:

गोंयड़ा के खेती, सिरवाँ के साँप, मैमा कारन बैरी बाप।

गाँव के समीप की खेती, बिछावन के ऊपर का साँप और सौतेली माँ के कारण वैरी बने हुए बाप—ये तीनों दुःखद होते हैं।

---

१. 'मातृदेवो भव।'—तैत्तिरीय उपनिषद्।

२. 'As the mother, so is her daughter.'—Bible, Ezekiel xvi.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सास : बहू के लिए सास माता-सी होती है। पारिवारिक जीवन को सुख-समृद्धि की दृष्टि से सास-बहू का प्रेम बड़ा आवश्यक है। किन्तु, ईर्ष्यावश कभी-कभी यह सम्बन्ध कलुषित हो जाता है। प्राचीन साहित्य में भी सास-बहू के झगड़े की कहानियाँ मिलती हैं।[1] लोकोक्तियों में सास-बहू के पारस्परिक सम्बन्ध पर इस प्रकार प्रकाश डाला गया है :

सास ना ननद, घर अपने अनन्द।

सास-ननद तो है नहीं, इसलिए बहू अकेले घर में आनन्द कर रही है।

प्र० बन्धन के अभाव में किसी का उच्छृंखल होना।

भाभा—कुटनी घर चलि जइहें, सास पतोहिया एके होइहें।

चुगली करनेवाली स्त्रियाँ तो अपने-अपने घर चली जायेंगी, अन्त में सास और पतोहू एक हो जायेंगी।

सौत : 'सौत' बहुपत्नी-प्रथा की देन है। यह परिवार में पति के प्रेम और सम्पत्ति की द्वितीय अधिकारिणी के रूप में प्रवेश करती है। अतः, सौतों की पारस्परिक ईर्ष्या कुछ स्वाभाविक भी है। 'सौतिया डाह' पर प्रकाश डालनेवाली लोकोक्तियाँ ये हैं :

मोर सौतिन खइलसि दही, मोरा से कइसे जाई रही।

मेरी सौत ने तो दही खाया है, इसलिए मुझसे बिना दही खाये कैसे रहा जायगा।

प्र० ईर्ष्यावश जान-बूझकर झगड़ा मोल लेना।

मोर मनवाँ ना पतियाय, सउति के जियरा काँपत बा।

मेरे मन में यह विश्वास नहीं हो रहा है कि सौत मुझसे डरती है।

प्र० किसी अनहोनी बात की कल्पना करना।

तीन बैल दुगो मेहरी, गइल घर ओ खेती ओकरी।

जिसके पास तीन बैल और दो पत्नियाँ हैं, उसका घर और खेती समाप्तप्राय है।

सौति के रिसि कठौति काढ़ल।

सौत पर का क्रोध कठौत पटककर प्रकट किया जाता है।

प्र० सबल पर का क्रोध निर्बल पर उतारना।

भाभी : हिन्दू-परिवार की 'भाभी' एक विशिष्ट सम्बन्ध की प्रथा का इतिहास सँजोये हुए है। बहू अपने पति के बड़े भाई (भो० भसुर) और पिता के प्रति विमुखता (Avoidance) बरतती है, किन्तु पति के छोटे भाई (देवर) और विशेषतः पति की छोटी बहनों (ननदों) से हँसी-मजाक का सम्बन्ध रखती है। भाभी की यथार्थ स्थिति पर प्रकाश डालनेवाली लोकोक्तियाँ निम्नांकित हैं :

बुड़बक के मेहरारू सभ के भउजाई।

बेवकूफ की पत्नी सभी की भाभी होती है। (अर्थात्, सभी उससे हँसी-मजाक करते हैं)।

भरल झोरी जोइया के, छूँछ बात भउजइया के।

(देवर) भरी गठरी तो पत्नी को देता है और भाभी को छूँछी बातें।

प्र० स्वार्थवश मुँहदेखी करना।

---

१ दे० अल्तेकर : पोजीशन ऑव वीमेन इन हिन्दू सिविलिजेशन, पृ० १०७।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ननद : यह ननद लोक-साहित्य में भाभी की शासिका के रूप में चित्रित की गई है। वाचस्पत्यकोश (पृ० ३९५८) के अनुसार ननद का अर्थ है 'जो सेवा किये जाने पर भी प्रसन्न न हो।'[1] वस्तुतः, लड़कियाँ माता-पिता और भाई की लाड़ली होने के कारण भाभी पर कभी-कभी बहुत अत्याचार करती हैं। कहा गया है :

ननदो के ननद होला।

ननद की भी ननद होती है।

प्र० शासक का भी किसी के द्वारा शासित होना।

मूअल सौत सन्तावेले, काठे के ननद बिरावेले।

मृत सौत भी सताती है और काठ की ननद भी (भाभी का) मुँह चिढ़ाती है।

पत्नी और बहू : विवाह के बाद लड़की बहू बनकर पति के परिवार में प्रवेश करती है। गृहस्थी के लिए घर में पत्नी का होना अत्यावश्यक है। ऐसा कहा गया है : 'पत्नी के बिना पुरुष अपूर्ण रहता है।'[2] किन्तु, कभी-कभी संयुक्त परिवार में बहू के आगमन से नई स्थिति भी पैदा हो जाती है। जब बहू अपने पति पर एकाधिकार चाहने लगती है अथवा अज्ञानतावश सास-ननद से झगड़ा कर बैठती है, तब परिवार की शान्ति और सुख में बाधा पहुँचती है। लोकोक्तियों में पत्नी या बहू की स्थिति और विशिष्ट आचरण पर इस प्रकार विचार किया गया है :

बिन घरनी घर भूत के डेरा।

बिना बहू या पत्नी के घर भूत के निवासस्थान-सा लगता है।[3]

आहर भरल, पोखर भरल, बहुरिया के पेट कबहुँ ना भरल।

'आहर' (झील) और तालाब भर जाते हैं, किन्तु, बहू का पेट (उसकी आकांक्षाएँ) कभी नहीं भरता।

रूसल बहुरिया, उकटेरल आग, दूनो ठहरल बड़ बा भाग।

रूठी हुई वधू और उलटाई-पलटाई हुई आग—ये दोनों ठहर जाएँ, तो बड़े भाग्य की बात है।

उकुसबनी बाती, खुधुकुबनी पतोह, अधसे नाहीं।

निरन्तर उकसाई जानेवाली बाती और तंग की जानेवाली पतोहू बहुत दिनों तक नहीं ठहरती हैं।

पुत्री : हिन्दू-लोकविश्वास के अनुसार कन्या के दर्शन होना एक शुभ शकुन है। किन्तु, ऋग्वेद से प्रारम्भ करके आधुनिक काल के प्रथम दशक तक का हिन्दू-समाज अपने यथार्थ जीवन में कन्या के प्रति विमुख और उदासीन रहा है। प्राचीन साहित्य और लोक-साहित्य में

---

१. 'न नन्दति कृतायामपि सेवायां न तुष्यति।'

२. 'अर्धो हवा एष आत्मनो यज्जाया तस्माद् यावज्जायां न विन्दते नैव तावत् प्रजायते। असर्वो हि तावद् भवति।'—शतपथब्राह्मण, ५।२।१।१०।

३. तु० (क) 'जापदस्तम्' (पत्नी हो घर है)।—ऋग्वेद, ३।५।३।४; (ख) 'घर घर नहीं, पत्नी ही घर है। गृहिणी के बिना घर अरण्य-सा है। पेड़ के नीचे भी यदि पत्नी हो, तो वह घर है—।' महाभारत, १।७४।४२—५२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भी ऐसे पुष्कल प्रसंग प्राप्त होते हैं, जिनमें कन्या के जन्म को परिवार के लिए दुःखद घटना माना गया है। सायणाचार्य ने भी कहा है : 'वह (कन्या) जन्म के समय अपने स्वजनों को दुःख देती है, विवाह के धन का हरण करती है, यौवन में अनेक दोषों से कुल को दूषित करती है और इस प्रकार कन्या माता-पिता का हृदय विदीर्ण करनेवाली होती है।'[1] कन्या-सम्बन्धी उपर्युक्त धारणाएँ लोकोक्तियों में इस प्रकार प्रकट हुई हैं :

जे पेट के आस उहे बिआइल बेटी ।

जिस गर्भ से पुत्र होने की आशा थी, उसी से बेटी उत्पन्न हुई।[2]

प्र० किसी की एकमात्र कामना का अपूर्ण होना।

बिन मारे बेटी मरे, खाढ़े ऊखि बिकाय ।

बिन मारे मुदई मरे, ता पर देव सहाय ।।

जिसकी पुत्री की (बचपन में) मृत्यु हो जाय, खेत में ईख बिक जाय और बिना मारे दुश्मन की मृत्यु हो जाय, तो समझना चाहिए कि देवता उसके सहायक हैं।

बिप्र टहलुआ चीक धन ओ बेटी के बाप ।[3]

एहु से धन ना घटे, तऽ करीं बड़न से रार ।

ब्राह्मण को नौकर रखने, कसाई का धन लेने और बेटी का पिता बनने से भी अगर धन की हानि नहीं होती है, तो अपने से बड़ी हैसियतवालों से झगड़ा मोल लेना चाहिए।

खेती बेटी नित्त गाय, जे ना देखे तेकर जाय ।

जो अपनी खेती, बेटी और गाय पर प्रतिदिन निगाह नहीं रखता है, उसकी ये चीजें नष्ट हो जाती हैं।

बेटा ए गो कुल नासेला, बेटी दूनो कुल राखेले ।

बेटा पर एक कुल (पितृकुल) के सम्मान का भार रहता है और बेटी पर दोनों कुलों का।[4]

(आ) दूरवर्त्ती : नानी—माता का अपनी पुत्री की सन्तानों पर स्नेह होना स्वाभाविक है। वस्तुतः, नानी ही वह कड़ी है, जिससे कि ननिहाल का सम्बन्ध बना रहता है। किन्तु, यह भी सही है कि सभी नाती नानी के प्रति समान रूप से आभारी नहीं होते। सन्तान का पितृ-सत्तात्मक परिवार में पिता या दादा के प्रति अधिक कृतज्ञ होना स्वाभाविक है। नानी के सम्बन्ध पर प्रकाश डालनेवाली लोकोक्तियाँ निम्नांकित हैं :

नानी मरल, नाता टूटल ।

नानी मरी कि (ननिहाल से) नाता टूटा।

मँगनी के चाउर, नानी के सराध ।

मुफ्त का चावल है—इसलिए नानी का श्राद्ध किया जा रहा है।

---

१. (अ) ऐतरेय ब्राह्मण, ३३।१ के भाष्य से उद्धृत अंश। (आ) मिलाइए, मनु (४।१८४-१८५)—
'भार्यापुत्रः स्वका तनुः । छाया स्वो दासवर्गश्च दुहिता कृपणं परम् ॥'

२. अथर्ववेद के पुंसवनसूक्त में कहा गया है : 'पुरुष-सन्तान ही उत्पन्न हो।'—अथर्ववेद, ६।११।३।

३. 'बाप' के स्थान में 'बाढ़ि' (हिन्दी—बाढ़) भी प्रयुक्त होता है।

४. तु० 'पुत्रीति जाता महतोह चिन्ता, कस्मै प्रदेयेति महान्वितर्कः ।
दत्ता सुखं प्राप्स्यति वा नवेति कन्यापितृत्वं खलु नाम कष्टम् ।।'—पंचतन्त्र।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्र० लाभ होने पर उपकार करना ।

समधिन : प्रायः बुजुर्ग हो जाने पर ही किसी स्त्री को समधिन बनने का अवसर आता है। समधिन बनना और कम-से-कम बेटे की माँ के रूप में समधिन बनना तो एक गौरव की बात है। यथा :

देखले छँवड़ी समधिन ।

देखी हुई लड़की समधिन बन गई है ।

प्र० किसी परिचित व्यक्ति का ऊँचे पद पर जाना ।

रहली घुरभारी, भइली समधिन ।

वे तो थीं घुरभारी (एक निकृष्ट नाम), किन्तु अब समधिन हो गईं ।

प्र० एकाएक किसी छोटे व्यक्ति की उन्नति हो जाना ।

फूआ : पिता की बहन को भोजपुरी भाषा में 'फूआ' कहा जाता है। इसे दूरवर्त्ती सम्बन्ध में परिगणित किया जाता है। उदा०

धन मधे कठवत, बंश मधे फूफू ।

(इन्हें) धन के नाम पर एक कठौत है और वंश के नाम पर फूआ ।

प्र० किसी की नगण्य उपलब्धि पर व्यंग्य ।

(आ) वैवाहिक सम्बन्ध :

हिन्दू-समाज में विवाह को एक संस्कार के रूप में ग्रहण किया गया है, जिसका लक्ष्य है, जीवन के विकारों को दूर करके उसे शुद्ध, उन्नत और सुखमय बनाना। समासतः, विवाह-सम्बन्ध ही धर्म, अर्थ, काम आदि पुरुषार्थ के अर्जन का एकमात्र साधन है ।

लोकोक्तियों में भी विवाह-संस्कार जैसे महत्त्वपूर्ण विषय पर विचार किया गया है। विवाह-सम्बन्धी लोकोक्तियों का अध्ययन निम्नांकित वर्गों के अन्तर्गत किया गया है—(क) विवाह-संस्कार, (ख) बहु-विवाह और (ग) वैवाहिक जीवन ।

(क) विवाह-संस्कार : वाग्दान और मण्डपकरण —सर्वप्रथम कन्यापक्ष, वरपक्ष के यहाँ जाकर विवाह के लिए वर के पिता या अभिभावक से वाग्दान प्राप्त करता है। इस अवसर को भोजपुरी भाषा में 'बरेंछा' कहते हैं। वाग्दान के पश्चात् कन्यापक्ष के यहाँ मण्डप का निर्माण होता है। भोजपुरी भाषा में मण्डप को 'माँड़ो' या 'मड़वा' कहा जाता है। इस मण्डप में ही सभी प्रमुख वैवाहिक संस्कार सम्पन्न किये जाते हैं। इसीलिए, यह एक पवित्र और सम्मान देने और लेने का स्थान समझा जाता है। 'बरेंछा' और 'मण्डप' पर आधारित लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

जब अपने बर बउराह तऽ बरेंछा कहाँ से परी ।

जब अपना ही लड़का बेवकूफ हो, तो 'बरेंछा' कैसे पड़ सकता है ।

प्र० अपने अभावों के कारण सम्मान नहीं मिलना ।

बे बोलवले मँड़वा गइलों, डोकी पोंछि के माथे लवलों ।

बिना बुलाये मैं मण्डप में गई, इसलिए 'डोकी' (तेल रखने का पात्र) में बचे-खुचे तेल को सर पर रखना पड़ा ।

प्र० अनाहूत अतिथि का अनादर होना ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जेकरे माँड़ो ओकरे गीत ।

जिसके विवाह के लिए मण्डप बनाया जाता है, उसी का गीत भी गाया जाता है ।

प्र० स्वार्थसिद्धि के लिए उपयुक्त व्यक्ति की सराहना करना ।

खाली मँड़वा बाजे ढोल, लड़का भइले डाँवा डोल ।

मण्डप में केवल ढोल बज रहा है, वर तो डावाँडोल हो गया ।

प्र० मुख्य के बदले गौण को प्रमुखता देना ।

कभी-कभी वर-पक्ष और कन्या-पक्ष के बीच देन-लेन या आदर-सत्कार के विषय को लेकर नोक-झोंक हो जाती है । ऐसी स्थिति में ऐसा भी अवसर आता है, जबकि विवाह के लिए आया हुआ वर या वर का पिता, मण्डप से उठकर चल देता हे । इस स्थिति का संकेत करनेवाली एक लोकोक्ति है :

समधी कोहनाइल जास, बजनियाँ के गोड़ परीं ।

समधी रूठ रहे हैं और बाजावालों की खुशामद की जा रही है ।

प्र० बेमेल कार्य करने पर व्यंग्य ।

वर का वधू के गृह पर आगमन : विवाह की निश्चित तिथि के दिन वर अपने परिवार, सम्बन्धियों और इष्ट-मित्रों के साथ वधू के गृह के लिए प्रस्थान करता है । वर के साथ के लोग, गाने-बजानेवाले, नौकर-चाकर आदि के समूह को 'बरात' कहा जाता है । इस बरात के सम्बन्ध में लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

बरात के तीन मन, बर चाहे कनियाँ, समधी चाहे धन;
अउरु बरियाती चाहे सतकार ।

बरात की तीन इच्छाएँ होती हैं । वर सुन्दर दुल्हन पाने की इच्छा करता है । वर का पिता खूब दान-दहेज पाने की इच्छा करता है । सगे-सम्बन्धी वधू के पिता के यहाँ यथेष्ट आदर-सत्कार पाने की इच्छा करते हैं ।[1]

दुअरे लागल बरिआत, समधिन के लागल पिआस ।

इधर द्वार पर तो बरात आई है, उधर समधिन को प्यास लग रही है ।

प्र० प्रमुख कर्त्ता-धर्त्ता का निश्चेष्ट होना या सफलता के क्षणों में बाधा पहुँचना ।

बरात : बरात वधू के पिता के द्वार पर से जनवासे में चली जाती है । कुछ देर के बाद वर के पिता सगे-सम्बन्धियों के साथ वधू को आभूषण, वस्त्रादि देने के लिए वधू के पिता के यहाँ जाता है । इस अवसर पर वर का बड़ा भाई कन्या को मिष्टान्न, आभूषण, वस्त्रादि समर्पित करता है । इस विधि को भोजपुरी भाषा में 'गुरहत्थी' कहते हैं । इस विधान का उल्लेख करनेवाली एक लोकोक्ति इस प्रकार है :

बेटा बेटी केकरो, गुरहत्थे बइठली मँगरो ।

किसी दूसरे के पुत्र और पुत्री का विवाह हो रहा है और 'गुरहत्थी' करने के लिए मँगरो (पराई स्त्री) आकर बैठ गई है ।

प्र० अनधिकार चेष्टा करना ।

---

१. तु० 'कन्या वरयते रूपं माता वित्तं पिता श्रुतम् ।
बान्धवाः कुलमिच्छन्ति मिष्टान्नमितरे जनाः ।।'—एक संस्कृत-लोकोक्ति ।

Rajguru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अग्नि-परिणय : इस विधि के अनुसार वर-वधू अग्नि की प्रदक्षिणा करते हैं। इसको 'भाँवर घूमना' या 'भाँवर भरना' भी कहते हैं। निम्नांकित लोकोक्ति में इस विधि का उल्लेख हुआ है :

अलगरजी के बियाह लुआठ के भाँवर ।

अलगरजी या जरूरतमन्द के विवाह में अग्नि-प्रदक्षिणा के लिए आग जली हुई लकड़ी की होती है ।

प्र० जरूरत पड़ने पर घटिया चीज भी स्वीकार करने के लिए लाचार होना ।

कोहबर : भोजपुरी भाषा में वर-कन्या विवाह के बाद जिस कमरे में जाते हैं, उसे 'कोहबर' कहते हैं। इसी कोहबर में कुलदेवता की पूजा होती है तथा मंगलकृत्य सम्पन्न होते हैं। साथ ही, विवाह के बाद वर-कन्या का प्रथम मिलन भी इसी कमरे में होता है और उनका गठबन्धन भी यहीं खोला जाता है। इस कोहबर में दीवार पर चावल-हल्दी के चौरेठे या गेरू से एक परम्परागत और प्रतीकात्मक चित्र लिखा रहता है।[1] कोहबर का उल्लेख करनेवाली एक लोकोक्ति निम्नांकित है :

मँड़वा में कोई बात न पूछे, कोहबर में दुलहा के चाची ।

(उससे) मण्डप में तो कोई बात तक नहीं करता है और कोहबर में वह अपने को दूल्हे की चाची बतलाती है ।

प्र० सम्मान-प्राप्ति के लिए अनधिकार चेष्टा करना ।

वधू-द्विरागमन : पति के घर जाती हुई कन्या का विशेष रूप से साज-शृंगार किया जाता है। ऐसे, इस अवसर पर पति से मिलने की खुशी में पत्नी को प्रसन्नता तो होती है,[2] किन्तु, जीवन में पहली बार माता-पिता से बिछुड़ती हुई लड़की विदाई के समय दारुण दृश्य उपस्थित करती है। इस अवसर पर कई लोकाचार भी होते हैं। उनमें से एक 'खोइँछा बाँधना' भी है। 'खोइँछा' उस थैली को कहते हैं, जो कन्या की नाभि के नीचे साड़ी की कोर से बाँधी जाती है। विदा होती हुई कन्या के 'खोइँछा' में हल्दी, अच्छत और द्रव्य रखे जाते हैं। 'खोइँछा'-सम्बन्धी एक लोकोक्ति है :

बुड़बक कनियाँ के नव आना खोइँछा ।

बेवकूफ कन्या (वधू) के खोइँछे में नौ आने ही होते हैं ।

प्र० अयोग्यता के कारण सम्मान नहीं मिलना ।

वधू के ससुराल पहुँचने पर कई विशेष लोकाचार होते हैं। इनमें से 'दउरा में डेग डालले' (टोकरी में पैर रखना) विधि उल्लेख्य है। इस विधि के अनुसार वर और वधू गठबन्धन किये हुए, टोकरियों में बारी-बारी से पैर रखते हुए 'कोहबर' में जाते हैं। कोहबर में ही गठबन्धन खुलता है। बाद में सास, ननद, जेठानी आदि वधू का मुँह देखती हैं। पहली बार वधू के मुँह देखने पर आशीर्वाद के रूप में (जिसे भोजपुरी भाषा में 'मुँहदेखनी' कहते हैं)

---

१. कोहबर-चित्र के प्रतीकात्मक स्वरूप के लिए दे० डॉ० विश्वनाथ प्रसाद : भारतीय साहित्य (भटनागर-अभिनन्दन-ग्रन्थ), जनवरी १९६१ ई०, पृ० २९२—२९६ ।

२. ससुराल जाती हुई वधू की मनःस्थिति पर प्रकाश डालनेवाली एक लोकोक्ति है :

'धिया सासुर जाली कि मने मने गाजेली ।'

लड़की ससुराल जाती है, तो मन-ही-मन खुश होती है ।

प्र० अनुकूल अवसर पाने पर प्रसन्न होना ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रुपये-पैसे या आभूषण देने की प्रथा है। उपर्युक्त विधि-व्यवहारों का वर्णन निम्नांकित लोकोक्तियों में हुआ है :

आवतारन जइसे कि दउरा तें डेग धरत होखस।

(वे) ऐसे चले आ रहे हैं कि जैसे टोकरी में डेग भर रहे हों।[1]

प्र० किसी सुस्त व्यक्ति पर व्यंग्य।

मुँह अस मुँह ना, नव रोपेया मुँह देखाई।

मुँह ऐसा तो मुँह नहीं है (वधू का) और नौ रुपए 'मुँहदिखाई' के रूप में ही चाहिए!

प्र० योग्यता या सामर्थ्य के प्रतिकूल पाने की इच्छा करना।

(ख) बहू-विवाह : बहु-विवाह के दो रूप होते हैं—एक बहुपतित्व और दूसरा बहुपत्नीत्व। प्रथम रूप अब भी कुछ आदिवासी जातियों में वर्त्तमान है। भोजपुर-क्षेत्र में बहुपत्नीत्व-प्रथा हाल तक प्रचलित रही है। यह प्रथा, प्रायः धनी-वर्ग में प्रचलित थी। इस बहु-पत्नीत्व-प्रथा से संयुक्त परिवार की एकता को भी धक्का पहुँचा है। कभी-कभी इस प्रथा के कारण दाम्पत्य-जीवन कुण्ठाग्रस्त और दुःखद भी हो जाता है। अज्ञानवश एक पति की दो पत्नियाँ एक दूसरे के प्रति या एक दूसरे की सन्तानों के प्रति उपेक्षा और प्रतिकार की भावना रखने लगती हैं। लोकोक्तियों में भी बहुपत्नी-प्रथा के बुरे परिणामों की ओर संकेत किया गया है। यथा :

गँड़ा के खेती, सिरवाँ के साँप, मैभा कारण बैरी बाप।

गाँव के समीप की खेती, बिछावन के ऊपर का साँप और सौतेली माँ के कारण बैरी बना हुआ पिता—ये तीनों खतरनाक होते हैं।

तीन बैल, दूइगो मेहरी, गइल घर ओ खेती ओकरी।

जिसके पास तीन बैल और दो पत्नियाँ हैं, उसकी खेती और घर समाप्तप्राय हैं।

बुढ़वा भतार पर पाँच टिकुली :

बूढ़े पतिवाली स्त्री पाँच टिकुलियाँ सर पर चिपकाती हैं!

प्र० किसी की अशोभनीय रहन-सहन पर व्यंग्य।

इस लोकोक्ति से बूढ़े पति की युवा पत्नी की हीनभावना की ओर संकेत किया गया है।

(ग) वैवाहिक जीवन : हिन्दू-धर्म के अनुसार तीन ऋणों से मुक्त होने के लिए गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना जरूरी है। वस्तुतः, समाज और व्यक्ति के कल्याण के लिए—अर्थ, धर्म और काम—पुरुषार्थों की सिद्धि के लिए पति-पत्नी का संयुक्त जीवन आवश्यक है। किन्तु, कभी-कभी यह दाम्पत्य-जीवन अशान्त भी हो जाता है। प्रमादवश पति-पत्नी के पारस्परिक व्यवहार और सम्बन्ध में कटुता आ जाती है। इसलिए, लोकोक्तियों में पति-पत्नी के आदर्शों पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से विचार किया गया है। उदा०

---

१. "वंश (बाँस) का बना हुआ दौरा (बड़ी डलिया) इस बात का द्योतक है कि कुल (वंश) बहुत दिनों तक चला जाय।"—डॉ० पाण्डुरंग वामन काणे : धर्मशास्त्र का इतिहास, प्रथम भाग, पृ० ३०६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चंचल चपल चिहुकना, बहुभोजन बहु रोख।
पाँच पुरुख के लछन हैं, नारी पांच हैं दोख।।

चंचलता, चपलता, चिहुंकना, बहुभोजन और बहु-क्रोध—ये पाँच पुरुष के गुण हैं और नारी के अवगुण।

घर में आइल जोय, टेढ़ी पगिया सीधी होय।

जब घर में स्त्री आती है, तब पति की टेढ़ी पगड़ी सीधी हो जाती है, अर्थात् विवाह के बाद पुरुषों की हेठी कम हो जाती है।

ना मोरा बोला चाली, ना मोरा केहु।
सिकहर पर पूआ बाटे, काढ़ि खाय केहु।।

(रूठी हुई पत्नी का पति के प्रति कथन) मेरी बोलचाल किसी से नहीं है और न मेरा कोई होता है, छीके पर पूआ रखा हुआ है—चाहे तो कोई उसे वहाँ से लेकर खा ले।

यह लोकोक्ति दम्पति के बीच होनेवाली चख-चुख की ओर संकेत करती है।

(इ) वस्त्र और अलंकार :

वस्त्र, आभूषण और प्रसाधन सामाजिक जीवन के अविच्छिन्न अंग होते हैं। ये समाज के बाह्य और आन्तरिक्त—दोनों पक्षों के परिचायक होते हैं। संक्षेप में इनके निर्माण, व्यवहार और सजावट में जन-सामान्य की भौतिक आवश्यकता, सूझ, श्रम और सौन्दर्य-बोध की कहानी अंकित रहती है।[1]

भोजपुरी लोकोक्तियों में कितने ही ऐसे वस्त्र, आभूषण और प्रसाधन-सामग्रियों के उल्लेख हुए हैं, जो अपनी वय में विगत शताब्दी का इतिहास छिपाये हुए हैं। लोकोक्तियों में वर्णित कुछ ऐसे भी वस्त्र, आभूषण और प्रसाधन हैं, जो इस समय व्यवहृत नहीं होते हैं और जिनके नाम लोकोक्तियों में ही सुरक्षित हैं। अतः, लोकोक्ति-साहित्य के आधार पर इन वस्त्रों, आभूषणों और प्रसाधनों के नाम और रूप का अध्ययन सर्वथा उपादेय है। सुविधा की दृष्टि से इस विषय का अध्ययन दो वर्गों के अन्तर्गत किया गया है—(अ) वस्त्र और (आ) अलंकार।

(अ) वस्त्र : व्यवहार की दृष्टि से सामान्यतः वस्त्र तीन प्रकार के होते हैं—(क)पहनने के वस्त्र, (ख) ओढ़ने के वस्त्र और (ग) बिछाने के वस्त्र।

---

१. ".....The original reasons for the wearing of clothings, and the main influences in its evolution, may be roughly classified as follows : 1. as protection either from cold from the sun or from nuisances of various kinds, like insects, 2. as decoration for the purpose of sexual attraction, 3. as decoration prompted by variety, 4. Modestly and feeling of shame and 5. wearing of trophies, badges and other symbolic indications of the character and status of the wearer."—Arnold Whittick : Symbols, Sings and their meanings. chap. xvii, p. 336.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(क) पहनने के वस्त्र : पुरुष के वस्त्र :

धोती : धोती एक प्राचीन वेश-भूषा है। मिहनत-मजदूरी करनेवाले घुटने तक की धोती पहनते हैं और शौकीन लोग फहराती हुई धोती पहनते हैं। ऐसी धोती पहनने की परम्परा अति प्राचीन है।[1] भोजपुरी भाषा में धनी लोगों की धोती को 'लामी' (लम्बी) धोती कहते है। एक लोकोक्ति इस सम्बन्ध में इस प्रकार है :

बाहर लामी-लामी धोती, घरे मसुरी के रोटी।

घर के बाहर तो वह लम्बी धोती पहनता है और घर के भीतर मसूर की रोटी खाता है।

प्र० आडम्बरपूर्ण प्रदर्शन पर व्यंग्य।

कौपीन : कौपीन लँगोटी की किस्म की एक वेश-भूषा है। प्राचीन काल से ही यह साधु-संन्यासियों और भिक्षुओं का पहनावा रहा है। 'हर्षचरित' में बाण ने संन्यासी भैरवाचार्य की वेश-भूषा के प्रसंग में छाती तक पहुँचता हुआ गेरुआ कौपीन का उल्लेख किया है।[2] कौपीन-सम्बन्धी एक लोकोक्ति है :

कर करवा कोपीन, भजु राधे गोबीन।

हाथ में करवा और कमर में कौपीन है, साथ ही वे 'राधे-गोविन्द' का नाम ले रहे हैं।

पगड़ी : यह एक पुरानी पोशाक है। पोशाक के साथ यह प्रतिष्ठा का भी प्रतीक है।[3] प्राचीन काल में पगड़ी 'उष्णीष', 'तार्प्य' और 'पाण्ड्व' के नाम-रूप से ख्यात रही है।[4] पगड़ी रंग-बिरंगी होती है। इसके बाँधने की भी कई विधियाँ हैं। उत्सवों के अवसर पर प्रायः रंगीन पगड़ी बाँधी जाती है। पगड़ी-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

---

१. 'In the yaksa statue from Mathura, the lower part of the body is swathed in a 'dhoti',.....It is broad enough almost to touch the ground at the back of the figure, where over the buttocks it sweeps smooth by as there are no hind pleats to cut into the smooth sweep.....A precise idea of the nature of such fringes may be had from the loose right end of the 'dhoti', hanging from the left arm of the masterful personage....."—G. S. Ghurye : Indian Costume, Bombay 1951, p. 75.

२. हर्षचरित : 'धातुरसानुरूपेण कर्पटेन कृतोत्तरासङ्ग.....।' (पृ० ८६)।

३. पगड़ी-सम्बन्धी पर्यायवाची शब्दों के विस्तृत विवरण के लिए दे० गुलेरी-ग्रन्थावली, पहला खण्ड : ना० प्र० स० प्रकाशन, पृ० १८२-१८५।

४. वस्त्रों के साथ भी मनुष्य के आचार और व्यवहार का सम्बन्ध है। 'पगड़ी' को बोलचाल में प्रतिष्ठा या शान-शौकत के पर्याय के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। जब एक व्यक्ति, दूसरे व्यक्ति के प्रति सम्मान प्रकट करता है, तब वह अपनी पगड़ी उतार देता है। व्यक्ति का यह व्यवहार उसकी विनम्रता का प्रतीक है। इस सम्बन्ध में दे० अर्नोल्ड ह्वीटिक : सिम्बॉल्स, साइन्स ऐण्ड देयर मीनिंग्ज, लन्दन, १९६०, पृ० ३३३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घर में आइल जोय, टेढ़ी पगिया सीधी होय ।

घर में पत्नी आ गई, अब (पति की) टेढ़ी पगड़ी[1] सीधी हो जायगी ।

'यहाँ पर टेढ़ी पगड़ी का सीधा होना' एक मुहावरेदार प्रयोग है, जिसका व्यंग्यार्थ है—शान-शौकत में कमी होना ।

राग, रसोइया पागरी कबो-कबो बनि जाय ।

राग, भोजन और पगड़ी कभी-कभी बन जाती हैं । (अर्थात्, ये चीजें हमेशा मनोवांछित रूप ग्रहण नहीं करतीं) ।

चुनरी : यह काशिक (काशी के) वस्त्रों के रूप में बड़ी प्रसिद्ध रही है । इसलिए, यह सम्भव है कि प्राचीन काल से चुनरी भोजपुर-क्षेत्र की प्रिय वेश-भूषा रही हो ।[2] यह एक भड़कदार वेश-भूषा है । इसे विविध कौशलों से बाँधकर रँगा जाता है और इसपर आकृतियाँ उरेही जाती हैं । हर्ष के समय में चुनरी एक आकर्षक और प्रचलित वस्त्र था ।[3] किन्तु, इन दिनों चुनरी अपने पुराने रूप को छोड़ती जा रही है । चुनरी-सम्बन्धी एक लोकोक्ति है :

चुनरी फाट गइलि चमकल मेट[4] गइल ।

चुनरी फट गई और चमकना (प्रदर्शन करना) बन्द हो गया ।

प्र० क्षणिक प्रदर्शन की समाप्ति हो जाना ।

झूला-गाँती : झूला, ढीला (झूलता हुआ) कुरता है । गाँती एक चादरनुमा वस्त्र है । इसे गले में बाँधा जाता है । गाँती का निचला छोर कमर के नीचे तक चला जाता है । यह एक प्राचीन वस्त्र है । 'हर्षचरित' में सावित्री के शरीर पर एक शाल का होना कहा गया है । इस शाल में गट्ठी स्तनों के मध्य होती थी । बाण ने इस शाल को 'गात्रिका' कहा गया है ।[5] वर्त्तमान 'गाँती' उक्त 'गत्रिका' का आधुनिक रूप है । उपर्युक्त दोनों वस्त्रों के उल्लेख निम्नांकित लोकोक्ति में हुए हैं :

मेहरारू के झूला ना बिलाई[6] के गाँती ।

पत्नी को तो झूला नहीं है और बिल्ली को गाँती दी जा रही है ।

प्र० पात्र के बदले अपात्र का पालन-पोषण करना ।

---

१. (अ) प्राचीन काल में, विशेषतः राजकुमार और रईस 'टेढ़ी-पगड़ी' बाँधते थे । लाट्यायन श्रौत-सूत्र, ८।५।८ में व्रात्यों द्वारा टेढ़ी पगड़ी (तिर्य्यङ्नद्ध) बाँधने का उल्लेख हुआ है ।

(आ) "The head-dress gives greater dignity to its wearer in popular esteem when worn slightly standing, 'khagi', a feature which further cast has stamped a person so wearing it as a fop, baka."—Indian costume : G. S. Ghurye, Bombay, 1951, p. 145.

२. दे० डॉ० मोतीचन्द्र : प्राचीन भारतीय वेश-भूषा, पृ० ६६ ।

३. दे० डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल : हर्षचरित—एक सांस्कृतिक अध्ययन (बि० रा० प० प्रकाशन), पृ० ७३-७४ ।

४. पाठा० 'छुटि' ।

५. दे० डॉ० मोतीचन्द्र : प्राचीन भारतीय वेश-भूषा, पृ० १५८ ।

६. पाठा० 'बिलारि' ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चोली : यह एक अति प्राचीन वेश-भूषा है। 'चोली' के लिए प्राचीन काव्य-ग्रन्थों में 'चोल' और 'कूर्पासक' शब्दों के प्रयोग हुए हैं।[1] चोली कमर के ऊपर तक ही रहती है—ठीक वहीं तक, जहाँ दामन का आरम्भ होता है। एक लोकोक्ति में चोली का उल्लेख इस प्रकार हुआ है :

सइयाँ के अरजन, भइया के नाँव।
चोलिया पहिर जइबों ससुरजी के गाँव॥

चोली पति की दी हुई है, किन्तु इसे भाई का बताकर (मैं) ससुराल जाऊँगी।

प्र० किसी की सम्पत्ति को झूठ बोलकर दूसरे की सम्पत्ति सिद्ध करना।

(ख) ओढ़े जानेवाले वस्त्र :

कम्बल : ओढ़ने के वस्त्रों में कम्बल एक उपयोगी और पवित्र वस्त्र के रूप में लोकप्रिय रहा है। साधारण कम्बल मोटे रोएँ के बने होते हैं। इन्हें ओढ़ने के साथ बिछाने के काम में भी लाया जाता है। हाथ से बुने कम्बलों की बुनाई सघन नहीं होती। ऐसे कम्बल ठण्डक के दिनों में पूरी गरमी नहीं दे पाते। इसलिए, गरीब लोग इसके नीचे एक चादर भी रख लेते हैं, जिसे भोजपुरी भाषा में 'पिछउरी' कहते हैं। उदा०

जाड़ राड़ के कवन चिरउरी, कम्मर पर जब होय पिछउरी।

बदमाश जाड़े की खुशामद क्यों की जाय, अगर कम्बल के नीचे एक साटन हो।

कमरी थोरे दाम की, आवे बहुते काम।
खासा मलमल फावता उनकर राखे मान॥

कमरी थोड़े मूल्य की होती है और बहुत कामों में आती है। समय पड़ने पर यह खासा, मलमल और फावता जैसे कीमती कपड़े की तरह किसी का मान रखती है।

रजाई-धुस्सा : धनी लोग रजाई अधिक व्यवहार में लाते हैं। इसका कारण है कि रजाई के बनवाने में अन्य वस्त्रों की अपेक्षा अधिक खर्च होता है।

धुस्सा को भोजपुरी-भाषा में 'धूस' कहते हैं। यह ऊन की मोटी चादर है। महावग्ग जातक (८।१।२९।) में आये 'दूस्स'[2] को डॉ० मोतीचन्द्र ने पंजाबी और हिन्दी के 'धुस्सा' का प्राचीन रूप बताया है। इस सम्बन्ध में उनका कथन है : '.....प्राचीन दुस्स दुशाले की तरह कोई कीमती चादर थी। दुस्सा प्राचीन वैदिक तूष, जिसका अर्थ कपड़े में बँटी या अनबटी छीर है, से निकला है। दुशाले में बराबर छीर छोड़ी जाती है, इसलिए इसका नाम महाजनपद-युग में दुस्स पड़ा।[3] उपर्युक्त दोनों वस्त्रों के उल्लेख निम्नांकित लोकोक्तियों में हुए हैं :

जेकर बाप कमरा ना ओढ़ले, से ओढ़सु रजाई।

जिसके पिता कम्बल तक भी नहीं ओढ़ते थे, वे रजाई ओढ़ते हैं।

प्र० दिखावे के लिए ठाट-बाट करना।

जाड़ काटे रूई ना तऽ धूस।

जाड़ा या तो रूई से (रजाई से) और न तो धुस्से से ही कटता है।

---

१. (अ) दे० कालिदास : ऋतुसंहार ४।१६; अमरकोष, 'कूर्पासक' शब्द तथा शिशुपालवध, पृ० २३।
(आ) चोल : नैषधचरित, २२।४२ (मोनियर विलियम्स : ए संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी, पृ० ४०२)।

२. 'दूस्स' के अतिरिक्त 'दूष्य' का प्रयोग संस्कृत-साहित्य (शिशुपालवध, ५।२१) में हुआ है।

३. डॉ० मोतीचन्द्र : प्राचीन भारतीय वेश-भूषा, पृ० २९।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ग) बिछानेवाले कपड़े :

गलीचा-दरी : गलीचे की बुनावट सघन और खूबसूरत होती है। कीमती होने के कारण गलीचों को रईस ही व्यवहार में लाते हैं। एक लोकोक्ति में कहा गया है :

ओढ़े के लुगरी, बिछावे के गलैंइचा।

ओढ़ने के लिए फटा कपड़ा भी नहीं है और बिछाने के लिए गलीचा ही चाहिए।

प्र० किसी के द्वारा प्राथमिक आवश्यकता की अपेक्षा अनावश्यक आवश्यकता की पूर्त्ति के लिए प्रयत्न करना।

दरी मोटे सूतों से बुना एक मजबूत बिछावन है। कालीन की तरह दरियाँ भी रंग-बिरंगी होती हैं। इसे भी गरीब जनता कम व्यवहार में लाती है। दरी-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

खाये के कुछ ना, दरी बिछौना।

खाने को तो कुछ भी नहीं है और बिछाने के लिए दरी है।

प्र० आडम्बरपूर्ण व्यवहार करना।

पशुओं के ओढ़ने के वस्त्र : पालतू पशुओं को ठण्डक से बचाने के लिए या तो उसपर सवारी करने के लिए, तरह-तरह के कपड़ों से ढका जाता है। इन वस्त्रों में एक झूल भी है। यह चौकोर होता है। इसके दोनों छोर पशुओं को पीठ के दोनों किनारों पर झूलते रहते हैं। प्राचीन काल से ही झूल 'हत्थत्थर' और 'सौमितिका' के रूप में पशुओं का शोभादायक वस्त्र रहा है।[1] झूल-सम्बन्धी एक लोकोक्ति इस प्रकार है :

खोरही कुतिया, रेशम के झूल।

खौरही (खोरह रोग से ग्रस्त) कुतिया को रेशम की झूल दी गई है।

प्र० अनुपयुक्त व्यक्ति या वस्तु को सम्मान देना।

(आ) **अलंकार :** रूप के शोभा-विस्तार में अलंकारों का विशेष महत्त्व है। अपने रूप को स्वच्छ और सुन्दर बनाना, मनुष्य का एक स्वाभाविक प्रयत्न है। इस प्रयत्न के लिए मनुष्य भौतिक उपकरणों का सहयोग लेता आया है। इन भौतिक उपकरणों को सामान्यतः दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—(क) आभूषण और (ख) प्रसाधन।

(अ) **आभूषण :** भोजपुर-क्षेत्र के सामान्य व्यवहार में आनेवाले आभूषण अपने रूप-रंग में पिछले वर्षों का इतिहास सँजोये हुए हैं। लोकोक्तियों में वर्णित आभूषण इस प्रकार हैं :

झुमका : यह कान का आभूषण है। इसके नीचे झुप्पा लटकता रहता है, जो गति पाकर झूमता रहता है। इसी झूमने के कारण 'झुमका' नाम पड़ा। झुमका के सम्बन्ध में एक लोकोक्ति है :

अलबेली गुजरिया बड़हर के झुमका।

अलबेली गुजरिया है, (इसलिए) बड़हर का झुमका पहने हुए है।

प्र० मस्तमौला व्यक्ति की तरह अटपटा काम करना।

---

१. दे० डॉ० मोतीचन्द्र : प्राचीन भारतीय वेश-भूषा, पृ० ३३, ५२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाली : यह भी एक कान का आभूषण है। यह मण्डलाकार होता है। प्राचीन कुण्डलों से इसका साम्य है। इसका उल्लेख निम्नांकित लोकोक्ति में हुआ है :

नाक ना कान बाली के अरमान।

नाक और कान तो हैं नहीं, किन्तु (उसे) बाली पहनने का अरमान है।

प्र० सामर्थ्य के प्रतिकूल इच्छा व्यक्त करना।

बँहर बूँट (बाजूबन्द) : यह बाँहों का आभूषण है। इस आभूषण के नीचे फुदना लटकता रहता है। यह ग्रामीण नारी-समाज में अधिक व्यवहृत होता रहा है। इस आभूषण का उल्लेख करनेवाली लोकोक्ति निम्नांकित है :

घर रही भा जाई, बहर बूँटा गढ़ाई।

घर रहेगा या जायगा, किन्तु बाजूबन्द तो बनेगा ही।

प्र० जिद में आकर अनुचित कार्य करने को उतारू होना।

छूँछी : यह नाक का आभूषण है। इसकी आधार-नली पोली (छूँछी) रहती है। इसलिए इसका नाम 'छूँछी' पड़ा है। यह एक मामूली आभूषण है। यथा :

कहावेले सइयद चोरावेले छूँछी।

(वे) कहलाते हैं सैयद, किन्तु चुराते हैं छूँछी (एक मामूली चीज)।

प्र० उच्च कुल का व्यक्ति होकर निम्न कार्य करना।

गुरिया और रुद्राक्ष : गुरिया एक लोकप्रिय आभूषण है। भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही इसका व्यवहार होता आ रहा है।[1]

'उदराछ' (रुद्राक्ष) एक विशाल वृक्ष के बीजों से बनी माला है। रुद्र या शैव सम्प्रदायवाले रुद्राक्ष की माला को अपने गले और बाँहों में पहनते हैं। शिव की मूर्त्ति या चित्रों में रुद्राक्ष की माला दीख पड़ती है।[2] रुद्राक्ष गाढ़े रक्त के रंग का होता है।[3] भक्त अपने

---

१. बस्ती जिले के 'कोपिया' (मल्लों की प्राचीन राजधानी अनुपिया) स्थान की खुदाई में रंग-बिरंगी गुरियाएँ प्राप्त हुई हैं। इन गुरियों में आज की तरह पिरोने के लिए छेद भी हैं। तत्सम्बन्धी विस्तृत विवरण के लिए दे० श्रीसम्पूर्णानन्द-अभिनन्दन-ग्रन्थ (का० ना० प्र० प्रकाशन), पृ० १९६-१९७।

२. ऋग्वेद (२।३३।१०) में रुद्र को भाँति-भाँति के रूपोंवाला निष्क पहने हुए चित्रित किया गया है। किन्तु, वहाँ रुद्राक्ष का उल्लेख नहीं है। हाँ, अथर्ववेद में (११।२।७) रुद्र को सहस्राक्ष कहा गया है। सम्भवतः, इसी रुद्र के सहस्राक्ष रूप के प्रतीकस्वरूप, रुद्र के भक्तों के गले में रुद्राक्ष की माला शोभती है। रुद्र के रूप-शृंगार के लिए दे० वैदिक देवशास्त्र : मेकडानेल-रचित वैदिक माइथोलॉजी का स्वतन्त्र हिन्दी-रूपान्तर (दिल्ली, १९६१), पृ० १७८—१८०।

३. मत्स्यपुराण (१७१।३७—४४) में वर्णित एक कथा के अनुसार ब्रह्मा और उनकी पत्नी सुरभि के संसर्ग से रुद्रों का जन्म हुआ। ये रुद्र सन्ध्या की लालिमा एवं अन्धकार-मिश्रित वर्णवाले थे। रुद्राक्षों के रंग में भी लाल और काले वर्णों का मिश्रण है। अतः, रुद्राक्षों को रुद्रों का उपयुक्त प्रतीक मानना चाहिए।

'रुद्र' के विशेष अध्ययन के लिए दे० (अ) Puranic Etymologies by Dr. S. G. Kantwala : Gopinath Kaviraj Abhinandan Granth, Lucknow, 1967; (आ) Dr. R. N. Dandekar : Rudra in veda, Journal of the university of Poona, Humanities section, vol. I (1953), p. 133.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इष्ट से एकाकार की भावना रखने के प्रयत्नस्वरूप, इष्ट (शिव) की तरह वेश-भूषा धारण करते हैं। रुद्राक्ष की माला पहनने की प्रथा के पीछे उक्त भावना ही काम करती है। रुद्राक्ष और गुरिया के उल्लेख निम्नांकित लोकोक्ति में हुए हैं :

बाप के गला में गुरिया ना, बेटा के गला में उदराछ।[1]

बाप के गले में गुरिया भी नहीं है, किन्तु बेटे के गले में रुद्राक्ष की माला है।

प्र० परिवार या समाज के प्रतिकूल आचरण पर व्यंग्य।

चूड़ी : यह एक सर्व-सुलभ और लोकप्रिय आभूषण है। विवाहिता स्त्रियाँ इसे आवश्यक रूप से पहनती हैं। हाथ में चूड़ी का नहीं रहना वैधव्य का सूचक होता है। चूड़ी-सम्बन्धी एक लोकोक्ति है :

भर बाँह चुड़ी ना त ऽ पट्ट[2] दे रांड़।

या तो चूड़ियाँ पूरी बाँह पहननी चाहिए या झट से राँड़ हो जाना चाहिए।

प्र० निर्णय के समय 'हाँ-ना' में किसी एक को शीघ्र अपनाने का परामर्श देना।

टिकली : यह काँच और पन्नी से बनी बिन्दी होती है। इसे स्त्रियाँ दोनों भौंहों के मध्य चिपकाती हैं। यह स्त्रियों की एक सामान्य प्रसाधन-सामग्री है। यथा :

पेट करे खाँव खाँव, माँगे टिकुली।

उसका पेट तो खाँव-खाँव करता है (अर्थात्, भूखा है), किन्तु वह टिकली माँगती है!

प्र० अपनी प्राथमिक आवश्यकताओं की उपेक्षा करना।

पाती : यह एक अर्द्धचन्द्राकार कर्णफूल है। मुगल-काल में इस आभूषण का काफी प्रचार था।[3] कानों में आठ नौ तक की संख्या में पाती पहनी जाती है। हिन्दू-स्त्रियों की अपेक्षा मुसलमान-स्त्रियाँ इसका अधिक व्यवहार करती हैं। पाती-सम्बन्धी एक लोकोक्ति इस प्रकार है :

एको पानी जे बरसे स्वाती, कुरमिन पहिरे सोना पाती।

अगर स्वाती नक्षत्र में एक बार भी वर्षा हो गई, तो कुरमिन (कुरमी की स्त्री) को भी सोना की पाती पहनने के लिए पर्याप्त धन हो जायगा।

माठी : यह गिल्लट की बनी चूड़ी होती है। इसे प्रायः गरीब स्त्रियाँ व्यवहार में लाती हैं। काशी की माठी बहुत प्रसिद्ध होती है। यहीं की माठी का व्यवहार बिहार, राजपूताना आदि प्रदेशों में होता है। निम्नांकित लोकोक्ति में माठी का उल्लेख हुआ है :

तीन कौड़ी गाँठी, चूड़ी पहिरों कि माठी।

गाँठ में तो तीन कौड़ियाँ हैं, (इसलिए मैं) चूड़ी पहनूँ या माठी।

प्र० सीमित साधन के कारण इच्छा-पूर्त्ति में संकट उपस्थित होना।

---

१. रुद्राक्ष (भो० उदराछ)-सम्बन्धी एक लोकोक्ति इस प्रकार है :
'आगिल बात पाछ परल, गले उदराछ परल।'
पहले की बातें पीछे पड़ीं, अब तो उनके गले में रुद्राक्ष की माला है।
प्र० अकस्मात् सज्जन और सदाचारी बनने का ढोंग करना।

२. पाठा० फट्ट।

३. दे० आइने अकबरी, भाग ३, पृ० ३४३ (अँगरेजी-संस्करण)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ख) प्रसाधन : लोकोक्तियों में प्रसाधन-सामग्री की छिट-पुट चर्चा हुई है। इसमें प्रसाधनों के उल्लेख, वाच्य अर्थ से अधिक व्यंग्य अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए हुए हैं। निम्नांकित प्रसाधन-सामग्री के उल्लेख लोकोक्तियों में हुए हैं :

अंजन : यह आँख का एक प्राचीन प्रसाधन है। अंजन बनाने के समय उसके बारीक चूर्ण बहुत सावधानी से छाने जाते हैं। कारण यह है कि मोटे चूर्ण आँखों में गड़ते हैं और कम ठहरते हैं। अंजन, दृष्टि के लिए शोभादायक ही नहीं, ज्योतिवर्द्धक भी होता है। अंजन-सम्बन्धी निम्नांकित लोकोक्तियाँ हैं :

अँखिये फूटी तऽ आजन का लगाइब।

आँख ही फूट जायगी, तो अंजन लगाकर ही क्या होगा ?

प्र० साधन का साध्य के लिए विनाशक होना।

फूटल सहाला, आजन ना सहाला।

आँख का दर्द सहा जा सकता है, किन्तु अंजन का नहीं।

प्र० कठिनाई से अधिक उसके उपचार का दुःखद होना।

काजल : काजल एक सामान्य प्रसाधन है। यह ज्योतिवर्द्धक भी है। किन्तु, लोकोक्तियों में यह शोभा-विधायक के रूप में वर्णित है। यथा :

ठाँव गुने काजर, कुठाँव गुने कारिख।

सही स्थान पर प्रयुक्त होकर काजल, काजल कहलाता है और गलत स्थान पर प्रयुक्त होकर कालिख।

प्र० किसी वस्तु या विचार की श्रेष्ठता का स्थान या अवसरसापेक्ष होना।

ना नौ मन काजर[1] होइहैं, ना राधा नचिहैं।

न नौ मन काजल होगा, न राधा नाचेगी।

प्र० जब किसी कार्य की सफलता किसी असम्भव शर्त्त पर निर्भर हो।

काजर कइनी बीजर[2] कइनी, टिकुली तऽ हइये ना।

काजल कर लिया, आँख की कोर में नुकीली रेखा भी खींच दी है, किन्तु टिकली तो है ही नहीं।

प्र० एक ही वस्तु के अभाव में किसी कार्य का अपूर्ण रहना।

सिन्दूर : सिन्दूर प्रसाधन ही नहीं, स्त्रियों के सोहाग और सुख-सौभाग्य का प्रतीक भी है। सिन्दूर भरने की क्रिया को भोजपुरी में 'माँग टीकना' कहते हैं। सिन्दूर-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

खियावे के ना पियावे के, धा धा माँग टीके आवे के।

खिलाती-पिलाती तो हैं नहीं, दौड़-दौड़कर माँग भरने आती हैं।

प्र० किसी अतिथि को औपचारिक सम्मान देना।

अनकर सेनुर देख के आपन कपार फोरीं।

अगर मैं दूसरे के सर पर सेन्दूर देखूँ, तो क्या मुझे अपना सर फोड़ना चाहिए ?

प्र० ईर्ष्यावश अपना नुकसान करना।

---

१. पाठा० तेल।

२. बीजर < सं० विज्जल (बाण का एक प्रकार), दे० मोनियर विलियम्स : ए संस्कृत-इंगलिश डिक्शनरी, पृ० ९६०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिलक : तिलक प्रसाधन के अतिरिक्त धार्मिक आचार के पालनार्थ धारण किया जाता है। विभिन्न सम्प्रदायों के भक्त विभिन्न आकार के तिलक ललाट पर चित्रित करते हैं। शोभा और मंगल के सूचनार्थ तिलक पर अक्षत और अभ्रक चिपकाये जाते हैं। तिलक-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

बिना बान तिलक से लिलार चरचराय।

विना आदत के तिलक धारण करने से ललाट चरचराता है।

प्र० अन्धानुकरण करना।

मँगनी के चन्दन, घस्स रघुनन्दन।

हे रघुनन्दन ! मुफ्त का चन्दन है, खूब घिसो।

प्र० मुफ्त का माल उड़ाने पर व्यंग्य।

उबटन : उबटन के अनुलेपन से शरीर स्वच्छ और स्निग्ध होता है। इसलिए, उबटन को एक ओषधि भी माना गया है। विभिन्न कालों में मण्डन के लिए तरह-तरह की वस्तुओं से अनुलेप निर्मित होते रहे हैं। सामान्यतया जौ के चूर्ण, हल्दी के चूर्ण और सरसों के तेल से उबटन तैयार किया जाता है। निम्नांकित लोकोक्तियों में उबटन का उल्लेख हुआ है :

अनका कमाई पर तेल बुकवा।

दूसरों की कमाई पर तेल और चूर्ण का प्रयोग सभी करते हैं।

प्र० मुफ्त की चीज का भोग करना।

जनमते बबुआ गोर न होइहैं, तऽ का अबटला से होइहैं।

जन्म से ही बच्चा गोरा नहीं होगा, तो क्या उबटन लगाने से होगा ?

प्र० स्वाभाविक साधन की जगह कृत्रिम साधन अपनाने पर व्यंग्य।

बड़ा दुलार भँड़-माँड़े के बुकवा।

बहुत दुलार हुआ, तो 'भँड़-माँड़' (एक कँटीला पौधा) का चूर्ण लगा दिया !

प्र० औपचारिक स्नेह प्रदर्शित करना।

पान : पान का प्रयोग भारतवर्ष में प्राचीन काल से होता आ रहा है।[1] पान का महत्त्व हमारी रहन-सहन और खान-पान में ही नहीं, धार्मिक और मांगलिक कृत्यों में भी है। पूजा में देवता को पान समर्पित करते हैं। पान से घर आये मेहमान का स्वागत किया जाता है। बोल-चाल में 'पान खाना' सुख-समृद्धि के और 'पान देना' सम्मान देने के अर्थ में प्रयुक्त होता है। यथा:

बाप जनमे ना खइले पान, दाँत निपोरत गइल परान।

(इसके) पिता तक ने भी पान नहीं खाया। उनके भी प्राण दाँत निपोरते ही चले गये।

प्र० आडम्बर प्रदर्शित करने पर व्यंग्य।

पान देले सातू ना, पनही देले पूआ।

मैं तुम्हारे मुँह में पान देता हूँ, तो तुम सत्तू तक भी नहीं देते हो और अगर मैं तुम्हारे मुँह में जूता देता हूँ, तो पूआ देते हो।

प्र० सम्मान के बदले अपमान के सहारे कार्य सिद्ध होना।

---

१. दे० डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी : प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद, पृ० २३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुँह देख बीड़ा, चतुर देख पीढ़ा।

मुँह देखकर किसी को पान का बीड़ा देना चाहिए और गुण देखकर पीढ़ा (आसन)।

(ई) खान-पान :

लोकोक्तियों में खान-पान की सामग्री की भी चर्चा हुई है। इस सामग्री में अन्न, दूध, दही, घी, तेल, शाक, फल और पेय पदार्थों की बृहत् सूची प्राप्त होती है। इस भोजन-सामग्री की निर्माण-विधि और व्यवहार से जन-सामान्य की भौतिक उपलब्धि, सुरुचि और संस्कार का पता चलता है।

लोकोक्तियों में वर्णित भोजन-सामग्री का अध्ययन वर्णानुक्रम से प्रस्तुत किया जा रहा है :

कसार : कसार चावल के आटे में शक्कर और घी मिलाकर बनाया जानेवाला लड्डू है। भोजपुरी क्षेत्र में कन्या की विदाई के अवसर पर सन्देश के रूप में कसार देने की प्रथा है। निम्नांकित लोकोक्ति में कसार का उल्लेख हुआ है :

मारेला भतार, बाकी परोसेला कसार।

पति मारता तो है, किन्तु खाने के लिए कसार भी परोसता है।

प्र० छोटी हानि के साथ अधिक लाभ भी होना।

खिचड़ी : यह एक स्वादिष्ठ भोजन है। इसे धनी और गरीब दोनों ही रुचि से खाते हैं। मकर-संक्रान्ति के अवसर पर खिचड़ी खाने का बड़ा माहात्म्य है। खिचड़ी के साथ पापड़, दही, घी और अँचार की खूब संगति बैठती है। यह बिना दाँतवालों विशेषतः बूढ़ों का प्रिय भोजन है। यथा:

खिचड़ी के चार यार, पापड़ दही घी अँचार।

खिचड़ी के चार मित्र हैं—पापड़, दही, घी और अँचार।

बुढ़िया सराहे घीव खिचड़ी।[1]

बुढ़िया, घी-खिचड़ी की खूब सराहना करती है।

प्र० किसी विशेष वस्तु के प्रति अधिक रुझान रखना।

घी : घी को भोजन-सामग्री में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। घी के महत्त्व पर परोक्षतः प्रकाश डालनेवाली लोकोक्तियाँ ये हैं :

घीव के लड्डू टेढ़ो भला।

घी का लड्डू टेढ़ा भी हो, तो प्रिय होता है।

प्र० कुरूप होने पर भी किसी वस्तु का लाभप्रद होना।

घीव देत घोड़ नरियाय।[2]

घी देने पर भी घोड़ा चिल्लाता है।

प्र० कृतघ्नता या अपनी भलाई नहीं चाहनेवालों पर व्यंग्य।

---

१. पाठा० 'बुढ़वे सवादल घीव खिचड़ी।'
बूढ़े को घी-खिचड़ी का स्वाद लगा है।

२. पाठा० घीव देत बामन नरियाय।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चूड़ा : भारतवर्ष के पूर्वी प्रदेशों में चूड़ा खाने का प्रचलन है। इसे दही के साथ खाते हैं। उत्तर बिहार में विशेषतः ब्राह्मणों का यह प्रिय भोजन है। यथा०

बही चूड़ा बारह कोस, लिचुई अठारह कोस।

(वे) दही-चूड़ा के भोज में सम्मिलित होने के लिए बारह कोस तक की यात्रा करते हैं और पूड़ी के भोज में सम्मिलित होने के लिए अट्ठारह कोस की।

सेतिहाँ के चिउरा भर भर गाल।

मुफ्त का चूड़ा है, इसलिए उसे पूरे गाल में भरकर खाया जा रहा है।

प्र० मुफ्त का माल उड़ाना।

जाउर : यह एक नमकीन खीर है। यह जौ से तैयार की जाती है। भोजपुर-क्षेत्र का यह प्रिय भोजन है। एक लोकोक्ति में जाउर का उल्लेख इस प्रकार हुआ है :

कइसन दुनियाँ बाउर, बेटा के बहुरी दमादे के जाउर।

दुनियाँ कितनी खराब है, पुत्र को तो खाने के लिए भुने जौ का सत्तू देती है और दामाद को 'जाउर' (खीर)।

दही : दही को प्रायः सभी खाद्य पदार्थों के साथ मिलाकर खाया जाना है। किन्तु, कुछ चीजें इसके साथ मिलाकर खाने में खूब स्वादिष्ठ लगती हैं। यथा :

मड़ुआ, मीन, चीन संग दही, कोदो के भात दूध संग सही।

मड़ुआ, मछली और चोना के साथ दही और कोदो के भात के साथ दूध मिलाकर खाना चाहिए।

दाल : दाल और भात अन्योन्याश्रय-सम्बन्ध के प्रतीक के रूप में प्रयुक्त होता है। कुछ अनाजों की दालें पाचन-क्रिया की दृष्टि से निकृष्ट समझी जाती हैं; जैसे खेसाड़ी की दाल। दाल-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ निम्नांकित हैं :

दाल-भात में ऊँट के ठेहुन।

दाल-भात में ऊँट का घुटना।

प्र० दो व्यक्तियों के मामले में व्यर्थ दखल देना।

कुकुर ना पूछे खेसारी के दाल!

कुत्ता भी खेसाड़ी की दाल को नहीं पूछता है!

प्र० किसी व्यक्ति या वस्तु को महत्त्व न होना।

पिट्ठा : पिट्ठा एक पुराना भोजन है।[1] यह चावल के आटे में चने या मसूर की पिसी दाल भरकर बनता है। इसे पानी के भाप से पकाया जाता है। यह सर्वसामान्य का भोजन है। इसे दही या मट्ठे के साथ मिलाकर खाया जाता है। उदा०

पीठा के मजा माठा संगे।

पिट्ठे का मजा मट्ठा के साथ खाने में है।

पूआ : यह भी एक प्राचीन पकवान है।[2] पूआ कुछ खर्चीला भोजन है। साधारण लोगों के यहाँ यह पर्व-त्यौहार आदि अवसरों पर बनाया जाता है। पूआ के महत्त्व पर प्रकाश डालनेवाली लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

---

१. दे० डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल : पाणिनिकालीन भारतवर्ष, पृ० ११८।

२. ऋग्वेद (१०।४५) में प्रयुक्त 'अपूपं' मालपूआ का वैदिक नाम है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बड़-बड़ भूत कदमतर रोए, मूआ माँगे पूआ ।

बड़े-बड़े भूत तो कदम (वृक्ष) के नीचे रो रहे हैं और मूआ (एक साधारण भूत का नाम) पूआ माँग रहा है ।

प्र० किसी की अवांछनीय आकांक्षा पर व्यंग्य ।

पान देले सातू ना पनही देले पूजा ।

पान देने से सत्तू नहीं मिलता, किन्तु जूता मारने से पूआ मिलता है ।

प्र० विपरीत साधन से सम्मान मिलना ।

बारा : बारा उरद की दाल से बनाया जाता है । इसे घी या तेल में छाना जाता है । भोज-भात में विशेष रूप से बारा तैयार किया जाता है । उदा०

आन के मँड़वा बड़-बड़ बारा ।

दूसरे के मण्डप में बड़े बारों की माँग की जाती है !

प्र० मुफ्त का माल उड़ानेवालों पर व्यंग्य ।

जेकरे बियाह ओकरे खाँड़ा बारा ना ।

जिसका विवाह हो रहा है, उसी को बारे का एक खण्ड भी नसीब नहीं !

प्र० अपेक्षित व्यक्ति को सम्मान नहीं देना ।

बहुरी : यह भुने जौ के सत्तू से बनाई जाती है । यह एक साधारण भोजन है । यथा :

कइसन दुनिया बाउर, बेटा के बहुरी, दमादे के जाउर ।

दुनिया अजीब है, वह बेटा को 'बहुरी' देती है और दामाद को जाउर (नमकीन खीर) ।

भात : यह एक सर्वाधिक प्रिय भोजन है । प्राचीन काल में यह 'भक्त' (पाणिनि : अष्टाध्यायी, ४।४।१००) के नाम से प्रसिद्ध था । यह 'भोज-भात' के रूप में भोजन के पर्याय के रूप में भी प्रयुक्त होता है । भोजपुर-क्षेत्र में धान के अतिरिक्त कोदो का भी भात खाया जाता है । किन्तु, यह गरिष्ठ होता है । भात-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ निम्नांकित हैं :

धनी के बात सूनीं, गरीब के भात खाईं ।

आज्ञा-पालन तो धनी लोगों का करते हैं और भात खाते हैं गरीबों का !

प्र० कृतघ्नता पर व्यंग्य ।

भात में कोदो के भात, सास में ममियाँ सास ।

भातों में कोदो[1] का भात जिस प्रकार नगण्य होता है, उसी प्रकार सासों में 'ममिया' (ममेरी) सास ।

माँड़ : धनी लोग तो इसे फेंक देते हैं, किन्तु गरीब इसे बड़े चाव से पीते हैं । और प्रायः दाल के बदले इसी के साथ भात खाते हैं । यथा :

माँड़ पिए के बहुत सवाद ।

माँड़ पीने का बहुत स्वाद लगा हुआ है !

प्र० किसी तुच्छ वस्तु के प्रति अधिक आकर्षण रहना ।

जूरे के माँड़ ना खोजेलन ताड़ी ।

उन्हें पीने के लिए माँड़ भी नहीं मिलता, किन्तु वे ताड़ी पीना चाहते हैं !

प्र० सामर्थ्य के प्रतिकूल किसी चीज के पाने की इच्छा करना ।

---

१. कोदो < सं० कोद्रव (महाभारत, १३।४३६३) ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मूढ़ी : यह धान से तैयार होनेवाला एक चबेना है। मूढ़ी बड़ी हल्की-फुल्की और स्वादिष्ठ होती है। किन्तु, ऐसा कहा जाता है कि यह पाचन-क्रिया को बिगाड़ती है। यथा :

पेट बिगाड़े मूढ़ी, घर बिगाड़े बूढ़ी।

मूढ़ी से पेट बिगड़ जाता है और बूढ़ी औरतों से घर।

रोटी : रोटी प्रायः सभी अनाजों के आटे से बन सकती है। किन्तु, गेहूँ की रोटी अच्छी होती है। गाँवों में गरीब लोग मसूर की भी रोटी खाते हैं। रोटी मीठी आँच में अच्छी बनती है। यह गुड़ और मधु के साथ मिलाकर खाने में स्वादिष्ठ लगती है। रोटी-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

रोटी खाये शक्कर से, धन जोड़े मक्कर से।

रोटी शक्कर के साथ खानी चाहिए और कृपण होकर धन जमा करना चाहिए।

बाहर लामी-लामी धोती, घरे मसूरी[1] के रोटी।

(वे) घर के बाहर तो लम्बी धोती पहनते हैं और घर में मसूरी की रोटी खाते हैं!

प्र० प्रदर्शन पर व्यंग्य।

मधुरे आँचे रोटी मीठ।

मीठी (हल्की) आँच में पकाई हुई रोटी अच्छी होती है।

लिट्टी : यह भोजपुरियों का एक प्रिय भोजन है। भोजपुरी लोग परदेश में भी लिट्टी खाना नहीं छोड़ते। इसे बनाने में भी विशेष परेशानी नहीं होती है। इसलिए, यह सीधे-सादे भोजपुरी लोगों के अनुकूल पड़ती है। इसे, गुँधे आटे में सत्तू भरकर और धधकती आग में सेंककर बनाया जाता है। लिट्टी-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

भर गाँव मोर इतिया पितिया, अपने पिसान के लगवलीं लिटिया।

सारा गाँव तो मेरा भाई-बन्धु है, फिर भी मैंने अपने ही आटे से लिट्टी बनाई है।

प्र० सम्बन्धियों से अपेक्षित सहायता नहीं मिलना।

तीन दिन के बिटिया, अपना के दाल-भात, सभ के लिटिया!

तीन दिनों की लड़की (जीवत्पुत्रिका व्रत करती है तो) अपने लिए दाल-भात बनाती है और दूसरों के लिए लिट्टी।

प्र० उत्साह में आकर विवेक खोना।

सत्तू : सत्तू 'सक्तु' के नाम से प्राचीन काल में भी एक लोकप्रिय भोजन रहा है।[2] यह भोजपुरियों का तो सर्वाधिक प्रिय भोजन है। लोग सत्तू में गुड़, घी आदि भी डालकर खाते हैं। उदा०

सातू गुड़ खा तानी, लव लगलवे बानी।

(मैं) सत्तू और गुड़ खा रहा हूँ और इस प्रकार स्वार्थ-सिद्धि के लिए सम्बन्ध बनाये हुए हूँ।

प्र० स्वार्थ-सिद्धि के लिए किसी कार्य पर विशेष ध्यान देना।

थूके सातू ना सनाला।

थूक से सत्तू नहीं साना जा सकता।

अर्थात्, विना परिश्रम किये सफलता नहीं मिलती।

---

१. पाठा० अँठुली।

२. दे० पाणिनि : अष्टाध्यायी, ६।३।५६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उधिआइल सतुआ पितरन के दान ।

हवा से उड़ा हुआ सत्तू पितरों के प्रति समर्पण के रूप में स्वीकार कर लिया जाता है !

प्र० किसी कार्य में हेतुवाद उपस्थित करना ।

(उ) गृह-पात्र :

गृह-पात्र समाज के भौतिक जीवन और सौन्दर्य-बोध के परिचायक होते हैं। गृह की विविध सामग्री परिवार के सदस्य-सी होती हैं। ये अपने प्रयोक्ता के साथ स्वार्थ के अतिरिक्त ममता के सूत्र में बँधी रहती हैं। इसलिए, गृह-पात्रों के अध्ययन से समाज के बाह्य और आन्तरिक—दोनों पक्षों का चित्र स्पष्ट होता है।

व्यवहार के आधार पर गृह-पात्रों को दो वर्गों में रखा जा सकता है—(क) भोजन बनाने के काम में आनेवाले पात्र और (ख) खाद्य और पेय पदार्थ रखने के काम में आनेवाले पात्र।

(क) भोजन बनाने के काम में आनेवाले पात्र : सूप-दउरा, ये दोनों पात्र बाँस अथवा सरकण्डे की पतली कमाचियों से बनाये जाते हैं। सूप चौकोर होता है। दउरा प्रायः गोलाकार होता है। उपर्युक्त दोनों पात्र गृहस्थ की आवश्यक सामग्री हैं। सूप और दउरा-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ निम्नांकित हैं :

जे बाँस के बाँस बँसुरिया, ओही बाँस के कलसुप दउरा ।

जिस बाँस से बाँसुरी बनती है, उसी बाँस से सूप और दउरा भी।

प्र० एक स्रोत से विभिन्न रूप-रंगवाली चीजों का जन्म लेना।

बाहर देखावे तीन सेर के नेउरा, घरे कलसुप ना दउरा ।

वह बाहर तो तीन सेर का 'नेउरा' (एक आभूषण) दिखाती है, किन्तु उसके घर में सूप और दउरा (टोकरी) भी नहीं हैं।

प्र० आडम्बर पर व्यंग्य।

चलनी : चलनी की सतह में छेद बने रहते हैं, इसलिए छिद्रान्वेषियों की उपमा चलनी से दी जाती है। यथा :

चलनी दूसे सूप के जेकरा सहसर गो छेद ।

चलनी, सूप का दोष देखती है, जो स्वयं सहस्रों छेदोंवाली होती है।

सिल-बट्टा (सिलवट-लोढ़ा) : सिल और बट्टा का व्यवहार अनाज और मसाला पीसने और कूँचने के लिए किया जाता है। सिल और बट्टे में अन्योन्याश्रय-सम्बन्ध है। इसलिए, भोजपुरी भाषा में केवल सिल के लिए भी 'सिलवट' (सिल और बट्टा) का प्रयोग किया जाता है। भोजपुरी-भाषा में सिल को 'पाटी' और बट्टे को 'लोढ़ा' भी कहते हैं। सिल और बट्टा-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

ठेस लागल पहाड़ पर, फोड़ीं घर के सिलवट ।

ठेस पहाड़ पर लगी, पर (क्रोध से) फोड़ रहे हैं घर का सिल।

प्र० किसी पर का क्रोध किसी और पर उतारना।

लिख लोढ़ा, पढ़ पत्थल ।

(ये) लोढ़ा लिखते हैं और और पत्थर पढ़ते हैं।

प्र० किसी का निरा मूर्ख होना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ख) खाद्य-सामग्री और पेय पदार्थ रखने के काम में आनेवाले पात्र : तसला : यह एक गोलाकार पीतल या ताँबे का पात्र होता है। यह आकार में छोटा और बड़ा दोनों प्रकार का होता है। छोटे तसले को भोजनादि बनाने के लिए यात्रादि में साथ रख लिया जाता है। तसले पर आधारित एक प्रतीकात्मक लोकोक्ति इस प्रकार है :

तसलवा तोर कि मोर।

यह तसला तुम्हारा है कि मेरा ?[1]

प्र० दूसरे की सम्पत्ति हड़पने के इरादे से कोई अनुकूल शर्त्त रखना।

लोटा : यह काँसा या पीतल का छोटा बरतन है। छोटा होने के कारण यह बहुत उपयोगी होता है। लोटा-सम्बन्धी एक लोकोक्ति है :

लोटा बेटा बहरे चमकेला।

लोटा और बेटा—दोनों बाहर ही चमकते हैं।

कठवत : यह एक काठ का परातनुमा बरतन होता है। यह चौकोर या गोलाकार होता है। इसके किनारे खड़े होते हैं। यह मूल्यवान् पात्र नहीं होता। यथा :

धन मधे कठवत, वंश मधे फूफू।

इन्हें धन के नाम पर कठौता है और वंश के नाम पर बुआ।

प्र० किसी की उपलब्धि का नगण्य होना।

तुम्बा : यह कद्दू (लौकी) के फल से बनाया जाता है। यह पानी आदि रखने या पानी पीने के काम में आता है। इसे साधु या भिक्षाटन करनेवाले अधिक रखते हैं। यथा :

धर्मो छूटल, तुम्मो फूटल।

धर्म भी छूटा और तुम्बा भी फूटा।

प्र० आचार-विचार के साथ धन की भी हानि होना।

कुप्पा : यह चमड़े का पात्र है। इसका व्यवहार तेल या घी रखने के लिए किया जाता रहा है।[2] अब इसका व्यवहार नहीं के बराबर होता है। पहले तेली आदि इसे प्रयोग में लाते थे। यथा :

तेलिन रुसली, तऽ कुप्पा से बइठली; बोललीं लेबऽ लबरू तेल।

तेलिन रूठ गई, तो कुप्पा लेकर बैठ गई और बोली—हे लबरे ! तेल लोगे ?

प्र० क्रोध में आकर अपना ही विनाश करना।

साहु बटोरे कौड़ी कौड़ी, राम बटोरस कुप्पा।

साहु कौड़ी-कौड़ी करके (कौड़ी की वजन के बराबर) घी या तेल बटोरता है, किन्तु राम (ईश्वर) उसे कुप्पा में बटोर लेते हैं।

प्र० एकत्र की हुई वस्तु का एक बार में ही नष्ट होना।

गोन : यह दोहरे बोरे का प्राचीन रूप है। गोन अनाज रखने अथवा ढोने के काम में

---

१. यह लोकोक्ति भोजपुरी लोगों की हठधर्मिता के सम्बन्ध में दुहराई जाती है। इस लोकोक्ति पर ग्रियर्सन की टिप्पणी के लिए दे० 'बिहार पिजेण्ट लाइफ', पृ० ११६।

२. दे० पाणिनि : अष्टाध्यायी, ५।३।८६, काशिका।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आती थी। पहले इसे ऊन या चमड़े से तैयार किया जाता था।[1] अब इसका बहुत कम प्रयोग होता है। इसका नाम अब बोलचाल में ही सुरक्षित है। गोन-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

थाकल बैल गोन भइल भारी, अबका लदबऽ ए बैयपारी।

हे व्यापारी ! बैल थक गये, इसलिए उन्हें गोन भारी लग रही है। अतः, अब क्या उनपर लादते हो ?

प्र० नष्टप्राय वस्तु से लाभ उठाने की कोशिश करना।

बैल ना कूदे, कूदे गोन; ई तमाशा देखे कौन ?

बैल के बदले उसकी पीठ पर लदी हुई गोन कूद रही है—यह तमाशा कौन देखे ?

प्र० झगड़े आदि में असम्बद्ध व्यक्ति का विरोध करना।

करवा : यह लोटानुमा मिट्टी का बरतन होता है। इसमें टोंटी लगी रहती है। एक लोकोक्ति में कहा गया है :

जे करवा में रहे, से टोंटी से बहे।

जो करवा में था, वह टोंटी होकर बह रहा है।

अर्थात्, जो मन में होता है, वह मुँह से निकल जाता है।

प्र० अनायास मन की बात का मुँह से निकलना।

चुक्कड़ : यह एक छोटा पात्र है। इसके छोटे आकार की ओर संकेत करनेवाली एक लोकोक्ति इस प्रकार है :

हाथी भुलाली तऽ चूका में खोजाली।

हाथी खोता है, तो लोग उसे चुक्कड़ में भी खोजते हैं !

प्र० सन्देहावस्था में विवेक खोना।

पतुकी : यह एक छोटा और गोलाकार बरतन है। इसमें दूध, दही आदि रखे जाते हैं। इसका पेंदा पतला होता है। इसलिए, इसमें उबाली जानेवाली चीजों में शीघ्र ही उफान आ जाता है। इससे छिछले स्वभाववाले व्यक्ति की उपमा दी जाती है। यथा :

भारी रहे भार से पतुकी फफाय चले।

भरती बरतन गम्भीर रहते हैं, किन्तु पतुकी शीघ्र ही छलकने लगती है।

प्र० क्षुद्र व्यक्ति का शीघ्र ही क्रुद्ध होना या किंचित् उपलब्धि पर ही इतराना।

मेटा, घूँचा, दीप और घाँटी : ये सभी मिट्टी के बने पात्र होते हैं। 'मेटा' घड़ा-सा होता है। 'घूँचा' दूध दुहने के काम में आनेवाला छोटा बरतन है। सँकरे गलेवाले घड़े को 'घाँटी' कहते हैं। उपर्युक्त पात्रों का उल्लेख करनेवाली लोकोक्ति इस प्रकार है :

---

१. "...वैदिक साहित्य में गोण शब्द नहीं मिलता, किन्तु दीघनिकाय के ब्रह्मजालसुत्त में गोणक शब्द आया है, जो लम्बे बालोंवाले बकरों के बालों से बना मोटा ऊनी वस्त्र होता था। डॉ० मोतीचन्द्र का अनुमान है कि यह गोणक शब्द 'कौनक' से सम्बद्ध है, जो ऊन का बनता था और जिसे प्राचीन सुमेर और अक्कद देश के लोग पहनते थे (मार्शल सिन्धु-उपत्यका की सभ्यता, पृ० १३३, ३४२; फलक ९५, चित्र १०)। हो सकता है कि प्रापाणिनीय काल में कभी यह शब्द पश्चिमी व्यापारियों के साथ इस देश में आ गया हो।"—डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल : पाणिनिकालीन भारतवर्ष, पृ० १४९।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेटा, घूँचा, दियरी, घाँटी, सबके जरि बाटे कोंहरे के माटी ।

मेटा, घूँचा, दीप और घाँटी—सबकी जड़ कुम्हार की मिट्टी है, अर्थात् ये सभी मिट्टी से बनते हैं ।

सनहक : यह एक बड़ी तश्तरी है । मुसलमान इसका अधिक प्रयोग करते हैं । यह एक साधारण बरतन है । यथा :

कमानी ना धमानी, सनहक ले फरियानी ।

इनकी कमाई-धमाई तो कुछ है नहीं, फिर भी वे सनहक तक का भी बँटवारा करना चाहते हैं ।

प्र० आलसी व्यक्ति का लोभ करना ।

हाँड़ी : यह एक बड़ा बरतन है । यह किसी गृहस्थ की प्राथमिक आवश्यकता की चीज होती है । हाँड़ी का उल्लेख निम्नांकित लोकोक्ति में हुआ है :

हाँड़ी में खुदियो ना, चलीं समधिन जेंवे ।

हाँड़ी में 'खुद्दी' (चावल के कण) भी नहीं है और समधिन को ही खाने का निमन्त्रण देती है ।

प्र० डींग हाँकनेवालों पर व्यंग्य ।

१. ५. जात-पाँत-सम्बन्धी

भारतीय समाज के संघटन और विकास में जाति-प्रथा का विशिष्ट महत्त्व है । 'जाति' ने सामाजिक जीवन को कई प्रकार से प्रभावित किया है । यह प्रथा समाज को कई वर्गों में बाँटती है, समाज में ऊँच-नीच का भाव पैदा करती है, सामाजिक आचार-विचार और खान-पान पर प्रतिबन्ध लगाती है, किसी भी व्यक्ति को जन्म के आधार पर विभिन्न सुविधाएँ प्राप्त करने का अवसर देती है और यौन-सम्बन्ध को नियमित करती है ।

प्रायः सभी भारतीय ग्रामों और नगरों में कई जातियाँ एक साथ जीवन बसर करती हैं । एक जाति को दूसरी जाति के समीप आने का विपुल अवसर प्राप्त होता है । अतः, सभी जातियों को एक दूसरे की जातिगत विशिष्टता या उपलब्धि और अभाव को भी समझने-बूझने का अवसर मिलता है । लोकोक्तियों में समुदाय के जात-पाँत-सम्बन्धी ऐसे ही अनुभव संचित रहते हैं । कहीं-कहीं जात-पाँत-सम्बन्धी भावनाओं में किसी व्यक्ति या जाति-विशेष का प्रतिक्रियात्मक वक्तव्य या पूर्वाग्रह का भी आभास मिलता है । किन्तु, सामान्यतः इनमें लोक-समुदाय की जाति-विषयक धारणाओं और विभिन्न जातियों के यथार्थ जीवन, विशिष्ट आचार-विचार और रहन-सहन का प्रत्यक्ष परिचय मिलता है । अतः, लोकोक्तियों के आधार पर भारतीय जाति-व्यवस्था का अध्ययन उपादेय है ।[1]

लोकोक्तियों के आधार पर जातियों का अध्ययन वर्णानुक्रम से प्रस्तुत किया जा रहा है ।

अहीर : यह एक खेतिहर और गोपालक जाति है । भोजपुरी क्षेत्र में इस जाति की संख्या अधिक है । भारतवर्ष के राजनीतिक इतिहास में यह एक बलाढ्य और दुर्द्धर्ष जाति के

---

१. प्रसिद्ध समाज-विज्ञानवेत्ता रिजले और क्रूक ने भी भारतीय जाति-व्यवस्था के अध्ययन के प्रसंग में जाति-सम्बन्धी लोकोक्तियों का उल्लेख किया है । दे० रिजले : पिपुल्स ऑव इण्डिया; डब्ल्यू क्रूक : नेटिव्स ऑव नॉर्दर्न इण्डिया ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रूप में उल्लिखित है। इस जाति के कुछ विशिष्ट संस्कार हैं। इस जाति के अधिकांश सदस्य पशु-चारण और कृषि से सम्बद्ध रहते हैं। फलस्वरूप, इन्हें आधुनिकतम आचार-विचार से अनभिज्ञ रहना पड़ता है। इनकी सरलता और अज्ञानता कभी-कभी हास्यास्पद भी हो जाती है। यथा :

अहीर बुझावे से ही मरद।
मर्द वही है, जो अहीर को तथ्य का बोध करा दे।
एक तऽ अहीर, दोसरे जवान, तीसरे हो गइल नौ मन धान।
एक तो अहीर, दूसरे वह जवान हो और तीसरे उसे नौ मन धान (पैदा) हुआ हो ; तब तो वह बल और शान का अवश्य ही प्रदर्शन करेगा।
कतनो अहीरा होय सयाना, लोरिक छाड़ि ना गावहि आना।
अहीर कितना भी सयाना (चालाक) हो, वह 'लोरिक' [1] छोड़कर और कुछ नहीं गायेगा।

जब तक जिये देवसिया, अहीर न छाजे गाय।
जबतक 'देवसिया' [2] जीवित है, तबतक अहीर गौओं से कुछ नहीं प्राप्त कर सकता।
साँवाँ खेती अहीर मीत, कबो कबो होखे हीत।
'साँवाँ' की खेती और मित्र के रूप में अहीर, ये दोनों कभी-कभी अपने होते हैं।

कलवार : यह एक व्यापारी जाति है।[3] कलवार शराब बनाकर उसके बेचने का व्यापार करते हैं। ये अपने निम्न व्यवसाय के कारण समाज में ऊँची निगाह से नहीं देखे जाते। परन्तु, व्यापारी-वर्ग के होने से ये सुखी और सम्पन्न हैं। यथा :

कलवार के लड़का खइला बिना मुअत रहे, तऽ लोग कहल कि पी के मातल बा।
कलवार का लड़का भूख से मर रहा था, तो लोगों ने कहा कि शराब पीकर मत्त है।
प्र० पूर्वाग्रह के कारण किसी की दयनीय स्थिति की उपेक्षा करना।

---

१. 'लोरिक' अहीरों की जातीय लोकगाथा है। लोरिक अहीर जाति का एक वीर राजकुमार था। यह गौरा के किले में निवास करता था। एक बार लोरिक, चेरुओं के शक्तिशाली राजा मंझारा के पुत्र देवोसी द्वारा युद्ध में पराजित होकर, वीरगति को प्राप्त हुआ। अहीर लोग, अपने पूर्वज लोरिक के पराक्रम और साहसपूर्ण जीवन पर आधारित लोरिक-गाथा को बड़े विभोर होकर गाते हैं। लोरिक के स्मरण से अहीर लोग ओज और उत्साह का अनुभव करते हैं। लोरिक-सम्बन्धी लोकगाथा के विस्तृत विवेचन के लिए दे० एम्० जे० सो० नेसफिल्ड : प्रायनीयर, १३ मार्च, १८८८ ; डॉ० सत्यव्रत सिन्हा : भोजपुरी लोकगाथा, पृ० ७२—९६ ; डॉ० विश्वनाथ प्रसाद (सम्पादक) : लोरिकायन : हिन्दी-विद्यापीठ-प्रकाशन ; आगरा-विश्वविद्यालय।

२. किंवदन्ती है कि अहीरों के वीर नायक राजकुमार लोरिक को चेरुओं के राजकुमार देवसी या देवोसी ने एक युद्ध में पराजित कर दिया था। तब से अहीरों और देवसियों के मध्य द्वेष चला आ रहा है। कहते हैं कि मुसहर इन देवसियों के वर्त्तमान वंशज हैं। विशेष विवरण के लिए दे० रिपोर्ट्स् ऑव आरक्योलॉजिकल सर्वे ऑव इण्डिया, जिल्द ८।

३. डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी का कहना है कि 'इनके (कलवारों के) पूर्वज राजपूत सैनिक थे और सेना के पिछले हिस्से में रहकर 'कल्यवर्त्त' या 'कलेऊ' की रक्षा करते थे। अब ये तराजू पकड़कर बनिया बन गये हैं।'—अशोक के फूल : मेरी जन्मभूमि।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कायस्थ : ये प्राचीन काल में शासन-कार्य से सम्बद्ध एक लिखने-पढ़नेवाले वर्ग थे।[१] मुगल-काल और ब्रिटिश-काल में भी ये छोटे-बड़े राजकीय पदों पर आसीन रहे। आज भी कायस्थ भारतवर्ष की शिक्षित जातियों में एक है। सदा से राज-काज और राजदरबारों से सम्बद्ध रहने के कारण ये वाक्पटुता, लोक-व्यवहार और लिखा-पढ़ी में सिद्ध रहे हैं। भोजपुरी क्षेत्र के गाँवों में कायस्थ को 'लाला' भी कहा जाता है। यथा :

कायथ के कागदे में सूझेला।

कायस्थ को कागज में ही सूझता है।

लेखे जोखे थाहे लड़िका बुड़लन काहे।

लालाजी ने जल की गहराई को आँका, मापा, फिर भी उनका लड़का क्यों डूबा?

लेखन-कार्य से सम्बद्ध रहने के कारण कायस्थ स्वभावतः हिसाबी-किताबी हो जाते हैं। उपर्युक्त लोकोक्ति कायस्थों की इसी प्रवृत्ति की ओर संकेत करती है।

एक कलम घसके तऽ बावन गाँव खसके।

जब लालाजी की एक कलम चल जाती है, तब बावन गाँवों का हिसाब-किताब इधर से उधर हो जाता है।

कायथ के बेटा पढ़ा भला या मरा भला।

कायस्थ का लड़का पढ़ा-लिखा है, तब तो वह ठीक है; नहीं तो वह बेकार है।

लड्डू लड़े झिल्ली झरे, कायथ बेचारे के पेट भरे।

लड्डू के पारस्परिक युद्ध में, बूँदियाँ (झिल्ली) झरती हैं और इस प्रकार कायस्थ बेचारे की उदर-पूर्त्ति होती है।

यहाँ 'लड्डू' धनी व्यक्तियों का संकेतक है। कायस्थ दो व्यक्तियों को लड़ाने-भिड़ाने में बड़े निपुण होते हैं। इससे इन्हें लिखा-पढ़ी के काम हाथ लगते हैं।

नगद कायथ भूत, उधार कायथ देवता।

कायस्थ नकद खरीदने में भूत-सा व्यवहार करता है, पर उधार खरीदने में देवता-सा।

पर घर नाचे तीन— कायथ बैद दलाल।

दूसरों के यहाँ तीन वर्ग के लोग नाचते हैं—कायस्थ, वैद्य और दलाल (अर्थात्, ये तीनों जातियाँ बड़ी खुशामदी होती हैं)।

कायथ कउवा रोर, जाति जाति बटोर।

कायस्थ, कौआ और स्यार, ये स्वजाति को एकत्र करते हैं।[२]

---

१. याज्ञवल्क्यस्मृति ने 'कायस्थ' को 'काय (शासन) में स्थित' कहकर विग्रहित किया है। दे० याज्ञवल्क्यस्मृति, १। ३३६ ; डब्ल्यू क्रूक : नेटिव्स ऑव नार्दर्न इण्डिया, पृ० ११०।

२. "उशना ने कायस्थों को एक जाति माना है और इसके नाम की एक विचित्र व्युत्पत्ति उपस्थित की है; यथा काक (कौआ) के 'का', यम के 'य' एवं स्थपति के 'स्थ' शब्दों से कायस्थ बना है; 'काक', 'यम' एवं 'स्थपति' शब्द क्रम से चंचलता, क्रूरता एवं लूट के परिचायक हैं :

"काकाल्लौल्यं यमात् क्रौर्यं स्थपतेरथ कुन्तनम्।
आदक्षराणि संगृह्य कायस्थ इति निर्दिशेत्।।" (उशना, ३५)

— डॉ० पाण्डुरङ्ग वामन काणे : धर्मशास्त्र का इतिहास, प्रथम भाग; पृ० १२८, हिन्दी समिति-ग्रन्थमाला, ७४, लखनऊ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बजर पड़े कहवाँ, तीन कायथ जहवाँ ।[१]

(प्रश्न) वज्र कहाँ गिरता है, (उत्तर) जहाँ तीन कायस्थ एकत्र होते हैं। (अर्थात्, एक से अधिक कायस्थों के इकट्ठे होने पर कोई अशुभ घटना घटती है)।

कुम्हार : यह एक शिल्पी जाति है। ये जनपद के घरेलू और कृषि-सम्बन्धी कार्यों के लिए मिट्टी के घड़े, खपड़े, दीपक और पशुओं के चारे रखने के लिए नाद बनाते हैं। इस प्रकार, यह एक कामकाजू जाति है। उदा०

कोंहार के धुईपाख, दोसरा के जीव राख ।

कुम्हार के आँवे से कितने जीवों की रक्षा होती है।

घड़े कोंहार, भरे संसार ।

घड़े से ही कुम्हार संसार को भर देता है, अर्थात् उपकृत करता है।

कुरमी : कुरमी एक खेतिहर जाति है। इस जाति की आर्थिक स्थिति बुरी नहीं है। भोजपुरी लोकोक्तियों में कुरमी एक परिश्रमी और स्वार्थी जाति के रूप में वर्णित है। यथा :

कुरमी कोंहार, हुचुक-हुचुक के कुदरा पार ।

कुरमी और कहार झुक-झुककर कुदाल चलाते हैं।

भल जाति कुरमिन के खुरपा हाथ, आपन खेत निरावे पिय के साथ ।

कुरमिन की भली जाति है, इसलिए कि उसे सदा हाथ में खुरपा लेकर पति के साथ खेत निराने का मौका मिलता है।

बनले मल्ल बिगरले कुरमी ।

अगर बने हुए हैं (धन-सम्पदावाले हैं), तब तो मल्ल उपाधि से पुकारे जायेंगे,[२] पर बिगड़ गये हैं (गरीब हो गये हैं), तो कुरमी कहकर पुकारे जायेंगे।

पत्थर पर जब जामे गुरमी तबहुँ न होखे आपन कुरमी ।

पत्थर पर 'गुरमी' (ककरी के वंश की एक लता) का जन्म लेना सम्भव हो भी जाय, फिर भी कुरमी का अपना होना असम्भव है।

कोयरी : यह एक कृषक-जाति है। कोयरी पास की एक इंच तक की भूमि को भी कोड़-खानकर हरा-भरा कर देते हैं। फिर भी, इस जाति के पास अधिक भूमि नहीं रहती है। ये केवल दो-चार बीघे भूमि में साग-सब्जी लगाकर जीविका चलाते हैं। कोयरी के सम्बन्ध में दो प्रचलित लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

कोइरी अहीर खेती करे, अउर करे बरिआई ।

कोइरी और अहीर सही मानी में खेती करते हैं और अन्य लोग (जाति या वर्ग) जबरदस्ती करते हैं।

---

१. तु० "चाटतस्करदुर्वृत्तमहासाहसकारिभिः ।
पीड्यमानाः प्रजाः रक्षेत् कायस्थैश्च विशेषतः ॥"
राजा को चाट, तस्कर, दुर्वृत्त, महासाहसिक और विशेषतः कायस्थों से पीडित प्रजा की रक्षा करनी चाहिए।—याज्ञवल्क्य, मिताक्षरा, १।३३६।

२. इस सम्बन्ध में दे० राहुल सांकृत्यायन : पुरातत्त्व-निबन्धावली, पृ० १०७,२५३ ; डॉ० राजबली पाण्डेय : गोरखपुर जनपद और उसकी क्षत्रिय-जातियों का इतिहास, पृ० १४६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोइरी के लरिका जनमें के हीन, हाथ में खुरपा मोथा बीन ।

कोइरी का लड़का जन्म से ही हीन होता है। वह आरम्भ से हाथ में खुरपा लेकर मोथे (एक घास) की निराई करता है।

गोंड़ : भोजपुरी क्षेत्र में गोंड़ नाम की एक जाति बसती है। ये मध्यप्रदेश की प्रसिद्ध आदिवासी जाति गोंड़ से भिन्न है। कुछ लोगों ने भोजपुरी क्षेत्र के गोड़ों का सम्बन्ध मध्यप्रदेश के गोंड़ से जोड़ा है, जो भ्रमपूर्ण है।[1]

भोजपुरी क्षेत्र में बसनेवाले गोड़ों की रहन-सहन, आचार-विचार और पर्व-त्यौहार विशिष्ट प्रकार के हैं। ये शरीर से बड़े हट्टे-कट्टे होते हैं। प्रायः मेहनत-मजदूरी करके ये अपना पेट पालते हैं। ज्यादातर ये फसल काटने, पानी भरने और डोली ढोने का काम करते हैं। गोड़ों का धार्मिक और सामाजिक जीवन टोटकों और उत्सवों से भरा हुआ है। इनके अपने खास किस्म के गीत होते हैं। इन गीतों में खूब व्यंग्य-विनोद रहता है। इन गीतों की दूसरी विशेषता यह होती है कि ये एक साथ कई ग्रामीण जीवन के प्रसंगों को बद्ध किये रहते हैं।[2] इसलिए गोंड़ों के गीत का अन्त नहीं होता, ऐसा कहा जाता है। उदा०

ओझऊ भाँज, गोंड़ऊ गीति के अन्त ना हऽ ।

ओझा के मन्त्र-तन्त्र और गोंड़ों के गीतों का कोई अन्त नहीं है।

गोंड़ के साखी दबिला ।

गोंड़ का साक्षी है—दबिला।

प्र० साक्षी के लिए मनोनुकूल और सहज सुलभ प्रमाण उपस्थित करना या किसी परिचित और प्रसिद्ध संकेत से किसी व्यक्ति या वस्तु की जानकारी होना।

चमार : समाज के आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन में इनकी महत्त्वपूर्ण देन है। ये कृषि-कार्य के लिए अनेक उपकरणों का निर्माण करते हैं। विवाहादि के अवसरों पर ये ढोल, तुरही आदि वाद्यों से समाज का मनोरंजन करते हैं। इन्हें जनपदों में पारिश्रमिक के रूप में मरे हुए पशु, अन्न और नेग-दस्तूर मिलते हैं। इस जाति के कुछेक पक्षों पर प्रकाश डालने-वाली लोकोक्तियाँ ये हैं :

चमार के मनवले डाँगर ना मरी ।

चमार के मनाने से बैल नहीं मरेंगे।[3]

प्र० भक्षक या भोक्ता के इच्छानुसार वस्तु का विनाश नहीं होना।

---

१. "There is no apparent connection between these Gonds and the aboriginal tribe of the same name who belong to the hill country of central India....."—H. R. Nevill; District Gazeteer of the U. P. of Agra and Oudh, Banaras district, vol. xxiv, Allahabad, 1907.

२. उदाहरण के लिए एक गोंड़ों का गीत दिया जा रहा है :

'हलबल हलबल धुनिया धूने, सूत काते हलुआई।
फुफती तरके झुलनी झूले, बुटबलि के कामाई।
अरे बुटबलि के कामाई।'

—भोजपुरी ग्राम-गीत : डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय : भाग १, पृ० ३४९-५० से उद्धृत।

३. गाँवों में ऐसा अन्धविश्वास है कि चमार अपने इष्ट की पूजा करके पशुओं में बीमारी फैलाते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भादो मइँसा चइत चमार ।[1]

भादों में भैंसा और चैत में चमार प्रसन्न रहते हैं ।

जुलाहा : भोजपुरी क्षेत्र में जुलाहे प्रायः हर जगह बसे हुए हैं । ये कपड़े बुनते हैं और बुने कपड़े बेचते भी हैं । जुलाहे बड़े सरल और कम पढ़े-लिखे होते हैं । इनके सरल व्यवहार और आधुनिक रहन-सहन-सम्बन्धी अज्ञानता ने लोकोक्ति और लोक-कथाओं में इन्हें मूर्खता के पर्याय और उदाहरण के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया है ।[2]

आठ जोलाहा नौ हुक्का, तबनो पर थुक्कम थुक्का ।

आठ जुलाहों के मध्य हुक्कों की संख्या नौ है, फिर भी वे हुक्के के लिए थुक्कम-थुक्का करते हैं ।

इनके इस झगड़े का कारण सबसे पुराना हुक्का होता है, जो सबको प्यारा होता है !

सरबस हारों तऽ हारों गज भर ना फारों ।

(खरीदनेवाले के प्रति जुलाहे का कथन) सब हार जाऊँगा, तो हार जाऊँगा, पर कपड़े के थान से एक गज फाड़कर नहीं दूँगा ।

प्र० थोड़े के लिए पूरे का नुकसान करना ।

पावा हर का हुमना खेती करब अब ।

(जुलाहे का कथन) मुझे हलका हुमना मिल गया, अब खेती में संलग्न हो जाऊँगा ।

प्र० किंचित् साधन से ही साध्य की समाप्ति की कल्पना करना ।

करिगह छाड़ तमाशा जाए नाहक चोट जोलाहा खाए ।

एक जुलाहा करघे पर कपड़ा बुनना छोड़ तमाशा देखने गया, किन्तु उस तमाशे में उसे अकारण चोट खानी पड़ी ।

गगरी अनाज भइल जोलहन के राज भइल ।

जुलाहे को एक घड़ा अनाज हो जाता है, तो वे अपने को राजा समझने लगते हैं !

जोलहा के आई-पाई, चमरा के बिहान ।

जुलाहा अगर कपड़ा माँगने पर 'आई-पाई' कहे (शीघ्र ही कपड़ा देने का आश्वासन दे) और चमार दूसरे दिन जूता बनाकर देने को कहे, तो भी उनकी बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिए ।

डोम : इस जाति को जातिविज्ञान-वेताओं ने घुमक्कड़ और अनार्य जाति से उद्भूत एक शाखा के रूप में स्वीकार किया है ।[3] बिहार के पश्चिमी और उत्तरप्रदेश के पूर्वी हिस्से में मगहिया डोम पाये जाते हैं । डोम श्मशान घाट पर दाह-संस्कार के समय अग्नि देते हैं । साथ ही, ये सूप, डलिया और अन्य ग्रामीण पात्र बनाकर बेचते हैं । उदा०

---

१ भादों में भैंसा को खाने के लिए खूब घास या चारा मिलता है । चैत में चमारों के प्रसन्न होने के सामान्यतः ये कारण हैं : चैत में रब्बी फसल का होना, पीने के लिए ताड़ी मिलना और फागुन में होनेवाले विवाह आदि से नेग मिलना ।

२. जुलाहों की मूर्खता-सम्बन्धी कथात्मक प्रसंगों के लिए दे० जार्ज ग्रियर्सन : 'बिहार पिजेण्ट लाइफ' पृ० ६६-७० ।

३. दे० डब्ल्यू० क्रूक० : दि कास्टस् ऑव दि एनस्, पृ० १०१-१०२ ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मरला के पाछे डोम राजा ।

(किसी के) मरने पर (उसका) राजा डोम भी हो जाता है ।[1]

प्र० मृतक या अशक्तों की धन-सम्पदा पर अधिकार जताना ।

डोम हारे अघोरी से ।

डोम अघोरी से हारता है ।

डोम के जनते धोबी नीच ।

डोमों के अनुसार धोबी सबसे नीच कर्म करनेवाले हैं। इसीलिए, डोम धोबी के हाथ का छुआ भोजनादि ग्रहण नहीं करते हैं ।

तेली : ये कोल्हू से तेल निकालते हैं। ये छोटा-मोटा व्यापार भी करते हैं। इसलिए, इनकी आर्थिक स्थिति पेशेवर जातियों में अपेक्षाकृत अच्छी है । उदा०

सरलो तेली तऽ एगो अधेली ।

सड़ा हुआ तेली होगा, तो भी उसके पास एक अधेली (कुछ सम्पत्ति) अवश्य होगी।

तीन के तीसी तेरह लागलि, तब तेलनियाँ पेरे लागलि ।

तीसी का भाव तीन से तेरह रुपये प्रति मन जब हो गया, तब तेलिन ने उससे तेल निकालना शुरू किया ।

प्र० स्वार्थ-सिद्धि के लिए किसी कार्य में जान-बूझकर देर करना ।

माघ पूस ठेली, तब ना हाथ तेली ।

पूस और माघ के गुजरने पर तेली हाथ नहीं आता ।

इसका कारण यह है कि पूस और माघ तक तेलहन तैयार हो जाता है। अतः, किसान इन महीनों में तेलहन बेचने के लिए तेली की खुशामद करते हैं ।

दरजी : यह एक पेशेवर वर्ग है। इसने अबतक जाति का बन्धन पूर्णतः स्वीकार नहीं किया है। सभी जाति के लोग दरजीगिरी करते हैं। किन्तु, दरजियों में मुसलमानों की संख्या अधिक है। उदा०

दरजी के पुत्ता जब तक जीता तब तक सीता ।

दरजी का लड़का सारा जीवन सिलाई के काम में ही बिताता है ।

इसका कारण यह है कि दूसरे किसी काम में न तो उसकी दिलचस्पी होती है और न इस काम से इतनी आमदनी होती है कि इससे पूँजी बनाकर कोई दूसरा रोजगार कर ले ।

दरजी के सूई कब्बो तास में, कब्बो टाट में ।

दरजी की सूई कभी रेशम में और कभी टाट में चलती है ।

प्र० हमेशा एक स्थिति में किसी का नहीं रहना ।

दुसाध : दुसाध[2] एक दुर्द्धर्ष जाति है। अध्येताओं ने इसे द्रविड-परिवार से उत्पन्न

---

१. लोकोक्ति भले ही डोम को मृतकों का राजा कहे। किन्तु, इतिहास यह सिद्ध करता है कि 'डोम किसी जमाने में प्रबल पराक्रमी राज्यों के अधीश्वर थे। अधीश्वर-वंचित होकर ये दुर्दान्त हो गये।
—डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी : अशोक के फूल, पृ० ३८।

२. "दुसाध अपने को दुःशासन-वंशीय मानते हैं। किन्तु, डॉ० भगवतशरण उपाध्याय के अनुसार ये गुप्त-नरपतियों के लेखों में उल्लिखित दुःसाध्य साधन करनेवाली जाति के वर्त्तमान रूप हैं।" डॉ० उपाध्याय के मत का उल्लेख डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी ने किया है।—अशोक के फूल, पृ० ३८-३९।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माना है। ये अपने पुराने संस्कार छोड़ते जा रहे हैं। इनके अभीष्ट देवताओं या कुलनायकों में 'राहू,' 'गौरैइया' और 'सालेज' प्रमुख हैं। भोजपुरी क्षेत्र में दुसाध प्रायः चौकीदारी और खेती-मजदूरी करते हैं। उदा०

दुसाध के खोभाड़ि, कहीं गाँव बसेला ?

दुसाध की झोपड़ियों के आसपास कहीं गाँव बसता है (घर बनाया जाता है) ?

दुसाध जात खाये नीचे, ताके ऊँचे।

दुसाध जाति (दूसरों के यहाँ) नीचे बैठकर खाती है, किन्तु उसकी दृष्टि घर की ऊँची जगहों पर दौड़ती रहती है (अर्थात्, दुसाध चोरी करने के लिए दूसरों के घरों का भेद लेते रहते हैं)।[1]

धोबी : धोबी एक परिश्रमी जाति है। ये समय पर कपड़ा नहीं देने के लिए बड़े बदनाम हैं। यथा :

धोबी पर धोबी बसे तब कपड़ा पर साबुन पड़े।

धोबी के घर के पास जब दूसरा धोबी बसता है, तब ग्राहकों के कपड़े ठीक से और शीघ्र धुलते हैं।

धोबी के बेटी के, ना घरे सुख ना घाटे सुख।

धोबी की लड़की को न घर में और न घाट में ही सुख मिलता है।

प्र० किसी भी परिस्थिति में किसी को सुख न मिलना।

नाई : इनका, समाज के प्रसाधन, धार्मिक और सांस्कारिक कृत्यों में विशेष महत्त्व है। समाज के हर वर्ग से इनका सम्पर्क रहता है। इसलिए, इन्हें वाक्पटुता और चतुराई सहज ही सुलभ हो जाती है। उदा०

चिरई में कउवा, मनई में नउवा।[2]

पक्षियों में कौआ और मनुष्यों में नाई धूर्त्त होते हैं।

नउवा केवट चीन्हे जात बड़ लोगनि के चिक्कन बात।

नाई और केवट विभिन्न जातियों की प्रकृति पहचानते हैं। ये बड़े लोगों के साथ चिकनी-चुपड़ी बातें करके मनोनुकूल धन पाते हैं।

नउवा के बरियात सब ठाकुरे ठाकुर।

नाई की बरात में सभी ठाकुर हैं (अर्थात्, सभी अपने को श्रेष्ठ समझते हैं)।

इस लोकोक्ति का एक और अर्थ इस प्रकार लगाया जाता है : नाई की बरात में तो सभी ठाकुर हैं, अर्थात् सभी बराती नाई का काम कर सकते हैं।

पंसारी : जनपदों में पंसारी हाट-बाजार या गाँवों में घूम-घूमकर हल्दी, मिर्च, मसाले और जड़ी-बूटियाँ बेचते हैं। इनसे सामान खरीदते समय ग्रामीण बहुत चौकन्ने रहते हैं। यह इसलिए कि इनसे खरीद-बिक्री करते समय ठगी की बड़ी सम्भावना रहती है। उदा०

---

१. दुसाध ही नहीं, दुसाधों के देवता भी चोर हैं। बंगाल में दुसाधों के दो देवताओं के नाम हैं—गौरैइया और चुहार। आज भी गाँवों में लोग 'चुहार' को चोर-बदमाश के पर्याय के रूप में प्रयुक्त करते हैं। इस सम्बन्ध में देखिए—इ० आर० इ०, जिल्द ४, पृ० ८५३।

२. तु० 'नराणां नापितो धूर्त्तः पक्षिणां चैव वायसः।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाघ ना देखल देखल बिलारि; ठग न देखल देखल पन्सारी ।

बाघ नहीं देखा, बिल्ली देखी और ठग नहीं देखा, पंसारी देख लिया ।

बैद पन्सारी आधे आध ।

वैद्य और पंसारी ओषधि-व्यापार में बराबर मुनाफे के हकदार होते हैं ।

बनिया : यह जाति वाणिज्य, कृषि और उद्योग से सम्बद्ध वैश्य नाम की पुरानी जाति की एक शाखा हैं । व्यापारी होने के कारण इनका मितव्ययी, व्यवहार-कुशल और मोल-तोल में घाघ होना स्वाभाविक है । लोकोक्तियों की दुनिया में ये अपनी कंजूसी, चालाकी और दब्बूपन के लिए प्रसिद्ध हैं । उदा०

बनियाँ के खुशी भइल दमड़ी के दान करलस ।

बनिया प्रसन्न होता है, तो दमड़ी का दान करता है ।

बनियाँ के जीव धनियाँ बरोबरि ।[1]

बनिया का हृदय धनिया के बराबर होता है (अर्थात्, बनिया डरपोक होता है) ।

माँगे बनियाँ गुड़ न दे, मुँह मलला पर भेली दे ।

माँगने से बनिया गुड़ नहीं देता है, किन्तु उसका मुँह मल दो (हाथा-पाई करो), तो वह भेली दे देगा ।

कुछ हाथ के सफाई, कुछ डण्डी के फेर; दोसरा के तीन पाव, बनिया के सेर ।

कुछ हाथ की सफाई से और कुछ डण्डी के फेर से दूसरों के तीन पाव की तौल को बनिया एक सेर बना देता है ।

जान मारे बनियाँ, अनजान मारे ठग ।

बनिया परिचित ग्राहकों को मारता (ठगता) है और ठग अनजान को ।

बनियाँ दे ना पूरे तउल ।

बनिया पूरी तौल नहीं देता है ।

ब्राह्मण : भोजपुरी क्षेत्र में सरयूपारीण, कान्यकुब्ज, सारस्वत और शाकद्वीपीय ब्राह्मणों की संख्या अधिक है । लोकोक्तियों की दुनिया में ब्राह्मण लोभी पुरोहित, भोजनभट्ट और धर्म-कर्म के प्रति अति आग्रही के रूप में वर्णित है । यथा :

जे पण्डित के पतरा, से पण्डिताइन के अँचरा ।

पण्डित के पंचांग में जितना माहात्म्य है, उतना ही पण्डिताइन के आँचल में (अर्थात्, आशीर्वाद में) ।

बराह्मन बचन परमान ।

ब्राह्मण-वचन ही प्रमाण है ।[2]

मँड़वा के चूकल बराह्मन डारि के चूकल बानर के कतहुँ ठाँव न मिले ।

मण्डप का चूका (अर्थात् मण्डप में दानादि से सम्मानित न होने पर) ब्राह्मण और डाल का चूका बन्दर—दोनों को कहीं शरण नहीं मिलती ।

---

१. इस लोकोक्ति से किंचित् साम्य रखनेवाली एक खड़ी बोली की लोकोक्ति है :
'खड़ा बनिया पड़ा बराबर, पड़ा बनिया मरा बराबर ।'

२. तु० 'ब्राह्मणाभिहितं वाक्यं न मिथ्या जायते क्वचित् ।'—विष्णुधर्मसूत्र, १९।२०—२२ ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दही-चूड़ा के सुनगुन पाईं, अस्सी कोस निहुरिए धाईं ।

दही-चूड़ा के भोज की थोड़ी-सी सूचना होने पर भी ब्राह्मण झुकते हुए चलकर अस्सी कोस तक की यात्रा तय कर सकता है ।

तीन कनुजिया तेरह चूल्हा ।

तीन कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के बीच तेरह चूल्हों की आवश्यकता होती है ।

इसका कारण यह है कि कान्यकुब्ज खान-पान में स्वजाति के साथ भी छूआछूत का विचार रखते हैं । इस तथ्य के अतिरिक्त उपर्युक्त लोकोक्ति धर्मशास्त्रों में उल्लिखित भोजन-सम्बन्धी नियमों और प्रतिबन्धों को भी संकेतित करती है ।[1]

तीन में कि तेरह में ।

तीन में हो (तीन गोत्रों में) या तेरह (गोत्रों) में ?

प्र० दो व्यक्तियों की परस्पर बातचीत या झगड़े में तीसरे व्यक्ति का हस्तक्षेप करना ।

ऐसा विश्वास है कि ब्राह्मणों में तीन गोत्र—गर्ग, गौतम और शाण्डिल्य श्रेष्ठ होते हैं । अन्य गोत्र तेरहवाले वर्ग में आते हैं ।

बराह्मन बेटा लोटे पोटे मूर बेयाज दूनो सरपोटे ।

ब्राह्मण-पुत्र महाजन के सामने लोट-पोटकर मूलधन और ब्याज इन दोनों से मुक्ति पा जाता है ।

भाट : ये जन-जीवन से प्राप्त सामान्य अनुभूतियों और राजाओं या नायकों की वीरता को अतिशयोक्तिपूर्ण भाषा और लयात्मक सुर में गाकर लोक-जीवन म ओज और आनन्द जगाते हैं । स्वभावतः, ये बड़े वाक्पटु और चतुर होते हैं । ये बड़े खुशामदी और दरबारी भी होते हैं । उदा०

बामन कुकुर भाँट जाति जाति के काट ।

ब्राह्मण, कुत्ता और भाट—स्वजाति को काटते हैं (अर्थात् स्वजाति से ईर्ष्या करते हैं) ।

भाँड़ : भाँड़ मसखरापन के लिए प्रसिद्ध हैं । इतिहासकारों का कहना है कि भाँड़ एक समय भारत के पूर्वी भाग में सत्ताधारी वर्ग के थे । ये दुर्ग या गढ़ बनाने में बड़े निपुण थे ।[2] सम्प्रति, ये विवाह आदि मंगलोत्सवों पर अपने गान-वाद्य से लोगों का मनोरंजन करते हैं । ये बड़े बातूनी होते हैं । यथा :

भाँड़ साथे खेती करनी गा बजा के भाँड़े के भइल ।

भाँड़ के साथ मिलकर खेती की, किन्तु बँटवारे के समय भाँड़ ने ही गा-बजाकर सारी उपज ले ली ।

प्र० दूसरे की वस्तु या हिस्से को खुशामद करके हथिया लेना ।

भूमिहार : यह ब्राह्मण जाति का एक कृषक-वर्ग है ।[3] भूमिहार उत्तरप्रदेश और

---

१. बृहस्पति ने लिखा है कि एक पंक्ति में खाने से एक का पाप दूसरे को लग जाता है (स्मृति चन्द्रिका १, पृ० २२८ में उद्धृत)—डा० पी० वी० काणे : धर्मशास्त्र का इतिहास, प्रथम भाग (हिन्दी-अनुवाद), पृ० ४१४ ।

२. दे० डब्ल्यू० डब्ल्यू० हण्टर : दि इण्डिया इम्पायर, लन्दन, १८८२, पृ० १७४-७५ ।

३. दे० डॉ० राजबली पाण्डेय : गोरखपुर-जनपद और उसकी क्षेत्रीय जातियों का इतिहास, पृ० १३१-३२ ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिहार में अधिकांश बसे हुए हैं। यह भूमिहार जाति बड़ी मेहनती होती है। पूरे देश को दृष्टि में रखते हुए यह अल्पसंख्यक ही है। स्वभावतः, आपस में ये संगठन बनाये रखते हैं। लोकोक्ति-जगत् में भूमिहार कंजूसी और छल-छद्म के लिए बड़े बदनाम हैं। उदा०

भर न करे भुइंहार के, पोंछ न धरे सियार के।

भूमिहार को सेवक नहीं बनाना चाहिए और सियार की पूँछ नहीं पकड़नी चाहिए।

रहे बजावत दुन्दुभी रावन के दरबार।
से कलयुग में आइ के भइल जात भुइंहार॥

जो लोग रावण के दरबार में दुन्दुभि बजाते थे, वे ही लोग कलियुग में भूमिहार जाति के रूप में प्रकट हुए।

राजपूत : यह भारतवर्ष की वीर और सत्ताधारी जाति रही है।[1] इस जाति की उत्पत्ति और विकास के सम्बन्ध में विद्वानों में एक मत नहीं है। फिर भी, प्रायः सभी विद्वान् इस बात में एकमत हैं कि इस जाति में राजनीतिक उथल-पुथल के कारण बहुत परिवर्त्तन हुए हैं। सम्प्रति, उत्तर भारत में राजपूतों की अनेक शाखाएँ और वंशावलियाँ हैं।[2] भोजपुर-क्षेत्र में राजपूतों की मुख्य जीविका कृषि और नौकरी है। किन्तु, किसी भी पेशे में ये अपना प्राचीन संस्कार बनाये रखने की कोशिश करते हैं। इनकी रहन-सहन और बोल-चाल में ओज और शान प्रकट होती है। उदा०

राजपूत अउर धान के ओर ना मिले।

राजपूत और धान का ओर-छोर नहीं मिलता है।

उपर्युक्त लोकोक्ति में राजपूतों के अनेक वंशों और कुलों की ओर संकेत है।

रजपूत जात मूसर के धनुही, टूटे तऽ टूटे नवे ना कबहीं।

राजपूत जाति, मूसर के धनुष-सी होती है। इसलिए, उसका टूटना सम्भव है; किन्तु झुकना नहीं।

सूते रजपूत, उठे अजगूत।

जब सोया हुआ हो (व्यक्ति), तब उसे राजपूत समझना चाहिए और जगा हुआ हो, तब 'अजगूत' समझना चाहिए।

राजपूत लड़ने-भिड़ने और मार-काट करने में प्रवीण होते हैं। कभी-कभी ये जोश में आकर होश भी खो देते हैं। उपर्युक्त लोकोक्ति में प्रयुक्त 'अजगूत' शब्द का संकेत राजपूतों की अन्ध-वीरता की ओर है।

सोनार : यह एक शिल्पी जाति है। लोकोक्ति-जगत् में सोनार सन्देह की दृष्टि से देखे गये हैं। यह इसलिए कि आभूषण बनाने के समय ये फेट-फाट करने में चतुर होते हैं।[3] उदा०

अनारी के घोड़ा, सोनारी के सोना ना पटे ला।

अनाड़ी का घोड़ा और सोनार का सोना नहीं बिक सकता है।

---

१. दे० भारतीय अनुशीलन (ओझा-अभिनन्दन-ग्रन्थ), मध्यप्रदेश तथा मध्यभारत के राजपूत, विभाग ७, पृ० २३।

२. दे० डॉ० राजबली पाण्डेय : गोरखपुर-जनपद और उसकी क्षेत्रिय जातियों का इतिहास, पृ० १३७-५४।

३. संस्कृत में सोनारों को 'पश्यतोहरः' कहा गया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसका कारण यह है कि सोनार बड़ी चालाकी से मोल-भाव करते हैं और तौल में भी 'हस्तलाघव' से काम लेते हैं।

सोना सोनार के, अबरन संसार के।

सोना तो सोनार का हो जाता है और ग्राहकों को अबर्ण (खराब सोना) मिलता है।

मुसलमान : भोजपुर-क्षेत्र में मुसलमानों की संख्या बहुत नहीं है। फिर भी, इस जाति के विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व इस क्षेत्र को प्राप्त है। मुसलमानों में हिन्दू-जाति के समान जटिल व्यवस्था नहीं है। कारण यह है कि इस्लाम की निगाह में सभी मुसलमान समान हैं। फिर भी, रक्त-शुद्धि और तत्सम्बन्धी वर्जनों के आधार पर इस जाति में भी कुछ वर्ग बन गये हैं। इनमें पारस्परिक वरिष्ठता को भावना है। सैयद कुल के मुसलमान अपने को मुहम्मद का वंशज मानते हैं। इसलिए, ये अपने को अन्य मुसलमानों से श्रेष्ठ बताते हैं। सामान्यतः, सामाजिक स्तर के आधार पर मुसलमान जाति को इन पाँच वर्गों में बाँटा जा सकता है : शेख, सैयद, मुगल, पठान और अन्य पेशेवर वर्ग (जुलाहा, धुनियाँ, हजाम, दरजी, कुँजड़ा आदि)। मुसलमानों में जाति-व्यवस्था लचीली है। इसलिए, उच्च कर्म और आर्थिक उपलब्धि के सहारे निम्न श्रेणी का मुसलमान ऊपरी स्तर पर आ सकता है।

भोजपुर-क्षेत्र के गाँवों में मुसलमान और हिन्दू हिल-मिलकर जीवन बसर करते हैं। किन्तु, धर्मों के बीच कुछ मौलिक भेद और ऐतिहासिक कारणों से जनित पारस्परिक असहिष्णुता के कारण दोनों जातियों में यदा-कदा भेद-भाव का विचार जन्म ले लेता है। हिन्दू प्रायः हर मुसलमान को 'तुर्क' कहते हैं। इससे यह संकेतित होता है कि हिन्दुओं के अवचेतन मानस में इतिहास का वह काल जागरित रहता है, जब कि तुर्कों ने भारत में तलवार के बल पर इस्लाम का प्रचार किया और भारत की सांस्कृतिक सम्पत्ति का विनाश किया था। मुसलमान-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ निम्नांकित हैं :

रोपेया तऽ शेख ना तऽ जोलहा।[1]

पास में रुपये हों, तब तो शेख हैं, नहीं तो जुलाहा।

जोलहा के बेगरिहा पैठान।

जुलाहे[2] का बेगार पठान है !

तीरि ना कमान, कहे कि पैठान।

पास में तीर और कमान नहीं है, फिर भी वह अपने को पठान कहता है !

प्र० किसी का वीरता या कुलीनता का दम्भ करना।

तुरुक तोता ओ खरगोस, ई तीनों ना माने पोस।

तुर्क (मुसलमान), तोते और खरगोश—ये तीनों अन्त में दगा देते हैं।

---

१. मुसलमान जाति में किसी भी व्यक्ति को आर्थिक उपलब्धि के सहारे ऊँचे स्तर पर जाने की छूट है। इस सम्बन्ध में एक प्रसिद्ध फारसी उक्ति इस प्रकार है : 'पेशाइन करसाल बूदेमबाद जानगस्तम शेख, गल्ला चूँ ऐ जान् शब्द् इम्साल सैय्यद पेशवेम्।' अर्थात, मैं पहले साल कसाई था, दूसरे साल शेख हुआ और यदि इस साल अन्न का मूल्य बढ़ा, तो सैयद हो जाऊँगा।

२. जुलाहों पर इसी परिच्छेद में पहले विचार हो चुका है। जुलाहों को पूर्णतः मुसलमानों के अन्तर्गत नहीं रखा जा सकता ; क्योंकि हिन्दुओं में भी जुलाहे होते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाति-सम्बन्धी ऐसी भी लोकोक्तियाँ प्राप्त होती हैं, जिनमें एक साथ एक से अधिक जातियों की विशेषताओं की चर्चा हुई है। एक साथ कई जातियों के इस उल्लेख का कारण विवेच्य जातियों के पारस्परिक गुणगत साम्य, वैषम्य और तुलनात्मक विशिष्टता को दिखलाना है। इन लोकोक्तियों को निम्नांकित वर्गों के अन्तर्गत बाँटा गया है :

(क) दो जातियों, (ख) तीन जातियों और (ग) चार जातियोंवाली लोकोक्तियाँ।

तुलनात्मक लोकोक्तियों के अन्तर्गत वर्णित जातियों की विशिष्टता के सम्बन्ध में यथास्थान विचार हो चुका है। इसलिए, यहाँ तुलनात्मक लोकोक्तियों के उदाहरण ही दिये जा रहे हैं।

(क) दो जातियोंवाली :

कटे अहीर के सीखे बेटा नाउ के।

अहीर का सर कटता है और नाई का बेटा (अपना पेशा) सीखता है।

प्र० किसी की कमजोरी का नाजायज फायदा उठाना।

कोइरी अहीर खेती करे, अउर करे बरियाइ।

कोइरी और अहीर खेती करते हैं और लोग जबरदस्ती (खेती) करते हैं।

कोइरी के घरे लरिका होला, कुँजड़ा के घरे बधावा बाजेला।

कोइरी के घर पुत्र जन्म लेता है, किन्तु कुँजड़े के घर में बधावा बजता है।

कोइरी के बरद अहीर के गाय, कौने कारन बेचल जाय।

कोइरी का बैल और अहीर की गाय, जाने किस कारण बेची जाती है।

जल में केवट, बन में अहीर, नइहर में जोय आपन ना होय।

जल में केवट, बन में अहीर, नइहर में जोय (स्त्री)—ये सभी लोग अपने नहीं होते।

तीन बेर बुलावे तऽ आवेले नउनियाँ, आधा भार माँग के भूँजेले कनूनियाँ।

तीन बार बुलाने पर नाईन आती है और अग्रिम आधो मजदूरी लेकर कान्दू की स्त्री अनाज भूँजती है।

बाभन कुकुर भाँट जाति जाति के काट।

ब्राह्मण, कुत्ते और भाट—ये सभी स्वजाति को ही काटते हैं।

बाभन पेटे, अहीर बकोटे, राजा दीठी, जोगी पीठी।

ब्राह्मण के पेट में, अहीर के नख में, राजा की दृष्टि में और योगी की पीठ में गरमी रहती है।

(ख) तीन जातियोंवाली :

अगहन रजपूत, अहीर अषाढ़, भादो भइँसा चइत चमार।

अगहन में राजपूत, आषाढ में अहीर, भादो में भैंसा और चैत में चमार खुश रहते हैं।

करिया बाभन, गोर चमार, कायर छतरी महा हतियार।

काला ब्राह्मण, गोरा चमार और कायर क्षत्रिय, महा हत्यारे होते हैं।

नाउ धोबी दरजी, तीनों जात अलगरजी।

नाई, धोबी और दरजी, ये तीनों जातियाँ अलगरजी होती हैं।

(ग) चार जातियोंवाली :

कायथ के कुछ लेले देले, बराह्मन खिलवले, रजपूत के बोध बाध, नान्ह लतिअवले।

कायस्थ कुछ लेन-देन करने से, ब्राह्मण कुछ खिलाने-पिलाने से, राजपूत प्रशंसा करने से और निम्न जाति के लोग दण्ड देने से ठीक रहते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१. ६. कृषि-सम्बन्धी

भोजपुरी लोकोक्तियों में कृषि का सविस्तर उल्लेख हुआ है। प्राचीन काल से ही 'कृषि' शब्द, कृषक, कृषि के विभिन्न यन्त्र और कृषि के कार्य—जुताई, बुआई, निराई, कटाई आदि—का बोधक रहा है।[1] लोकोक्तियों में वर्णित कृषि-वार्त्ता उपर्युक्त 'कृषि' के व्यापक अर्थ का अनुसरण करती है। कृषि-सम्बन्धी लोकोक्तियों का अध्ययन इन वर्गों में बाँटकर किया गया है : १. कृषि का महत्त्व, २. किसान, ३. भूमि, ४. कृषि-उपकरण, ५. कृषि-कार्य और ६. फसलें।

१. कृषि का महत्त्व :

शताब्दियों से कृषि इस देश की प्रधान वृत्ति रही है। किसान रत्नगर्भा वसुन्धा पर हल चलाकर अन्न के रूप में कामदुधा भूमि का आशीर्वाद प्राप्त करना है। यह अन्न ही प्राण है, बल है और सभी कामों को सिद्ध करनेवाला है। यथा :

उत्तम खेती, मध्यम बान, निखिद चाकरी भीख निदान।

व्यवसायों में खेती उत्तम है, वाणिज्य मध्यम है, नौकरी निषिद्ध है और भीख माँगना तो सबसे निकृष्ट है।[2]

खेती राज रजावे, खेती भीख मँगावे।

खेती राज-सुख देती है—खेती निर्धन भी कर देती है।

पढ़ल लिखल कवन काम, खेती करब घनि आइब धान।

पढ़ने-लिखने की क्या आवश्यकता है, खेती करूँगा और खूब घना धान[3] पैदा करूँगा।[4]

सुख चाहे खेती करे, धन चाहे व्यापार।

सुख पाने के लिए खेती करनी चाहिए और धन पाने के लिए व्यापार।[5]

जे देत ना सोना, से देत खेत के कोना।

सोना भी जिसे नहीं दे पाता है, उसे खेत का कोना दे देता है।

---

१. "नानाक्रियाः कृषेरर्थाः नावश्यं कृषिर्विलेखन एव वर्त्तते। किं तर्हि, प्रतिविधानेऽपि वर्त्तते, यदसौ भक्तबीजवलीवर्दैः प्रतिविधानं करोति।"—पातंजलभाष्य, ३।१।२६।

२. तु० 'सुवर्णैरौप्यमाणिक्य वसनैरपि पूरिताः।
तथापि प्रार्थयन्त्येव कृषकान् भक्तकृष्णया॥'—पराशरसंहिता।
अर्थात्, सोना, चाँदी, माणिक्य, वस्त्र आदि से सम्पन्न पुरुषों को भी भोजन-पदार्थ की इच्छा से किसानों से प्रार्थना करनी पड़ती है।

३. 'धना धान' से अर्थ अधिक उपजाने से है। कृषि की सफलता भी अधिक अन्न उपजाने में है। एक संस्कृत-लोकोक्ति में कहा गया है :
'कृषिं करोति, एकं द्वे करोति।'
कृषि एक को दो में बदल देता है।

४. इसी तरह की एक और लोकोक्ति है—'पढ़न लिखन बिन कवन अकाजा,
मार कुदार घर आवे अनाजा।'
नहीं पढ़ने-लिखने से क्या अकाज होता है। कुदार चलाओ (अर्थात्, खेती करो) और अन्न पैदा करो।

५. तु० 'वार्त्तायां संश्रितस्तात लोकोऽयं सुखमेधते।'—महाभारत, सभापर्व, ५।४२।
वार्त्ता-कृषि, पशु-पालन और व्यापार का अवलम्ब लेनेवाले लोग सुख पाते हैं।

RajGuru Mata Shitala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अच्छी फसल ही खेती का आकर्षण है। इसके लिए किसान को दत्तचित्त होकर कृषि के सारे कार्यों को यथासमय सम्पन्न करना पड़ता है। इसीलिए, लोकोक्तियों में खेती के प्रति पूरी सावधानी बरतने की सलाह दी गई है। उदा०

कर खेती परदेश जाय, तेकर जनम अकारथ जाय।

खेती करके (फसल की बुआई आदि करके) जो किसान परदेश को जाता है, उसका जन्म व्यर्थ ही जाता है।

खेतिहर गइलन घर, दाएँ बाएँ हर।

'खेतिहर' (कृषक) के घर चले जाने पर खेत में हो रही हल की जुताई ढीली पड़ जाती है।

बाढ़े पूत पिता के धरमा, खेती उपजे अपने करमा।

पुत्र की उन्नति में पिता द्वारा उपार्जित धर्म सहायक होता है, किन्तु खेती अपनी ही मिहनत से उपजती है।

खेती-बेटी नित्ते गाय, जे ना देखे तेकर जाय।

खेती, पुत्री और गाय—इन्हें प्रतिदिन जो नहीं देखता है, उसे इनसे हाथ धोना पड़ता है।

आगे के खेती आगे-आगे, पीछे के खेती भागे जोगे।

यथासमय होनेवाली खेती उपज की दृष्टि से भी आगे रहती है, और पीछे (असमय) की खेती भाग्य से ही होती है।

२. किसान :

परिश्रमी किसान की धरती सोना उगलती है। छैला बनकर घूमनेवाले या आलसी किसान खेती नहीं कर सकते। खेती कठोर परिश्रम खोजती है। खेतिहर के सामने तरह-तरह की समस्याएँ रहती हैं। उसे भूमि की जुताई के अतिरिक्त बीज, सिंचाई, फसल की रक्षा आदि का प्रबन्ध करना पड़ता है। लोकोक्तियों में किसान और उसकी योग्यता पर इस प्रकार प्रकाश डाला गया है :

जे हर जोते खेती ओकर, अवरु ना तऽ जेकर तेकर।

खेती उसी की है, जो खुद हल चलाता है, नहीं तो वह जिस-तिसकी है।

आलस नींद किसाने नासे, चोरे नासे खाँसी।

आलस्य और नींद ये किसान के लिए हानिकारक हैं और खाँसी चोर के लिए।

बाप पूत मिल खेती करीं, बाप के मुअले भाई के धरीं।

पिता और पुत्र को मिलकर खेती करनी चाहिए। अगर पिता की मृत्यु हो गई हो, तो खेती के लिए भाई को साथ रखना चाहिए।

जाको ऊँचा बैठना, जाको खेत निचान। ताको बैरी का करे, जाको मीत दिवान॥

जिसकी संगति अच्छी है, जमीन गहरी है और दीवान जिसका मित्र है, उसका दुश्मन कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

करे न खेती पड़े न फन्द, पर घर नाचे मूसरचन्द।

मूसरचन्द (मस्तमौला व्यक्ति का काल्पनिक नाम) दूसरों के यहाँ नाचता है (समय गुजारता है), इसलिए कि वह खेती के बन्धन से मुक्त रहता है।

इस लोकोक्ति से परोक्षतः कृषक के उत्तरदायित्वों पर प्रकाश पड़ता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३. भूमि :

कृषि-योग्य भूमि का वर्गीकरण और नामकरण कई आधारों पर किया गया है। ग्रियर्सन ने उक्त वर्गीकरण के लिए ये आधार अपनाये हैं :[१] (क) गाँव से खेत की दूरी, (ख) मिट्टी का रासायनिक तत्त्व, (ग) खेत में उपजने या उपजाई जानेवाली फसलें। लोकोक्तियों में भी उपर्युक्त आधारों पर वर्गीकृत कृषि-योग्य भूमियों का उल्लेख हुआ है। उदा०

गोंयड़ा[२] : गाँव या बस्ती के समीप की भूमि को 'गोंयड़ा' कहा जाता है। ऐसी भूमि में स्थित खेतों में गाँव की सड़ी-गली चीजें जल के साथ पहुँचती हैं। इसलिए, ऐसे खेत बड़े उपजाऊ होते हैं। किन्तु, इन खेतों में लगी फसलों पर कड़ी निगरानी भी रखनी पड़ती है। इसका कारण यह है कि गाँव के नजदीक होने से उक्त खेतों की फसल पर मनुष्य और पशुओं की कुदृष्टि लगी रहती है। एक लोकोक्ति में कहा गया है :

गोंयड़ा के खेती, सिरवाँ के साँप, मैया कारन बैरी बाप।

गाँव के समीप की खेती, बिस्तर का साँप और सौतेली माँ के कारण बैरी बने हुए बाप —ये सभी खतरनाक होते हैं।

बाँगर : ऊँचाई पर रहनेवाली खुश्क जमीन को 'बाँगर' कहा जाता है। ऐसी भूमि में उपज कम होती है। बाँगर-सम्बन्धी एक लोकोक्ति है :

का बाँगर के अन्ने, का जोलहा के धन्ने।

बाँगर की उपज और जुलाहे की सम्पत्ति—होती ही कितनी हैं।

परती : पैदावार की शक्ति बढ़ाने के लिए खेत को कुछ महीनों तक बिना जोते-बोये रहने दिया जाता है। ऐसे खेत को 'परती' (अर्थात् पड़ी हुई) कहते हैं। 'परती' पर लगी घास को गाँव के पशु आदि बिना रोक-टोक के चरते हैं। उदा०

हम कहीं बोअन, लोग कहे परती।

मैं (खेत को) 'बोअन' (बोया हुआ) कहता हूँ, किन्तु लोग उसे 'परती' कहते हैं।

प्र० दूसरों की चीज पर जबरदस्ती अधिकार जमाना।

ऊसर : खारी भूमि को 'ऊसर' कहते हैं। इस भूमि में नमक की मात्रा अधिक होती है। इसलिए, ऊसर के पौधों को पोषण-तत्त्व नहीं मिलता है। एक लोकोक्ति में 'ऊसर' को इस प्रकार नीचा दिखाया गया है :

उसरे के देबी, कोदो के अच्छत।

ऊसर की देवी का सम्मान 'कोदो'[३] के अच्छत से किया जाता है।

प्र० पात्रतानुसार किसी को सम्मान देना।

बेपनियाँ : जिस खेत की सिंचाई वर्षा के जल से नहीं हो पाती है, उसे 'बेपनियाँ' (बिना पानीवाला) कहते हैं। ऐसी भूमि पर 'कुआँ' की सहायता से खेती होती है, जैसा कि इस लोकोक्ति में कहा गया है :

---

१ दे० 'बिहार पिजेण्ट लाइफ', पृ० १४६।

२. कृषि-कोश : सम्पादक : डॉ० विश्वनाथप्रसाद; प्रकाशक : बि० रा० भ० प०, पटना, पृ० १३२; 'गोएँड़' की व्युत्पत्ति इस प्रकार की गई है :
गोएँड़ = गोएँढ़ < ग्राम + आढ्य वा गो < गुह < गूथ।

३. 'कोदो' एक निम्न कोटि का अन्न होता है। यह गरिष्ठ अन्न होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खेत बेपनियाँ जोतऽ तब, ऊपर कुआँ खोनावऽ जब ।

विना पानीवाले खेत को उसी समय जोतना चाहिए, जबकि उसके समीप कुँआँ खोद लिया गया हो ।

४. कृषि-उपकरण :

कृषि-कार्य में जिन उपकरणों का व्यवहार होता है, वे परम्परागत हैं। समय के परिवर्त्तन के साथ इन उपकरणों के रूप और नाम बदलते रहे हैं। कार्य के आधार पर कृषि-उपकरणों का वर्गीकरण इस प्रकार किया गया है : (क) खेत जोतने और कोड़ने के उपकरण, (ख) फसल काटने और तैयार करने के उपकरण ।

(क) खेत जोतने और कोड़ने के उपकरण : हल—'हल' कृषि का ही औजार नहीं, समाज में किसान की प्रतिष्ठा का भी प्रतीक है। यह 'हलधर' के रूप में जनपद के धार्मिक जीवन में भी प्रतिष्ठित है। विवाह या यज्ञोपवीत-संस्कार के समय 'ईष' की पूजा का विधान है। हल सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

सभ के कर, हर तर ।

सभी के हाथ हल के नीचे हैं (अर्थात्, हल-रूपी भगवान् जो देंगे, वही प्राप्य है) ।

हर लागल पताल, तऽ भाग गइल अकाल ।

खेत जोतने के समय जब हल जमीन के नीचे चला जाय, तो यह समझना चाहिए कि अकाल (दुर्भिक्ष) चला गया ।

एक हर हतेया, दू हर काज, तीन हर खेती, चार हर राज ।

एक हल रखने से हत्या होती है (बैलों पर अधिक बल पड़ता है), दो से किसी तरह काम बनता है, तीन से खेती ठीक से होती है और चार से तो राज्य किया जाता है।[1]

दू हर खेती, एक हर बारी, एक बैल से भला कुदारी ।

दो हलों से खेती होती है और एक हल से 'बारी;[2], और किसान के पास एक ही बैल हो, तो उससे अच्छा कुदाल का रहना है ।

हेंगा : जोती हुई भूमि को चौरस करने या खेत के ढेलों को फोड़ने के लिए 'हेंगा' का व्यवहार किया जाता है। यह एक लम्बा (लगभग दस फुट) काठ या बाँस का भाग होता है, जिसे बैल खींचते हैं। हेंगा के खींचने में बैलों की गरदन पर अधिक जोर पड़ता है। हेंगा-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

हर हेंगा में अइसी तइसी, पगुरी में रन्थ ।

हल और हेंगा में तो बैल धीमा-धीमा चलता है और पागुर करने में रथ की तरह तेज हो जाता है ।

प्र० आलसी पेटू पर व्यंग्य ।

---

१. तु० 'नित्यं दशहले लक्ष्मीर्नित्यं पञ्चहलं धनम् ।
नित्यं त्रिहले भक्तं नित्यतेऽहले ऋणम् ॥'
एक संस्कृत-श्लोक : ग्राम-साहित्य, दूसरा भाग, पृ० ६५ पर उद्धृत ।

२. घर के आसपास की जमीन को 'बारी' कहते हैं। इसमें बरसात का पानी नहीं टिकता है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कातिक में गइले हेंगा ले आवे, चइत में लवटले ।

कार्त्तिक में (वे) हेंगा लाने गये और चैत्र में लौटकर आये ।[1]

प्र० किसी कार्य में अनावश्यक देर करना ।

कुदाल : मिट्टी कोड़ने या क्यारियाँ बनाने के लिए कुदाल का व्यवहार किया जाता है । यह बड़ा उपयोगी औजार है । खेती के दिनों में किसान इसे हमेशा साथ रखते हैं । लोकोक्तियों में कुदाल के व्यवहार के सम्बन्ध में इस प्रकार उपदेश दिया गया है :

जब बरसे तऽ बान्ह कियारी, बड़ किसान के हाथ कुदारी ।

वर्षा होने पर शीघ्रता से क्यारियाँ बनानी चाहिए । (इसलिए) बड़ा किसान हमेशा हाथ में कुदाल रखता है ।

हाँका हाँकी चले कुदार ।

कुदाल 'हाँक-हाँकी', अर्थात् प्रतियोगिता की भावना रखने से खूब चलता है ।

(ख) फसल काटने और तैयार करने के उपकरण : हँसुआ—यह लोहे का एक चन्द्राकार औजार होता है, यह फसल काटने के काम में आता है । इसे अपनी ओर खींचकर चलाया जाता है । इस औजार के रूप और उपयोगिता पर प्रकाश डालनेवाली लोकोक्तियाँ ये हैं :

बाप दीहें हँसुआ तऽ बन करे जाइब ।

बाप जब हँसुआ देंगे, तब (मैं) वन (फसल) काटने जाऊँगा ।

प्र० परमुखापेक्षिता पर व्यंग्य ।

बड़ सोझ तऽ हँसुआ नीयर ।

वे बड़े सीधे हैं, तो हँसुआ की तरह हैं !

प्र० किसी की नहीं बदलनेवाली टेढ़ी प्रकृति पर व्यंग्य ।

हँसुआ टेढ़ो होला तऽ अपने ओर खींचेला ।

हँसुआ टेढ़ा भी होता है, तो भी अपनी ओर खींचता है, अर्थात् अपने लोग बदमाश भी हो जाते हैं, तो भी अपनों की सहायता अवश्य करते हैं ।

मेंह-दौंरी : बैलों के सहारे ही दौनी होती है । दौनी करने के लिए बैलों की पंक्ति को एक खूँटे में बाँधा जाता है । यह खूँटा केन्द्रस्थल में गाड़ा जाता है । इसे ही 'मेंह' कहते हैं । इसमें ही बँधकर बैल वृत्ताकार फसलों की ढेर पर घूमते हैं । जिस रस्सी में बैलों की गरदनें बँधी रहती हैं ,उसे 'दौंरी' या 'दँवरी' कहते हैं । 'मेंह-दौंरी'-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

बे मेंह के दौंरी ।

विना मेंह की 'दौंरी' !

प्र० उपयुक्त साधन के विना काम करना ।

बे मेंह के दौंरी, घोड़ा बिन लगाम ।
बे माथ के लसकर, तीनों भइल नकाम ।।

विना 'मेंह' की 'दौंरी', विना लगाम का घोड़ा और विना सर के लश्कर—ये तीनों व्यर्थ हैं ।

---

१. हेंगा की आवश्यकता हल चलने के बाद पड़ती है । इसलिए, प्रायः किसान हल के साथ ही हेंगा खेत में नहीं ले जाते हैं ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५. कृषि-कार्य :

इस कार्य के अन्तर्गत जोतना, खाद का प्रबन्ध करना; सिंचाई करना, निराई करना, फसल काटना आदि कृषि-कार्य परिगणित किये जाते हैं।[1] लोकोक्तियों में वर्णित कृषि-कार्यों का उल्लेख नीचे किया जा रहा है :

जुताई : किसान, भूमि, मौसम और फसल को दृष्टि में रखकर खेत को एक या अनेक बार जोतते हैं। अगर भूमि कड़ी रही या खेत में घास गहरी उगी हो, तो गहरी जुताई करनी पड़ती है। अच्छी जुताई के लिए हल के फाल को गहरा धँसाना पड़ता है। जुताई में खेत की नमी का भी ध्यान रखना पड़ता है। कच्चे खेत को जोतना हानिकारक समझा जाता है। यथा :

जतने गहिर खेत जोताई, ओतने फसल फफाई।
जितनी मात्रा में गहरी जुताई होगी, उतनी ही मात्रा में फसल अधिक होगी।

जोते खेत घास ना टूटे, तेकर भाग सँझिए फूटे।
जोतने पर भी जिसके खेत की घास नष्ट नहीं होती, उसका दुर्भाग्य ही है।

हर लागल पताल तऽ भाग गइल अकाल।
हल का फाल जमीन के नीचे चला जाय, तो समझना चाहिए कि अकाल भाग गया।

मँदे गोहूँ, ढेले चना।
गेहूँ के खेत को जोतकर मँदे-सा मुलायम करना चाहिए और चने के खेत में ढेला छोड़ देना चाहिए।

गोहूँ बाँहें, धान बिदाहे।
गेहूँ के खेत को खूब जोतने से और धान के खेत को बिदाहने से फसल अच्छी होती है।

खाद देना : खाद खेत की जान होती है। खेत की उर्वरता को बढ़ाने के लिए खेत में गोबर, राख और कूड़ा-करकट डाला जाता है। भेड़ का पाखाना या सनई आदि पौधों के रस से भी खेत को उपज बढ़ती है। खाद और उसके महत्त्व पर निम्नांकित लोकोक्तियाँ प्रकाश डालती हैं :

खाद पड़े तऽ खेत, ना तऽ कूड़ा रेत।
खेत में खाद पड़े, तब तो वह खेत है, नहीं तो वह कूड़ा-रेत है।

खेती करे खाद से भरे, सौ मन कोठिला में ले धरे।
खेत में खाद डालने से कोठी में सौ मन अन्न रखने का अवसर मिलता है।

गोबर मइला पानी सड़े, तब खेती में दाना पड़े।
खेत में गोबर, पाखाना और पानी—ये तीनों सड़ते हैं, तब फसल में अधिक दाने पड़ते हैं।

सनई बोए, सनई काटे, सनई सारे खेत गलावे।
सनई बोनी चाहिए, सनई काटनी चाहिए और सनई को खेत में ही सड़ा देना चाहिए।

बोना और रोपना : खेत में खाद डालने के बाद बुआई करनी चाहिए। बुआई के कार्य में बहुत सावधानी रखनी चाहिए। क्योंकि, बुआई के कौशल और काल पर उपज का

---

१. शतपथब्राह्मण (१।६।३) में कृषि-कार्य के अन्तर्गत 'कृषन्तः', 'वपन्तः', 'लुनन्तः' और 'मृणिन्तः', अर्थात् जोतना, बोना, काटना और दँवरी करना आदि कृषि-कार्य में परिगणित किये गये हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अच्छा होना निर्भर करता है। सामान्यतः बुआई के समय इन चार बातों पर ध्यान दिया जाता है—१. बीज की किस्म और तौल, २. भूमि की हालत, ३. मौसम और ४. बीज डालने का कौशल। उपर्युक्त विषयों का उल्लेख निम्नांकित लोकोक्तियों में हुआ है :

पहिले बोअऽ पहिले काटऽ।

पहले (यथासमय) बोना चाहिए और पहले काटना चाहिए।

अगाई से सवाई।

पहले बोने से सवागुना अधिक अन्न होता है।

पूस ना बोए, पीस खाए।

पूस में बुआई करने से अच्छा है बोये जानेवाले अन्न को खा जाना।

चना चितरा चौगुना, स्वाती गोहूँ होय।

चना चित्रा नक्षत्र में और गेहूँ स्वाति नक्षत्र में बोने से चौगुना होता है।

जब जनिहः खरचा के हीन, कतिका में तूँ बोइहः चीन।

जब तुम अपने को खर्च की दृष्टि से हीन समझना, तब कृत्तिका नक्षत्र में चीना बोना।

पूख पुनरबस बोए धान, मघा असरेखा कादो सान।

पुष्य और पुनर्वसु नक्षत्र में धान बोना चाहिए और मघा तथा आश्लेषा में धान के खेत में कादो करना चाहिए।

रोहनी खाट, मृगसिरा छवनी, अदरा आवे धान के बोवनी।

रोहिणी नक्षत्र में खाट बुनने का कार्य, मृगशिरा में छावनी का कार्य और आर्द्रा में धान बोने का कार्य करना चाहिए।

रोपना : धान दो प्रकार से लगाया जाता हैं—एक बीज डालकर और दूसरा रोपकर। भोजपुरी-भाषा में पहली क्रिया को 'बावग' कहते हैं और दूसरी को 'रोपा'। विशेष नक्षत्रों में ही धान रोपा जाता है। इसलिए, रोपाई यथासमय करनी चाहिए, नहीं तो कम उपज होने की आशंका बनी रहती है। रोपाई-सम्बन्धी निम्नांकित लोकोक्तियाँ हैं :

पुरवा रोपे पूर किसान, आधा खखरी आधा धान।

अगर किसान पूर्वा नक्षत्र के पहले रोपाई खत्म नहीं करता है, तो धान की फसल में कम दाने पड़ते हैं।

उतरा में जनि रोपहु भइया, तीन धान होय, तेरह पइया।

हे भाई, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में धान मत रोपो, नहीं तो धान के सोलह दानों में तीन अन्नवाले और तेरह भूसीवाले होंगे।

कुसी अमावस, चौठी चान, अब का रोपब धान किसान।

'कुसी अमावस्या' (भाद्र कृष्णपक्ष) और भादो की चतुर्थी बीत गई। अतः, हे किसान ! अब धान रोपकर क्या करोगे ?

सिंचाई करना : फसलों की सिंचाई दो तरह से होती है—एक तो वर्षा से और दूसरे नदी, बाँध, पोखर और कुँओं के जल से। कुछ फसलें तो पूरी सिंचाई के अभाव में बिलकुल नहीं होती हैं। इसलिए, किसान जी तोड़कर सिंचाई का प्रबन्ध करता है। सिंचाई-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बरसत पानी बहे ना पावे, तब खेती के मजा देखावे ।
जब वर्षा का जल खेत से नहीं बह पाता, तब खेती अच्छी होती है ।

धान, पान, खीरा, तीनों पानी के कीरा ।
धान, पान और खीरा—ये तीनों पानी के कीड़े होते हैं ।

तीन पानी तेरह कोड़, तब देखऽ ऊखी के पोर ।
ईख के खेत को तीन बार सींचकर और कोड़कर देखना चाहिए कि ईख की गाठें कितनी लम्बी-मोटी हुई हैं ।

पानी बरसे आधा पूस, आधा गोहूँ आधा भूस ।
पूस के मध्य में बरसात हो, तो गेहूँ की फसल में दाना और भूसा बराबर-बराबर होंगे ।

६. फसलें :

भोजपुरी क्षेत्र में विविध प्रकार की फसलें होती हैं । इन फसलों का वर्गीकरण उनके बोने और पकने के समय के आधार पर किया जाता है । वर्षा ऋतु से शीत ऋतु तक कटनेवाली फसलें 'खरीफ' कहलाती हैं और वसन्त ऋतु में कटनेवाली फसलें 'रबी' । लोकोक्तियों में खरीफ और रबी फसलों का वर्णन इस प्रकार किया गया है :[1]

(अ) खरीफ : धान—धान की अनेक किस्में हैं । इनके नामकरण धान के रंग-रूप और कटने के समय के आधार पर किया जाता है । साधारणतः, धान, वर्षा ऋतु में बोया या रोपा जाता है और शीत ऋतु में काटा जाता है । धान-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

रजपूत अउरु धान के ओर छोर ना मिले ।
राजपूत और धान (के वंश) का ओर-छोर नहीं मिलता ।

अदरा धान, पुनरबस पइया, गइल किसान जे बोय चिरइया ।
आर्द्रा में धान बोना चाहिए । पनर्वसु में धान बोने से धान में चावल कम होता है और 'चिरैया' (पुष्य नक्षत्र) में बोने से तो किसान का नाश हो जाता है ।

अदरा रेंड़, पुनरबस पाती, लाग चिरइया दिया ना बाती ।
धान आर्द्रा में बोया जाय, तो उसके डण्ठल मजबूत होंगे, पुनर्वसु में बोया जाय, तो पत्तियाँ अधिक होंगी और पुष्य में बोया जाय, तो घर में 'दिया-बाती' (प्रकाश) जलाने के लिए भी सम्पत्ति नहीं रहेगी ।

धान गिरे बड़ भाग, गोहूँ गिरे दुरभाग ।
धान की फसल खेत में गिर जाय,[2] तो बहुत भाग्य की बात है और गेहूँ की फसल गिरे, तो दुर्भाग्य की ।

सात सेवाती धान उपाठ ।
स्वाति नक्षत्र के सात दिनों बाद धान पक जाता है ।

---

१. 'खरीफ' और 'रबी' का उल्लेख एक लोकोक्ति में इस प्रकार हुआ है :
'आसपास रबी, बीच में खरीफ, नोमक मरिचा डाल के खा गइल हरीफ ।'
जो किसान खरीफ के आसपास रबी फसल उपजाता है, उसकी फसलों को हरीफ (चोर-उच्चके) धूर्त्तता से चट कर जाते हैं ।

२. धान के गिरने को भोजपुरी-भाषा में 'पला जाना' कहते हैं । यह 'पला जाना' हिन्दी का 'पड़ जाना' है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिधि के लिखल न होखे आन, आधा चितरा फूटे धान।

विधि का लिखा बदल नहीं सकता। इसलिए चित्रा नक्षत्र के मध्य में ही धान फूटते हैं।

हथिया में हाथ गोड़, चितरा में फूल।

चढ़त सेवाती, झंपा-झूल॥

जड़हन फसलों में हस्त नक्षत्र में डण्ठल निकल आता है, चित्रा में फूल लगता है और स्वाति नक्षत्र के आते ही उनकी बालें लटककर झूलने लगती हैं।

साठी : यह एक लाल रंग का धान होता है। इसे बोया जाता है। यह जनसामान्य की धारणा है कि साठी साठ दिनों में पकता है, इसलिए इसे 'साठी' कहा जाता है। किन्तु, डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने कात्यायन द्वारा प्रयुक्त साठी के अर्थ का उल्लेख करते हुए यह कहा है : 'कात्यायन के अनुसार साठी विशेष चावल का ही नाम था और कोई फसल साठ दिन में पकने से साठी नहीं कही जा सकती।'[1] साठी-सम्बन्धी एक लोकोक्ति है :

साठी पाके साठ दिना, जब बरखा होखे रात दिना।

साठी धान साठ दिनों में पक जाता है, बशर्ते कि वर्षा लगातार हो।

(आ) रबी : गेहूँ—गेहूँ की गणना प्रमुख फसलों में होती है। यह एक पुष्टिकारक अन्न भी है। खान-पान में गेहूँ का विविध प्रकार से प्रयोग किया जाता है। 'रबी'-वर्ग के अन्तर्गत गेहूँ की गणना होती है। गेहूँ चैत में पक जाता है। इसलिए गेहूँ को 'चैता' या 'चइती' भी कहते हैं। अच्छी सिंचाई के होने से गेहूँ की बढ़िया उपज होती है। यथा :

खाइब गोहूँ ना त ऽ रहब एहूँ।

खायेंगे तो गेहूँ ही, नहीं तो यों ही रहेंगे।

प्र० अपनी किसी बात पर अटल रहना।

सावन सूखे धान, भादो सूखे गोहूँ।

सावन में सूखा पड़े, तो धान की उपज अच्छी होगी और भादों में सूखा पड़े, तो गेहूँ की।

गोहूँ गिरे अभागा के, धान गिरे सुभागा के।

अभागे व्यक्ति के गेहूँ की फसल जमीन पर गिरती है और सौभाग्यशाली व्यक्ति के धान की फसल जमीन पर गिरती है।

जौ : आर्द्रा और हस्त नक्षत्रों में जौ के खेतों की जुताई होती है। चित्रा के आते-आते जौ की बुआई भी आरम्भ हो जाती है। अगहन महीने में तो जौ के नुकीले अंकुर छोटी-छोटी पत्तियों का रूप धारण कर लेते हैं। ऐसे समय में जौ की हल्की सिंचाई करना जरूरी हो जाता है। जौ-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ ये हैं :

जौ हरवाहे, धान बिदाहे, ना जानि ऊख उपजे काहे।

जौ, खेत को खूब जोतकर बोने से और धान बिदाहने से खूब उपजता है, किन्तु यह नहीं मालूम कि ऊख क्या करने से अधिक होता है।

आधा चितरा राई मुराई आधा चितरा जब केराई।

चित्रा नक्षत्र के पूर्व पक्ष में राई और मुराई (मूली) की बुआई करनी चाहिए और उत्तर पक्ष में जौ की।

---

१. पाणिनिकालीन भारतवर्ष, पृ० २०७।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चीना : यह एक साधारण अन्न है। गरीबों का यह प्रिय भोजन है। चीना को बुआई के लिए कृत्तिका नक्षत्र को उपयुक्त समझा जाता है। चीना-सम्बन्धी लोकोक्ति है :

जब जनिहः खरचा के हीन, कतिका में तूँ बोइहऽ चीन।

जब तुम खर्च में पड़ो, तब कृत्तिका नक्षत्र में चीना बोओ।

चना : चना को भोजपुरी-भाषा में 'बूँट' और 'रहिला' भी कहते हैं। यह एक रबी फसल है। अतः, इसकी बुआई चित्रा नक्षत्र में शुरू होती है। फागुन के अन्त तक चने में छीमियाँ आ जाती हैं। चैत के समाप्त होते-होते तो चना कटकर खलिहान पर आ जाता है। चना-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ हैं :

एहि रहिला के पूरी कचौड़ी, एहि रहिला के दाल।
एहि रहिला के खाई खिरौंली, खूब मोटाइल गाल॥

इसी चने की पूड़ी, कचौड़ी, दाल और खिरौली खाकर गाल खूब मोटा हो गया है। यह लोकोक्ति, चना द्वारा निर्मित विविध भोजन-प्रकारों की ओर संकेत करती है।

मैदे गोहूँ, ढेले चना।

गेहूँ के खेत की मिट्टी मैदा के समान होनी चाहिए और चने का खेत ढेलावाला होना चाहिए।

जब सैल खटाखट बाजैं, तब चना खूब ही गाजैं।

जब हल जोतने के समय 'सैल' (जुए का शिरा) खटखट करके बजता है, तब उस खेत में चना खूब होता है।

ढेलेवाले खेत में हल बार-बार उछल जाता है, इसलिए बैल की गरदन पर का जुआ खूब बजता है।

माष : माष (उड़द) एक अति प्राचीन अन्न है।[1] यह 'मास' के रूप में अब भी बोलियों में सुरक्षित है। ऐसे मास की जगह उड़द का प्रयोग अधिक होता है। माष की दाल और बड़ियाँ स्वादिष्ट होती हैं। हस्त नक्षत्र की वर्षा माष की फसल के लिए लाभदायक होती है। उदा०

हथिया बरसे तीनों होखेला, सक्कर साली मास।
हथिया बरसे तीनों जायेला, तील कोदो कपास॥

हस्त नक्षत्र में वर्षा के होने पर ईख, धान और माष की उपज अच्छी होती है, किन्तु तील, कोदो और कपास की फसलें मारी जाती हैं।

ईख : यह एक लाभदायक फसल है। किसान इसे हाथों-हाथ बेचकर नकद दाम पा जाते हैं। किन्तु, ईख की खेती में मेहनत भी कम नहीं है। अच्छी फसल के लिए ईख की कम-से-कम तीन बार सिंचाई और तीन बार कोड़ाई की जाती है। ईख के पकने पर तो उसकी रखवाली भी खूब चौकस होकर करनी पड़ती है। गुड़ बनने के समय 'केल्हुबाड़ी' (जहाँ गुड़ तैयार होता है) में आनेवाले नये मित्रों से भी निबटना पड़ता है। ईख-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

---

१. माष का उल्लेख प्राचीन ग्रन्थों में हुआ है। द्र० वाजसनेयिसंहिता, १८।१३ और पाणिनि : अष्टाध्यायी ४।४।८२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खेती करे ऊखि कपास, घर उठावे बेवहरिया पास ।

ईख और कपास की खेती करनी चाहिए । व्यवहार करनेवाले[1] (सूद पर रुपया देनेवाले) के पास घर बनाना चाहिए ।

तीन पानी तेरह कोड़, तब देखऽ ऊखी के पोर ।

तीन बार सिंचाई और तीन बार कोड़ाई करने के बाद ईख की गाँठें देखनी चाहिए ।

बसन्त आइल, ऊखि पाकल ।

वसन्त आ गया, इसलिए ईख पक गई ।

गइल ठकुरई, आइल चमरई, एहि ऊखि के बोए से ।
गोरी के देहिया करिया भइल, बिना जेठ में सोए से ।।

इस ईख की खेती करने से ठकुरई के बदले चमरई[2] आ जाती है और जेठ के दोपहर में नहीं सोने से गोरा आदमी भी काला पड़ जाता है ।

जे इयारी हाटे-बाटे, से केल्हूबड़िए नाहीं ।

जैसी दोस्ती हाट-बाट में रहती है, वैसी केल्हुबाड़ो (गुड़ बनाने का स्थान) में नहीं निबहती है ।

ऊखि करे सब कोई, जो जेठ बीच न होई ।

ईख की खेती सभी कर सकते हैं, अगर जेठ का महीना न पड़े (जेठ में कड़ाके की गरमी पड़तती है) ।

१. ७. नीति और लोक-व्यवहार-सम्बन्धी

'नीति' के व्यापक अर्थ में 'लोक-व्यवहार' भी ध्वनित हो जाता है । इसलिए, इस परिच्छेद में नीति और लोक-व्यवहार— दोनों के लिए 'नीति' का प्रयोग किया गया है । 'नीति', 'नी' धातु से बना है । 'नी' का अर्थ है—ले जाना । इसलिए, नीति का व्यंग्यार्थ हुआ—वे सद्विचार, जो मनुष्य को सन्मार्ग पर ले जाते हैं । ये सद्विचार लोक-समुदाय को जीवन की विविध दशाओं और परिस्थितियों में ग्राह्य और अग्राह्य पथ के निर्वाचन और अनुसरण में आलोक प्रदान करते हैं । इसके अभाव में मनुष्य जीवन-रूपी जंगल में भटक जाता है ।[3] यही कारण है कि प्रत्येक देश और काल में नीति-मार्ग का बहुविध विवेचन किया गया है । इसके निर्धारण में व्यक्ति और समाज दोनों का सहयोग रहता है । नीति और लोक-

---

१. यहाँ व्यवहार करनेवाले का अर्थ ऋण देनेवाला है । प्राचीन काल में क्रय-विक्रय के अर्थ में 'व्यवहार' शब्द का प्रयोग होता था ।—दे० डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल : पाणिनिकालीन भारत, पृ० २३० ।

२. यहाँ 'ठकुरई' और 'चमरई' के व्यंग्यार्थ क्रमशः शान या आराम की कमी और मिहनत करने की विवशता हैं ।

३. "सर्व एव नरा मोहाद्दुराशापाशपाशिनः ।
दोषगुल्मक सारङ्गविशीर्णाजिरमज्जले ।।'—योगवासिष्ठ, १।२६।४१ ।
सब मनुष्य जीवन-रूपी जंगल में अज्ञानवश दुराशाओं के जाल में फँसे हुए इस प्रकार भटकते फिर रहे हैं, जैसे कि झाड़ियों में रहनेवाले पशु ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यवहार का यह आदर्श-पथ व्यक्ति और समाज दोनों के अनुभव और कृत्यबुद्धि के आधार पर निर्मित होता है।

भारतवर्ष में नीति-सम्बन्धी चिन्तन की प्राचीन परम्परा रही है। यहाँ नीति के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक स्वरूप पर विभिन्न दृष्टिकोणों से विचार किया गया है। इस नीति-मार्ग को धर्म, सिद्धि, निःश्रेयस्, भोग, सदाचार आदि कितने ही नामों से पुकारा गया है। किन्तु, नीति-सम्बन्धी मत-मतान्तरों में यथानिर्दिष्ट विचारों में एक मत दिख पड़ता है—दुरित और दुश्चरित का निरोध ही सत् पथ है, मनुष्य को हमेशा पाशविक प्रवृत्तियों से ऊपर उठकर आदर्श पथ का अनुसरण करना चाहिए, मनुष्य के सभी मानसिक और शारीरिक प्रयत्नों का उद्देश्य 'लोक-कल्याण' होना चाहिए और उसके किसी भी कार्य से दूसरों का अहित नहीं होना चाहिए।[1] इन उपर्युक्त विचारों ने भारतीय लोक-जीवन को हर प्रकार से प्रभावित किया है। लोक का आचार-व्यवहार, रहन-सहन, भाषा-साहित्य तथा अन्य सभी कलाएँ, नीतिमार्ग का अनुमोदन और प्रसारण करती हैं।

लोकोक्ति-साहित्य की गणना बुद्धिमूलक या नीति-साहित्य (विजडम लिटरेचर) में होती है। अधिकांश लोकोक्तियों का व्यंग्य या वाच्य अर्थ, नीति और लोक-व्यवहार-सम्बन्धी होता है। इनमें प्राचीन नीतिशास्त्र और सन्त-महात्माओं की उपदेशात्मक वार्त्ता का दाय प्रतिबिम्बित होता है। किन्तु, इनमें लोक-समुदाय के प्रत्यक्ष दर्शन, अनुभूत ज्ञान और सर्वमान्य व्यवहार पर आधारित नीति-सम्बन्धी विचार प्रमुख होते हैं। लोक, शास्त्र के उन्हीं नीति-विधानों को अपनाता है, जो जीवन-यापन के लिए सरल और सर्वसुलभ मार्ग का प्रतिपादन और निर्देशन करते है। इसलिए, लोकोक्तियों में वर्णित नीति और लोक-व्यवहार वार्त्ता में धर्मशास्त्रों-सा गम्भीर खण्डन-मण्डन नहीं मिलता।[2] यहाँ, विधि-निषेधमय शैली में नीति और लोक-व्यवहार के सामान्य पक्षों पर विचार किया गया है।

विषय की दृष्टि से नीति और व्यवहार-सम्बन्धी लोकोक्तियों पर निम्नांकित शीर्षकों के अन्तर्गत विचार किया गया है :

संकल्प : कार्य की सिद्धि कर्त्ता के दृढ संकल्प पर निर्भर करती है। वस्तुतः, संकल्प

---

१. "श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्। आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।
न तत्परस्य कुर्वीत स्यादनिष्टं यदात्मनः। यदात्मनोऽपि चेच्छेत तत्परस्यापि चिन्तयेत्॥"
—महाभारत, अनु० ११३।०।८
धर्म (सामाजिक आचार) का सर्वस्व सुनो और सुनकर उसपर चलो। जो अपने प्रतिकूल हो, उसे दूसरों के प्रति मत करो। जो अपने लिए अनिष्ट हो, वह दूसरों के लिए मत करो और जिसकी अपने लिए इच्छा है, वह दूसरों के लिए भी सोचो।

२. "The proverb in most common use among the people are decidedly of a practical nature. They relate more to wordly wisdom than to high principles of rectitude,.....There is a general absence in them of an elavating tone, a want of high ideal, such as one would expect to find in the sayings of wisdom left by the sages of old."—John cristian : Bihar proverbs, Introduction, XVIII.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के अभाव में व्यक्ति, द्विविधा, अशान्ति और अविवेक से ग्रस्त हो जाता है। इसलिए संकल्प को कार्य की सफलता का मूल मानना चाहिए। यथा :

आधा साधे, कम्मर बाँधे।

कमर बाँधने (संकल्प) से ही आधा कार्य सिद्ध हो जाता है।[1]

अँटकी से भटकी।

जो कार्य के मध्य में रुक जाता है, वह भटक जाता है।[2]

उद्योग : अभीष्ट फल की प्राप्ति के लिए उद्योग आवश्यक है। अपने परिश्रम के अतिरिक्त किसी भी अन्य साधन से इच्छा की पूर्त्ति नहीं हो सकती। पंचतन्त्र (२।१२८) में कहा गया है : 'उद्यम से कार्य सिद्ध होते हैं; केवल मंसूबे से नहीं। सोते हुए सिंह के मुँह में मृग नहीं घुसते हैं।' परिश्रम करने में दुःख भी सहना पड़ता है। फिर भी, हमेशा आलस्य को छोड़कर उद्योग में रत रहना चाहिए। उद्योग-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ ये हैं :

धाई से पाई।

जो दौड़ेगा (उद्योग करेगा), वह (फल) प्राप्त करेगा।[3]

बिना रोवले माइयो दूध ना पिआवेले।

बिना रोये (बच्चे को) माँ भी दूध नहीं पिलाती है।[4]

सूती से जाई, जागी से पाई।

जो सोयेगा, वह जायगा (खोयेगा), जो जागेगा, वह पायगा।[5]

लोभ : लोभ मनुष्य का महान् शत्रु है। यह सन्तोष या त्याग के अभाव में ग्रस्त करता है। लोभ के ही कारण ईर्ष्या प्रस्फुटित होती है। लोभ शीघ्र समाप्त भी नहीं होता। एक लोभ कई लोभों को जन्म देता है। यथा :

आवत हाही, जात संतोख।

किसी चीज को पाने के समय बड़ी विकलता रहती है, किन्तु उसके समाप्त होते ही सन्तोष हो जाता है।

जतना जाल देखेला, ओतना मल्लाह देखे तऽ छाति फाटि के मर जाई।

जाल, जितनी मछलियों को देखता है, उतनी अगर मल्लाह देखे, तो वह छाती पीटकर मर जायगा।

यह लोकोक्ति परोक्षतः लोभी की मनःस्थिति पर प्रकाश डालती है।

---

१. तु० "अभीप्सितार्थस्थिरनिश्चयं मनः पयश्च निम्नाभिमुखं प्रतीपयेत्।"— कुमारसम्भवम्, ५।४। अभीष्ट वस्तु के लिए स्थिर निश्चयवाले मन को और नीचे की ओर जाते हुए पानी को कौन उलट सकता है।

२. तु० 'असिद्धार्था निवर्त्तन्ते नहि धीराः कृतोद्यमाः।'—कथासरित्सागर ५।३।१४॥ उद्यमी धीर काम पूरा किये बिना विश्राम नहीं लेते हैं।

३. तु० 'कर्माण्यारभमाणं हि पुरुषं श्रीर्निषेवते।'—मनुस्मृति, ९०।१३८। काम में लगे रहने पर पुरुष को विजयश्री मिलकर रहती है।

४. तु० 'न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः।'—ऋग्वेद, ४।३३।११। देवता, परिश्रमी को ही सहायता करते हैं।

५. तु० 'भूत्यै जागरणम्, अभूत्यै स्वप्नम्।'—यजुर्वेद, ३०।१७। जागना कल्याण के लिए है। सोना अकल्याण के लिए है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनकर सेनूर देखि के, आपन कपार फोंरी ।

दूसरे का सिन्दूर (सुहाग), अर्थात् उपलब्धि देखकर, लोग अपना सर फोड़ लेते हैं, यानी ईर्ष्यालु हो जाते हैं ।

अपने खाइ बिलारि के लावे, ओकर जियरा सूम सतावे ।

जो स्वयं खाता है और बिल्ली को भी लाता है, उसको बाद में कष्ट सहना पड़ता है ।

उचकले ना मिली दान, मँगले ना रही मान ।

उचककर खड़ा होने से दान नहीं मिलता और हाथ पसारने से मान नहीं रहता । अर्थात्, सन्तोष के अभाव में अभीष्ट की प्राप्ति नहीं होती ।

दूनो लोक से गइले पाँड़े, हलुआ मिले ना माँड़े ।

पाण्डेयजी (व्यंग्यार्थ—लोभी) दोनों लोक से गये—उन्हें न हलुआ ही मिला और न माँड़ ही ।

पर धन बान्हे कपड़ा फाटे ।

दूसरों की सम्पत्ति बाँधने से अपना ही कपड़ा फटता है, अर्थात् अपनी ही हानि होती है ।

विवेक : मनुष्य विवेक के ही सहारे सत्-असत् का ज्ञान प्राप्त करता है । इसके अभाव में मनुष्य न तो अपना और न दूसरों का ही कल्याण कर पाता है । वस्तुतः, विवेकहीन मनुष्य अन्धा होता है । अविवेकी पुरुष मानसिक चक्षु से रहित होता है । लोकोक्तियों में अन्धे को अविवेकी पुरुष का प्रतीक माना गया है । उदा०

अन्हरा के लेखे, दिन रात बरोबरि ।

अन्धे के लिए दिन और रात समान हैं ।

अन्हरा बाँटे अपने ले ।

अन्धा खुद बाँटता है, खुद लेता है ।

अन्हरा के आगे हीरा कंकड़ बरोबरि ।

अन्धे के लिए हीरा कंकड़ के समान है ।

अन्हरा के आगे रोईं, आपन दीदा खोईं ।

अन्धे के आगे रोने से, अपनी ही दृष्टि नष्ट हो जाती है ।

सहनशीलता : श्रेष्ठ पुरुष सहनशील होता है । इस गुण के अभाव में मनुष्य क्रोधी हो जाता है । क्रोध से पारस्परिक प्रेम में बाधा पहुँचती है । सन्त या सज्जन दूसरों की गलती पर क्रोध करने के बदले, क्षमा प्रकट करते हैं । इसलिए, क्रोध को वश में रखनेवाला ही महान् व्यक्ति है । लोकोक्तियों में सहनशीलता को ध्यान में रखते हुए क्रोध-निवारण का उपदेश दिया गया है । उदा०

रहे निरोगी जो कम खाय, काम न बिगरे जो गम खाय ।

जो कम खाते हैं, वे नीरोग रहते हैं और जो गम खाते हैं, उनका काम नहीं बिगड़ता है ।

आसनं पगु टारनं, पहिले खीसि निवारनं ।

आसन ग्रहण करने से पहले उसे पैर से हटा लेना चाहिए—और पहले क्रोध का निवारण करना चाहिए ।

---

१. तु० 'सजमपि शिरस्यन्धः क्षिप्तां धिनोत्यहिशङ्कया ।'—अभिज्ञानशाकुन्तलम्, ७।२४ ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बड़ अदमी के खीसि, छोट अदमी के किरिया देरी से होला ।

बड़े आदमी को क्रुद्ध होने में और छोटे आदमी के श्राद्ध होने में देर होती है ।[1]

सहयोग : सहयोग से दुःसाध्य कार्य भी शीघ्र सम्पन्न हो जाते हैं ।[2] कहा गया है : 'संघ में ही शक्ति है ।' इसलिए, मनुष्य को एक दूसरे को सहायता करनी चाहिए । सहयोग के अभाव में व्यक्तिगत और सामाजिक—दोनों जीवन में विच्छिन्नता आने लगती है । लोकोक्तियों में कहा गया है :

घर फूटे, गाँव लूटे, गाँव फूटे जवार लूटे ।

घर फूटता है, तो उसे गाँव लूटता है । गाँव फूटता है, तो उसे इलाका लूटता है ।

बेल फुटले राई ।

बेल भी फूटने पर राई की तरह बिखर जाता है ।

बन्हले भेली, फोरले चुरकुनी ।

गुड़ के दाने बाँधने पर भेली बनते हैं, फोड़ने पर कण-कण में बिखर जाते हैं ।

दाने दाने रासि, पियादे-पियादे फौद ।

(अनाज के) दानों के मिलने से ढेर बनता है और पियादों के मिलने से फौज ।

दस के लाठी, एक के बोझ ।

दस व्यक्तियों की लाठियाँ एकत्र होकर एक व्यक्ति के लिए बोझ बन जाती हैं ।

अर्थात्, दस के सहयोग से एक व्यक्ति की भलाई हो जाती है ।

सात पाँच मिलि कीजे काज, हारीं जीतीं नाहीं लाज ।

सात-पाँच व्यक्तियों के मिलकर काम करने में हार-जीत की लाज की परवाह नहीं होती ।

अति : किसी भी दशा में सीमा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए । एक संस्कृत लोकोक्ति है : 'अति सर्वत्र वर्जयेत् ।' किसी भी चीज की अति अशुभकारी होती है । सामंजस्य के अभाव में ही सीमा का अतिक्रमण होता है । यह सीमा का अतिक्रमण विपरीत फल देता है । अति-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ ये हैं :

ना अति बक्ता, ना अति चुप्प ।
ना अति बरखा, ना अति धूप ।।

अधिक बोलना, चुप रहना, वर्षा होना और धूप होना—ठीक नहीं होता है ।

पैर ओतने बढ़ावे के चाहीं, जतना चद्दर लाम होखे ।

चादर की लम्बाई के अनुसार पैर पसारना चाहिए ।

ढेर जोगी, मठ के उजाड़ ।

अधिक योगियों से मठ उजड़ जाता है ।

स्वाभिमान : स्वाभिमान के अभाव में व्यक्तित्व का विकास नहीं हो पाता । जिसे अपने स्वाभिमान की चिन्ता नहीं होती, उसे अपने पर भी भरोसा नहीं रहता । यथा :

---

१. तु० 'मूढानामेव भवति क्रोधो ज्ञानवतां कुतः ।'—विष्णुपुराण, १०१।१७ ।
मूर्खों को ही क्रोध होता है, ज्ञानियों को नहीं ।

२. तु० 'बहूनामप्यसाराणां समवायो हि दुर्जयः ।'—पञ्चतन्त्रम्, १।३६१ ।
अनेक असार वस्तुओं का संघ भी दुर्जय होता है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहाँ बूझ ना बड़ाई, तहाँ से भाग चल रे भाई।

हे भाई! जहाँ तुम्हारी बूझ और बड़ाई न हो, वहाँ से भाग चलो—अर्थात्, वहाँ मत ठहरो।

बे बोलवले मँड़वा गइलों, डोकि पोंछि के माथे लवलों।

विना बुलाये मैं उनके मण्डप में गई, फलस्वरूप डोंकी (काठ का पात्र) पोंछकर तेल लगाना पड़ा।

स्वावलम्बन : मनुष्य को अपनी इच्छाओं की पूर्त्ति के लिए अधिक-से-अधिक अपने परिश्रम और अर्जन पर निर्भर करना चाहिए। पराजित व्यक्ति कभी सुखी नहीं रहता। परमुखापेक्षिता व्यक्ति को कायर और आलसी बना देती है। इसलिए जीवन में सुख-समृद्धि पाने के लिए स्वावलम्बी होना चाहिए। लोकोक्तियों में कहा गया है :

आन के आस नित उपास।

दूसरों पर निर्भर करने से प्रतिदिन उपवास करना पड़ता है।

आपन हाथ जगरनाथ।

अपना हाथ (स्वकर्म) जगन्नाथ के समान है।[1]

परबस बन्दा, सुख का जाने।

दूसरे के वश में रहनेवाला मनुष्य सुख क्या जाने?[2]

कि अपना बोअले, की अपना जमले।

या तो अपने बोने से ही नहीं, तो अपनी सन्तान से ही सुख होता है।[3]

जबले करीं बाबू बाबू तब ले चलाईं आपन काबू।

जितना समय दूसरों की खुशामद करने में बरबाद किया जाता है, उतने में स्वयं परिश्रम करके कार्य पूरा किया जा सकता है।

वाणी : मनुष्य की वाणी प्रिय और यथार्थ होनी चाहिए। जो मन में हो, उसीको अपने वचन के द्वारा प्रकट करना चाहिए। जो कहना चाहिए—उसे कर्म में भी परिणत करना चाहिए; क्योंकि 'वाक्छल' एक पाप है।

किन्तु, व्यावहारिक जीवन में देखा जाता है कि सत्य बोलनेवाला निरादृत होता है। सत्यभाषी का साथ उसके साथी भी छोड़ देते हैं। लोग झूठ बोलनेवाले पर ही विश्वास करते हैं। वाणी-सम्बन्धी उपर्युक्त बातों पर लोकोक्तियों में इस प्रकार विचार किया गया है :

बात कहीं फरिछा, गुर लागे चाहे मरिचा।

स्पष्ट रूप से बात कहनी चाहिए, चाहे वह दूसरों को भली लगे या बुरी।

गढ़ले बात रूखर होले, गढ़ले लकड़ी चीकन होले।

गढ़ने से बात रूखी होती है और गढ़ने से लकड़ी चिकनी होती है।

---

१. तु० 'अयं मे हस्तो भगवान्।'—ऋग्वेद, १०।६०।१२।
यह मेरा हाथ ही भगवान है।

२. तु० 'सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्।' —मनुस्मृति, ४।१६०।

३. तु० 'अर्जितं स्वेन वीर्येण नाप्यपाश्रित्यकञ्चन। फलशाकमपि श्रेयो भोक्तुं ह्यकृपणं गृहे॥'—महाभारत, वनपर्व, १६३।२६-३०।
किसी का आश्रय लिये बिना अपने बल से अर्जित किये हुए फल और शाक का अपने घर में अदीन भाव से खाना श्रेयस्कर है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बात के चूकल अदमी, अउरु डारि के चूकल बानर के ठेकान ना मिले ।
बात का चूका आदमी (वचन-पालन नहीं करनेवाला) और डाल का चूका बन्दर—इन दोनों को कहीं शरण नहीं मिलती ।

बात कहीं अगाध के, काम देखाईं गीध के ।
लोग बातें अगाध के समान करते हैं और कार्य गीध-सा (घृणित कार्य) करते हैं ।

बात बताई दिल्ली के, पोंछ देखाईं बिल्ली के ।
बात तो दिल्ली की (ऊँची) कह रहे हैं, पर बिल्ली की पूँछ दिखा रहे हैं (अर्थात्, छोटा काम कर रहे हैं) ।

साँच बात सदुल्ला कहे, सभ के चित से उतरल रहे ।
सदुल्ला (नाम) सच्ची बात कहता है, इसलिए सभी के चित्त से उतरा रहता है (सभी उसे नापसन्द करते हैं) ।

साँच कहले संग बिछुआय ।
सच्ची बात कहने से साथ भी छूटता है ।

निरगुन गावे, धक्का पावे; बात बनावे, पइसा पावे ।
जो 'निर्गुण' (व्यंग्यार्थ—कटु सत्य) गाता है, वह धक्का पाता है और जो बातें बनाता है, वह पैसा पाता है ।

उपयोगितावाद : साधारणतः, मनुष्य उन्हीं कार्यों में रुचि लेता है, जिनसे उसे कुछ प्राप्त होता है । इसलिए, मनुष्य की दृष्टि में किसी वस्तु की उपादेयता का बड़ा महत्त्व है । उपयोगी चीजें सभी का ध्यान आकृष्ट करती हैं । सामान्य लोगों की उपयोगितावादी दृष्टि होती है । उदा०

का बिटिया के बेटवा भइले, का भइँसी के पड़वा भइले ।
पुत्री के पुत्र जन्म लेने से और भैंस के 'पाड़ा' ब्याने से क्या लाभ ?

काम ना काज के, कटाही घोड़ी घास के ।
यह कटाही (दाँत काटनेवाली) घोड़ी किसी काम-काज की नहीं है, केवल घास खाती है ।

काम पिआरा होला, चाम ना ।
काम प्यारा होता है, रूप नहीं ।

जे हमरा राम के ना, से कवना काम के ।
जो हमारे राम का नहीं है (उपयोगी नहीं है), वह किसी भी काम का नहीं है ।

रोटी के परिछाहीं पानी में देखला से भूख ना मिटे ।
पानी में रोटी की छाया देखने से भूख नहीं मिटती ।

प्रत्यक्ष प्रमाण : लोक प्रत्यक्षदर्शी होता है । उसके लिए प्रत्यक्ष ही प्रमाण है । वह 'कानों सुनी' से अधिक 'आँखों देखी' पर विश्वास करता है । उसे भविष्य की अपेक्षा वर्त्तमान पर भरोसा रहता है । यथा :

आँखी देखी, साखी पूछी ।
आँख से देखी हुई का साक्ष्य क्या पूछना ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जेहे हाथ उहे साथ ।

जो हाथ में रहता है, उसे ही साथ का समझना चाहिए ।[१]

पइसा पास के, बिदेया कंठ के ।

पास के पैसे और कण्ठ की विद्या पर भरोसा रखना चाहिए ।[२]

संगति और मित्रता : मनुष्य के बहुत-से गुण-दोष संसर्ग-जनित होते हैं । बुरी संगति से व्यक्ति का ह्रास होता है । इसलिए, मित्रता या सम्बन्ध स्थापित करने के पहले सोच-विचार लेना चाहिए । सच्चा मित्र एक दुर्लभ वस्तु है । मित्र तो वही है, जो सुख में ही नहीं, दुःख में भी साथ दे । संगति और मित्रता-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ ये हैं :

भला संग रहबऽ, खइबऽ बीरा पान ।
बुरा संग रहबऽ, कटइबऽ दूनो कान ।।

भले व्यक्ति के संग रहोगे, तो पान का बीड़ा (इज्जत) मिलेगा और बुरे व्यक्ति के संग रहोगे तो, बुरों का शिष्यत्व ग्रहण करना पड़ेगा ।

जव के साथ घूनो पिसाला ।

जौ के साथ घुन भी पीसा जाता है ।

नीमन के साथ रहला से नीमन बुद्धि होला ।

अच्छे लोगों के साथ रहने से अच्छी बुद्धि होती है ।[३]

का ओछ के पिरीत, का बालू के भीत ।

ओछे व्यक्ति की प्रीति और बालू की भीत—अस्थायी होती हैं ।[४]

सुख सम्पत के सभ कोई हित ।

सुख-सम्पत्ति में सभी हितैषी बनते हैं ।

परले राम कुकुर के पाले, खींच खाँच के ले गइल खाले ।

राम कुत्ते के हाथ में पड़ गये, तो वह उन्हें खींचकर नीचे ले गया ।

अर्थात्, अच्छी चीज भी बुरी संगति में नष्ट हो जाती है ।

हाथे बा खुदिया, सबही मोरी दिदिया ।
नाहीं बा खुदिया, जरसु मोरी दिदिया ।।

हाथ में 'खुद्दी' है (धन है), तबतक सभी उसे दीदी कहते हैं । जब उसके हाथ खुद्दी नहीं रहती, तो दीदी जले-मरे—इससे दूसरों को क्या मतलब ?[५]

---

१. तु० 'अद्धा हि तद्यदद्य, अनद्धा हि तद्यच्छ्वः ।'—शतपथब्राह्मण ।
आज निश्चित है, जो कल है, वह अनिश्चित है ।

२. तु० 'श्वो मयूरादद्य कपोतो वरः ।'—चाणक्यसूत्रम्, ५।५६ ।
कल के मोर से आज का कपोत ही अच्छा है ।

३. तु० 'क्षीराश्रितमुदकं क्षीरमेव भवति ।'—चाणक्यसूत्रम्, १।७७ ।
दूध का आश्रय लेनेवाला पानी दूध ही हो जाता है ।

४. तु० 'यथा पुष्करपर्णेषु पतितास्तोयबिन्दवः ।
न श्लेषमुपगच्छन्ति तथा नार्येषु सङ्गतम् ।।—वाल्मीकिरामायण, युद्ध०, १६।११ ।
जैसे कमल के पत्तों पर गिरी हुई जल की बूँदे ठहरतीं नहीं, वैसे ही अनार्यों की संगति होती है ।

५. तु० 'को जनस्य फलरथस्य न स्यादभिमुखो जनः ।
जनोभवति भूयिष्ठं स्वजनोऽपि विपर्यये ।।'—बुद्धचरितम्, ९।६ ।
फल देनेवाले पुरुष के लिए कौन अनुकूल नहीं हो जाता ? विपरीत होने पर स्वजन भी पराया है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहन-सहन : सादा रहन-सहन श्रेयस्कर होती है। मनुष्य को अपने कुल-परिवार या देश के अनुसार रहन-सहन अपनानी चाहिए। कभी-कभी व्यक्ति शान-शौकत में आकर या अज्ञानतावश देश-काल के प्रतिकूल वेश-भूषा अपना लेता है। यथा :

चाल चले सादा, जे निबहे बाप दादा।
ऐसी चाल चलनी चाहिए जो पुश्त-दर-पुश्त निबहती जाय।
जइसन देस, ओइसन भेख।
देश के अनुसार वेष धारण करना चाहिए।
जइसन देखीं गाँव के रीत, ओइसन उठाईं आपन भीत।
गाँव की रीति के अनुसार ही अपनी भीत खड़ी करनी चाहिए।

शक्ति या सामर्थ्य : शक्तिशाली का सभी सम्मान करते हैं। रिक्त प्राणी की पूछ नहीं होती। संसार में यह देखा जाता है कि किसी भी शक्ति के आगे उसके अन्य दोष भी भुला दिये जाते हैं। इसलिए, इस संसार में शक्तिशाली या समर्थ बनकर रहना चाहिए। शक्ति या सामर्थ्य के महत्त्व पर प्रकाश डालनेवाली लोकोक्तियाँ ये हैं :

जेकरे हाथ जोर, ओकरे हाथ मुलुक।
जिसकी भुजाओं में बल है, उसके वश में संसार है।
बलवान के हर भूत जोतेला।
बलवान् का हल भूत भी जोतता है।
सरब दोख हरे बरियाई।
किसी की शक्ति उसके सभी दोषों को हर लेती है।
ए छुँछा, तोह के के पूछा।
हे रिक्त ! तुम्हें कौन पूछता है ?
छूँछ फटके उधिआइल जाय।
अन्तरहित छिलके फटकने पर उड़ जाते हैं।[1]

धन : चाणक्य ने कहा है (चाणक्यनीति, १०।१२) कि 'बन्धुओं के बीच धनहीन होकर जीना व्यर्थ है।' वस्तुतः, व्यावहारिक दृष्टि से इस संसार में धन का महत्त्व सबसे बढ़कर है। किसी भी कार्य के लिए धन की आवश्यकता होती है। द्रव्य से ही सारे कार्य सिद्ध होते हैं। दुनिया भी धनी व्यक्तियों का साथ देती है। लोकोक्तियों में धन के महत्त्व पर इस प्रकार प्रकाश डाला गया है :

दरबे से सरबे जे चहबे से करबे।
द्रव्य से ही सब कुछ होता है, इससे जो चाहोगे, प्राप्त कर लोगे।[2]
दाम सँवारे काम।
दाम (धन) काम को सँवारता है।

---

१. तु० 'रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः.....।'—कालिदास : मेघदूत, पूर्वमेघ।
रिक्त होने पर सब कुछ छोटा हो जाता है।

२. तु० 'सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते।'—एक संस्कृत-लोकोक्ति।
सभी गुण कंचन के अधीन हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थूके सातू ना सनाला ।

सत्तू भी थूक से नहीं साना जा सकता है, (अर्थात्, छोटे कार्य भी धन के अभाव में पूरे नहीं होते) ।

बाप बड़ा ना भइया, सबसे बड़ा रुपइया ।

न बाप बड़ा है और न भैया, सबसे बड़ा है रुपया ।

जेकरे हाथे लोई, ओकरे सब कोई ।

जिसके हाथ में धन रहता है, सभी उसी का पक्ष लेते हैं ।

सौ अवगुन सोना हरेला ।

सौ अवगुणों को सोना (धन) हर लेता है ।

ऋण (देना और लेना) : ऋण का लेना और देना—दोनों बुरा होता है । जो ऋण खाता है, वह कभी सन्तुष्ट नहीं रहता । ऋण लेने की आदत से व्यक्ति कायर और मक्कार हो जाता है । ऋण देनेवाला और लेनेवाला—दोनों दुःख मोल लेते हैं । ऋण खानेवाला ऋण चुकाने में आनाकानी करता है । कभी-कभी ऋण देने और लेनेवालों में दुश्मनी भी ठन जाती है । ऋण-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

करज के खाइल, पुअरा के तापल बरोबर ।

कर्ज खाना और पुआल की अग्नि को तापना—दोनों बराबर हैं । (अर्थात्, दोनों क्षणभंगुर होते हैं) ।

आग खाए मुँह जरे, उधार खाए पेट जरे ।

आग के खाने से मुँह जलता है और उधार की वस्तु से पेट जलता है । (इसलिए कि उधार की वस्तु गुण और मात्रा में निम्न होती है) ।

ढेबुआ देके दुख बेसाहऽ ।

ऋण देकर दुःख खरीदा जाता है ।

दुष्ट और दुश्मन : दुष्ट की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए । दुश्मन छोटा हो या बड़ा—वह हमेशा खतरनाक होता है । वह स्वयं अशान्त रहता है और दूसरों को भी अशान्त रखता है । वैरी की उपेक्षा से व्यक्तिगत और सामाजिक—दोनों जीवन में अव्यवस्था आती है । इसलिए, दुष्टों का दलन अवश्य करना चाहिए ।[1] दुष्ट दण्डित होकर ही राह पर आते हैं । लोकोक्तियों में कहा गया है :

दुसमन ना सूते, ना सूते दे ।

दुश्मन न सोता है, न दूसरों को सोने देता है ।

भूत मारेला, ना तऽ सतावेला ।

भूत (दुश्मन) मारता नहीं है, तो सताता अवश्य है ।

नीचन कुट्टन, देवन पूजन ।

नीच व्यक्ति को दण्ड देना चाहिए और देवता (या देव-तुल्य) की पूजा करनी चाहिए ।

लात के आदमी, बात से ना माने ।

दण्ड से ठीक होनेवाला आदमी, उपदेश से नहीं सुधरता ।[2]

---

१. तु० 'विपक्षमखिलीकृत्य प्रतिष्ठा खलु दुर्लभा ।'—शिशुपालवधम्, २।३४ ।
विपक्ष का विनाश किये बिना प्रतिष्ठा दुर्लभ रहती है ।

२. तु० 'आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः ।—नैषधीयचरित, ५।१०१ ।
कुटिल पुरुषों के साथ सीधा व्यवहार नीति नहीं है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खल के दवा पीठि के पूजा ।

दुष्ट की दवा पीठ की पूजा है (अर्थात्, खूब पीटने से ही दुष्ट रास्ते पर आते हैं) ।

पड़ोसी : साहचर्य से भी मनुष्य एक दूसरे का हितैषी हो जाता है । सामाजिक जीवन में पड़ोसी एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है । पड़ोसी एक दूसरे का दुःख-सुख में साथ देते हैं । किन्तु, कभी-कभी दो पड़ोसियों में वैर भी खूब ठनता है । एक पड़ोसी दूसरे की उन्नति देखकर जलने लगता है । पड़ोसियों के पारस्परिक व्यवहार पर प्रकाश डालनेवाली लोकोक्तियाँ ये हैं :

ठाढ़ नाच मोरा, तऽ निहूर के नाचब तोरा ।

(एक पड़ोसी का दूसरे पड़ोसी के प्रति कथन)—तुम हमारे घर खड़ी होकर नाचो, तो मैं भी तुम्हारे यहाँ झुककर नाचूँगी ।

लड़ पड़ोसिन दीदा रख ।

हे पड़ोसिनें ! आपस में लड़ो, पर इज्जत बचाकर ।

ओरी तर के भूत नव पुस्त के नाँव जानेला ।

ओलती के नीचे रहनेवाला भूत, अर्थात् पड़ोसी, अपने पड़ोसी की नव पीढ़ियों के लोगों का नाम जानता है ।

अतिथि : पारिवारिक और सामाजिक जीवन में अतिथि एक प्रिय सम्बन्धी के रूप में मान्य है । यह लोक-विश्वास है कि बड़े भाग्य से किसी के यहाँ अतिथि का आगमन होता है । उपनिषद् (तैत्तरीय, २।११।२।२) की शिक्षा है : 'अतिथि देव होता है ।'[1]

धर्मशास्त्र या नीतिशास्त्र, अतिथि-सेवा की शिक्षा देते हैं, किन्तु लोकोक्तियों में अतिथि को भी शिक्षा दी गई । अतिथि-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ ये हैं :

मुदई के भी ऊँच पीढ़ा दहिल जाला ।

शत्रु को भी अपने घर में ऊँचा आसन दिया जाता है ।[2]

मारल चोर, उपासल हीत, फेरु फेरु दुअरे ना लागे ।

चोट खाने पर चोर और भूखा रहने पर अतिथि—ये दोनों लौटकर द्वार पर नहीं आते ।

एक दिन पहुना, दोसर दिन ठेहुना, तीसर दिन केहुना ।

घर आये हुए अतिथि प्रथम दिन 'पाहुन' (अतिथि) कहलाता है, दूसरे दिन उसे घुटने से टाला जाता है और तीसरे दिन तो उसे कोहनी से मारकर भगा दिया जाता है ।

मछली पहुना, तीन दिन केहुना ।

मछली और अतिथि—ये दोनों तीन दिनों के बाद अप्रिय हो जाते हैं ।

उपर्युक्त अन्तिम दो लोकोक्तियों में विशेषतः अतिथि-आदर्श पर परोक्षतः प्रकाश डाला गया है । मनु, पराशर, मार्कण्डेय आदि ऋषियों ने अतिथि की व्युत्पत्ति पर विचार किया है ।[3]

---

१. अतिथि-सम्बन्धी वैदिक सूक्तियों के लिए दे० ऋग्वेद, ८।७४.३-४; तैत्तरीय-उप०, २।११।२।२ और कठो० १।१७ ।

२. तु० 'तस्मादाहुर्न सायमतिथिरपरुध्यः ।'—ऐतरेय ब्रा०, ५।३० ।
सन्ध्या को आये हुए अतिथि का कभी प्रत्याख्यान नहीं करना चाहिए ।

३. मनु, ३।१०२; पराशर, १।४२; मार्कण्डेयपुराण, २६।२—६ ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मनु ने स्पष्ट कहा है—"अतिथि वह है, जो पूरे दिन (तिथि) नहीं रुकता है या अतिथि वह ब्राह्मण है, जो एक रात्रि के लिए रुकता है।"[१]

१. ८. धर्म और दर्शन-सम्बन्धी

भारतीय जीवन का धर्म और दर्शन में पूर्णतः सामंजस्य है।[२] इसलिए, भारतीय धर्म और दर्शन को एक ही आध्यात्मिक प्रयत्न के दो पक्षों—आचार-पक्ष और विचार-पक्ष के रूप में स्वीकार करना चाहिए। धर्म, दार्शनिक सिद्धान्तों की आचारगत परिणति है और दर्शन, धार्मिक व्यवहारों का सैद्धान्तिक मेरुदण्ड।

इस परिच्छेद में उपर्युक्त कारणों से धर्म और दर्शन को एक ही तत्त्व के क्रमशः व्यवहार-पक्ष और विचार-पक्ष मानकर तत्सम्बन्धी लोकोक्तियों का अध्ययन किया गया है।

(अ) दर्शन :

भारतीय दर्शन लोक-जीवन से कभी विच्छिन्न नहीं रहा है। आरम्भ से आजतक दर्शन की सारी शाखाएँ और लोक-जीवन एक दूसरे को प्रभावित और प्रेरित करते रहे हैं।[३] इसीलिए, लोक की समन्वयवादी संस्कृति में भारत के प्रायः सभी दार्शनिक मत-मतान्तरों का दाय सुरक्षित है। लोक ने सदा श्रद्धालु होकर समय-समय पर मिले सभी ज्ञान या बोधि का स्वागत किया है। प्रमाण के लिए लोकोक्तियों में प्राप्त दार्शनिक विचार द्रष्टव्य हैं।

कर्मफलवाद : मनुष्य अपने कर्मों के अनुसार फल प्राप्त करते हैं। सुकर्मों से पुण्य की प्राप्ति होती है और कुकर्मों से पाप की। इस जन्म के कर्म का फल दूसरे जन्म में अवश्य ही मिलता है। इस प्रकार, कर्म और फल में कार्य-कारण का सम्बन्ध है।

कर्मफलवाद एक परम्परागत सिद्धान्त है। ऋग्वेद-संहिता में देवता के विशेषण के रूप में 'शुभस्पतिः' (शुभ कर्म के पति), 'विश्वस्य कर्मणो धर्त्ता' (विश्व के सभी कर्मों के आधार) आदि पदों का उल्लेख हुआ है। ऋग्वेद का कथन है : 'पूर्वजन्म के दुष्कर्मों के कारण लोग पापकर्म में प्रवृत्त होते हैं।[४] कर्मवाद को दृष्टि में रखकर श्रीमद्भगवद्गीता में

---

१. 'एकरात्रं हि निवसन् ब्राह्मणो ह्यतिथिः स्मृतः।
अनित्यास्य स्थितिर्यस्मात्तस्मादतिथिरुच्यते॥'— मनु, ३।१०२।

२. "It is the intimate relation between the truth of philosophy and the daily life of people that makes religion always alive and real."—Dr. Radha Krishnan : Indian philosophy, vol. I, p. 25.

३ "The spiritual motive dominates life in India. Indian philosophy has its interest in haunts of men, and not in Supralunar—Solitudes. It takes its origin in life and enter back into life after passing through the schools."—Dr. Radha Krishnan : Indian Philosophy, vol. I, p. 25.

४. दे० ऋग्वेद, ७।८६।६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निष्काम कर्म का और 'मीमांसादर्शन' में कर्मकाण्ड का विवेचन हुआ है। बौद्धदर्शन में भी कर्मफलवाद को स्वीकार किया गया है।[1]

यह सिद्धान्त भारतीय सामाजिक व्यवस्था के मूलभूत कारणों में रहा है। इसी सिद्धान्त से परिचालित होकर इस देश के शास्त्र, साहित्य और व्यावहारिक जीवन में भी इस जगत् के प्रति सदा ही सन्तोष प्रकट किया गया है। संक्षेप में, यह सिद्धान्त लोगों के सामने जीवन और जगत् की सारी व्यवस्थाओं को एक सामंजस्यपूर्ण विधान के रूप में रखता है। यथा :

अपनी करनी, पार उतरनी।
अपने कर्मों से ही (भवसागर को) पार करने में सहायता मिलती है।

जइसन करनी ओइसन भरनी।
जैसा कर्म होता है, वैसा भोग भोगना पड़ता है।

जइसन बरे तइसन पावे, पूत भतार न आगे आवे।
किये गये कर्म के अनुसार ही फल की प्राप्ति होती है। इस कर्म और इसके फल के भाग में पुत्र और पति कुछ भी हिस्सा नहीं बँटाते।[2]

पूरब जनम के पाप से, हरि चरचा न सुहाय।
जइसे जर के ताप से, भोजन की रुचि जाय॥
जिस प्रकार ज्वर के ताप से भोजन की रुचि नष्ट हो जाती है, उसी प्रकार पूर्वजन्म के पापों के कारण हरि-चर्चा नहीं सुहाती है।

जे जइसन बोएला, ते तइसन काटेला।
जो जैसा बोता है, वह वैसा ही काटता है।[3]

सौ पापे बाघो ना बाँचेला।
सौ पाप करने से बाघ भी नहीं बचता है, अर्थात् वह मारा जाता है।

---

१. 'कम्मणा वत्तति लोको, कम्मणा वत्तति पजा।
कम्मणा बन्धना सत्ता, रथस्साणीव यायतो॥'
कर्म से लोकों की सत्ता है। कर्म से मनुष्यों की सत्ता है। सभी जीव अपने कर्म से उसी प्रकार बँधे हुए हैं, जिस प्रकार चलता हुआ रथ अपने धुरे से।—सुत्तनिपात, पृ० १२३।

२. तु० (क) 'न सन्ति पुत्ता ताणाय न पिता नपि बन्धवा।
अन्त केनाधिपन्नस्य नत्थि जाति सुताणता॥
पुत्र, पिता और बन्धु कुछ नहीं कर सकते। जब मौत आती है, तब रिश्तेदार कुछ सहायता नहीं करते।—धम्मपद, मार्गवर्ग, १६।

(ख) 'एकः प्रसूयते जन्तुरेक एव प्रलीयते।
एको नु भुङ्क्ते सुकृतमेक एव च दुष्कृतम्॥'—भागवतम्, १७।५६।२६।
प्राणी अकेले जनमता है और मरता है। अकेले ही पुण्य और पाप का फल भोगता है।

३. तु० 'यो यद्वपति बीजं हि लभते सोऽपि तत्फलम्।'—कथासरित्सागर, ३।३।१४८।
जो जैसा बीज बोता है, वह वैसा ही फल पाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust.,Funding IKS-MoE-Grant-2

पुनर्जन्मवाद : इस वाद का सिद्धान्त कर्मफलवाद के सिद्धान्त से सम्बद्ध है।[1] यह वाद भी किंचित् परिवर्त्तनों के साथ वैदिक, बौद्ध और जैनदर्शन-ग्रन्थों में उल्लिखित है।[2] इस वाद के अनुसार मनुष्य अपने कर्मों के भोग के लिए देह धारण करता है। उदा०

देह धरला के बंड हऽ।

देह धारण करने का यह (जीवन) दण्ड है। अर्थात्, जीव (दुष्कर्म के फलस्वरूप) दण्ड भोगने के लिए देह धारण करता है।

अनाज जियान करला पर ओह जनम में अदमी दलिदरा होला।

अन्न को नष्ट करनेवाला अगले जन्म में दरिद्र होता है।

अदृश्य शक्ति के प्रति विश्वास : भारतीय दर्शन की सभी विचारधाराओं में एक महाशक्तिशाली अदृश्य सत्ता का निरूपण किया गया है। इसी महाशक्तिशाली सत्ता या परमतत्त्व को दृष्टिकोण-भेद के कारण विभिन्न रूपों और नामों से अभिहित किया गया है।[3] इस विश्वास के अनुसार एक महाशक्ति-सम्पन्न सत्ता इस जगत् का नियमन करती है। उसी के एकमात्र संकेत पर संसार के सारे व्यापार संचालित होते हैं। वही सत्ता सृष्टि के जन्म, पालन और संहार का कारण है। संक्षेप में, 'वह सब लोकों का एकमात्र स्वामी है।'[4]

विभिन्न दर्शनों द्वारा प्रतिपादित 'परम तत्त्व' शास्त्र का ही विषय नहीं रहा है, लोकमानस का भी मुख्य परिचालक रहा है। दर्शन में विवेचित 'परम ब्रह्म' विभिन्न स्रोतों—पौराणिक कथाएँ, तीर्थाटन, व्रत आदि के द्वारा लोक की बुद्धि और हृदय को प्रभावित करता रहा है। उदाहरण के लिए, ये लोकोक्तियाँ ली जा सकती हैं :

अलख पुरुष के माया, कहीं धूप कहीं छाया।

यह अदृश्य पुरुष की माया है कि कहीं धूप, कहीं छाया है।

ईश्वर इच्छा बलीयसी।

ईश्वर की इच्छा बलवान् है।

जब ले देव दया न करिहें, तब ले सागर सीपी भरिहें।

जबतक ईश्वर की दया नहीं होगी, तबतक सागर (जल) से सीपी भरी जायगी।

मरजी गोविन्द के, राब करे भेली।

गोविन्द अपनी इच्छा के अनुसार 'राब' को भेली में बदल देता है। अर्थात्, विश्व के सभी व्यापारों का ईश्वर ही नियन्ता है।

कालवाद या नियतिवाद : इस सिद्धान्त के अनुसार जीव के सारे व्यापार भाग्य के अधीन हैं। जो होना होता है, वही होकर रहता है। इसका कारण यह है कि सभी घटनाएँ नियत हैं। अतः, मनुष्य चाहकर भी उन्हें टाल नहीं सकता। जिस मनुष्य का भाग्य ही खराब है, वह प्रयत्न करके भी इष्ट की प्राप्ति नहीं कर सकता। उदा०

---

१. कर्म-सिद्धान्त अपने पक्ष में पुनर्जन्म के सिद्धान्त की भी कल्पना करता है, जो भारतीय धर्म और दर्शन की अधिकांश प्रणालियों द्वारा किसी-न-किसी रूप में स्वीकार किया गया है। —डॉ० अ० स० अलतेकर : हिन्दू-धर्म : स्थितिशील ढाँचा, या गतिशील शक्ति, नेहरू-अभिनन्दन-ग्रन्थ (संगृहीत निबन्ध), पृ० ३१८।

२. दे० बृहदारण्यक उपनिषद्, ४।४।५; छान्दोग्य-उपनिषद्, ५।१०।७; संयुक्तनिकाय, २।२।१४।

३. दे० निरुक्त ७।४।८६।

४. 'एको विश्वस्य भुवनस्य राजा।'—ऋग्वेद, ६।३६।४।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आशा मरे निराशा जिये ।

जो आशावादी होता है, वह मरता है (अर्थात् उसे असफलता मिलती है) और जो निराशावादी होता है वह जीता है ।

कर्म में लिखल भेड़ी के बार, कहाँ से ओढ़बि ऊनी दोसाल ।

भाग्य में तो भेड़ी का बाल (कम्बल) ओढ़ने को लिखा है, तो दुशाला कहाँ नसीब होगा ।

करमहीन खेती करे, ओला गिरे कि पाला पड़े ।

अभागा आदमी खेती करता है, तो ओला गिरता है या पाला पड़ता है ।

जाएवाला के गोड़ हो जाला ।

जानेवाले को पैर हो जाते हैं (अर्थात्, नष्ट हो जानेवाली चीज को परिस्थिति का भी योग मिल जाता है) ।

जे होखे के होला ऊ हो के रहेला ।

होनेवाली बात (या घटना) होकर रहती है ।

लोकायत-दर्शन : इस दर्शन को चार्वाक अथवा बार्हस्पत्य-दर्शन भी कहा जाता है। दर्शन-ग्रन्थों में लोकायत-दर्शन के अन्तर्गत कालवाद, नियतिवाद और भौतिकवाद की गणना हुई है।[1] इस दर्शन के अनुयायी ईश्वर, आत्मा, पुनर्जन्म, परलोक आदि में विश्वास नहीं करते। ये अर्थ और काम को परम पुरुषार्थ के रूप में और प्रत्यक्ष को एकमात्र प्रमाण के रूप में स्वीकार करते हैं।[2] इसीलिए, आस्तिक दार्शनिकों ने इसे निम्न स्तर का दर्शन घोषित किया है। परन्तु, इस दर्शन की विचारधाराएँ पूर्णरूप से प्रलाप नहीं है। लोकायत-दर्शन की पृष्ठभूमि में प्रत्यक्षदर्शिता और लोक-व्यवहार पर आधारित अनुभव भी दीख पड़ते हैं। कालवाद या नियतिवाद, लौकिक सुख या देहात्मवाद और प्रत्यक्षवाद-सम्बन्धी विचारधाराएँ लोकायत-दर्शन के जन्म के पहले और बाद भी किसी-न-किसी रूप में जीवित रही हैं।[3] लोकोक्तियाँ भी इस दर्शन को पुष्ट और प्रमाणित करती हैं। उदा०

देहात्मवाद : यह वाद शरीर को सब कुछ मानता है। यह परलोक के बदले इहलोक पर विश्वास करता है। इस दर्शन की दृष्टि में जीवन का उद्देश्य ऐहिक या भौतिक सुख है। संक्षेप में, इस सिद्धान्त का सन्देश है—'खाओ, पीओ और मौज करो।' यथा :

आगे आतमा तब परमातमा ।

पहले आत्मा है, तब परमात्मा है (अर्थात् पहले अपनी चिन्ता होती है, तब भगवान् की)।

पाँच कवर भीतर तब देवता पीतर ।

पाँच ग्रास जब मुँह में पड़ जाते हैं, तब देवता और पितर की चिन्ता होती है।

तन सुखी तऽ मन सुखी ।

मन का सुखी होना शरीर के सुखी होने पर निर्भर करता है ।

लौकिक धनवाद : यह भी लोकायत-दर्शन की एक विचारधारा है। इसके अनुसार ऐहिक या लौकिक धन ही जीवन का श्रेष्ठ प्राप्य है। मनुष्य के सारे सुख-दुःख धन पर ही

---

१. दे० डॉ० उमेश मिश्र : भारतीय दर्शन, पृ० ८३—९६ ।

२. बृहस्पति के सूत्रग्रन्थ में उक्त विचार का आधार-सूत्र इस प्रकार है : 'अर्थकामौ पुरुषार्थौ.....'; 'प्रत्यक्षमेव प्रमाणम् ।'—डॉ० उमेश मिश्र : भारतीय दर्शन, पृ० ८७ पर उद्धृत ।

३. दे० कौषीतकी-उपनिषद्, २।१; जातक, ६।२८६; कामसूत्र, ३।३५।३७; भाष्य : पतंजलि, ७।३।४५ ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निर्भर करते हैं। जो व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होता है, वही जीवन में सभी तरह से पूर्ण माना जाता है। उदा०

गुरू ना गुरूभइया, सबसे बड़ा रुपइया।

न गुरु बड़ा है और न गुरु-भाई। सबसे बड़ा है रुपया।

दरबे से सरबे, जे चहबे से करबे।

द्रव्य से सब कुछ होता है, सारे अभीष्ट कार्य उसी से सम्पन्न होते हैं।

भूखे भजन न होय गोपाला, लेलऽ आपन कंठी माला।

हे गोपाल (ईश्वर)! भूखे रहकर भजन नहीं हो पाता, इसलिए अपनी कण्ठी-माला ले लो।

जब पेट में पड़ल खुद्दी, तऽ सूझे लागल बुद्धि।

जब पेट में 'खुद्दी' (अन्न के कण) पड़ती है, तब बुद्धि को बातें सूझती हैं।

क्षणिकवाद : इस वाद के अनुसार सृष्टि की सारी वस्तुएँ और व्यापार क्षणिक और परिवर्त्तनशील हैं। यह सिद्धान्त लोकचित्त को यथार्थ अनुभूति है। इसी से परिचालित होकर बुद्धदेव ने अपने चार आर्यसत्य के रूप में दुनियः के सामने जीवन और जगत् को क्षणभंगुरता बतलाई।[1] भोजपुरी-क्षेत्र को बौद्धधर्म के प्रसारण की प्रारम्भिक भूमि होने का गौरव प्राप्त है। अतः, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है, अगर भोजपुरी लोकोक्तियों में क्षणिकवाद की परम्परा प्रतिबिम्बित होती है।[2] उदा०

लाल लूगा फाट जाई, चमकल मेट जाई।

लाल साड़ी फट जायगी और चमकना मिट जायगा (अर्थात्, प्रदर्शन व्यर्थ है; क्योंकि उसका आधार क्षणिक है)।

ई नयन के एही बिसेख, यह भी देखा वह भी देख।

इन नयनों की यही विशेषता होती है कि वे यह (सुख) देखते हैं और वह (दुःख) भी देखते हैं।

धर्म :

भोजपुरी क्षेत्र में हिन्दुओं की संख्या अधिक है। इसलिए, हिन्दू-धर्म के विविध पक्षों पर आधारित लोकोक्तियों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक है। नीचे ऐसी ही लोकोक्तियों का अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है।

लोकोक्तियों में धार्मिक जीवन के जिन पक्षों पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उल्लेख हुआ है, वे इस प्रकार हैं :

धर्म, देवता, वेद और ब्राह्मण के प्रति श्रद्धा :

धर्म : धरम करे में जो होखे हानी, तबों ना छोड़ीं धरम के बानी।

धर्म के पालन करने में हानि भी हो, तो भी उसको नहीं छोड़ना चाहिए।

देवता : मान तऽ देव ना तऽ पत्थर।

मानिए तो देव हैं, नहीं तो पत्थर (अर्थात् भक्ति में 'श्रद्धा' महत्त्वपूर्ण है)।

---

१ दे० अंगुत्तरनिकाय, ४।१६।५।

२. डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी भोजपुरी क्षेत्र में प्रचलित 'धरम के सरन में बानी', 'धरम के जै जै कार हो' ऐसी लोकोक्तियों को बौद्धकाल के स्मृति-स्वरूप मानते हैं।—दे० भो० की प्रकृति-परीक्षा, सरस्वती, अक्टूबर, १९३१, पृ० ४३७।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भगवान जेकर मुँह चीरेलन ओकरा दाना भी देलन ।
भगवान् जिसके मुँह को चीरते हैं (अर्थात्, जिसे जन्म देते हैं), उसे अन्न भी (अर्थात्, भोजन) देते हैं ।

राम बिना दुःख कवन हरी, बरखा बिन सागर कवन भरी ।
राम को छोड़कर दुःख और कौन दूर कर सकता है और वर्षा को छोड़कर सागर को कौन भर सकता है ।

राम लागसु अभागा का, अदिमी लाग सुभागा का ।
राम (ईश्वर) अभागे व्यक्ति का ही विनाश करते हैं और मनुष्य सौभाग्यशाली व्यक्ति का । (अर्थात्, मनुष्य के विमुख होने से उतनी चिन्ता नहीं होती है जितनी भगवान् के विमुख होने से) ।

वेद : वेद विदित ना होखे आन, बिना तुला नहि फूटे धान ।
वेद में वर्णित तथ्य अन्य (असत्य) सिद्ध नहीं होते, इसलिए तुला नक्षत्र के आने के पूर्व धान नहीं फूट सकते हैं ।

गुरु : गुरु से कपट, साधु से चोरी; कि घर निरधन, कि घर कोरही ।
गुरु और साधु से छल-कपट करने से व्यक्ति का घर (कुल-परिवार) या तो निर्धन हो जाता है, नहीं तो कोढ़-ग्रस्त ।

गुरु गोसेंइया एके हँउवें ।
गुरु और गोसाईं (भगवान्) एक ही हैं ।[1]

ब्राह्मण : बराह्मन बचन परमान ।
ब्राह्मण-वचन ही प्रमाण है ।

प्रार्थना :

भजन भोजन एकांत भला ।
भजन और भोजन एकान्त में अच्छा होता है ।

राम कहऽ राम कहऽ तोता, राम भजन बिनु खइबऽ गोंता ।
हे तोते ! राम का स्मरण करो, राम-भजन के बिना भवसागर में डूब जाने का भय है ।

राम नाम में आलसी, भोजन में तइयार ।
(वे) राम-नाम लेने में आलस करते हैं, किन्तु भोजन करने के लिए तैयार रहते हैं ।

पूजा और व्रत :

आठ आना पर दुर्गापाठ, सतनारायण सूकी ।
एहू पर जेना सूने तऽ सेहू करम के चूकी ।।
आठ आने में दुर्गापाठ हो जाता है और चार आने में सत्यनारायण भगवान् की कथा हो जाती है, इसलिए इन दोनों पूजाओं से दुःख दूर न हो, तो कर्म का ही दोष मानना चाहिए ।

---

१. तु० "इष्टदेवस्वरूपो यः सच्चिदानन्दविग्रहः ।
शुद्धो बुद्धः प्रमुक्तश्च गुरुरादर्शमानवः ।।"—एक संस्कृत-सूक्ति ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आजु तोहार महतारी खरजिउतिया कइले रहलिहा ।

आज तुम्हारी माता ने निर्जल जीवत्पुत्रिकाव्रत किया था ।

प्र० किसी का महान् संकट से बचना ।

सात रोटी मइया के सत्ताइस रोटी पवनी के ।

देवी (मइया) की पूजा के लिए तो सात रोटियों की आवश्यकता होती है, किन्तु पवनी (घर-गृहस्थी के कार्य में सहायता करनेवाली जातियाँ) के लिए सत्ताईस रोटियों की आवश्यकता होती है ।

प्र० अनावश्यक खर्च में पड़ना ।

उपर्युक्त लोकोक्ति में जिन सात देवियों (माताओं) के लिए सात रोटियों का उल्लेख है, वे हैं : ब्राह्मी या ब्राह्मणी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, ऐन्द्राणी और चामुण्डा या मुण्डिका । इन सप्त मातृकाओं की पूजा विवाह आदि अवसरों पर सबसे पहले होती है । माता की पूजा में रोटी चढ़ाने की विधि अति प्राचीन है ।[1] भोजपुरी क्षेत्र में प्रायः कोहबर-घर में इन माताओं का चित्र दीवार पर लिखा जाता है । यह चित्र चौरेठे और गेरू से बनाया जाता है । इसमें सात माताओं के अतिरिक्त बाँस, कमल-पत्र, पक्षी (मोर और सहेलर), हाथी, सिरमौर, सिंघोरा, कजरौटा, कंघी, सूर्य, चन्द्र और तारे भी अंकित रहते हैं । यह एक परम्परागत और प्रतीकात्मक चित्र है ।[2] इन सात माताओं का उल्लेख ऋग्वेद में भी हुआ है । वहाँ ये सात माताएँ सात बहनों के रूप में वर्णित हैं । ऋग्वेद में कहा गया है : 'सप्त स्वसारो अभिसंनवन्ते' (ऋग्वेद, १।१६४।३) । सुप्रसिद्ध पुरातत्त्ववेता जॉन मार्शल मातृका-पूजन को आर्येतर संस्कृति की देन मानते हैं ।[3]

पर्व-उत्सव :

ब्राह्मण के रच्छा बन्धन, छतरी के दसहरा ।
बैस के देवाली, आ नीच्चन के होली ।।

ब्राह्मण के लिए रक्षा-बन्धन का, क्षत्रियों के लिए दशहरे का, वैश्य के लिए दीपावली का और शूद्रों के लिए होली का अधिक महत्त्व है ।[4]

---

१. आपस्तम्ब श्रौतसूत्र (६।२६।१०) और आश्वलायन गृह्यसूत्र (२।६।१६) में द्यावापृथिवी को आहुति के रूप में रोटी देने का उल्लेख हुआ है ।

२. इस चित्र के विस्तृत वर्णन के लिए देखिए—'भारतीय साहित्य', शोध-पत्र, भटनागर-अभिनन्दन-ग्रन्थ में संगृहीत डॉ० विश्वनाथ प्रसाद का 'कोहबर' शीर्षक निबन्ध, वर्ष ५, अंक १-२, पृ० २६१—२६४ ।

३. दे० धर्मशास्त्र का इतिहास : पी० वी० काणे, पृ० १८७, प्रथम भाग, हिन्दी-समिति, लखनऊ ।

४. (क) सावन की पूर्णमासी के दिन रक्षा-बन्धन होता है । इस दिन पुरुष की दाईं कलाई में और स्त्री की बाईं कलाई में रक्षा (राखी) बाँधी जाती है । जनपदों में बहन भाई की कलाई में रक्षा बाँधती है । पर कहीं-कहीं बहन के बदले ब्राह्मण ही रक्षा-बन्धन करते हैं । इसलिए, इस पर्व के दिन ब्राह्मणों में विशेष उत्साह देखा जाता है ।

(ख) दशहरा आश्विन के शुक्ल पक्ष की दशमी के दिन पड़ता है । दशमी के दिन दुर्गा की मूर्ति जल में विसर्जित की जाती है । कहा जाता है कि दशमी के दिन ही राम ने रावण का वध किया था । सम्भवतः, इसीलिए क्षत्रिय विशेष उत्साह के साथ दशहरा मनाते हैं । कार्तिक अमावस्या को दीवाली का पर्व मनाया जाता है । लक्ष्मी की पूजा इस दिन विशेष रूप से होती है । इसलिए, वैश्य इस पर्व में अत्यधिक रुचि लेते हैं ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तीर्थवास :

आधा पेट खाना, बनारस का रहना ।

आधा पेट भोजन करके भी बनारस में रहना हो, तो वह अच्छा है ।

लरिका ना फरिका चल दोवरिका ।

बाल-बच्चे तो हैं नहीं, इसलिए चलो द्वारकाधाम ।

१. ९. लोक-विश्वास-सम्बन्धी

सामाजिक जीवन को प्रभावित करनेवाली प्रेरणाओं में लोक-विश्वासों का महत्त्वपूर्ण स्थान है । इनमें लोक-समुदाय की जीवन, जगत् और अदृश्य शक्ति-सम्बन्धी धारणाएँ संचित रहती हैं । ये धारणाएँ समाज के सांस्कृतिक दृष्टिकोणों, जीवन के मूल्यों और साहित्य तथा अन्य कलाओं को प्रभावित करती हैं ।

मनुष्य के आदिम संस्कार ही लोक-विश्वासों के जन्म और विकास के मुख्य कारण हैं । आरम्भ में ज्ञान-विज्ञान के अभाव में मनुष्य ने अदृश्य शक्तियों की विविध रूप में कल्पना की । लोक-समुदाय कालान्तर में भी संस्कारों से बँधे होने के कारण लोक-विश्वासों के प्रति तर्कशून्य श्रद्धा रखता आया है । इन लोक-विश्वासों से सामान्यतः मानव के मनुष्य, प्राकृतिक जगत् और अदृश्य शक्तियों के साथ स्थापित सम्बन्धों पर प्रकाश पड़ता है ।

लोक-विश्वासों के अनेक रूप और प्रकार हैं । इसलिए, इनका एक सर्वसम्मत वर्गीकरण कठिन सिद्ध हुआ है । प्रस्तुत अध्ययन के लिए लोकोक्तियों में वर्णित लोक-विश्वास-सम्बन्धी विषय-वस्तु को दो वर्गों के अन्तर्गत विभक्त किया गया है : (अ) शकुन और (आ) अदृश्य-शक्ति-सम्बन्धी विश्वास और अनुष्ठान ।

(अ) शकुन :

'शकुन' के व्यापक अर्थ के अन्तर्गत मनुष्य की शुभ-अशुभ प्राणी, स्थिति, व्यापार और वस्तु-सम्बन्धी धारणाएँ परिगणित की जा सकती हैं । किसी कार्य को प्रारम्भ करते हुए मनुष्य उसकी सफलता और असफलता के सम्बन्ध में अधिक जिज्ञासु रहता है । फलस्वरूप, ऐसे अवसरों पर वह 'शकुन-विचार' अपेक्षाकृत अधिक करता है ।

फल की दृष्टि से शकुन दो प्रकार का होता है : शुभ और अशुभ । स्रोत की दृष्टि से शकुन पाँच प्रकार का होता है : (क) मनुष्य के आकार-प्रकार, स्थिति और आंगिक चेष्टाओं पर आधारित, (ख) जीव-जन्तुओं की चेष्टाओं पर आधारित, (ग) काल—वार पर आधारित, (घ) द्रव्यों पर आधारित और (ङ) संख्याओं पर आधारित ।

(क) मनुष्य के आकार-प्रकार, स्थिति और आंगिक चेष्टाओं पर आधारित :

१. आकार-प्रकार :

जेकरा आँख ना, ओकरा साख का ।

जिसे आँख नहीं है, उसका विश्वास क्या ?

जेकरा छाती बार ना, ओकरा एतवार का ।

जिसकी छाती में बाल नहीं होते, उसका विश्वास नहीं करना चाहिए ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जेकर मौगी दँतुली, ओकर बड़ भाग रे ।

जिसकी पत्नी दँतुली होती है, वह भाग्यशाली होता है ।

बिरले कान होइहें भलमानुस ।

विरले ही काने भद्रपुरुष होते हैं ।

सिर बड़ा सरदार के, पयर बड़ा गँवार के ।

सरदार का सिर बड़ा होता है और गँवार के पैर ।

सुखे सिहुला दुखे दिनाय ।

सुख में 'सिहुला' (नुकसान नहीं पहुँचानेवाला चर्मरोग) होती है और दुःख में दाद ।

सौ पर फूला हजार पर काना, सवा लाख में एँचाताना ।

एँचाताना कहे पुकार बिलरअँखा से रहिहः होसियार ।।

सौ लोगों के बराबर छल एक फूलीवाली आँखवाले में, हजार लोगों के बराबर छल एक काने में और सवा लाख लोगों के बराबर छल एक एँचाताने (एक आँख खींचकर देखनेवाला) में रहता है । यह 'एँचाताना' भी पुकारकर कहता है कि बिल्ली की तरह आँखवाले से सदा होशियार रहना ।

२. स्थिति :

निपुती के मुँह देखते सात उपवास ।

निपूती के मुँह देखने से सात दिनों तक उपवास रहना पड़ता है ।

सूम के देखला से दिनभर अन्न से भेंट ना होला ।

सूम को देखने से दिनभर अन्न से भेंट नहीं होती है ।

३. आंगिका चेष्टा :

सन्मुख छींक लड़ाई भाखे, पीठ पीछे के सुख अभिलाखें ।

छींक दाहिना धन के नासे, बायाँ छींक सुख सदा प्रकासे ।।

यात्रा के समय सम्मुख छींक लड़ाई का संकेत देती है, पीठ पीछे की छींक सुख पाने का आभास देती है, दाहिने पक्ष की छींक धन के विनाश की घोषणा करती है और बाँयें पक्ष की छींक सदा शुभकारी होती है ।

सूके सोमे बुद्धे बाम, एहि स्वर लंका जीते राम ।

जो स्वर चले सोह पग दीजै, काहे के पण्डित पतरा कीजै ।।

शुक्रवार, सोमवार और बुधवार को नाक के बायें छिद्र से हवा निकलना शुभ होता है ; क्योंकि ऐसा होने पर ही राम ने विजय पाई थी । साथ ही, यात्रा के समय नाक के जिस भाग के छिद्र से हवा चले, उसी भाग के पैर को प्रथम बार उठाने से, पण्डित और पंचांग की सहायता नहीं लेनी पड़ती ।

(ख) जीव-जन्तुओं की चेष्टाओं पर आधारित :

गवन समय जो स्वान, फड़फड़ाय दुइ कान ।

तब तऽ सगुन अकारथ जान ।।

यात्रा के समय अगर कुत्ता अपने कान बजाये, तो शकुन को व्यर्थ समझना चाहिए ।

चलत समय नेउरा मिलि जाय, काग दाहिने खेत सुहाय ।

सफल मनोरथ समझहु भाय ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यात्रा के समय नेवला दीखे और दाहिनी ओर खेत में काग दीखे, तो मनोरथ के पूर्ण होने की आशा हो जाती है।

तीतर के मुँह में लछमीनरायन।

तीतर की बोली में भगवान् विष्णु का निवास है।

परिवा पड़े जो छिपकिली गिरगिट चढ़े जो अंग।
रोग बढ़ावे बेगही, करे शक्ति को भंग॥

प्रतिपदा के दिन अगर छिपकली और गिरगिट शरीर पर गिरे, तो आदमी रोगी होता है और शक्ति नष्ट होती है।

रात के बोले कउवा दिन के बोले सियार; उ गँउवाँ होला उजियार।

वह गाँव उजड़ जाता है, जिस गाँव में कौआ रात में और सियार दिन में बोलता है।

लच्छन एक कुलच्छन चारि, का करिहें घर भूवरि बिलारि।

लक्षण एक है और कुलक्षण चार हैं, इसलिए भूरी बिल्ली के होने से भी क्या हो सकता है? (भूरे रंग की बिल्ली शुभ समझी जाती है)

(ग) **वार पर आधारित :**

बुध कहे मैं बड़ा सयान, मोरे दिन जनि करिहो पयान।
कौड़ी से नहिं भेंट कराऊँ, छेम कुसल से घर पहुँचाऊँ॥

बुध कहता है कि मैं बहुत सयाना हूँ। मेरे दिन को कहीं मत जाइए। जाने पर कौड़ी भी कहीं नसीब नहीं होगी—पर हाँ, कुशलपूर्वक घर अवश्य पहुंच जायेंगे।

मंगल बुध उत्तर दिसि कालू, सोम सनीचर पूरब ना चालू।
जो बिहफे को दक्खिन जाय, बिना गुनाहे पनही खाय॥

मंगल और बुध के दिन उत्तर दिशा की यात्रा नहीं करनी चाहिए, सोमवार और शनिवार को पूरब की ओर नहीं जाना चाहिए। अगर कोई बृहस्पतिवार को दक्षिण की ओर जाता है, तो बिना किसी गलती के वह जूता खाता है।

रबि को पान, सोम को दरपन, मंगर करिये धनियाँ चक्खन।
बुद्ध राई, बिहफे मिठाई, सुक कहे मोहि दही सुहाई।
कहे सनीचर जो घृत पाऊँ काल जीत निमिख मैं लाऊँ॥

रविवार को पान खाना, सोमवार को दर्पण देखना, मंगल को धनिया खाना, बुध को राई खाना, बृहस्पतिवार को मिठाई खाना, शुक्र को दही खाना और शनिवार को घी खाना शुभकारी होता है।

(घ) **द्रव्यों पर आधारित :**

भइँसा लादे लोहिआ खाई, तेकरा पापे परोसिया जाई।

जो भैंसे की सवारी करता है और लोहे के बरतन में खाता है, उसके पाप से पड़ोसी भी नष्ट हो जाते हैं।

सोना के पावल भुलाइल दूनो खराब होला।

सोना का पाना और खोना—दोनों बुरे होते हैं।

(ङ) **संख्या पर आधारित :**

तीन टिकट[1] महा विकट।

---

[1] टिकट < सं० त्रिकट से व्युत्पन्न है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तीन वस्तु या व्यक्तियों का सम्पर्क अशुभ होता है।

तेंतर बेटी राज रजावे, तेंतर बेटा भीख मँगावे।

तेंतर (तीन सन्तानों के बाद होनेवाली सन्तान) बेटी राज-सुख देती है और तेंतर बेटा भीख मँगवाता है।

(आ) अदृश्य शक्ति-सम्बन्धी विश्वास और अनुष्ठान :

लोक-समुदाय दैवी शक्तियों के साथ कई अदृश्य आसुरी शक्तियों में विश्वास रखता है। वह मन्त्र-तन्त्र, पूजा, बलि, टोने-टोटके आदि से इन शक्तियों को वशीभूत करने की चेष्टा करता है। ये उपर्युक्त अनुष्ठान या साधन उद्देश्य के आधार पर तीन प्रकार के होते हैं—(१) संवर्द्धनपरक, (२) संरक्षणपरक और (३) विनाशक। इन अनुष्ठानों का आयोजन या संचालन 'गुनी' या 'ओझा' और डाइन करती है।

निम्नांकित लोकोक्तियों से लोक-समुदाय के उपर्युक्त विश्वासों पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रकाश पड़ता है :

बाप हवन ओझइत माई हई डाइन।

उसके बाप ओझा हैं और माँ डायन।[1]

प्र० सभी परिस्थिति में सुविधा होना।

भइल लरिका मरि मरि जाय, ढींढ़े के ओझाई होखे।

उत्पन्न हुआ लड़का तो मर जाता है और 'ढींढे' (गर्भ) की ओझाई हो रही है।

प्र० निश्चित को छोड़कर अनिश्चित की रक्षा करना।

सँय घर में एक घर डाइनो बकसेले।

सौ घरों में एक घर डाइन भी बकस देती है।

प्र० भक्षक से भी कुछ दया की अपेक्षा करना।

१. १०. स्वास्थ्य-सम्बन्धी

स्वास्थ्य-विज्ञान, आयुर्वेदशास्त्र से सम्बद्ध है। भारतवर्ष में इस विज्ञान की प्राचीन परम्परा रही है। वैदिक सूक्तों में ईश्वर से दीर्घ आयु, सुन्दर स्वास्थ्य और ओषधि प्रदान करने की प्रार्थना की गई है।[2] आयुर्वेद के प्राचीन ग्रन्थ चरकसंहिता में जिन पूर्वकालीन आत्रेय,

---

१. टर्नर (नेपाली डिक्शनरी, पृ० २५७) ने 'डाइन' की व्युत्पत्ति इस प्रकार दी है : डाइन < सं० डाक : पु०, डाकिनी स्त्री० > प्राकृत डाइनि।

२. उदाहरण के लिए ये वैदिक सूक्तियाँ ली जा सकती हैं :

(क) 'विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्।'—ऋग्वेद, १।११४।१।
इस ग्राम में सब नीरोग और हृष्ट-पुष्ट हों।

(ख) 'पश्येम शरदः शतम्।'—यजुर्वेद, ३६।२४।
हम सौ वर्षों तक देखते रहें।

(ग) 'स मा सिञ्चन्त्वापः सर्वा सिञ्चन्तु कृष्टयः सत्यं समष्मान् सिञ्चतु प्रजया च धनेन च। दीर्घमायुः कृणोतु मे।'—अथर्ववेद, ६।१८।६।
जल और कृष्ट ओषधियाँ तथा सत्य हम सबको प्रजा और धन से युक्त करें। वे हमें दीर्घ आयु प्रदान करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अग्निवेश और अन्य आयुर्वेदाचार्यों के नाम स्मृत किये गये हैं, वे स्वास्थ्य-सम्बन्धी चिन्तन की पुरानी परम्परा के द्योतक हैं।[1]

लोक-जीवन में भी स्वास्थ्य-सम्बन्धी चिन्तन की पुरानी परम्परा किसी-न-किसी रूप में सुरक्षित है। सामान्य लोग प्रसंगानुसार स्वास्थ्य-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ दुहराते हैं। स्पष्टतः, इन लोकोक्तियों में आयुर्वेदशास्त्र की गम्भीर चर्चा के बदले, स्वास्थ्य के विभिन्न पक्षों पर सामान्य रूप से विचार किया गया है।

लोकोक्तियों में वर्णित स्वास्थ्य-विज्ञान को विषय-वस्तु के आधार पर निम्नांकित वर्गों में विभक्त किया जा सकता है : (अ) रोग, (आ) संयम, (इ) औषध।

(अ) रोग :

शारीरिक सुख पर ही जीवन के अन्य सुख निर्भर करते हैं। इस सुख के दो महान् शत्रु हैं—चिन्ता और रोग। एक का कारण मानसिक असन्तुलन है। दूसरे अशुचि के कारण हैं—अशुचि आहार-विहार और रोग के कीटाणु। लोकोक्तियों में रोग और उनके कारणों पर इस प्रकार विचार किया गया है :

तन सुखी तऽ मन सुखी।
तन सुखी रहता है, तो मन भी सुखी रहता है।

गेयान बढ़े सोच से, रोग बढ़े भोग से।
चिन्तन से ज्ञान बढ़ता है और भोग से रोग।

पेट भारी तऽ माथ भारी।
पेट भारी रहता है, तो सर भी भारी हो जाता है।

बोखार के जरि खाँसी, लड़ाई के जरि हाँसी।
खाँसी बुखार की जड़ है और हँसी लड़ाई की।

रई के पानी बेलकूरि के धूरि, कहे बेवाय घर केतनी दूर।
रई (एक नदी) के पानी और बेलकूर (रेहवाली भूमि पर स्थित गोरखपुर-जनपद का एक गाँव) की धूलि लगने से पैर में ऐसी बिवाई होती है कि यात्रा के समय कष्ट से व्याकुल हो कर आदमी सदा गन्तव्य की शेष दूरी की चिन्ता करता है।

सूखे सिहुला दुखे दिनाय करम फूटे तऽ फाटे बेवाय।
सुख में सिहुली (एक चर्मरोग) होती है, दुःख में दाद होता है और भाग्य खराब होता है, तो बिवाई होती है।

दम्मा जाय, दम के साथ।
दमा प्राणवायु के साथ ही, अर्थात्, मृत्यु के साथ ही जाता है।

पुरवा बहल, सूखलो घाव फफदल।
पुरवा हवा चली, अब सूखा घाव भी फफद गया।

(आ) संयम :

संयम, उपचार से भी बढ़कर होता है। आहार और रहन-सहन में व्यतिक्रम और दोष आ जाने से रोग के लक्षण प्रकट होते हैं। चरक ने कहा : 'आहार प्राणियों के बल, वर्ण और

---

१. दे० चरकसंहिता, १।३०-३४।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओज का मूल है।'[१] इसलिए, मनुष्य अपने खान-पान और दैनिक व्यापारों में संयम बरते, तो वह शायद ही बीमार पड़े।[२]

स्वास्थ्यप्रद और अस्वास्थ्यप्रद आहार और रहन-सहन पर प्रकाश डालनेवाली लोकोक्तियाँ ये हैं :

(क) आहार :

जइसन खाये अन्न, ओइसन होखे मन।
आहार मन की प्रवृत्ति को भी प्रभावित करता है।[३]

रहे निरोगी जो कम खाय, काम न बिगरे जो गम खाय।[४]
जो कम खाता है, वह नीरोग रहता है और जो सहनशील होता है, उसका कोई काम नहीं बिगड़ता है।

अल्पाहारी सदा सुखी।
कम खानेवाले सदा सुखी रहते हैं।

कुआर करइला, चइत गुड़, सावन साग न खाय।
कौड़ी खरचे गाँठ की, रोग बिसाहन जाय॥
क्वार में करैला, चैत में गुड़ और सावन में साग नहीं खाना चाहिए। क्योंकि इससे गाँठ के पैसे भी खर्च होते हैं और रोग भी मोल लेना पड़ता है।[५]

गइल मरद जे खाय खटाई, गइल नारि जे खाय मिठाई।
खटाई खानेवाले पुरुष और मिठाई खानेवाली स्त्रियाँ—दोनों रोगी हो जाते हैं।

पानी पीजै छान, गुरु कीजै जान।
पानी छानकर पीना चाहिए और गुरु समझ-बूझकर बनाना चाहिए।

बासी पानी जो पिये, जो नित हर्रे खाय।
मोटी दतुअन जो करे, ता घर बैद न जाय॥
जो बासी पानी पीता है, प्रतिदिन हर्रे खाता है और मोटी दातुन का व्यवहार करता है, उसके घर वैद्य नहीं जाता है (अर्थात्, वह नीरोग रहता है)।

पेट बिगाड़े मूढ़ी, घर बिगाड़े बूढ़ी।
मूढ़ी पेट बिगाड़ती है और बूढ़ी स्त्रियाँ घर।

---

१. चरकसूत्र, २७।३४६।

२. 'तेषां संशोधनसंशमनाहाराचाराः सम्यक् प्रयुक्ता निग्रहहेतवः।' (सम्यक् प्रकार से प्रयुक्त किये गये संशोधन, संशमन, आहार और विहार रोगों का निग्रह करते हैं।)
—सुश्रतसंहिता, २।२७।

३. तु० 'आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः।'—छान्दोग्योपनिषद्, ७।२६।२।
आहार शुद्ध होने पर सत्त्व शुद्ध होता है।

४. तु० 'अनारोग्यमनायुष्यमस्वर्ग्यं चातिभोजनम्।
अपुण्यं लोकविद्विष्टं तस्मात्तत्परिवर्जयेत्॥' —मनुस्मृति, २।५७।
अधिक भोजन करना स्वास्थ्य, आयु, स्वर्ग और पुण्य का नाशक और लोक-निन्दित है। इसलिए, उसे त्याग देना चाहिए।

५. चरक ने भी ऋतु के अनुसार आहार-विहार अपनाने का उपदेश दिया है।—दे० चरकसूत्र, ६।१-२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बासी भात तेवासी माठा, ओ ककरी के बतिया।
आधा रात जुड़ावन आवे, भूइंया सुतावे कि खटिया॥

बासी भात खाकर, तीन दिनों का बासी मट्ठा और ककड़ी की बतिया खाने से आधी रात में जूड़ी आती है। इससे आदमी या तो भूमि पर सोता है (मर जाता है), नहीं तो खाट पर पड़ा रहता है।

(ख) रहन-सहन :

खाइ के परि रहु, मारि के टरि रहु।

खाकर पड़ रहना चाहिए (आराम करना चाहिए) मारपीट करने के बाद टल जाना चाहिए।

खा के मूतीं, सूती बाँव, काहे के बैद बसावऽ गाँव।

अगर भोजन करने के बाद पेशाव किया जाय और बाईं ओर करवट करके सोया जाय, तो गाँव में वैद्य को बसाने की क्या आवश्यकता है ?

चइत सूते भोगी, कुवार सूते रोगी।

चैत में भोगी सोता है और कुवार में रोगी।

जेठ मास में जे नर सोए, सेकर जर असाढ़ में रोए।

जेठ के महीने में सोनेवाला आदमी आषाढ में रोता है।

देखा देखी ठाने जोग, छीजे काया, बाढ़े रोग।

किसी की देखादेखी जो योगाभ्यास करता है, उसका शरीर क्षीण होता है और रोग बढ़ता है।

प्रातकाल जे रोज नेहाय, तेकरा देखि बैद पछिताय।

जो प्रातःकाल उठकर स्नान करता है, उसको देखकर वैद्य पछताता है, अर्थात् वह कभी रोगी नहीं होता है।

पहिला पहर में सभ कोई जागे, दोसरा पहर में रोगी।
तीसरा पहर में चोरवा जागे, चउथा पहर में जोगी॥

पहले प्रहर में सभी जगते हैं, दूसरे में रोगी जगता है, तीसरे में चोर जगता है और चौथे में योगी।

(इ) औषध :

रोग के उपचार के लिए संयम के बाद औषध ही एकमात्र साधन है। किन्तु, रोग और उनके लक्षणों की गतिविधि के अनुसार ही औषध का प्रयोग करना चाहिए। उपयुक्त औषध ही रोग का शीघ्र और सही उपचार करती है। औषध लेने के पहले किसी अनुभवी वैद्य से सलाह लेनी चाहिए। अनुभवी वैद्य के अभाव में रोग पर विजय पाना कठिन है। औषध और वैद्य-सम्बन्धी लोकोक्तियाँ इस प्रकार हैं :

अँवरा, हर्रे, पीपर, चीत, सेंधा नीमक मिलइहऽ मीत।
जर जूड़ी आ खाँसी जाय, सुख से सूते बहुते मोटाय॥

आँवला, हर्रे, पीपर, चीत और सेंधा नमक मिलाकर बनाये गये चूर्ण के सेवन करने से ज्वर, जूड़ी और खाँसी चली जाती है। साथ ही, इससे मनुष्य सुख से सोता है और मोटा होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोंठि सुहागा सोंचर गाँधी, सहिजन के रस गोली बाँधी ।
अस्सी सूर चौरासी बाई, तुरतै अइसे जाय नसाई ।।
सोंठ, सुहागा, सोंचर नमक और हींग मिलाकर सहजन के रस में तैयार की गई गोली के सेवन से अस्सी प्रकार के शूल और चौरासी प्रकार के वायुरोग शीघ्र ही दूर हो जाते हैं।

नीम हकीम खतरे जान ।
अधकचरा हकीम जान के लिए खतरनाक होता है।[1]

नाया हकीम देले अफीम ।
नया हकीम (दवाई के रूप में) अफीम देता है।

१.११. व्यंग्य-विनोद-गर्भित

अधिकांश लोकोक्तियाँ व्यंग्य-विनोद-गर्भित हैं । ऐसी लोकोक्तियों में सामान्यतः असामाजिक आचार-विचार, रहन-सहन, आहार-विहार आदि पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से आक्षेप किया गया है। इन आक्षेपार्थक लोकोक्तियों की भाषा, विशेषतः अन्योक्ति और वक्रोक्तिपरक है।

लोकोक्तिगत व्यंग्यात्मक वक्तव्यों में व्यक्तिगत पूर्वाग्रह, रोष और द्वेष नहीं होता। इनमें सामाजिक आदर्श, व्यवस्था और कल्याण की भावना से प्रेरित होकर असामाजिक विचारों, व्यवहारों और वस्तुओं पर व्यंग्य-विनोद-गर्भित भाषा में आक्षेप किया जाता है। ये लोकोक्तियाँ निर्वैयक्तिक होने के कारण ही श्रोताओं के हृदय पर बहुकालिक प्रभाव डालती हैं।

आक्षेपार्थक लोकोक्तियाँ मनुष्य की प्रायः सभी कमजोरियों पर कुठाराघात करती हैं। शायद ही ऐसा कोई असामाजिक और अनुचित आचार-विचार बचा हो, जिन्हें लोकोक्तियों ने अपने व्यंग्य-बाणों से छिन्न-भिन्न न किया हो। इसलिए, इन लोकोक्तियों के आक्षेप के आधार विस्तृत हैं।

व्यंग्य-विनोद-गर्भित लोकोक्तियों का प्रभाव शुभ और रचनात्मक होता है। अतः, प्रकारान्तर से ऐसी लोकोक्तियाँ समाज-सुधार करने का आकर्षक और उपयोगी साधन हैं।[2] प्रयोक्ता, ऐसी लोकोक्तियों का प्रयोग उदात्त भावना से प्रेरित होकर करता है। श्रोता (व्यंग्य का

---

१. चरक ने भी अनुभवी वैद्य के लक्षणों का सविस्तर विवरण दिया है (चरकसूत्र २।१३४-१३८)। चरक ने मूर्ख वैद्य की सलाह लेने से होनेवाले दुष्परिणामों के सम्बन्ध में कहा है : 'इन्द्र के वज्र के शिर पर गिरने से भी शायद मनुष्य बच जाये, परन्तु मूर्ख वैद्य द्वारा प्रयुक्त औषध से रोगी नहीं बचता। यहाँतक कि रोगी की मृत्यु भी हो सकती है।'—चरकसूत्र, १।१२६।

२. "Many forms of wit and humour have an obvious social-control function. Ridicule of a person may not only induce a sense of inferiority but may deter him from some morally disapproved action. Irony and Sarca Sum may have restraining effects.....it (laughter) may also provide an important means of cormunal control."—Kimball Young : Hand Book of Social Psychology, p. 32, London 1957.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लक्ष्य) भी ऐसी लोकोक्तियों का बुरा नहीं मानता।[1] इसके दो प्रमुख कारण हैं। पहला कारण यह है कि ऐसी लोकोक्तियों द्वारा प्रयुक्त होनेवाला आक्षेप व्यक्तिगत नहीं होता और दूसरा कारण यह है कि लोकोक्तियों का व्यंग्यार्थ सामाजिक आदर्श और व्यवस्था के प्रश्न से सम्बद्ध होता है।

आक्षेपार्थक लोकोक्तियाँ, विशेषतः 'अन्योक्ति' या 'वक्रोक्ति' का सहारा लेती हैं। ऐसा वे सोद्देश्य करती हैं। अप्रिय सत्य कटु होता है। साथ ही, किसी की गलतियों पर सीधा प्रहार करने से उसका परिणाम कटुता या द्वेष का रूप भी धारण कर लेता है। इसलिए, लोकोक्तियाँ प्रायः अप्रस्तुत उपमानों या दृष्टान्तों के माध्यम से अपने कटु वक्तव्य को प्रिय और परोक्ष बनाकर प्रकट करती हैं।

अभिव्यक्ति-शैली के आधार पर व्यंग्य-विनोद-गर्भित लोकोक्तियों को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—१. स्वकीय कथनपरक और २. अतिशयोक्तिपरक। इन दोनों शैलियों की अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं। उपर्युक्त प्रथम वर्ग में उत्तम पुरुष में कहे वाक्य परिगणित हैं। ऐसे वाक्य अनुकरण (कैरीकेचर)-मूलक होते हैं। इनसे व्यंग्य को अपेक्षया चुटीले और नाटकीय ढंग से अभिव्यक्त करने में सहायता मिलती है। उपर्युक्त द्वितीय वर्ग में अतिशयोक्तिपरक वक्तव्य आते हैं। 'अतिशयता' ही निमित्त-भेद से व्यंग्य-विनोद के सभी कारणों के रूप में प्रकट होती है। इसके ही प्रवेश से सभी प्रकार की असंगतियाँ और असामंजस्य उत्पन्न होते हैं। इसीलिए, लोकोक्तियों में अधिकांशतः अतिशयोक्ति के माध्यम से असामाजिक असंगतियों की खिल्ली उड़ाई जाती है।

भोजपुरी लोकोक्तियों में व्यंग्य-विनोद-गर्भित लोकोक्तियों की संख्या अधिक है। इन लोकोक्तियों का व्यंग्यार्थ ही प्रस्तुत कथन होता है। इसलिए, अध्ययन की दृष्टि से इन लोकोक्तियों को इनके प्रयोग के प्रकरणों के आधार पर वर्गीकृत करना समीचीन समझा गया है। नीचे वर्णानुक्रम से लोकोक्तियों के सामान्य प्रकरण और उदाहरण दिये जा रहे हैं।

अन्धानुकरण :

अरब गये मोगल बनि आये, बोले अरबी बानी।
आब आब कहि पिया मोर मुअले, खटिया तर रहे पानी॥

मेरे पति अरब गये। वहाँ से वे मुगल बनकर आये। यहाँ भी वे सभी से अरबी में ही बोलने लगे। एक दिन बीमारी के समय उनके 'आब-आब' (अरबी = पानी) कहकर पानी माँगने से भी उन्हें पानी न मिला और उनकी मृत्यु हो गई। हालाँकि, पानी खाट के नीचे ही रखा हुआ था।

जोलहिन के बेटी के बूबू के साध।

जुलाहिन की बेटी को 'बूबू' (बड़े घर की लड़कियों का सम्मानसूचक सम्बोधन) कहलाने की साध लगी है।

---

१. "It (proverb) speaks not with the cold voice of reason but with the warmth of the full heart, which knows joy and sorrow, can smile and forgive."—Racial Proverbs, Introduction, p. 56.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राँड़ राँड़ एहवाती रोवसु, संग लागल कुँआरो रोवसु ।

राँड़, राँड़ होने के कारण रोती है और विवाहिता, पति से बिछुड़ने के कारण रोती है; किन्तु देखादेखी कुमारियाँ भी रोती हैं।

संग लागल लँगड़ो देवाल फानेली ।

दूसरों के साथ (में होने के कारण) लँगड़ी स्त्री भी दीवार फाँदती है।

हँसि लोढ़ा करसु लड़ाई, हमहुँ सम्भुनाथ के भाई ।

लोढ़ा (बट्टा) भी हँसकर यह कहते हुए लड़ाई करता है कि मैं भी शम्भुनाथ (शिव) का भाई हूँ।

अनधिकार चेष्टा :

तीन में कि तेरह में ।

तीनवाले वर्ग में हो कि तेरहवाले वर्ग में ?

दाल-भात में ऊँट के ठेहुन ।

दाल-भात में ऊँट के घुटने की तरह (हैं)।

मुसरी के मुँह में मूसर ना जाई ।

चुहिया के मुँह में मूसल नहीं जा सकता।

असंगत कार्य या स्थिति :

घर के गवरइया मारल जाय, आन घर के खियावल जाय ।

घर की गौरैया मारी जाती है और दूसरे के घर की गौरैये को खिलाया जाता है।

चाम के बेढ़, कुकुर रखवार ।

चमड़े की रस्सी के बन्धन की रखवाली कुत्ता करता है !

तसर पर मूँज के बखिया ।

तसर के कपड़े में मूँज (घास) का बखिया है !

नव के लकड़ी नब्बे खरच ।

नौ रुपये की लकड़ी पर नब्बे रुपये खर्च (हुए)

पाव भर के देवी, नव पाव के पूआ ।

पाव भर की देवी को नौ पाव का पूआ अर्पित किया जा रहा है।

आडम्बर :

ऊँच हवेली फोफड़ बाँस, रिन खासु उ बरहो मास ।

ऊँची हवेली है। उसमें मोटे-मोटे बाँस लगे हुए हैं। किन्तु, वे सालो-भर ऋण लेकर खर्च चलाते हैं।

ओढ़े के आँटे ना भूइयाँ ले सोहरे ।

ओढ़ने भर के लिए तो कपड़े हैं नहीं, किन्तु इच्छा यह है कि कपड़ा जमीन को छूते हुए चले।

बाहर उज्जर धोती, घर अँठुली के रोटी ।

उजली धोती पहनते हैं, किन्तु घर में गुठली की रोटी खाते हैं।

बोली मोरा परेला बबूर तर, घूघ मोरा गिरेला केहुन भर ।

मेरी आवाज बबूल (गाँव की सीमा) तक जाती है, किन्तु मेरा घूँघट हाथ-भर का है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाथ में ना गोड़ में टकही लिलार में।

न हाथ में कोई आभूषण है और न पैर में ही, किन्तु 'टकही' (टके की तरह गोल) टिकुली ललाट पर चिपकी हुई है।

आलस्य :

असकति गिरलन कुइयाँ में, कहलन हम एहिजे ठीक बानी।

जब आलसी कुएँ में गिर पड़े, तब बोले कि रहने दो (अर्थात्, मुझे मत निकालो), मैं यहीं ठीक हूँ।

बाहे के ना बिआए के तीन हाला खाये के।

न तो गर्भ धारण करना है और न बच्चा देना है, केवल तीन बार खाना ही चाहिए।

बिनु पीसा, बिन कूटा ; बिन हाथ परोसल बिनु आगि,
बिनु पानी; मोहे ततले ततले दे।

मैं पीसना, कूटना, परोसना, आग सुलगाना और पानी का इन्तजाम करना नहीं जानता हूँ, किन्तु मुझे गरम-गरम खाना चाहिए।

हाथ के असकत मुँह में मोंछ।

हाथ के आलस्य से मुँह में मूँछ घुस जाती है।

ईर्ष्या :

तेली के तेल जरे मसालची के जीव जाय।

तेल, तेली का जलता है, किन्तु दिल जलता है मसालची का।

दाना खाय आपन लोग कहे दरिदरी।

अन्न तो अपना खाता हूँ, किन्तु लोग मुझे दरिद्र कहते हैं।

राँड़ कहे जे सभ कोई मरो, गाय कहे जे परती परो।

राँड़ कहती है कि सभी मर जायँ और गाय कहती है कि सभी भूमि परती हो जाय।

कंजूसी :

किरपिन के घरे पाहुन अइले, जस बादरि घहराई।
मलकाइन के छाती फाटे कब दुअरा से जाई॥

कृपण के यहाँ अतिथि आया, तो उसे लगा कि सर पर बादल ही टूट पड़ा। मालकिन की छाती फटने लगी। वह सोचने लगी कि अतिथि कब घर से जायगा।

खरच तऽ खरचे सही दे दाल में पानी।

खर्च होगा, तो होने दो। दाल में खूब पानी मिलाओ।

मूस के गोहूँ होई तऽ ना कूट के खाई, ना पूरी पकाई।

चूहे को गेहूँ होगा, तो न वह उसे कूटकर खायगा और न उसकी पूड़ी बनायगा।

समिन पूछे सूम से, काहे बदन मलीन। का गाँठी का गिर पड़ा, का काहू को दीन॥
ना गाँठी का गिर पड़ा, ना काहु कछु दीन। देत लेत पर देखिया, तातें बदन मलीन॥

सूम की स्त्री सूम से पूछ रही है कि मुख मलिन क्यों है? गाँठ की कौन-सी चीज गिर पड़ी है? क्या किसी को कुछ दिया है? सूम उत्तर देता है—गाँठ से कुछ नहीं गिरा है, और न किसी को कुछ दिया है; किन्तु हाँ, मैंने कहीं (रुपये-पैसे की) लेन-देन देखी है, इसी से मुख मलिन है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कायरपन :

जितला के आगा हारला के पाछा ।

विजयी, लोगों के आगे और हारनेवाले, लोगों के पीछे (रहते हैं) !

पत्ता खड़कल कि बन्दा भड़कल ।

पत्ते ज्यों ही खड़कते हैं, त्यों ही बन्दा भाग चलता है ।

हाथ पड़े गिड़गिड़ाय, बेहाथ परे बक-बक ।

हाथ में आने पर (वह) गिड़गिड़ाता है, और हाथ से निकल जाने के बाद बक-बक करता है ।

कृतघ्नता :

जवना पत्तल में खाए के, तवने में छेद करे के ।

जिस पत्तल में खाना, उसी में छेद करना ।

दिदिया दुलार कइली, पीठि पर अंगारी धइली ।

दीदी ने दुलार किया, तो पीठ पर अंगार रख दिया ।

बहरा के खाईं, घर के गाईं ।

बाहर का खाना चाहिए, किन्तु, (उसे) घर का गाना (कहना) चाहिए ।

साँप के दूध पिआईं तब्बो बीखे उगिली ।

साँप को दूध पिलायें, फिर भी वह विष ही उगलेगा ।

छिछोरपन :

आगे कुब्बर, पीछे कुब्बर , हमरा भतार ले के बा सुन्नर ।

(शरीर के) आगे भी कूबड़ है, पीछे भी कूबड़ है, (फिर भी) मेरे पति की अपेक्षा कौन अधिक सुन्दर है ।

कुकुर के पेटे घीव ना पचेला ।

कुत्ते के पेट में घी नहीं पचता है ।

नया गँजेड़ी बँड़ेरी पर धूआँ ।

नया गँजेड़ी, खूब ऊपर धुआँ फेंकता है ।

लंगा नाचे फाटे का ।

नंगा नाचता है, तो उसका फटता ही क्या है ?

छिद्रान्वेषण :

आपन टेंटर ना देखे, आन के फूली निहारे ।

(वह) अपनी आँख का टेंटर (आँख के ढेले पर का उभरा हुआ मांस) नहीं देखता है, किन्तु दूसरों की फूली देखते फिरता है !

चलनी दूसलन सूप के जिनका सहसर गो छद ।

चलनी सूप को दूसती है, जिसके स्वयं सहस्र छिद्र हैं ।

डींग मारना :

थोर करे बालो मियाँ, बहुत करे डफाली ।

'बालो' मियाँ थोड़ा करते (डींग मारते हैं) हैं । उससे अधिक तो उनकी डफली करती है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नानी के आगे ननिअउरे के बखान ।
नानी के आगे ही ननिहाल की बड़ाई !
हमार काका पहलवान हवे ।
मेरे काका पहलवान हैं !

ढोंग करना :

थाकल बैला थाकल आवे, छ ँछ बैला कँहरत आवे ।
थका हुआ बैल थका हुआ (शान्तचित्त होकर) घर लौटता है और कोढ़ी बैल कहरता हुआ आता है ।
बड़ घूघ तनी तकलो चाहीं ।
बड़ा घूँघट हो, किन्तु देखने की भी थोड़ी जगह हो ।
रात बहुरिया चाँचर खेलस, दिन कउवा देख डरास ।
रात में बहू चाँचर खेलती (आनन्द करती) है और दिन में कौआ देखकर डरती है ।

परजीवी :

अनका कमाई पर तेल बुकवा ।
दूसरों की कमाई पर तेल-उबटन (लगाया जाता है) ।
नाचे कूदे बानर, माल मदारी खाय ।
नाचता-कूदता (परिश्रम करता) तो है बन्दर, किन्तु माल उड़ाता है मदारी ।
मँगनी के चनन हऽ, तऽ हमरो चाहीं, अउरी हमरो कको के चाहीं ।
अगर पइसा के हऽ, तऽ लिलार चरचराला ।
मुफ्त का चन्दन है, तो मुझे जरूरत है, साथ ही मेरे चाचा को भी इसकी जरूरत है ; किन्तु इसके खरीदने में पैसे लगेंगे, तब तो चन्दन लगाने से ललाट चरचराता है ।
मुफुत के गंगा, हराम के गोता ।
मुफ्त ही गंगा में स्नान करते हैं और गोता (डुबकी) भी लगाते हैं ।

पेटू होना :

कुटतो फक, पिसतो फक; बबुआ के हाल-हाल करतो फक ।
कूटने के समय भी, पीसने के समय भी और पुत्र को खिलाने के समय भी खाती है ।
खाइल दोसरा के होला, मगर पेट तऽ अपने हऽ ।
खाना दूसरों का मिलता हो, किन्तु पेट तो अपना ही है ।
जब ले पाँड़े दोना लगावसु, तबले पँड़ाइनि सुखले बुकावें ।
जबतक पाण्डेयजी दोना लगाते हैं, तबतक पँड़ियाइन (प्रसाद) को सूखे ही फाँक डालेंगी ।
मोर मन माइ जाने कठवत भर पिसान साने ।
मेरा मन मेरी माँ जानती है, इसलिए वे कठौती-भर आटा गूँधती हैं ।
हाथ गोड़ सिरकी, पेट नदकोला, जे कुछ कमाई से भकोसे के होला ।
हाथ-पैर सिरकी (सींक) की तरह है, पेट नदकोला (बहुत बड़ा) है । इसलिए, जो भी कमाते हैं, चट कर जाते हैं ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मूर्खता :

करिआ अच्छर भइँस बरोबरि ।
काला अक्षर भैंस के बराबर (ज्ञान है) ।
बानर का जाने अदरख के सवाद ।
बन्दर अदरख का स्वाद क्या जानता है ?
भइँसि के आगे बीन बजावे, भइँसि बैठि पगुराय ।
भैंस के आगे बीन बजाना व्यर्थ है ; क्योंकि भैंस तो (सुनने के बजाय) जुगाली करती रहती है ।

पक्कड़पन :

आगे नाथ ना पीछे पगहा ।
आगे न तो नाथ है और न पीछे पगहा (स्वतन्त्र हैं) ।
मेहर ना लरिका चल दोवारिका ।
न पत्नी है और न लड़का है, इसलिए द्वारकापुरी चलो ।
लूट ले आव कूट खा, मोढ़ा ले अँजोर ।
टाँग पसार के सूत रहऽ का ले जइहें चोर ।।
लूटकर लाओ, कूटकर खाओ और लकड़ी का सिरा जलाकर घर में प्रकाश कर लो। इस तरह मस्त होकर सो रहो—चोर ले ही क्या जायेंगे ?

लोभ और चोरी :

चोरवा के मन बसे, ककरी के खेत में ।
चोर का मन हमेशा ककड़ी के खेत में लगा रहता है ।
चोरवा के माई सपने देखे कि बबुआ बरधे ले आव तरे ।
चोर की माँ हमेशा यही स्वप्न में देखती है कि पुत्र बैल (चुराकर) ला रहा है ।
बइठे के कहनी डुडुहियाँ, घुसकत जाली चुहनियाँ ।
(उससे) बैठने को कहा रसोईघर के दरवाजे के पास, किन्तु वह खिसकते-खिसकते चूल्हे के पास चली आती है ।

स्वार्थ :

काम परे मउसी, मोज परे लबार ।
काम निकालना होता है, तो मौसी कहते हैं और निमन्त्रण देने के समय 'लबार' (झूठी) कहते हैं ।
काम भइल दुख बिसरि गइल, दादा हो चहुँपा दऽ ।
काम हो गया, दुःख भूल गया; कहने लगा, ओ दादा ! घर पहुँचा दीजिए ।
गँजेड़ी यार किसके, दम लगाये खिसके ।
गँजेड़ी मित्र किसी के भी नहीं होते । वे दम लगाकर (गाँजा पीकर) खिसक जाते हैं ।
तोर नउजी बिकाय, मोर घलुआ दे ।
तुम्हारी बिक्री हो या न हो, किन्तु मुझे घलुआ दो ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बीली में हाथ तू लगाव मंतर हम पढ़ऽ तानी ।
बिल में तुम हाथ डालो, मैं मन्त्र पढ़ रहा हूँ ।
हमरा किहाँ अइबऽ तऽ का ले अइबऽ ।
तोहरा किहाँ जाइबि तऽ का खिअइबऽ ।।
हमारे यहाँ आओगे, तो क्या लाओगे और मैं तुम्हारे यहाँ जाऊँगा, तो क्या खिलाओगे ।

सामर्थ्य के प्रतिकूल आकांक्षा करना :

देह पर लत्ता ना चल कलकाता ।
शरीर पर वस्त्र नहीं है और कह रहे हैं कि कलकत्ता चलो ।
बड़-बड़ जना दहाइल जास, गदहा पूछे कतना पानी ।
बड़े-बड़े प्राणी तो बहे जा रहे हैं, और गदहा पूछ रहा है कि पानी कितना है ?
बूढ़ गाय सोहराय के साध ।
बूढ़ी गाय को 'सोहराइ' (पशुओं का एक त्योहार) में सम्मिलित होने की साध लगी है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय २

लोकोक्तियों का रूपात्मक अध्ययन

२.० रूपात्मक अध्ययन की सीमाएँ

२.१ शैलीगत

२.१.१ छन्द

२.१.२ अलंकार

२.२ भाषागत

२.२.१.१ पदक्रम

२.२.१.२ पदलोप

२.२.१.३ शब्द-सामर्थ्य

२.२.१.३.१ प्राचीन शब्द-भाण्डार

२.२.१.३.२ नामपद

२.२.१.३.३ संख्यापद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२.०. रूपात्मक अध्ययन की सीमाएँ

लोकोक्ति एक पूर्ण वाक्य भी है, अतः शैली और भाषा के प्रायः सभी तत्त्व लोकोक्तियों के रूप को निर्मित और सुसज्जित करते हैं। शैली और भाषा-विज्ञान की दृष्टि से लोकोक्तियों का अध्ययन अनेक प्रकार से किया जा सकता है। किन्तु, ऐसा अध्ययन उपादेय नहीं है। अतएव, यहाँ लोकोक्तियों का रूपात्मक अध्ययन शैली और भाषा के उन्हीं तत्त्वों की दृष्टि से किया गया है, जो कि लोकोक्ति की अभिव्यंजना को अपेक्षया अधिक विशिष्टता प्रदान करते हैं और जो अपनी सामान्य प्रकृति और प्रवृत्ति से किंचित् भिन्न रूप में लोकोक्तियों में नियोजित रहते हैं। यह अध्ययन इस प्रकार किया गया है :

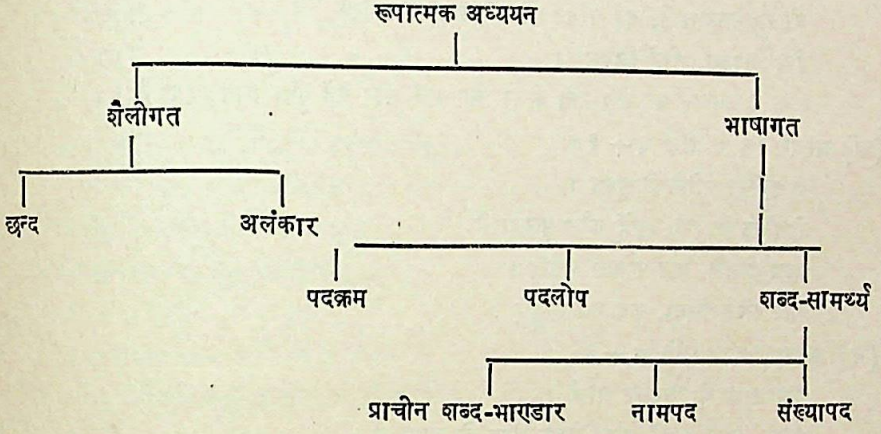

लोकोक्तियों के उपर्युक्त शैलीगत अध्ययन के छन्द और अलंकार—इन दोनों पक्षों में भाषा के क्रमशः रागात्मक तत्त्व (छन्द) और अर्थतत्त्व का समावेश हो जाता है। इस प्रकार, लोकोक्तियों के रूपात्मक अध्ययन में भाषावैज्ञानिक दृष्टिकोण ही प्रमुख रहा है।

२.१ शैलीगत

२.१.१. छन्द :

छन्द, भाषा का रागात्मक तत्त्व है। इसके द्वारा भाषा का सहज और आकर्षक संगीत प्रकट होता है। अनुभूति, छन्दोबद्ध होकर आवेग से भर जाती है। यह आवेग शब्दार्थ को सहज सहृदय-संवेद्य, मर्मस्पर्शी और गूढ बनाता है। यही कारण है कि गद्य की अपेक्षा पद्य, श्रोता के हृदय पर अधिक स्थायी और समन्वित प्रभाव डालता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छन्द, जिन साधनों से राग उत्पन्न करता है, वे हैं—लय, तुक या अनुप्रास, मात्रा और यति। छन्द के सभी मुख्य साधन, भाषा के लिखित और अलिखित, दोनों रूपों में प्रयुक्त होते हैं।

लोकोक्तियों में भी छन्द के विविध साधनों या अंगों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है। छन्द की दृष्टि से भोजपुरी लोकोक्तियों को तीन वर्गों के अन्तर्गत रखा जा सकता है: (अ) छन्दोबद्ध, (आ) लयबद्ध और (इ) लयबद्ध गद्य।

(अ) छन्दोबद्ध :

अधिकांश छन्दोबद्ध भोजपुरी लोकोक्तियाँ मात्रिक हैं। इनमें मात्रा और यति के कई प्रकार के क्रम दीख पड़ते हैं। मुख्यतः इसके दो कारण हैं—एक, लोकोक्तियों का अनेक व्यक्तियों द्वारा उच्चरित होना और दूसरा, परम्परागत शास्त्रीय और लौकिक छन्दों के पूर्ण और आंशिक अनुकरण के आधार पर लोकोक्तियों का छन्दोबद्ध होना। इस प्रकार, छन्द की दृष्टि से लोकोक्तियाँ विविध-रूपा सिद्ध होती है। लोकोक्तियों का यह छन्दोवैविध्य लोकरुचि के अनुसार की गई रागों की मधुर और सुसम्बद्ध योजना का परिचय देता है। नीचे विभिन्न मात्राओं और यतियों में बँधी लोकोक्तियों के उदाहरण दिये जा रहे हैं :

(क) मात्रा १५ : यति ७+८

आप हारे बहु को मारे।

जो खुद हारता है, वह पत्नी को मारता (दोष देता) है।

ईख तिस्सा, गोहूँ बिस्सा।

ठीक से उपजने पर ईख प्रति बीघा तीस मन और गेहूँ बीस मन होता है।

(ख) मात्रा १६ : यति ६+१०

ए छुँछा, तोके के पूछा।

हे रिक्त आदमी, तुम्हें कौन पूछता है!

कब जमले, कब राकस भइले।

कब जन्म लिया, कब राक्षस हुए?

(ग) मात्रा १६ : यति ८+८

आधा साधे, कम्मर बाँधे।

कमर कसने से ही आधा काम सिद्ध हो जाता है।

आवत हाही, जात संतोख।

धन के आने के समय हाय-हाय रहती है, पर उसके समाप्त होते ही सन्तोष हो जाता है।

उतरल घाँटी, होखल माटी।

कण्ठ के नीचे उतरने पर सभी कुछ मिट्टी हो जाते हैं।

(घ) मात्रा १६ : यति ९+७

आदमी न हवे, बागड़ हवे।

वे आदमी नहीं हैं, 'बागड़' (जंगली) हैं।

आन्हर कुकुर, बतासे भूँके।

अन्धा कुत्ता हवा को आवाज सुनकर ही भूँकता है।

एह तीसी में, तेल नइखे।

इस तीसी में तेल नहीं है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ङ) मात्रा १७ : यति ९+८

अकरब मुए ना, छुतिहर फूटे ।

खराब चीजें मरती नहीं हैं और न अछूत (बरतन) फूटते हैं ।

अघाइल बकुला, पोठिया तींत ।

सन्तुष्ट बगुले के लिए 'पोठिया' (एक मछली) भी तीती है ।

एक बोलावे, चौदह धावे ।

एक आदमी के बुलाने पर चौदह आदमी दौड़ते हैं ।

(च) मात्रा १८ : यति ७+११

उलटा साँप, सपहेरिये काटे ।

उलटा साँप ही सँपेरे को काटता है ।

एगो हरें, मय गाँव खोंखी ।

हरें एक है और सारे गाँव को खाँसी है ।

(छ) मात्रा १९ : यति १०+९

आन्हर गइया के, राम रखवइया ।

अन्धी गाय (अर्थात् गरीब) की रक्षा राम ही करते हैं ।

कब पाँड़े मरले, कब भूत भइले ।

पाण्डेयजी कब मरे और कब भूत बने ?

(ज) मात्रा २० : यति १०+१०

आजु मरिली सासु, काल्हि ढरिहैं आँसु ।

सास मरीं आज, रोऊँगी कल !

आन्ही के आगे, बेना के बतास ।

आँधी के आगे, पंखे की हवा !

(झ) मात्रा २१ : यति १०+११

आन्हर गौरइया, भरसाइ में खोंता ।

अन्धी गौरैया, चूल्हे में घोंसला बनाती है ।

ए माई अरजीं, त ए पूता बरजीं ।

(पुत्र) हे माँ ! अर्जन करू; (माँ) हे पुत्र ! क्या मैं उसके लिए तुम्हें मना करती हूँ ।

खाए के रग ना, नहाए के तड़के ।

भोजन पाने की शक्ति तो है नहीं, किन्तु स्नान खूब सुबह ही करेंगे ।

(ञ) मात्रा २२ : यति १०+१२

ए मियाँ एड़े, तऽ हम तोह से टेढ़े ।

ए मियाँ (मैं) अड़ियल हूँ, (उत्तर) तो मैं तुमसे अधिक टेढ़ा हूँ ।

गाय भइँस तोरा, मथन्न बाजे मोरा ।

गाय-भैंस तुम्हारे यहाँ है और मथनी मेरे यहाँ बजती है !

(ट) मात्रा २२ : यति ११+११

कनियां के मांड़ ना, लोकनी के बुनिया ।

वधू को माँड़ भी नसीब नहीं और दाई को बुँदिया-मिठाई दी जा रही है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर करवा कोपीन, भजु राधे गोबीन ।

हाथ में तो करवा और कोपीन है और 'राधा-गोविन्द' भज रहे हैं !

(ठ) मात्रा २३ : यति ११+१२

आधा घर देउकुरि, आधा घर भरसाई ।

आधे घर में देवता रहते हैं और आधे में चूल्हा है ।

आरे जिला घर बा, कवन बात के डर बा ।

आरा जिला घर है, किस बात का डर है ?

(ड) मात्रा २४ : यति १२+१२

अवसर चूकलि डोमिनि, गावे ताल-बेताल ।

अवसर निकल जाने पर डोमिन ठीक से गाना नहीं गाती ।

अपना नीनी सूतल, अपना नीनी जागल ।

अपनी नींद में सोना, अपनी नींद में जगना । अर्थात्, अपनी चिन्ता या धुन में लीन रहना ।

ओढ़े के आंटे ना, भुइँया ले सोहरे ।

ओढ़ने तक के लिए तो उनके पास कपड़ा नहीं है, किन्तु उन्हें इस बात का गर्व है कि उनके कपड़े भूमि को छूते चलते हैं !

(ढ) मात्रा २४ : यति १३+११

आगिल बात पाछ परल, गले उदराछ परल ।

पूर्व की बातें (या रहन-सहन) पीछे पड़ीं, अब तो उनके गले में रुद्राक्ष की माला है (अर्थात् वे सदाचारी बन गये हैं) ।

आम फरे निहुर चले, रेंड़ फरे इतराये ।

आम फलता है, तो झुक जाता है; रेंड़ फलता है, तो इतरा जाता है ।

(ण) मात्रा २५ : यति १३+१२

अकेले चले ना बाट, झारि के बइठे खाट ।

यात्रा में अकेले नहीं जाना चाहिए और खाट झाड़कर बैठना चाहिए ।

एक तावा के रोटी, का छोटी का मोटी ।

एक तवे पर की पकी रोटियों में छोटी-मोटी का क्या हिसाब !

(त) मात्रा २७ : यति १२+१५

अगहन दूना, पूस सवाई, माघ मास घरहू से जाई ।

पानी अगर अगहन में बरसे, तो अन्न दूना, पूस में बरसे, तो सवागुना और माघ में बरसे, तो घर की पूँजी भी मारी जाती है ।

कमती करे गाजा बाजा, जौने लागे तौने राजा ।

थोड़ी जमीन में कई अन्नों को मिलाकर बोने से अगर अच्छी फसल हो जाती है, तो किसान राजा हो जाता है ।

(थ) मात्रा २७ : यति १६+११

आठ कोस पर पानी बदले, दस कोस पर बानी ।

आठ कोस के बाद पानी (का स्वाद) बदल जाता है और दस कोस के बाद बोली बदल जाती है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक तऽ खाय अहीर किहाँ, दोसरे बिना घी के ।

एक तो अहीर के यहाँ भोजन करना है और उसपर भी विना घी का !

(द) मात्रा २८ : यति १४+१४

इडिल मिडिल के छोड़ऽ आस, खुरपी उठाके गढ़ऽ घास ।

मिडिल पास होने की आशा छोड़ दो, खुरपी लेकर घास गढ़ो ।

एने पाकड़ि ओने बर, एके सोझा दूनो घर ।

एक ओर पाकड़ है, दूसरी ओर बरगद है—दोनों घर आमने-सामने हैं ।

(ध) मात्रा ३० : यति १५+१५

ऊँच बड़ेरी फोंका बाँस, रिन खैनी हम बरहो मास ।

घर की बँड़ेरी ऊँची है, बाँस फोंके हैं और सालो-भर ऋण लेकर खाना-पीना हुआ ।

करिआ बाभन गोर चमार, एक संग ना उतरे पार ।

काला ब्राह्मण और गोरा चमार नाव पर बैठे हों, तो पार नहीं उतरना चाहिए ।

(न) मात्रा ३० : यति १६+१४

आधा चितरा राई मुरई, आधा चितरा केराई ।

चित्रा नक्षत्र के पूर्वार्द्ध में राई और मुरई (मूली) और उत्तरार्द्ध में केराव बोना चाहिए ।

जइसन तोर देन दुआरी, ओइसन मोर चरवाही ।

द्वार पर जैसी मजदूरी मिलती है, वैसी ही मेरी मिहनत है (अर्थात्, मजदूरी के अनुसार काम भी है) ।

(प) मात्रा ३१ : यति १७+१४

आन के आटा, आने की घीव, शंख बजावसु बाबा जीव ।

दूसरे का आटा है और दूसरे का ही घी भी है और बाबाजी शंख बजा रहे हैं ।

ऊगे अगस्त बन फूले काँस, अब नाहिं बरखा के आस ।

अगस्त का उदय हुआ, काँस फूले; अब वर्षा की आशा नहीं है ।

(फ) मात्रा ३२ : यति १६+१६

अमवाँ झोर बहे पुरवाई, तब जानहु बरखा ऋतु आई ।

जब आम-वृक्ष को झकझोर देनेवाली पुरवा हवा चले, तब समझना चाहिए कि वर्षा-ऋतु आ गई ।

अहीर मिताई बादर छाई, होखे होखे नाहीं नाहीं ।

अहीर की मित्रता और बादल की छाया का कोई भरोसा नहीं । क्योंकि, ये हो भी सकती हैं और नहीं भी हो सकती हैं ।

आधा कहे से मरद बूझे, सरबस कहे से बरध बूझे ।

आधी बात कहने से मर्द समझते हैं और पूरी बात कहने पर बैल ।

गाइ गाइ का होख बाउर, भूसा कुटले निकली चाउर ।

गा-गाकर क्यों सर दुखा रहे हो । क्या भूसा कूटने से चावल निकल सकता है ?

(आ) लयबद्ध :

बहुत-सी लोकोक्तियाँ ऐसी हैं, जिनमें तुक और निश्चित यति का अभाव है । इनमें मात्रा-सम्बन्धी प्रतिमान का निर्वाह नहीं हुआ है । इसलिए, मात्रा की दृष्टि से इनका वर्गीकरण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नहीं किया जा सकता। किन्तु, ये तुक और निश्चित मात्रा और यति-विधान से मुक्त होकर भी लयात्मक हैं। इनमें प्रयुक्त शब्दों के क्रम और उच्चारण से स्वर-सामंजस्य निर्मित होता है। उदा०

चोरवा के मन बसे ककरी के खेत में।
चोर का मन हमेशा ककड़ी के खेत में लगा रहता है।

जतना मुँह ओतने बात।
जितने मुँह होते हैं, उतनी ही बातें होती हैं।

दाना ना घास, दूनो जूनि खरहरा।
घोड़े को दाना-घास नहीं मिलता, किन्तु दोनों वक्त उसकी मालिश होती है।

लड़े सिपाही, नाँव कपतान के।
लड़ता है सिपाही और नाम होता है कप्तान का।

लयबद्ध लोकोक्तियों में लयात्मकता सामान्यतः तीन साधनों से उत्पन्न हुई हैं—(१) यति, (२) अनुप्रास और (३) पद या वाक्यांश की द्विरुक्ति। उपर्युक्त लयबद्ध लोकोक्तियों के उदाहरण में लोकोक्तियों के वाक्यों के मध्य अल्प विरामचिह्न के द्वारा यति का संकेत कर दिया गया है। अनुप्रास और द्विरुक्ति-जनित लयात्मकता निम्नांकित लोकोक्तियों में द्रष्टव्य है :

(क) **अनुप्रास-जनित लयात्मकता :**

तीन में कि तेरह में।
तीन वर्गवाले में हो या तेरहवाले में ?

देही पर लत्ता ना, पान खाय अलबत्ता।
(उसके) शरीर पर वस्त्र नहीं है, पर वह पान खूब खाता है !

पर मुंडे फरहार।
दूसरे के खर्च पर फलाहार किया जाता है।

(ख) **द्विरुक्ति-जनित : पद की द्विरुक्ति :**

थान हारों तऽ हारों गज भर ना फारों।
पूरा थान हार जाऊँगा तो हार जाऊँगा, किन्तु गजभर फाड़कर नहीं दूँगा।

थाकल बैला थाकल आवे, छूँछ बैला कँहरत आवे।
थका हुआ बैल चुपचाप (खूँटे पर) आता है, किन्तु कामचोर बैल कराहता हुआ आता है।

पेट करे खाँव खाँव, माँगे के टिकुली।
खाने के लिए पास में कुछ नहीं हैं, किन्तु माथे पर लगाने के लिए टिकली चाहिए !

(ग) **वाक्यांश की द्विरुक्ति :**

जोर जर जाला तऽ जर जाला, बाकिर अँइठन ना जरे।
रस्सी जल जाती है, तो जल जाती है; किन्तु उसकी गाँठें नहीं जलतीं।

पंच सँगे नीक, पिया सँगे ना नीक।
पंच के साथ रहना अच्छा, पर पति के साथ नहीं।

बदलो पंच बेबदलो पंच, जइसे मानऽ तइसे पंच।
चाहे तुम मुझे पंच मानो या न मानो, में तो पंच हूँ ही।

भरि सूप मोतियों बिआह, भरि सूप चउरों बिआह।
सूप-भर चावल खर्च करने से और सूप-भर मोती खर्च करने से भी विवाह विवाह ही है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(इ) लयबद्ध गद्य :

लोकोक्तियों का एक वर्ग ऐसा है, जिनमें छन्द तो रहता है, पर उसकी स्थिति का स्पष्टतः भान नहीं होता। कहीं-कहीं ऐसी लोकोक्तियों में छन्दोहीनता का भी आभास होने लगता है। पर, इन लोकोक्तियों को यथार्थ प्रकरण में प्रयुक्त लोकोक्तियों की तरह पढ़ने से इनकी लयात्मकता स्पष्ट हो जाती है। इसका कारण यह है कि प्रयोक्ता प्रायः तीव्र मनोदशा में लोकोक्तियों का प्रयोग करता है। इस प्रकार, प्रयोक्ता की तीव्र मनोदशा और प्रसंग की प्रकृति के कारण लोकोक्तियों के वाक्य आवेग के साथ उच्चरित होते हैं। फलस्वरूप, पूरी लोकोक्ति की दीर्घ लय में लोकोक्ति के विभिन्न पद रागवद्ध हो जाते हैं। इस दृष्टि से यथार्थ बोलचाल में व्यवहृत प्रायः सभी लोकोक्तियों को लयबद्ध मानना चाहिए। किन्तु, छन्दःशास्त्र की दृष्टि से सभी लोकोक्तियों के लिखित रूपों को छन्दोबद्ध नहीं माना जा सकता। बहुत-सी ऐसी लोकोक्तियाँ हैं, जिनमें आंशिक लयात्मकता ही मानी जा सकती है। यथा :

अतीथ ना फकीर, पर पोंगा !

न तो वे अतीथ (भिक्षाटन करनेवाली जाति) हैं, और न फकीर हैं, वरन् निरे मूर्ख हैं !

अपना पेटे सुअरियो जीयेले।

अपने पेट से सूअरी भी जीती है।

ई उ गुड़ ना हऽ जेकरा चूँटा खइहें।

यह वह गुड़ नहीं है, जिसे चीटें खायेंगे।

कलछुलि राखल जाला, हाथ बचावे खातिर।

कलछी, हाथ के बचाव के लिए रखी जाती है।

खउरले बिना भेंड़ बिगरल बाड़ी।

नहीं खोरने के कारण भेड़ बिगड़ गई है।

गइला घर के कवन ठेकाना ?

गये (नष्ट हुए) घर का ठिकाना ही क्या ?

दमड़ी के पान बनियाँइन खासु, कहऽ भाई घर रहे कि जाय !

एक दमड़ी का पान बनियाइन खाती है। हे भाई ! यह तो कहो कि उनका घर रहेगा या जायगा !

बघवा खाइ भा ना, बाकी ओकर मुँह रक्तावन।

बाघ शिकार करे या नहीं करे, पर उसका मुँह हमेशा रक्तवर्ण रहता है (अर्थात्, उससे हमेशा खतरा रहता है)।

बाँड़ी रे तोर अँगने कतना।

हे बाँड़ो, (असहाय स्त्री) तुम्हारे आँगन की लम्बाई-चौड़ाई ही कितनी है !

बूढ़ सुग्गा पोस ना माने।

बूढ़ा तोता पालतू नहीं बनता।

२.१.२. अलंकार

अलंकार अभिव्यंजना के शाश्वत और स्वाभाविक शोभाकर धर्म हैं। ये भाषा के अर्थ और रूप को उत्कर्ष प्रदान करते हैं। विशेषतः, अलंकारों के प्रयोग से वक्तव्य में स्पष्टता,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यंजकता और चारुता आ जाती है। कभी-कभी तो वक्ता या लेखक के कुछ विचार अलंकारों के ही माध्यम से अभिव्यक्त हो पाते हैं।

संसार के सभी लिखित और अलिखित साहित्यों में अलंकारों का प्रयोग प्राचीन काल से ही होता आया है। संसार के प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद में अलंकारों का प्रयोग मिलता है। ऋग्वेद के सूक्तों में विशेषतः उपमा और सामान्यतः रूपक, विरोधाभास, व्यतिरेक, श्लेष आदि अलंकारों के उदाहरण प्राप्त होते हैं।[1] भारतीय काव्यशास्त्र के आरम्भ से ही अलंकार के महत्त्व, परिभाषा, वर्गीकरण, संख्या आदि विषयों पर विचार होता आया है। इससे यह इंगित होता है कि आरम्भ से ही भारतीय शिष्ट और लोक, दोनों साहित्यों में अलंकारों का विशेष स्थान रहा है।

लोकसमुदाय की लोकोक्ति-वार्त्ता में भी अलंकारों का समुचित और सुन्दर प्रयोग हुआ है। संस्कृत के कुछ आचार्यों ने तो लोकोक्ति को एक 'अलंकार' के पद पर आसीन किया है।[2] ऐसा अनुमान है कि 'कुवलयानन्द' के लेखक अप्पयदीक्षित ने पहली बार लोकोक्ति को अलंकार के रूप में प्रतिष्ठित किया। 'कुवलयानन्द' के अनुसार, जहाँ लोकप्रवाद का अनुकरण किया जाय, वहाँ लोकोक्ति अलंकार होता है। किन्तु, लोकोक्ति एक 'अलंकार' से अधिक अभिव्यक्ति की एक ऐश्वर्यपूर्ण विधा के रूप में प्रतिष्ठित है। साहित्य के अन्य अंगों की तरह इसमें भी भावाभिव्यक्ति के लिए अभिव्यंजना की सभी शैलियों का प्रयोग होता है। इन शैलियों में अलंकार का भी एक प्रमुख स्थान है। भोजपुरी लोकोक्तियों में भी अलंकारों का समुचित और पर्याप्त प्रयोग हुआ है। लोकोक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों का अध्ययन संस्कृत-काव्यशास्त्र में वर्णित अलंकारों के सामान्य वर्गीकरण के क्रमानुसार प्रस्तुत किया जा रहा है।

(अ) शब्दालंकार :

(क) अनुप्रास : 'जहाँ वर्णों की समानता या आवृत्ति होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है' (का० प्र०, सूत्र १०४)। नीचे लोकोक्तियों में प्राप्त अनुप्रास के निम्नांकित भेदों के उदाहरण दिये जा रहे हैं :

छेकानुप्रास : 'अनेक वर्णों का एक बार आवृत्तिरूप साम्य छेकानुप्रास है।' उदा०

खेतिहर गइलन घर, दायें बायें हर।

कृषक के घर जाने के बाद उसके खेत की जुताई ठीक से नहीं होती।

गुरु गुरे रहि गइले, चेला चीनी हो गइले।

गुरु गुड़ ही रह गये और चेला चीनी हो गये।

चारि कवर भीतर तब देवता पीतर।

पहले चार ग्रास मुँह में डालने के बाद देवता और पितरों की चिन्ता होती है।

जेकर चून, तेकर पून।

जिसका चूर्ण (अन्न) होता है, उसीका पुण्य भी होता है।

तीनि के तीसी तेरह लागलि, तब तेलिनियाँ पेरे लागलि।

तीन रुपये प्रति मन के हिसाब से खरीदी हुई तीसी जब तेरह पर बिकने लगी, तब तेलिन ने उससे तेल निकालना शुरू किया।

---

१. दे० ऋग्वेद, १।१२४।७ ; ४।५८।३ : १०।७१।४ ; १६४।११।

२. "लोकप्रवादानुकृतिर्लोकोक्तिरिति भण्यते।
सहस्र कतिचन मासान् मीलयित्वा विलोचने॥"—कुवलयानन्दसूत्र, १५७।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रुत्यनुप्रास : 'जहाँ कण्ठ, तालु आदि उच्चारण-स्थानों में से किसी एक ही स्थान से उच्चरित वर्णों की समानता हो, वहाँ श्रुत्यनुप्रास होता है।' उदा०

जाति सुभाव ना छूटे, कुत्ता टाँग उठा के मूते।
जाति-स्वभाव दूर नहीं होता, कुत्ता पैर उठाकर पेशाब करता है।

जेकरा पीठि पर अगरधत के नगारा बाजे से का सूप का भड़भड़ौते भागे।
जिसकी पीठ पर आठ धातुओं से बना बाजा बजता है, वह क्या सूप के बजने से भाग सकता है ?

तीर ना कमान, कहे कि पैठान।
तीर और कमान तो उसके पास है नहीं, फिर भी वह अपने को पठान मानता है।

नकटी के बियाह, हजार जिया जोखिम।
नकटी के विवाह में हजार लोगों पर जोखिम आती है।

असमय पाय बिलरिया रोये, मरल मूस मोर मोटरी टोये।
असमय में पड़कर बिल्ली रोकर कहती है कि मरा-सा चूहा भी मेरी गठरी छूता है।

लाटानुप्रास : 'आवृत्त पद में तात्पर्य-मात्र से भेद होने पर शब्दानुप्रास लाटानुप्रास कहलाता है' (का० प्र०, सूत्र ११२)। उदा०

मैंना जो कहे मैं ना, तऽ दूध भात खाय।
बकरी जो कहे मैंना, तऽ उलटे खाल खिचाय॥
मैंना (पक्षी) 'मैं नहीं' (मुकरने का भाव) कहती है, तो उसे दूध-भात दिया जाता है और बकरी जब मैंना कहती है, तब उसकी खाल खींची जाती है।

पुनरुक्ति : 'भाव को अधिक रुचिकर बनाने के लिए जहाँ एक ही बात को बार-बार कहा जाय, वहाँ पुनरुक्ति होती है।' उदा०

आगे के खेती आगे आगे, पीछे के खेती भागे जोगे।
समय पर की हुई खेती उपज में भी आगे रहती है और समय गुजरने पर की हुई खेती भाग्य या संजोग से ही फलदायी होती है।

आम के आम अँठुली के दाम।
आम के साथ-साथ उसकी गुठली से भी फायदा हुआ।

गुरु के गुरु, बजनियाँ के बजनियाँ।
ये गुरु तो हैं ही, बाजा बजानेवाले भी हैं।

जबलें करी बाबू बाबू तबले चलाईं आपन काबू।
जबतक बाबू-बाबू कहा (खुशामद करने) जाता है, तबतक अपनी ही शक्ति से अभीष्ट की पूर्त्ति की जा सकती है।

गहबर गहबर बाजेला तऽ बड़ा नीक लागेला।
दान दहेज देवे के होला तऽ ऊठा बइठी लागेला॥
लोगों को सुहावना वादन सुनने में बड़ा अच्छा लगता है, किन्तु जब वादक को पैसा आदि देना पड़ता है, तब सभी टालमटोल करने लगते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(आ) अर्थालंकार :

सादृश्यमूलक : उपमा—'उपमान तथा उपमेय का भेद होने पर उनके साधर्म्य का वर्णन उपमा कहलाता है' (का० प्र०, सूत्र १२५) ।

का मूस मोटाके लोढ़ा होइहें ।

क्या चूहा मोटा होकर अब लोढ़ा बनेगा ?

करज के खाइल, पुअरा के तापल, बरोबर होला ।

कर्ज खाना और पुआल जलाकर तापना, समान हैं ।

कुकुर के गोड़े जइहऽ बिलाई के गोड़े अइहऽ ।

कुत्ते की तरह चलकर जाना और बिल्ली को तरह चलकर आना ।

चोर के दिल सरसो बरोबरि होला ।

चोर का दिल सरसों के समान (छोटा) होता है ।

जेकरा हरि अस ठाकुर, ओकरा जम्मु से कवन डर ।

जिसका हरि (भगवान्)-सा स्वामी है, उसको यमराज से क्या डर है ?

दोसरा के सिर कद्दू बरोबरि ।

दूसरे का सिर कद्दू के समान होता है ।

बड़ सोझ तऽ हँसुआ नीयर ।

वे बड़े सीधे हैं, तो हँसुआ के समान हैं !

नेम टेम गोपाल अइसन, हांड़ी चरुई चमार अइसन ।

गोपाल (भगवान्) के समान आचार-विचार हैं, किन्तु हाँड़ो चमार की चरुई (बरतन) के समान है ।

नौकर कुकुर बरोबर ।

नौकर और कुत्ता समान होते हैं ।

बसुला अस मुँह, रुखानी अस गोड़ ।

उनका मुँह बसुले की तरह है और पैर रुखानी की तरह ।

रूपक : 'उपमान और उपमेय का जो अभेद वर्णन है, वह रूपक अलंकार है' (का० प्र०, सूत्र १३९) ।

केहू के पइया ना बूझे के ।

किसी को 'पइया' (एक बीज, जो खेत में नहीं जमता है) नहीं समझना चाहिए। अर्थात्, किसी को कमजोर नहीं मानना चाहिए ।

जेकर बहिन अन्नर, सेकर भाई सिकन्नर ।

जिसकी बहन अन्दर है, उसका भाई सिकन्दर है (अर्थात्, साले की खूब आव-भगत होती है) ।

नौकर का चाकर, मँड़ई का ओसारा ।

नौकर का चाकर, झोपड़ी में ओसारा लगाने के समान है ।

बराम्हन बचन परमान ।

ब्राह्मण-वचन ही प्रमाण है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुरबक के जोरू सभ के भउजाई ।
बेवकूफ की स्त्री सबकी भाभी होती है ।
ई मँझउवाँ के बागड़ हवन ।
ये मझउवाँ (सारन जिले का एक गाँव) के बागड़ (बेवकूफ) हैं !
सहता माल बहता पानी ।
सस्ता माल बहते हुए पानी की तरह है ।
हाथ गोड़ सिरकी, पेट नदकोला ।
हाथ गोड़ सिरकी (सरकण्डे का डण्ठल) है और पेट 'नदकोला' (बड़ा नाद) ।

अतिशयोक्ति : 'जहाँ उपमान के द्वारा उपमेय का निवारण, प्रस्तुत अर्थ का अन्य रूप से वर्णन, 'यदि' के समानार्थक शब्द के द्वारा किया गया काल्पनिक वर्णन और कार्य-कारण के पौर्वापर्य का विपर्यय हो, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है' (का० प्र० सूत्र, १५३) ।

छिकते नाक कटल ।
छींक के आते ही नाक कट गई (अर्थात्, अशुभ घटना हो गई) ।
नउवा देखि हजामति बढ़े ।
नाई को देखते ही हजामत बढ़ जाती है ।

प्रतिवस्तूपमा : 'जहाँ एक ही साधारण धर्म को दो वाक्यों में दो बार कहा जाय, वहाँ प्रतिवस्तूपमा होती है (का० प्र०, सूत्र १५४) ।
भल अदमी के एगो बात, भल घोड़ा के एगो लात ।
भले आदमी को एक बात कहना और भले घोड़े को एक लात मारना (अर्थात्, सही मार्ग पकड़ने के लिए संकेत करना) पर्याप्त है ।
भादो मास कहाँ ना पानी, भइला के के ना कहावे दानी ।
भादो महीने में पानी कहाँ नहीं होता है और धन होने पर कौन नहीं दानी होता है ?

तुल्ययोगिता : 'केवल प्रकृत या केवल अप्रकृत अर्थों का एक धर्म के साथ सम्बन्ध होने पर तुल्ययोगिता अलंकार होता है' (का० प्र०, सूत्र ४९०) । उदा०
कातिक के टूटल बरध, माघ के टूटल मरद—कबहुँ ना जूटसु ।
कातिक का टूटा बैल और माघ का टूटा मर्द, कभी सँभल नहीं सकते ।
गंगा के धार, हाकिम के मन, केहू ना जाने ।
गंगा की धारा और हाकिम के मन की गतिविधि के बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता ।

अर्थान्तरन्यास : 'जहाँ सामान्य अथवा विशेष का उससे भिन्न के द्वारा जो समर्थन किया जाता है, वहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार होता है' (का० प्र०, सूत्र १६५) ।
जाति सुभाव ना छूटे, कुत्ता टाँग उठाके मूते ।
कोई जाति अपना स्वभाव नहीं छोड़ती । कुत्ते हमेशा टाँग उठाकर पेशाब करते हैं ।
भारी रहे भार से, पतुकी फफाई चले ।
भारी चीजें गम्भीरता के कारण शान्त रहती हैं । पतुकी (मिट्टी का छोटा पात्र) में शीघ्र ही उबाल आ जाता है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अप्रस्तुतप्रशंसा : 'प्रस्तुत अर्थ की प्रतीति करानेवाली जो प्रस्तुताश्रया अप्रस्तुत अर्थ की प्रशंसा (वर्णन) है, वह अप्रस्तुतप्रशंसा है' (का० प्र०, सूत्र १५१)।

अप्रस्तुतप्रशंसापरक लोकोक्तियों की संख्या अत्यधिक है। प्रायः लोकोक्तियों के शब्दार्थ एक अन्य अभिप्रेत अर्थ के संकेतक होते हैं। ऐसी लोकोक्ति का शब्दार्थ एक तरह से अप्रस्तुत अर्थ होता है और अभिप्रेत अर्थ ही प्रस्तुत अर्थ होता है। उदा०

अकुताइल कोंहार लकड़ी से खने माटी।
जल्दबाज कुम्हार लकड़ी से मिट्टी खोदता है।
प्रस्तुत अर्थ : ऊबने पर कार्य में मन नहीं लगता है।

अधजल गगरी, छलकति जाय।
आधी भरी गगरी छलकती जाती है।
प्रस्तुत अर्थ : अपूर्ण मनुष्य प्रदर्शन करता है।

अघाइल बकुला पोठिया तींत।
सन्तुष्ट बगुले के लिए 'पोठिया' (मछली) तीती हो जाती है।
प्रस्तुत अर्थ : सन्तुष्ट होने पर प्रिय वस्तु भी अच्छी नहीं लगती।

आपना दुआर पर कुकरो बाघ होला।
अपने दरवाजे पर कुत्ते भी बाघ बनते हैं।
प्रस्तुत अर्थ : दूसरी जगह की अपेक्षा अपने निवास-स्थान पर सभी अधिक शक्ति का अनुभव करते हैं।

कउआ कपूर खइले कहुँ उज्जर होला।
क्या कौआ कपूर खाकर उजला हो सकता है ?
प्रस्तुत अर्थ : स्वभाव और रूप नहीं बदलते।

कहीं सूरज डलिया तरे झँपालन।
कहीं सूरज को टोकरी से ढका जा सकता है ?
प्रस्तुत अर्थ : विशाल और व्यापक वस्तु को छोटे-छोटे साधनों से छिपाया नहीं जा सकता।

कुकुर के पेटे घी ना पचेला।
कुत्ते के पेट में घी नहीं पचता।
प्रस्तुत अर्थ : छिछोरे आदमी के पेट में कोई बात नहीं पचती।

चित्तो तोहार, पट्टो तोहार।
चित्त भी तुम्हारा, पट भी तुम्हारा।
प्रस्तुत अर्थ : किसी भी तरह विजय तुम्हारी ही है।

जानेली चिलम, जेपर चढ़ेनी अंगारी।
उस दुःख को चिलम ही जानती है, जिसपर अंगार चढ़ता है।
प्रस्तुत अर्थ : दुःख भोगनेवाला ही दुःख को समझता है।

पूत माँगे गइली, कोख गँवा के अइली।
पुत्र माँगने गई और गर्भाशय ही गँवाकर आई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रस्तुत अर्थ : किसी तकलीफ के दूर करने के प्रयत्न में उस तकलीफ को दूर करने से मिलनेवाले फल से ही वंचित होना ।

परिकर : 'अभिप्राय-युक्त विशेषणों के द्वारा कथन करना परिकर अलंकार है' (का० प्र०, सूत्र १८३) ।

का ना होई धरनीधर से ।

पृथ्वी को धारण करनेवाले (अर्थात्, भगवान्) क्या नहीं कर सकते ?

नंगा नाचे फाटे का ?

नंगा आदमी नाचता है, तो उसका फटता ही क्या है ?

फूहर के माल सराह सराह खाइल जाला ।

फूहड़ स्त्री की बड़ाई करके उसकी चीजें खाई जाती हैं ।

बाँड़ी रे तोर अँगने कतना ।

हे बाँड़ी ! (असहाय स्त्री) तुम्हारा आँगन आखिर कितना लम्बा-चौड़ा हो सकता है ?

देखली ना सुनलीं, सखरजि हो गइलीं ।

दानशीलता के बारे में उसने न कुछ देखा, न सुना, किन्तु वह दानी हो गई !

परिकंराकुर : 'साभिप्राय विशेष्य-कथन को परिकरांकुर अलंकार कहते हैं ।' उदा०

कुतरू के गेहूँ होइ तऽ का कूट पीस खइहें ?

कुतरू (कुतरकर खानेवाले व्यक्ति का काल्पनिक नाम) को गेहूँ होगा, तो क्या वे उसे कूट-पीसकर खायेंगे ?

घर में ना तागा, अलबेला माँगे पाग ।

घर में तो तागा तक भी नहीं है, पर अलबेला पगड़ी की ही माँग करता है !

जाहाँ जाली खेहो रानी तहाँ ना मिले आग पानी ।

जहाँ खेहो रानी (संहारकारिणी स्त्री का नाम) जाती है, वहाँ आग और पानी भी नहीं मिलता ।

जो भल रहती रूपा, तऽ का पंच लगाइल लूका ।

अगर 'रूपा' (स्त्री) अच्छी रहती, तो लोग क्या कर सकते थे ।

अपह्नुति : 'प्रकृत का निषेध करके जो अन्य की सिद्धि की जाती है, वह अपह्नुति अलंकार कहलाता है' (का० प्र०, सूत्र १४६) ।

आदमी ना हवे बागड़ हवे ।

ये आदमी नहीं हैं, बागड़ (बेवकूफ) हैं ।

ई लइका ना हवे, लइका के पोंछ हवे ।

ये लड़का नहीं हैं, लड़के की पूँछ हैं ।

विरोधमूलक अलंकार :

विरोधाभास : 'वास्तव में विरोध न होने पर भी दो विरुद्धों का कथन करना, विरोधाभास अलंकार है ।' (का० प्र०, सूत्र १६६) । उदा०

अँटका बनिया सौदा करे ।

(उधार देकर) अटक जानेवाला बनिया सौदा देता है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खेती राज रजावे, खेती भीख मँगावे ।

खेती, राज-सुख भी देती है—खेती भीख भी मँगवाती है ।

विभावना : 'कारण का निषेध होने पर भी फल की उत्पत्ति होने पर विभावना अलंकार होता है' (का० प्र०, सूत्र १६२) । उदा०

अबहीं पोखरा खनइबे ना कइल, तबले घरियार डेरा डलले ।

अभी पोखरा खोदा भी नहीं गया है कि घड़ियाल ने आकर डेरा डाल दिया ।

करनी करे नथवाली, लाग जाय चिरकुटही के ।

गलती तो नथवाली करती है, किन्तु नाम लगता है चिरकुट पहननेवाली का ।

करे परपंच, कहावे पंच ।

करते हैं प्रपंच और कहलाते हैं पंच ।

बाप के जनमे ना, पूत गइले पिछवार ।

बाप का तो जन्म हुआ नहीं और पुत्र ही पिछवाड़े गये ।

असंगति : 'जहाँ कार्य-कारणभूत दो धर्मों की किसी विशेषता के कारण भिन्न देश में एक साथ प्रतीति होती हैं, वहाँ असंगति होती है' (का० प्र०, सूत्र १९१) । उदा०

खाले जीभि, लजाले आँखि ।

खाती है जिह्वा और लजाती है आँख ।

घन मारे घनवहिया, हँकड़े लोहार ।

'घनवहिया' घन मारता है, किन्तु हुंकार भरता है लोहार ।

दाता दान करे, भंडारी के पेट फाटे ।

देनेवाला दान करता है और भण्डारी का पेट फटता है ।

विषम अलंकार : 'जहाँ दो वस्तुओं या स्थितियों का बेमेल वर्णन हो, वहाँ विषम अलंकार होता है' (का० प्र०, सूत्र १९४) । उदा०

कहाँ राजा भोज, कहाँ भोजुआ तेली ।

कहाँ राजा भोज और कहाँ 'भोजुआ' तेली !

देवकुरि गइले दूना दुख ।

देवस्थान पर जाने से दुःख और दूना हो गया ।

धर्मो छूटल, तुम्मो फूटल ।

धर्म भी छूटा और तूँबा भी फूट गया ।

सम अलंकार : 'यदि कहीं दो विशेष वस्तुओं का योग्य रूप से सम्बन्ध वर्णित हो, तो सम अलंकार होता है' (का० प्र०, सूत्र १३५) । उदा०

उसरे के देवी कोदो के अच्छत ।

ऊसर की देवी को 'कोदो' का अच्छत अर्पित किया जाता है ।

जइसन बाबा अपने लबार, ओइसन उनकर कुल परिवार ।

जैसे बाबा खुद झूठे हैं, वैसे ही उनके परिवार के लोग भी ।

जइसन लाल चाउर, तइसन दँतनिपोर खनिहार ।

जैसा लाल चावल है, वैसा ही खानेवाला 'दँतनिपोड़' (दाँत निपोरनेवाला) ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जस मनई, तस पनही ।

आदमी के अनुसार ही उसका जूता है ।

नहट देवता के भरनहट पूजा ।

नष्ट देवता की भ्रष्ट पूजा होती है ।

माटी के देवता, तेल के उजियार ।

मिट्टी के देवता के यहाँ तेल का दीया जलाया जाता है ।

शृंखलामूलक :

दीपक : 'जहाँ उपमेय तथा उपमान के धर्मों का एक ही बार ग्रहण या बहुत-सी क्रियाओं में एक ही कारक का ग्रहण होता है, वहाँ दीपक अलंकार होता है' (का० प्र०, सूत्र १५६) । उदा०

अनाड़ी के घोड़ा, सोनार के सोना ना पटेला ।

मूर्ख व्यक्ति का घोड़ा और सोनार का सोना (खरीदने के समय) नहीं पटता है ।

उकुसवनी बाती, खधुकवनी पतोहि—अघसे नाहीं ।

हमेशा उकसाई जानेवाली बाती और तंग की जानेवाली पतोहू—देर तक ठहर नहीं पाती ।

तील गुड़ भोजन, तुरुक मिताई, आगे मीठ, पीछे कड़वाई ।

तिल और गुड़ का भोजन और तुर्क की दोस्ती—दोनों के आरम्भ में मिठास या सुख का अनुभव होता है और बाद में कड़ुआहट का ।

बेटा लोटा बहरे चमकेला ।

बेटा और लोटा—बाहर ही चमकते हैं ।

तर्कन्यायमूलक :

काव्यलिंग : 'हेतु का वाक्यार्थ अथवा पदार्थ-रूप में कथन करना काव्यलिंग अलंकार होता है' (का० प्र०, सूत्र १७४) । उदा०

अइसन दुनिया बाउर, बेटा के पीठा दमादे के जाउर ।

दुनिया (लोग) ऐसी बुरी है कि वह पुत्र को 'पीठा' (मोटी रोटी) देती है और दामाद को मीठा चावल !

ताई दिहलस तेल, बड़ेरी उठल धुँआँ ।

ताई ने तेल दिया है, इसलिए (कड़ाही के तेल का) धुँआँ बँड़ेरी से निकल रहा है !

धाई से पाई ।

जो दौड़ेगा (परिश्रम करेगा), वह (फल) प्राप्त करेगा ।

उपमान : 'उपमान' के व्यापक अर्थ में बिम्ब, दृष्टान्त, प्रतीक, अभिप्राय आदि का भी समावेश हो जाता है । नीचे इसी व्यापक अर्थ में उपमान का प्रयोग किया गया है ।

अधिकांश लोकोक्तियों में प्रयुक्त उपमान, कृषि-प्रधान जीवन और ग्राम-प्रकृति से गृहीत हैं । इसका कारण स्पष्ट है । लोकोक्ति का निर्माता और प्रयोक्ता जन-सामान्य है । इस जन-सामान्य के जीवन का परिवेश खेतिहर और ग्रामीण सभ्यता के द्वारा रूपायित है । ऐसे ही परिवेश का आसंग जन-साधारण को प्राप्त है । इसीलिए, जब कभी सामान्य लोगों को अपने विचारों या धारणाओं को प्रभावोत्पादक और स्पष्ट अभिव्यक्ति देनी होती है, तब वे स्वभावतः

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपमान का चुनाव अपने समीपस्थ और प्रत्यक्ष वातावरण से करते हैं। यही कारण है कि लोकोक्तिगत उपमानों के स्रोत ग्रामीण जनता की आँखों के सामने रहनेवाली वस्तुएँ और घटित होनेवाले व्यापार हैं। सामान्यतः, निम्नांकित वस्तुएँ और व्यापार उपमानों के स्रोत हैं: पालतू और परिचित जीवजन्तु गृह-काज और खेती में व्यवहृत होनेवाली वस्तुएँ, फसलें, सामान्य प्राकृतिक व्यापार, कृषि-कार्य और दैनिक कार्यक्रम। उदा०

अपने घर दिया ना बाती, आन के घर मूसर अस बाती।

अपने घर में दीप नहीं है और दूसरों के यहाँ मूसल-सी बत्ती बालते हैं।

प्र० अपने कर्त्तव्यों के प्रति लापरवाह रहना।

अरकी के पिवइया पोंछिटा में हुँक्का।

विशेष रूप से तम्बाकू पीनेवाला व्यक्ति धोती के पिछले छोर में हुक्का बाँधकर चलता है।

प्र० नई उपलब्धि का प्रदर्शन करना।

आपन अँकवार पूजल आगे बमना के खेत।

उन्होंने अपनी अँकवार (फसल की राशि) से भर ली (इसलिए वे कहते हैं कि) आगे ब्राह्मण का खेत है, अर्थात् दूसरों को फसल काटने को मना करते हैं।

प्र० अपने स्वार्थ की पूर्त्ति के उपरान्त आदर्शवादी बनना।

कदुआ पर सितुहा चोख।

कद्दू पर 'सितुहा' (सीप) तेज चलता है।

प्र० कमजोर को सताना।

खाये के डेढ़ सेर पूरे के पगहा।

खाते हैं डेढ़ सेर और रस्सी बटने का काम करते हैं।

प्र० कार्य के प्रतिकूल फल-प्राप्ति की कामना करना।

गाजर चलेलन न्यौतन सकरकन्द के।

गाजर शकरकन्द को निमन्त्रित करने चला है।

प्र० शक्ति के बाहर काम करना।

जेकर सूखवँन तेकर गाय; उ पापी जे हाँके जाय।

जिसका 'सुखवन' (धूप में सूखने के लिए रखा हुआ अनाज) है, उसीकी गाय भी है। इसलिए, वह पापी है, जो गाय को हाँकता है।

प्र० दूसरों के परस्पर के मामले में दखल देने पर अपमानित होना।

दुबरे बयल के अँड़ुवा में किलनी लागेले।

दुबले या कमजोर बैल के अण्डकोष में कीड़े लगते हैं।

प्र० कमजोर को सताना।

फूँक देबें मड़ई, सलाम भाई खरहर।

झोपड़ी को फूँक दूँगा और 'खरहर' (छावनी) को नमस्कार कर लूँगा।

प्र० सब कुछ छोड़-छाड़कर फक्कड़ हो जाना।

हँसुआ के बियाह में खुरपी के गीत।

हँसुआ की शादी में खुरपी (खुरपे का स्त्रीलिंग) का गीत (गाया जा रहा है)।

प्र० बेमेल कार्य करना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२.२ भाषागत

२.२.१.१ पदक्रम :

लोकोक्तिगत वाक्यों में दो प्रकार के पदक्रम प्राप्त होते हैं : (अ) व्याकरणिक पदक्रम और (आ) अव्याकरणिक पदक्रम।

(अ) व्याकरणिक पदक्रम :

निश्चित व्याकरणिक पदक्रम के अनुसार वाक्य में पहले कर्त्ता, तब कर्म और अन्त में क्रिया का प्रयोग होता है। इस क्रम पर आधारित भोजपुरी लोकोक्तियों की संख्या बहुत कम है। मुख्यतः इसके दो कारण हैं—(१) लोकोक्ति की भाषा व्यावहारिक होती है। साथ ही, लोकोक्ति के वाक्य गद्यबद्ध कम और पद्यबद्ध अधिक होते हैं। व्यावहारिक भाषा में भावावेश या किसी वस्तु या विचार पर अधिक जोर देने के कारण सामान्यतः लिखित भाषा द्वारा गृहीत पदक्रम का, पर-प्रयोग हो जाता है। कभी-कभी जाने या अनजाने वाक्य को लयात्मक बनाने के लिए भी पदक्रम का पर-प्रयोग कर दिया जाता है। (२) भोजपुरी श्लिष्ट योगात्मक भाषा संस्कृत से बहुत प्रभावित है। इस भाषा में भी पद, वाक्य के अन्तर्गत अपने स्थान से अधिक अपने स्वरूप के कारण अभीष्ट अर्थ के संकेतक होते हैं। इसलिए, श्लिष्ट योगात्मक भाषा में, विशेषतः उसकी बोलचाल के रूप में, निश्चित पदक्रम के पर-प्रयोग की प्रवृत्ति को विकसित होने में कोई बाधा नहीं होती।

व्याकरणिक पदक्रम का निर्वाह करनेवाली लोकोक्तियों के उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं :

अँटकल बनियाँ सौदा करे।
अटका (उधार देने के कारण) बनिया सौदा करता है !

अन्हरा सियार के लेखे पिपरे मेवा।
अन्धे सियार के लिए पीपल (की फली) ही मेवा है।

आला पर के धरल, साला के खाइल ना मिले।
दीवार के ताखे पर रखी हुई और साले के द्वारा खाई हुई सामग्री नहीं मिलती है।

ओरी तर के भूत नव पहूत के नांव जानेला।
ओलती के नीचे रहनेवाला भूत नौ पीढ़ियों का नाम जानता है।

एगो रहिला से भरसाइ ना फूटेला।
एक चने से भाँड़ नहीं फूटता है।

भुसहुल के चूअल छव महीना बाद बुझाला।
भुसहुल (भूसा रखने का घर) के चूने का पता छह महीने बाद चलता है।

मियाँजी के दार्‌ही बाह बाहे में गइल।
मियाँजी की दाढ़ी 'वाह-वाह' में ही चली गई।

लजाइल लरिका ढोंढ़ी टोवे।
लजाया हुआ लड़का ढोंढ़ी छूता है।

संगे लागल लँगड़ों देवाल कूदेली।
साथ-साथ 'लँगड़ो' (लँगड़ो स्त्री) भी दीवार फाँदती है !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हँसुआ अपने ओर खिचेला ।
हँसुआ अपनी ओर ही खींचता है ।

(आ) अव्याकरणिक पदक्रम :

कारण : अधिकांश लोकोक्तियों में अव्याकरणिक पदक्रम दीख पड़ता है। इसके कारणों का उल्लेख आरम्भ में कर दिया गया है। यहाँ उन कारणों का सविस्तर और सोदाहरण विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है। पदक्रम के परप्रयोग या पदक्रम-विपर्यय के निम्नांकित कारण हैं—(क) पदप्रमुखता, (ग) प्रयत्नलाघव और (ग) लयपूर्त्ति ।

(क) पदप्रमुखता : बलाघात—वक्ता, भाषा की अपेक्षा विचार पर अधिक ध्यान रखता है। यही कारण है कि वह जिस बात पर जोर देना चाहता है या जिस पद को प्रमुखता देना चाहता है, उसे वाक्य के अन्तर्गत पहले या पीछे प्रकट करता है। इसके फलस्वरूप प्रमुखता या बलाघात-प्राप्त पद, वाक्य में अपने निश्चित स्थान से आगे या पीछे भाग में स्थानान्तरित हो जाते हैं। उदा०

पहिले पीये जोगी, बीच में पीये भोगी, पीछे पीये रोगी ।
पानी भोजन करने के पहले पीता है योगी, भोजन करने के समय पीता है भोगी और भोजन करने के बाद पीता है रोगी ।

पेट बिगाड़े मूढ़ी, घर बिगाड़े बूढ़ी ।
मूढ़ी पेट बिगाड़ती है, बूढ़ी घर बिगाड़ती है ।

जहाँ जाय भूखा, तहाँ पड़े सूखा ।
जहाँ दरिद्र लोगों का आगमन होता है वहाँ अकाल पड़ता है ।

उपर्युक्त लोकोक्तियों में रेखांकित पदों को पर-प्रयोग के द्वारा प्रमुखता दी गई है ।

(ख) प्रयत्नलाघव : लोकोक्ति की भाषा बोलचाल की होती है। यह बोलचाल की भाषा ही वास्तविक या व्यावहारिक भाषा होती है। इसलिए, इसमें प्रयत्नलाघव की प्रवृत्ति के पर्याप्त उदाहरण मिलते हैं । उदा०

जबरा करे जबरई, अबरा करे निआव ।
शक्तिशाली शक्ति का सहारा लेता है और कमजोर न्याय का ।

सरबस दोख हरे बरिआई ।
शक्ति या सामर्थ्य, सभी दोषों को हर लेती है ।

लड़नी आइल ना पेठिया लागल ।
'लड़नी' (लड़ाई करनेवाली स्त्री) नहीं आई, इसलिए हाट भी नहीं लगी ।

उपर्युक्त द्वितीय लोकोक्ति में कर्म पद 'दोख' शुरू में आया है। वक्ता के मन में कर्म के बाद क्रियापद आता है, इसलिए उक्त 'दोख' के बाद क्रियापद 'हरे' प्रयुक्त हुआ है। फलस्वरूप, कर्त्ता 'बरियाई' को सबसे पीछे आना पड़ा। तीसरी लोकोक्ति में 'ना' क्रिया-विशेष का पर-प्रयोग हुआ है। इसका कारण यह भी हो सकता है कि 'ना' के पर-प्रयोग से वक्ता को एक ही 'ना' से 'ना पेठिया लागल' (न हाट लगी) को भी अभिव्यक्त करने में सुविधा हो जाती है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ग) लयपूर्त्ति : कभी-कभी लोकोक्ति का निर्माता या प्रयोक्ता अभीष्ट लय के निर्वाह के लिए लोकोक्ति-गत वाक्यों के निश्चित पदक्रम में व्यतिक्रम ला देता है। उदा०

अदरा धान पुनरबस पइया, गइल किसान जे बोये चिरइया।

धान, अदरा में बोये जाने पर खूब होता है। पुनरबस में बोये जाने पर उसमें दाना कम आता है और पुष्य में बोये जाने पर तो कुछ भी नहीं होता है।

पइसा ना पास, मेला लागे उदास।

पास में पैसे नहीं हैं, इसलिए मेला उदास लगता है।

बामन हाथी ई ना जोहे साथी।

ब्राह्मण और हाथी—साथी की खोज में कम रहते हैं।

भला संग रहबऽ, खइबऽ बीड़ापान,
बुरा संग रहबऽ कटइबऽ दूनो कान।

भले के संग में रहोगे, तो पान का बीड़ा खाओगे और बुरे के संग रहोगे, तो दोनों कान कट जायेंगे।

लोहा के सहताई, सियार गढ़वले टाँगा।

लोहे के सस्ता होने से सियार ने भी टाँगा गढ़वा लिया।

राजा होइबि तऽ खाइबि का ?

राजा बनूँगा, तो क्या खाऊँगा ?

उपर्युक्त लोकोक्तियों में क्रमशः कर्त्तापद 'किसान', कर्मपद 'साथी', 'बीड़ापान', 'कान', और 'टाँगा' प्रश्नवाचक सर्वनामपद 'का', के पर-प्रयोग हैं।

अव्याकरणिक पदक्रम और अर्थबोध : व्याकरणिक पदक्रम के पर-प्रयोग से लोकोक्ति के अर्थबोध में बाधा उपस्थित नहीं होती है। मुख्यतः इसके दो कारण हैं—१. भाषा का श्लिष्ट योगात्मक होना और २. लोकोक्तियों का परम्परागत होना। उक्त प्रथम कारण और उसके पदक्रम पर पड़नेवाले प्रभाव पर पहले विचार हो चुका है। दूसरा कारण भी महत्त्वपूर्ण है। लोकोक्तियाँ, परम्परागत और अधिक प्रयोग होनेवाली विधा हैं। एक बार जिस रूप में लोकोक्ति अभिव्यक्त होकर प्रचलित हो जाती है, प्रायः मामूली हेरफेर के साथ वह उसी रूप में दीर्घ काल तक प्रयुक्त होती रहती है। इसलिए, बहुत दिनों तक और बहुत लोगों द्वारा एक ही रूप में व्यवहृत होते रहने के कारण अव्याकरणिक पदक्रम पर आधारित लोकोक्ति भी अपने उक्त ढाँचे के कारण किसी के लिए भी दुरूह और अपरिचित सिद्ध नहीं होती। संक्षेप में, लोकोक्तियों में प्राप्त अव्याकरणिक पदक्रम के उद्भव और विकास के कारण हैं—वक्ता की मनोदशा और भाषा के श्लिष्ट योगात्मक स्वरूप का होना। और, लोकोक्तियों के इस रूप के बहुकालिक होने का कारण है—उनका एक परम्परागत शैली के रूप में प्रयोक्ता द्वारा मान्यता पाना।

अव्याकरणिक पदक्रम के उदाहरण : लोकोक्तियों में विविध पदों के व्याकरणिक क्रम के पर-प्रयोग के उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं :

(क) कर्त्ता का पर-प्रयोग :

आन के गोड़वा धोवे नउनियाँ, आपन धोवत लजाय।

दूसरों का पैर तो धोती है नाइन, किन्तु अपना पैर धोने में लजाती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आधा तज पंडित, सरबस तजे गँवार ।

पण्डित तो केवल आधा का त्याग करता है और मूर्ख सर्वस्व का ।

परीक पड़ली सहुआइन चढ़ा देली डेढ़ सेरी ।

चसक गई थी सहुआइन, इसलिए खरीदने के समय उसने (एक सेर की जगह) डेढ़ सेर की बाट चढ़ा दी ।

सरबस दोख हरे बरिआई ।

शक्ति, सभी दोषों का हरण कर लेती है ।

सोझिया के मुँह कुकुर चाटे ।

सीधे व्यक्ति का मुँह कुत्ता भी चाट लेता है ।

उपर्युक्त लोकोक्तियों में भिन्नाक्षर पद कर्त्ताकारक के रूप में प्रयुक्त हैं ।

(ख) कर्म का पर-प्रयोग :

(अ) कर्त्ता के पहले :

नाचे कूदे बानर, माल मदारी खाय ।

नाचता-कूदता है बन्दर और माल उड़ाता है मदारी ।

मास-मछरी घरवइया खाय, हतेया लेले पाहुन जाय ।

मांस-मछली खाते हैं घरवाले, किन्तु हत्या का पाप पाहुन (अतिथि) के सर पर चढ़ता है ।

सगरे धड़ सियार खइलस, मूँड़ी के झारल कतहूँ ना गइल ।

सभी धड़ को सियार ने खा लिया, किन्तु सर का हिलाना अभी बन्द नहीं हुआ ।

(आ) क्रिया के बाद :

अनाज खाय आपन लोग कहे दलिद्दर ।

अन्न अपना खाता हूँ, किन्तु लोग मुझे दरिद्र कहते हैं ।

अन्हरा के सूझे बहराइचि ।

अन्धे को बहराइच दीखता है ।

साधे घोड़ी बिअइली पाड़ा ।

शौक में आकर घोड़ी ने पाड़े को जन्म दिया ।

हम कहीं बोअन, गाय कहे परती ।

मैं खेत को बोया हुआ बताता हूँ, किन्तु गाय उसे 'परती' कहती है ।

उपर्युक्त लोकोक्तियों में भिन्नाक्षर पद कर्मकारक रूप में प्रयुक्त हैं ।

(ग) क्रिया का पर-प्रयोग :

(अ) कर्त्ता के पहले :

आई आम कि जाई लबेदा ।

या तो आम ही आयगा, नहीं तो 'लबेदा' (छोटा डण्डा) ही जायगा ।

पेट में पड़ल खुद्दि तऽ उपजे लागल बुद्धि ।

पेट में जब अन्न पड़ा, तब बुद्धि उपजने लगी ।

लदले छव मन, बेचले नव मन ।

लादा छह मन, बेचा नौ मन ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(आ) कर्म के पहले :

बरियार चोर सेन्ही में गावे गीत ।

बलवान चोर सेंध पर गीत गाता है ।

बाप बटोरे गोबर नित, पूत बकसें गोहरउरि ।

बाप प्रतिदिन गोबर बटोरते हैं और पुत्र गोबर के ढेर बख्सते हैं ।

बाहर के लोग खा जासु, घर के लोग गावें गीत ।

बाहर के लोग आकर खा जाते हैं और घर के लोग गीत गाते हैं (भूखे रहते हैं) ।

उपर्युक्त लोकोक्तियों में भिन्नाक्षर क्रियापद कर्म के पहले प्रयुक्त हुए हैं ।

(घ) क्रियाविशेषण का पर-प्रयोग :

(अ) क्रिया के बाद :

लँगटा नाचे तीन तीन बेरिया ।

लंगटा तीन-तीन बार नाचता है ।

सभ अन्न में साँवा जेठ, से भइले धान के हेठ ।

सभी अन्नों में साँवा ज्येष्ठ है, किन्तु वह भी धान के नीचे हो गया ।

हम लरकोरी, तूँ अलवाँति, दुनो परोसा लीहऽ जाँत ।

मैं लरकोरी हूँ, तुम छोटे बच्चोंवाली हो, इसलिए दोनों की थालियों में दबा-दबाकर परोसना ।

उपर्युक्त लोकोक्तियों में भिन्नाक्षर क्रियाविशेषण पदों का पदक्रम की दृष्टि से पर-प्रयोग हुआ है ।

(ङ) प्रश्नवाचक सर्वनाम का पर-प्रयोग :

नंगा नाचे फाटे का ?

नंगा (आदमी) नाचने पर क्या फटता है ?

पूतवो नीक भतरो नीक, किरिया केकर खाँव ?

पुत्र भी प्रिय है, पति भी प्रिय है, किसकी शपथ लूँ ।

रोवे अउरु गावे केकरा ना आवे ?

रोने और गाने किसे नहीं आता है ।

सावन पछवा सींकि डोलावे, बरसत मेघ कवन बिलमावे ।

सावन में सींक डोलने भर तक की पश्चिमी हवा चले, तो मेघ के बरसने से कौन रोक सकता है ?

उपर्युक्त लोकोक्तियों में भिन्नाक्षर प्रश्नवाचक सर्वनामों का पदक्रम की दृष्टि से पर-प्रयोग हुआ है ।

२.२.१.२ पदलोप

'पदलोप' भाषा की विशिष्ट और स्वाभाविक प्रवृत्ति है । इस प्रवृत्ति के कारण व्यावहारिक भाषा में और कभी-कभी वैध भाषा में भी, वाक्य के अन्तर्गत जिन पदों के अर्थ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्य पदों के अर्थ या प्रकरण से ध्वनित हो जाते हैं, उनके शब्दशः प्रयोग नहीं होते। एक तरह से ऐसे प्रयोगों में पद-विलोपन के माध्यम से ही अभिप्रेत अर्थ की व्यंजना होती है।[1]

सामान्यतः, यथानिर्दिष्ट कारणों से 'पदलोप' होता है—(क) किसी विचार या भाव को प्रमुखता देने के लिए या उसे कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त करने के लिए[2] अनावश्यक या त्याज्य पदों का व्यवहार नहीं किया जाता है। (ख) 'प्रयत्नलाघव' या 'मुखसुविधा' से प्रेरित होकर संक्षेप में ही अभीष्ट विचार को प्रकट करने के लिए कुछ फालतू या सहज ही अनुमेय पदों को छोड़ दिया जाता है।[3] (ग) बोलने के समय भावावेश के कारण स्वभावतः कुछ पद अनुच्चरित रह जाते हैं। (घ) वक्तव्य को पद्यबद्ध करने के प्रयत्न में कभी-कभी अभीष्ट लय या मात्रा के ग्रहण में बाधक और साथ ही त्याज्य पदों को छोड़ दिया जाता है। (ङ) 'ज्ञानमूलक या विदग्ध कथन शब्द-बाहुल्य के कारण विनष्ट हो जाता है'।[4] उसे तीक्ष्ण और एकोन्मुख बनाने के लिए गिने-चुने शब्दों का ही सहारा लेना पड़ता है।

उपर्युक्त सभी कारणों से लोकोक्तिगत वाक्यों में 'पदलोप' की प्रवृत्ति दीख पड़ती है। साथ ही, इसी प्रवृत्ति के कारण लोकोक्तियाँ लघुरूपा होकर संयत, सम्यक् और सुन्दर वाणी का सौन्दर्य बिखेरती हैं।

लोकोक्तियों में पदलोप सामान्यतः दो प्रकार का होता है—पूर्ण पदलोप और अपूर्ण पदलोप। पूर्ण पदलोप में व्यक्त पद वाक्य में पूर्णतः अप्रयुक्त होते हैं। अपूर्ण पदलोप में व्यक्त पद वाक्य में एक बार प्रयुक्त हो चुके रहते हैं। लोकोक्तियों में प्राप्त पूर्ण और अपूर्ण पदलोप के उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं।

(अ) पूर्ण पदलोप :

कर्त्ता का लोप : जिन लोकोक्तियों में क्रिया या विशेषण से कर्त्ता का स्पष्ट बोध हो जाता है, उनमें कर्त्ताकारक का लोप हो जाता है।

---

१. "It is important to notice that an impression is often produced not only by what is said expressly, but also by what is suppressed. Suggestion is impression through suppression."

—Otto Jespersen : The Philosophy of Grammar, p. 309.

२. "In..... sayings the usual sentence-construction with subject and finite verb is abandoned in favour of something which may be compared to a Japanese drawing, in which the contours are not completely filled in, the very boldness of such a drawing assists in bringing about an artistic affect by leaving more to the imagination of the beholder."

—Otto Jespersen : The Philosophy of Grammar, p. 312.

३. 'मुख-सुविधा' या 'प्रयत्नलाघव' के कारण भाषा में 'पदलोप' की तरह सर्वनाम और क्रोडीकृत शब्द-व्यापार विकसित हुए। 'क्रोडीकृत शब्द-व्यापार' के सविस्तर विवरण के लिए दे०—पं० किशोरीदास वाजपेयी : हिन्दी-शब्दानुशासन, पृ० २४४-२४५।

४. "By many words wit is exhausted."—Confucious (Racial Proverb, p. xli).

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊगत ऊगे महि भरे, बिसवत ऊगे जाय ।

इन्द्रधनुष, सूर्योदय के समय प्रकट होता है, तो पृथ्वी पर भरपूर वर्षा करता है, और सूर्यास्त के समय उदित होता है, तो अनावृष्टि होती है ।

एने गिरीं तऽ कुइयाँ, ओने गिरीं त खाई ।

मैं इधर गिरता हूँ, तो कुआँ मिलता है और उधर गिरता हूँ, तो खाई ।

खाइबि गोहूँ, ना तऽ रहब एहूँ ।

मैं खाऊँगा तो गेहूँ ही, नहीं तो यों ही (भूखे) रहूँगा ।

घीवो खाइबि तऽ खेसाड़ी के दाल में ।

मैं घी भी खाऊँगा, तो वह भी खेसाड़ी की दाल में ।

धाइ के चलबि ना, हारि के गिरबि ना ।

मैं दौड़कर नहीं चलूँगा, इसलिए थककर नहीं गिरूँगा ।

ना कइली नइहरे सुख, ना देखली पिआ के मुख ।

उसने न मायके में ही सुख किया और न पति का ही मुख देखा ।

उपर्युक्त लोकोक्तियों में जिन कर्त्ताकारकों का लोप हुआ है, वे लोकोक्तियों के शब्दार्थ में भिन्नाक्षर कर दिये गये हैं ।

कर्म का लोप : जहाँ वाक्य के अन्तर्गत बहु प्रयुक्त सकर्मक क्रियापद के द्वारा 'कर्म' की अर्थशः उपस्थिति हो जाती है, वहाँ कर्मपद का लोप हो जाता है । उदा०

आपना गाँवें लागे, आन गाँवें धूआँ ।

आग तो अपने गाँव में लगी हो, किन्तु धुँआँ देखा जा रहा है दूसरे गाँव में ।

आधा साधे, कम्मर बाँधे ।

कमर बाँध लेने से ही आधा कार्य सिद्ध हो जाता है ।

आँखी देखी, साखी पूछी ।

आँख से देखी हुई वस्तु या घटना के लिए साक्षी का पूछना ?

कह सुनाईं कि कर दिखाईं ।

काम के बारे में बोलने या सुनाने से अच्छा है उसे करके दिखलाना ।

तेलिया हरे बेरिया बेरिया, दइबा हरे एके बेरिया ।

तेली बार-बार धन का हरण करता है, किन्तु दैव (ईश्वर) एक ही बार में उस धन का हरण कर लेते हैं ।

पहिले बोए, पहिले काटे ।

जो अन्न को पहले बोता है, वह उसे पहले काटता है ।

उपर्युक्त लोकोक्तियों में जिन कर्मपदों का लोप हुआ है, वे लोकोक्तियों के शब्दार्थों में भिन्नाक्षर कर दिये गये हैं ।

क्रिया का लोप :

(क) मुख्य क्रिया :

एक तऽ भालू, दोसरे कान्ह कुदार ।

एक तो भालू-सा है और दूसरे कन्धे पर कुदाल है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चोर का अँगरिए मीठ ।
चोर के लिए अंगार भी मीठा है ।
जइसन मुरहा लइका, तइसन माला के करधन ।
जैसा मूल नक्षत्र में जनमा लड़का है, वैसी उसकी 'करधनी' (माला) है ।

उपर्युक्त सभी लोकोक्तियों में 'है' मुख्य क्रिया का लोप हुआ है । लोकोक्तियों के शब्दार्थों में 'है' मुख्य क्रियापद भिन्नाक्षर हैं ।

(ख) सहायक क्रिया : मुख्य क्रियापद से जब सहायक क्रियापद का बोध हो जाता है, तब अनावश्यक समझकर उसको छोड़ दिया जाता है । उदा०

आन्हर कुकुर बतासे भूंके ।
अन्धा कुत्ता हवा की आवाज सुनकर भूंकता है ।
उलटा चोर कोतवाल के डाँटे ।
उलटे चोर कोतवाल को ही डाँटता है ।
कवन पूछे भक भवनपुरी में ।
अँधेर नगरी में कौन किसको पूछता है ।
ठग जाने ठगही के भाखा ।
ठग ही ठगी की भाषा जानता है ।
खाली हाथ मुँह में ना परे ।
खाली हाथ मुँह में नहीं पड़ता है ।

उपर्युक्त लोकोक्तियों में सहायक क्रिया 'है' का लोप हुआ है । लोकोक्तियों के शब्दार्थों में 'सहायक क्रियापद' भिन्नाक्षर हैं ।

(ग) संयुक्त क्रिया : जब संज्ञा या कर्म से संयुक्त क्रिया ध्वनित हो जाती है, तब उसका विलोपन हो जाता है । उदा०

आजु बनियाँ काल्हू सेठ ।
आज तक तो बनिया थे, कल सेठ हो गये ।
केकरो भंटा बैरी, अउरु केकरो पन्थ ।
किसी के लिए भण्टा (बैंगन) बैरी होता है और किसी के लिए पथ्य ।
जहँवा जेईं ताहाँ जीमा ।
जहाँ भोजन किया जाता है, वहाँ जिम्मेदारी भी होती है ।
तुरन्त दान, महाकल्यान ।
तुरन्त दान से महाकल्याण होता है ।

उपर्युक्त लोकोक्तियों में जिन सहायक क्रियापदों का लोप हुआ है, क्रमशः वे हैं : 'हो गये', 'होता है', 'होती है' और 'होता है' । इन्हें लोकोक्तियों के शब्दार्थों में भिन्नाक्षर कर दिया गया है ।

कारक-विभक्तियों का लोप : जब वाक्यों दो पदों का पारस्परिक सम्बन्ध विशेष, विभक्तियों के अनुपस्थित रहने पर भी अनुमित हो जाता है, तब विभक्ति या प्रत्यय का लोप हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाता है। बोलचाल के वाक्यों में और विशेषतः लोकोक्तियों में विभक्ति या प्रत्यय-पदों का लोप अधिक होता है।[1] उदा०

कर्म (को)

अहीर बुझाए, से ही मरद।

अहीर **को** जो समझा-बुझा सके, वही मर्द है।

धोबी के बेटी न घरे सुख, ना घाटे सुख।

धोबी की बेटी **को** न घर में सुख मिलता है और न घाट में ही।

करण (से)

छेरी भेंड़िहर चले, बरध बेसाही काहे।

अगर बकरी और भेड़ों **से** हल चलाने का काम हो जाय, तो बैल खरीदे ही क्यों जायँ।

ढेर जोगी मठ के उजाड़।

अधिक योगियों **से** मठ उजड़ जाता है।

अधिकरण (में)

गर परल ढोलक, बजावहीं के पड़ी।

गले **में** ढोलक पड़ा, इसलिए बजाना ही होगा।

जे पंडित का पतरा, से पंडिताइन के अँचरा।

जो पण्डित के पंचांग **में** है, वह पण्डिताइन के आँचल **में** है।

खूँटा के बल पर बछवो कूदेला।

खूँटे के बल **पर**, बछड़ा भी कूदता है।

उपर्युक्त लोकोक्तियों के शब्दार्थों में व्यक्त विभक्तियाँ भिन्नाक्षर कर दी गई हैं।

अव्यय का लोप : लोकोक्तियों में अव्यय-पदों के लोप के पर्याप्त उदाहरण मिलते हैं। मुख्यतः दो अवस्थाओं में अव्यय-पदों का लोप होता है—एक, जबकि अव्यय-पद वाक्य की लयात्मकता के अवरोधक हो जाते हैं और दूसरे, जबकि वाक्यार्थ अव्यय-पदों के बिना भी अन्वित या अनुमित हो जाते हैं।

(क) समुच्चयबोधक संयोजक अव्यय (और)

अकेले चले ना बाट, झार के बइठे खाट।

अकेले राह में नहीं चलना चाहिए **और** खाट को झाड़कर बैठना चाहिए।

असल से खाता ना, कमस्सल से नाफा ना।

असल आदमी से खता नहीं होती है **और** कमअसल से नफा नहीं होता है।

आधा घर देउकुर, आधा घर भरसाई।

आधे घर में देव का निवास है **और** आधे में भट्ठी है।

एगो हर्रे, मय गाँवे खोंखी।

एक हर्रे है **और** पूरे गाँव को खाँसी है।

व्यक्त अव्यय-पद 'और' को लोकोक्तियों के शब्दार्थों में भिन्नाक्षर कर दिया गया है। -

---

१. "It is noticeable that a language which is rich in particles and inflexious tends to drop these as far as possible when it begins to coin proverbs."—Racial Proverbs (Dr. Leionel Gibs; Introduction to the Proverbs of China), p. xli.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ख) आश्रितवाक्यसंयोजक अव्यय :

आरे जिला घर बा, कौन बात का डरबा ।

आरा जिले में घर है, इसलिए किस बात का डर है !

दूइ लबारे बइबे साखी ।

दो झूठ बोलनेवाले इकट्ठे हों, तो उनका देव ही साक्षी है ।

करम में लीखल भेंड़ी के बार, कहाँ से ओढ़बि ऊनी दोसाल ।

कर्म में तो भेड़ का बाल लिखा हुआ है, तो ऊनी दुशाला कहाँ से ओढ़ूँगा ।

उपर्युक्त लोकोक्तियों में क्रमशः 'इसलिए', 'तो' और 'तो' आश्रितवाक्यसंयोजक अव्यय-पदों का लोप हुआ है । शब्दार्थों में ये भिन्नाक्षर कर दिये गये हैं ।

(ग) प्रतिषेधक संयोजक अव्यय :

करे बिगारि, हाथ ना बिगारी ।

बेगार करनी चाहिए, किन्तु हाथ नहीं बिगाड़ना चाहिए ।

घर रही भा जाई, बहरबूँटा गढ़ाई ।

घर रहेगा या जायगा, किन्तु 'बहरबूँटा' (बाजूबन्द) अवश्य बनेगा ।

दाता दान करे, भंडारी के पेट फाटे ।

दान तो दाता करता है, लेकिन पेट फटता है भण्डारी का ।

उपर्युक्त लोकोक्तियों में क्रमशः 'किन्तु' और 'लेकिन' अव्यय-पदों का लोप हुआ है ।[1]

(आ) अपूर्ण पदलोप :

वाक्य में पद या पदों का अपूर्ण लोप भी 'पूर्ण लोप' की तरह मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति—'प्रयत्नलाघव' का सूचक है । 'पूर्ण लोप' और 'अपूर्ण लोप' में प्रमुख अन्तर ये हैं—१. एक में त्याज्य पद पूर्णतः व्यक्त होते हैं और दूसरे में त्याज्य पद एक बार प्रयुक्त होते हैं । २. 'अपूर्ण पदलोप' में एक बार प्रयुक्त हुए पद ही वाक्य में अपेक्षित स्थान पर ध्वनित होते हैं । किन्तु, 'पूर्ण पदलोप' में त्याज्य पद विजातीय पदों से संकेतित होते हैं । अपूर्ण पदलोप के उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं :

कर्त्ता का लोप :

किया बयल तीसे पर बिकइहें कि खूँटे पर तवइहे ।

या तो बैल तीस रुपये में बिकेगा, नहीं तो वह खूँटे पर ही बँधा-बँधा तड़पता रहेगा ।

चोर जइसन हीरा के, वइसने खीरा के ।

हीरे का चोर जैसा होता है, वैसा चोर खीरे का भी होता है ।

जो पुरवा पुरवइया पावे, सूखलि नदिया नाव चलावे ।

पूर्वा नक्षत्र को पुरवैया हवा का साथ मिलता है, तो वह सूखी नदियों में भी नाव चलने लायक पानी बरसा देता है ।

---

१. उपर्युक्त लोकोक्तियों में 'किन्तु', 'परन्तु', 'लेकिन' और 'मगर'—इनमें किसी एक का अध्याहार माना जा सकता है । भोजपुरी में प्रतिषेधक संयोजक अव्यय के रूप में उक्त सभी पदों का व्यवहार होता है । इस सम्बन्ध में डॉ० उदयनारायण तिवारी का कहना है : 'बंगाल में रहनेवाले भोजपुरी लोग बाकी के स्थान पर 'किन्तु' और 'परन्तु' एवं कायस्थ तथा मुसलमान फारसी 'मगर' और फारसी-अरबी 'लेकिन' का व्यवहार करते हैं ।'—भोजपुरी भाषा और साहित्य, पृ० ३०५ ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपर्युक्त लोकोक्तियों के शब्दार्थों में व्यक्त कर्त्ता पदों को भिन्नाक्षर कर दिया गया है।

क्रिया का लोप : जब लोकोक्ति में दो या दो से अधिक कर्त्ताकारकों की एक ही क्रिया होती है, तब एक क्रियापद को छोड़कर शेष का लोप हो जाता है। उदा०

आला पर के धरल, साला के खाइल ना मिले।

आला पर का रखा हुआ नहीं मिलता है और साले का खाया हुआ नहीं मिलता है।

खाई घोड़ा कि रोड़ा।

घोड़ा खायगा या नहीं तो रोड़ा खायगा।

चना चितरा चौगुना, स्वाती गोहूँ होय।

चित्रा नक्षत्र में चना चौगुना होता है और स्वाति नक्षत्र में गेहूँ चौगुना होता है।

चोर मोर घोड़ पानी पिए भोर।

चोर (भोर में पानी पीता है), मोर (भोर में पानी पीता है) और घोड़ा भोर में पानी पीता है।

उपर्युक्त लोकोक्तियों के व्यक्त क्रियापद लोकोक्तियों के शब्दार्थों में भिन्नाक्षर कर दिये गये हैं।

अव्यय का लोप : लोकोक्तियाँ; अव्यय-पदों के प्रयोग में भी मितव्ययी रही हैं। लोकोक्तियों में निषेधवाचक और विभाजक अव्यय पद 'ना' के अपूर्ण लोप के पर्याप्त उदाहरण मिलते हैं। विभाजक होने के कारण 'ना' का प्रयोग दो पदों या वाक्यांशों के मध्य होता है। इसलिए, इस मध्यस्थ 'ना' से ही त्याज्य 'ना' सरलता से ध्वनित हो जाता है। उदा०

आरसी ना फारसी मियाँजी बनारसी।

न तो वे अरबी जानते हैं और न फारसी, फिर भी वे अपने को बनारसी कहते हैं।

करनी ना धरनी, धिया ओठ बिदोरनी।

पुत्री न कुछ करना जानती है और न कुछ रखना जानती है।

दाना ना घासि, दूनों जुनि खरहरा।

घोड़े को न दाना दिया जाता है और न घास दिया जाता है, किन्तु उसपर दोनों वक्त खरहरा अवश्य चलता है।

दुसमन सूते ना सूते दे।

दुश्मन स्वयं न तो सोता है और न दूसरों को सोने देता है।

उपर्युक्त लोकोक्तियों के शब्दार्थों में रेखांकित 'ना' पदों का अपूर्ण लोप हुआ है।

२.२.१.३. शब्द-सामर्थ्य

२.२.१.३.१. प्राचीन शब्द-भाण्डार

प्राचीनकालीन शब्द लोकोक्तियों में विजडित होने के कारण बोलचाल में सुरक्षित रहते हैं। इन शब्दों के गर्भ में इतिहास और संस्कृति के कितने ही भूले-बिसरे प्रसंग छिपे रहते हैं। इसलिए, ऐसे शब्दों का संग्रह और उसका विवेचन, संस्कृति और भाषा के अध्ययन के लिए सर्वथा उपयोगी सिद्ध होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी लोकोक्तियों में भी प्राचीन शब्द-भाण्डार संचित है। इस शब्द-भाण्डार के अधिकांश शब्दों के रूप और अर्थ का विकास हो गया है। नीचे भोजपुरी लोकोक्तियोंमें प्रयुक्त कुछ प्राचीन शब्दों का अध्ययन वर्णानुक्रम से प्रस्तुत किया जा रहा है।

अड़ार[1] : १. चरागाह के लिए छोड़ी गई जमीन; २. मैदान या जंगल; ३. मैदान या जंगल में पशुओं के रहने के लिए बनाई गई पलानी; ४. समूह या राशि।

गइल हुँड़ार तऽ उठल अड़ार।

भेड़िया चला गया, तब टट्टी का दरवाजा खुला।

प्र० हानि हो जाने के बाद उसकी चिन्ता करना।

लो० में 'अड़ार' तीसरे अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

अगरधत्त : १. आठ धातु; २. आठ धातुओं से बना नगाड़ा; ३. लम्बा-तड़ंगा।[2]

जेकरा पीठ पर अगरधत्त के नगाड़ा बाजे, से का सूप के डभडभौवते भागे।

जिसकी पीठ पर अगरधत्त का नगाड़ा बजता है, वह क्या सूप के बजने से भाग जायगा।

प्र० मामूली साधनों से शक्तिशाली को डराने का विफल प्रयत्न करना। लोकोक्ति में अगरधत्त का प्रयोग दूसरे अर्थ में हुआ है। क्रिश्चियन (बि० प्रो०, पृ० ६३) ने इस शब्द की व्युत्पत्ति सं० 'अष्टधातु' से मानी है। अष्टधातुओं में ये धातुएँ परिगणित हैं—सोना, चाँदी, ताँबा, टीन, जस्ता, पीतल, लोहा और इस्पात। इन धातुओं से बना नगाड़ा बहुत मजबूत और आवाज करनेवाला होता है।

आँवा : वह गड्ढा, जिसमें मिट्टी का बरतन पकाया जाता है।

माई के कोख, कोंहार के आँवा, कि तऽ होय भाँड़ा कि तऽ होय झाँवाँ।

माँ के पेट और कुम्हार के आँवे से या तो भाँड़ (माता के अर्थ में सुपुत्र) निकलते हैं नहीं तो झाँवा ही निकलते हैं।

प्र० एक ही स्रोत से अच्छी और बुरी चीजों का निकलना।

यह शब्द सं० 'आपाक' से व्युत्पन्न माना जाता है (सं० हिं० श० सा०, पृ० ७८)। यह प्राचीनकालीन शब्द है। इसका प्रयोग 'आपाकेस्थ.....' के रूप में अथर्ववेद (८।६।१४) में हुआ है।

उकटेरल[3] : १. मिली हुई चीज को अलग-अलग करना; २. खोदना।

रूसल बहुरिया उकटेरल आग, दूनो ठहरल बड़ बा भाग।

रूठी हुई बहू और उलटी-पलटी हुई आग—दोनों ठहर गईं, तो यह बड़े भाग्य की बात होगी।

लोकोक्ति में 'उकटेरल' का प्रयोग दूसरे अर्थ में हुआ है।

---

१. कु० को० (पृ० १२) में 'अड़ार' के पर्यायवाची शब्द अड़ान की व्युत्पत्ति इस प्रकार दी गई है :। आलान, √अड् (उद्यमे) √अल्.....। सं० हिं० श० सा० (पृ० २७) में 'अड़ार' के लिए सं० 'अट्टाल' का निर्देश किया गया है।

२. लम्बा-तड़ंगा अर्थक 'अगड़धत्ता' का शब्दविन्यास सं० हिं० श० सा० (पृ० १७) में इस प्रकार दिया गया है : हि० अगड़+सं० उद्धत।

३. दे० डॉ० उदयनारायण तिवारी : भो० भा० सा०, पृ० २५३, 'उत्केर-उत्किरति.....'।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उढ़रना[1] : स्त्री का पर पुरुष के साथ भागना।

अपना करते उढ़रल जाय, आ कहे कि दइबा उढ़रले जाय।

वह स्वेच्छा से भागी जा रही है, किन्तु कहती है कि ईश्वर मुझे भगा ले जा रहा है।

प्र० अपने अपराधों के लिए दूसरों का दोष देना।

कठवत[2] : परातनुमा लकड़ी का बरतन।

धन मधे कठवत, बंस मधे फूफू।

धन के नाम पर कठवत है, और वंश के नाम पर बुआ हैं।

प्र० सम्पत्ति और परिवार का नष्ट होना।

करवा[3] : एक प्रकार का टोंटीदार लोटा।

जे करवा में रहे, से टोंटी से बहे।

जो करवा में रहता है, वह टोंटी होकर बहता है।

प्र० मन की बात का मुँह से अनायास निकलना।

करवा एक पुराना पात्र है। महाभारत-काल में भी इस पात्र का व्यवहार होता था।[4]

कुप्पा[5] : तेल या घी रखने के काम में आनेवाला चमड़े का पात्र।

साहु बटोरस कौड़ी कौड़ी, राम बटोरस कुप्पा।

साहु कौड़ी-कौड़ी जोड़ता (थोड़ा-थोड़ा कर संग्रह करता) है, किन्तु राम उस एकत्र संग्रह को एक ही बार में कुप्पे में बटोर लेते हैं।

प्र० गलत साधनों के द्वारा एकत्र की गई वस्तु का एक ही बार में नष्ट होना।

कोहबर[6] : घर की वह कोठरी, जहाँ कुलदेवता स्थापित किये जाते हैं और विवाह के बाद पति-पत्नी मिलते हैं।

बड़-बड़ मार कोहबरे बा।

बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ तो कोहबर में होगी।

प्र० कार्य पूरा होने की अन्तिम स्थिति में संकट का होना।

खरिहान[7] : वह स्थान, जहाँ फसल काटकर रखी जाती है और तैयार की जाती है।

---

१. दे० ब्यु० टर्नर, ने० डि०, पृ० ४७, 'सं० उड्डप'; सं० हिं० श० सा०, पृ० ११४, 'सं० ऊढा'; डॉ० उदयनारायण तिवारी, भो० भा० सा०, पृ० १३६, उढ़री (उड्ड—)।

२. दे० ब्यु० टर्नर, ने० डि०, पृ० ६६ 'काष्ठ + पात्र > पत्त (प्राकृत) = कठवत; कु० को०, पृ० ५१. कठ + वत < काष्ठामत्र, काष्ठपात्र।

३. दे० ब्यु० टर्नर, ने० डि०, पृ० ७७ 'सं० करक'।

४. दे० मोनियर विलयम्स : सं० इं० डि०, पृ० २५४, 'करङ्क' शब्द।

५ दे० ब्यु० सं० हिं० श० सा०, पृ० २०६, 'सं० कूपक'; डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल : पाणिनि-कालीन भारतवर्ष, पृ० १४८, सं० 'कुतु'; रामाज्ञा द्विवेदी : अ० को०, पृ० ४७, 'सं० कूपक'।

६. दे० ब्यु० सं० हिं० श० सा०, पृ० २२६, 'सं० कोष्ठवर २'; अ० को० पृ० ५२, 'कोह (क्रोध) + वर—जहाँ वर कभी-कभी क्रोध करे या रूठे'; डॉ० विश्वनाथ प्रसाद : भारतीय साहित्य (भटनागर-अभिनन्दन-ग्रन्थ), वर्ष ५, अंक २, पृ० २६१, 'कोशवाट'।

७. दे० ब्यु० सं० हिं० श० सा०, पृ० २३६, 'सं० खल + स्थान'; कु० को०, पृ० ६७, 'खरि + हान < खलधान < खलधान'.....; डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल, 'हिन्दी के सौ शब्दों की निरुक्ति' शीर्षक निबन्ध, नागरी-प्रचारिणी-पत्रिका, वर्ष ५४, पृ० ८६ :, 'सं० खलधान'।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहेलन बधार के, सुनेलन खरिहान के ।
वे खेत की बातें करते हैं और खलिहान की बातें सुनते हैं ।
प्र० निश्चित स्थिति में रहना ।

गोंयड़ा या गँड़ा[1] : गाँव के पास की जमीन ।
गोंयडा के खेती सिरवा के साँप, मैभा कारण बैरी बाप ।
गोंयड़ा की खेती, सिर पर रहने के कारण साँप और विमाता के कारण बदले हुए पिता—ये तीनों वैरी हो जाते हैं ।
डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल 'गोंयड़ा' की व्युत्पत्ति सं० 'गोमुण्ड' से मानते हैं ।[2]
'गोमुण्ड' का उल्लेख सुबन्धु-रचित वासवदत्ता (जीवानन्द विद्यासागर-संस्करण, पृ० ९१) में मिलता है ।

गोहराना : सहायता के लिए ऊँची आवाज में पुकारना ।
लउरी का पोर भेंट ना भइल, बाप-बाप गोहरावे लागल ।
उसे लाठी से भेंट भी नहीं हुई, किन्तु वह बाप-बाप पुकारने लगा ।
प्र० भय के कारण शोर मचाना ।
सं० हिं० श० सा (पृ० २८२) में गोहराना का सम्बन्ध 'गोहार' से जोड़ा गया है और 'गोहार' की व्युत्पत्ति के लिए 'सं० गो+हरा १' का निर्देश किया है । 'गोहर' या 'गोहरण' का उल्लेख वराहमिहिर की बृहत्संहिता (८९।५,९) में हुआ है ।

चरुई : भोजन बनाने का पात्र ।
नेम टेम गोपाल अइसन, हाँड़ी चरुई चमार अइसन ।
उसकी रहन-सहन तो गोपाल (वैष्णव) की तरह है, पर उसकी 'हाँड़ी' और 'चरुई' चमार की तरह (गन्दी) हैं । इस शब्द की व्युत्पत्ति के लिए सं० 'चरु' शब्द का निर्देश किया गया है ।[3] यह वैदिककालीन शब्द है । ऋग्वेद (१।६।६; ७।१०४।२) और अथर्ववेद (४।७।४) में इसका उल्लेख मिलता है । प्राचीनकाल में इसमें ढक्कन और कड़ी होती थी ।[4]

गँवें[5] : घात, मौका, अवसर ।
का मियाँ बहल जा तरऽ, आ तऽ गँवें में बानी ।
ए मियाँ ! बहते जा रहे हो ? (उत्तर) नहीं, मैं मौके की खोज में हूँ ।
प्र० स्वार्थसिद्धि के लिए खतरनाक स्थिति में पड़ना ।

गांती : गले में विशेष ढंग से बाँधकर ओढ़ी जानेवाली चादर ।
मेहरी के झूला ना, बिलाई के गांती ।
पत्नी को झूला भी नहीं है और बिल्ली को गाँती दी जा रही है ।
प्र० प्राथमिक आवश्यकताओं की उपेक्षा करना ।

---

१. दे० व्यु० सं० हिं० श० सा०, पृ० २७८, 'गोंइड़' (गाँव + मेड़) ।
२. डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल : ए यूनिक टैरा कोटे प्लाक फ्रॉम राजघाट' शीर्षक निबन्ध, बुलेटिन नं० २, पृ० ८४, बम्बई १९५३, 'सं० गोमुण्ड' ।
३. दे० सं० हिं० श० सा०, पृ० ३०४ 'चरु' शब्द ।
४. दे० शतपथब्राह्मण, १३।३।४।५ ।
५. दे० व्यु० सं० हिं० श० सा०, पृ० २५२, 'सं० गम्य' ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राचीन सं० साहित्य में उत्तरीय के अर्थ में प्रयुक्त होनेवाले 'गात्रिका'[1] से 'गाँती' विकसित हुआ है।

गेरुई : चैत महीने की फसल में लगनेवाला रोग।

ना गोहूँ बा, ना गेरुई लागी।

न गेहूँ है, न 'गेरुई' लगेगी।

प्र० किसी हानि से बचने के लिए उसके कारणों को नष्ट करना।

'गेरुई' सं० गैरिक (लाल) से विकसित हुआ है।[2] गेरुई के लगने से फसल लाल होकर मुरझा जाती है।

गोन : बैल आदि भारवाही पशुओं की पीठ पर लादा जानेवाला दुहरा बोरा।

बैल ना कूदे, कूदे गोन, ई तमाशा देखे कौन।

बैल के कूदने के बदले उसकी पीठ पर की गोन कूद रही है, इस तमाशे को कौन देखे ?

प्र० पारस्परिक मामले में तीसरे व्यक्ति का दखल देना।

'गोन', सं० गोण[3] या गोणी से व्युत्पन्न है। अष्टाध्यायी (४।१।४२) में बोरा के अर्थ में 'गोन' का प्रयोग हुआ है।

टिकट : सं० त्रिकटु का विकसित रूप।

तीन टिकट महाविकट।

तीन चीजें (या आदमी) जहाँ इकट्ठी होती हैं, वहाँ विकट स्थिति आ जाती है। प्रायः लोग उपर्युक्त 'टिकट' को रेल का टिकट समझ लेते हैं। किन्तु, यह सं० 'त्रिकटु' से व्युत्पन्न है। संस्कृत-ग्रन्थों में त्रिकटु के अन्तर्गत काली मिर्च, पीपर और सोंठ की गणना की गई है।[4] इन तीनों चीजों से एक पेय बनता है, जो पीने में कटु होता है। उपर्युक्त लोकोक्ति में वर्णित 'विकट' से भी इसके कटु होने की पुष्टि होती है।

डोकी : काठ की कटोरी।

बे बोलवले मँड़वा गइलो, डोकी पोंछ के माथे लवलों।

(मैं) बिना बुलाये मण्डप में गई, इसलिए डोकी पोंछकर सर पर तेल लगाना पड़ा।

प्र० अनाहूत व्यक्ति का अनादर होना।

सं० हिं० श० सा० (पृ० ४०१) में 'डोकी' और 'डोई' को एक दूसरे के पर्याप्त के रूप में निर्दिष्ट किया गया है। 'डोओ' के रूप में डोकी का उल्लेख देशी नाममाला (४।११) में हुआ है।

दह[5] : नदी या मैदान का वह गहरा स्थान, जहाँ अपेक्षाकृत अधिक पानी जमा रहता है।

बकुला टाँग उठवलस तऽ दह के पता लागल।

बगुले ने टाँगें उठाईं, तो 'दह' (की गहराई) का पता लगा।

प्र० इतर साधनों से किसी की सामर्थ्य का पता चलना।

---

१. दे० हर्षचरित (१।५६), 'गात्रिका' या 'गात्री' शब्द।

२. दे० सं० हिं० श० सा०, पृ० २७७, 'गेरुई' और 'गेरू' शब्द।

३. दे० कु० को०, पृ० १३५, 'गुण'—'गोण'; सं० हिं० श० सा०, पृ० २७६, 'सं० गोणी'।

४. दे० मोनियर विलियम्स : ए संस्कृत-इंगलिश डिक्शनरी, पृ० ४५८।

५. दे० ब्यु० टर्नर, ने० डि०, पृ० ३०७, 'सं० ह्रद'; डॉ० उदयनारायण तिवारी : भो० भा० सा०, पृ० १२६, 'दह (ह्रद<ह्रद)'।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नीक[1] : १. अच्छा; २. स्वच्छ; ३. भला।

पंच संगे नीक, पिया संगे ना नीक।

अन्य लोगों के साथ (रहना) भला है, किन्तु पति के साथ नहीं।

प्र० स्वार्थसिद्धि के लिए विपरीत मार्ग अपनाना।

लोकोक्ति में 'नीक' प्रथम और तृतीय अर्थ में प्रयुक्त है।

पूरना[2] : १. चौक बनाना; २. बटना; ३. तागा बटना।

आग लगा के सियब पूरब।

आग लगाकर वे कहते हैं कि सी दूँगा, पूर दूँगा।

प्र० विनाश करके किसी चीज की रक्षा करने का ढोंग करना।

बदी[3] : नियत किया हुआ, ठहराया हुआ।

एह पार नदी, ओह पार नदी, ई बिपति कहिया के बदी।

इस पार भी नदी है, उस पार भी नदी है—यह विपत्ति किस दिन निर्धारित की गई थी।

प्र० किसी को नियोजित ढंग से दुःख में डालना।

बिरते[4] : १. शक्ति; २. सामर्थ्य।

कौन बिरते पर तत्ता पानी।

तुम्हारी किस सामर्थ्य के कारण (तुम्हें) गरम पानी दिया जाय।

प्र० बिना कर्त्तव्य के अधिकार चाहना।

बिहान[5] : १. सुबह; २. कल (आनेवाला)।

मुरगा ना बोली तऽ का बिहान ना होई,

मुरगा नहीं बोलेगा, तो क्या सुबह नहीं होगी।

प्र० अकारण किसी चीज के अभाव में किसी स्थिति या वस्तु के न होने की कल्पना करना।

'बिहान' की व्युत्पत्ति टर्नर ने सं० विभानु या पालि 'विभावनं' से मानी है। [सं० हिं० श० सा० ने इसके लिए 'सं० विभात या वि+अहन्' का निर्देश किया है।[6]

भर : नौकर।

भर ना करे भूइँहार के, पोंछ ना धरे सियार के।

भूमिहार (जाति) को 'भर' के रूप में नहीं रखना चाहिए और सियार की पूँछ नहीं पकड़नी चाहिए।

---

१. दे० व्यु० टर्नर, ने० डि०, पृ० ३४३, 'सं० निष्कृतः'; सं० हिं० श० सा०, पृ० ५५५, 'सं० नक्त'।

२. दे० व्यु० टर्नर, ने० डि०, पृ० ३८५, 'सं० पुरः'; सं० हिं० श० सा०, पृ० ६३६, 'सं० पूरण'।

३. दे० व्यु० टर्नर, ने० डि०, पृ० ४१८, 'सं० वदति'; सं० हिं० श० को०, पृ० ६६४, 'वदना—सं० वदन'।

४. दे० व्यु० टर्नर, ने० डि०, पृ० ४४७, 'सं० वीरता'; सं० हिं० श० सा० ने 'वीरता' को देशज माना है।

५. दे० ने० डि०, पृ० ४४५।

६. दे० सं० हि० श० सा०, पृ० ७२८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० उदयनारायण तिवारी (भो० भा० सा०, पृ० ९४) 'भर' की व्युत्पत्ति 'सं० भृत, भट' से मानते हैं। सं० हिं० श० सा० में 'भर' को जाति-विशेष माना गया है और उसका सम्बन्ध 'सं० भरत' से निर्दिष्ट किया गया है।[1] किन्तु, 'भर' का प्रयोग नौकर के अर्थ में उणादिसूत्र (१।१०४) में हुआ है।[2] इसलिए, इसी सं० भर से भो० भर का सम्बन्ध मानना चाहिए।

लोकनियाँ : १. ससुराल जानेवाली वधू के साथ भेजी जानेवाली दाई; २. परिचारिका।

कनियाँ के माड़ ना लोकनियाँ के बुनियाँ।

वधू को तो माँड भी नसीब नहीं हो रहा है और 'लोकनियाँ' को बूँदिया (मिठाई) दी जा रही है।

प्र० पात्र के अनुसार सम्मान या वरीयता न देना।

टर्नर (ने० डि०, पृ० ५६१) 'लोकनियाँ' का सम्बन्ध 'सं० लोक'[3] से स्थापित किया है। सं० हिं० श० सा० (पृ० ८७७) में 'लोकनी' के पर्याय के रूप में 'लोकन्दी' का निर्देश किया गया है और 'लोकन्दी' और 'लोकनी' का विकास 'सं० लोपन' से माना गया है।

समहुत : १. समारम्भ या समारम्भ करना। २. शुभ मुहूर्त्त में खेत में बीज डालने का संस्कार।

नाँव पिरथीपति समहुत के ठेकाने ना।

नाम पृथ्वीपति है और 'समहुत' करने का ठिकाना भी नहीं।

प्र० सामर्थ्य के प्रतिकूल नाम होना या प्रदर्शन करना।

भोजपुर-क्षेत्र में 'समहुत' के पर्याय के रूप में 'साइत' का प्रयोग होता है। 'साइत' का अर्थ है—शुभ अवसर। 'समहुत' का सम्बन्ध भी अर्थ और ध्वनि की दृष्टि से सं० 'शुभ मुहूर्त्त' से स्थापित किया जा सकता है।

सिकहर : छींका।

बिलारी के भागे सिकहर टूटल।

बिल्ली के भाग्य से सिकहर टूटा।

प्र० स्वार्थसिद्धि के लिए अनुकूल अवसर मिलना।

डॉ० उदयनारायण तिवारी (भो० भा० सा०, पृ० १०७) ने 'सिकहर' से ध्वनिसाम्य रखनेवाले 'सींकर' की व्युत्पत्ति के लिए 'शृंखल' और 'शृंका' का निर्देश किया है। सं० हिं० श० सा०, पृ० ९८० में 'सिकहर' को 'सं० शिक्य+धर' से व्युत्पन्न माना गया है। 'शिक्याधार' बहुत प्राचीन शब्द है। इसका प्रयोग अथर्ववेद (१३।४।८) में हुआ है।

सुक्की या सूकी : एक सिक्का (चार आने के बराबर)।

आठ आना पर दुर्गापाठ, सतनारायन सुक्की।
एहू पर जे ना सुने तऽ से करम के चूकी॥

आठ आने के खर्च से दुर्गापाठ होता है और सूकी (चार आने) के खर्च से सत्यनारायण की कथा होती है। इस पर भी जो न सुने, वह कर्म का हीन ही है।

---

१. दे० स० हिं० श० सा०, पृ० ७४९।

२. दे० मोनियर विलियम्स : ए संस्कृत इंगलिस डिक्शनरी, पृ० ७०७।

३. लोकनियाँ <सं० लोक + कन्या।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टर्नर ने 'सूकी' की व्युत्पत्ति 'सं० सूक्ष्म या शुष्क' से मानी है।[१] हिन्दी-शब्दसागर में इसका सम्बन्ध सं० 'सपाद' से माना गया है।[२] सं० हिं० श० सा० में 'सूकी' का विकास सं० 'शुक्ति' से माना गया है।[३] परन्तु, इसका सम्बन्ध सं० 'शुक्र' से भी माना जा सकता है। 'शुक्र', अर्थात् सफेद। सूकी भी गिल्लट की होने के कारण उजली होती थी। सं० शुक्र>पालि सुक्क>प्रा० सुक्क>भो० सूका या स्त्रीलिंग सूकी।

२.२.१.३.२ नामपद

रूप प्राकृतिक होता है और नाम प्रदत्त।[४] नाम, नामी की प्रकृति, प्रवृत्ति और परिचय का संकेतक होता है।[५] यह नाम समाज द्वारा स्वीकृत और व्यवहृत होता है, इसलिए नाम-पदों के अध्ययन से सामाजिक और वैयक्तिक आचार-विचार, सुरुचि और सौन्दर्यबोध; और भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश पड़ता है।

लोकोक्तियों की अभिव्यंजना में नाम पदों का विशिष्ट महत्त्व है। लोकोक्तियों में नाम पदों का साभिप्रायिक प्रयोग हुआ है। प्रयोग के अभिप्राय के आधार पर लोकोक्तिगत नामों को सामान्यतः इन वर्गों में बाँटा जा सकता है : (क) आक्षेपार्थक, (ख) उदाहरणपरक, (ग) लयपूरक, (घ) व्यक्तिबोधक और (ङ) मानवीकृत।

(क) आक्षेपार्थक : जिन नामों का अपने नामी या आश्रय के रूप और गुण के साथ सामंजस्य नहीं होता, वे व्यंग्य-विनोद या आक्षेप का विषय बनते हैं। इसका मनोवैज्ञानिक और ऐतिहासिक कारण है। प्राचीन काल से ही यह धारणा चली आ रही है कि नाम को व्यक्ति के आन्तरिक या बाह्य स्वरूप का परिचायक होना चाहिए।[६]

लोकोक्तियों में व्यक्तियों के जिन नामों पर आक्षेप या व्यंग्य किया गया है, उन्हें इन वर्गों में विभाजित किया गया है : व्यक्ति के गुण, रूप, स्थिति, सामर्थ्य और कुल-शील के (अ) प्रतिकूल नाम और (आ) अनुकूल नाम।

---

१. दे० ने० डि०, पृ० ७११।
२. वही, पृ० ३६३६।
३. वही, पृ० १००१।
४. 'सर्वं वा इदं नाम च रूपं च। देवो रूपाणि चक्रे वयं नामानि कृण्मसि।'—ऋग्वेद
५. "A proper name is a word or group of words recognised as indicating or tending to indicate the object or objects to which it refers by virtue of its distinctive sound alone, without regard to any meaning possessed by that sound from the start, or acquired by it through association with the said object or objects."
—Sir Alan Gardiner : The Theory of proper names, second edition, p. 43, London 1954.
६. शतपथब्राह्मण : ३।६।२।२४; ५।३।३।१४ : से यह पता चलता है कि वैदिक काल में लोग सफलता और सम्मान प्राप्त करने के उद्देश्य से भी अपना नाम रखते थे। इससे यह सिद्ध होता है कि 'यथा नाम तथा गुणः' सम्बन्धी धारणा परम्परागत है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(अ) प्रतिकूल नाम :

(क) आधार : गुण : उदा०

कहावे के बुलबुल लीले के गूलर ।

वह अपने को बुलबुल कहती है, किन्तु वह गूलर निगलती है ।

प्र० झूठ-मूठ अपने को सभ्य और सुन्दर कहना ।

रहल करिमना तइयो घर गइल; गइल करिमना तइयो घर गइल ।

करिमना (काम करनेवाला) घर में रहा, तब भी घर गया और घर से गया, तब भी घर गया ।

प्र० किसी भी स्थिति में किसी व्यक्ति के होने से हानि होना ।

लिखे ना पढ़े, नाम मोहमद फाजिल ।

वह लिखना-पढ़ना जानता नहीं, किन्तु अपने को मोहम्मद फाजिल कहता है ।

प्र० विद्वत्ता का ढोंग करना ।

सुकवा के अइली, सनीचरे के गइली; खोल माई टटिया गंगाजली बेटी अइली ।

(लड़की) शुक्रवार को ससुराल आई और शनिवार को ही मायके पहुँचकर कहने लगी—'माँ ! किवाड़ खोलो, तुम्हारी गंगाजली बेटी आ गई ।'

(ख) आधार : रूप : उदा०

जो भल रहती रूपा तऽ का पंच लगाइत लूका ।

अगर रूपा (रूपमती) भली होती, तो क्या लोग आग लगा सकते थे (अर्थात्, बदनाम कर सकते थे) ।

नाँव गुलाबचन गन्ह के ठेकाने ना ।

नाम गुलाबचन्द है, किन्तु सुगन्ध का पता नहीं है ।

नाँव भवानी, मुँह छूछनरि के ।

नाम है भवानी और मुँह है छछून्दर के समान ।

माँगो मुड़वले गरीब गिर[1] नाँव ।

सिर घुटाने पर (किसी मठाधीश का शिष्य बनने पर) भी गरीबगिरि नाम नहीं बदला ।

प्र० स्थिति बदलने पर भी भाग्य का नहीं बदलना ।

(ग) आधार : स्थिति और सामर्थ्य : उदा०

उखरे बार ना नाँव का हऽ तऽ बरियार खाँ ।

(उनसे) बाल तो उखड़ता नहीं और नाम रखे हुए हैं—बलवान् खाँ ।

नाँव दाताराम पुन्नि के ठेकाने ना ।

नाम दाताराम है और पुण्य का ठिकाना भी नहीं ।

नाँव नवलखा, जनमे के भिखारी ।

नाम नवलखा (नौ लाखवाले) है, पर जन्म से ही भिखारी है ।

नाँव रामबहादुर सिंह, पोत पौने बारह आना ।

नाम रामबहादुर सिंह है और लगान देते हैं पौने बारह आना (अर्थात्, गरीब हैं) ।

---

१. इस लोकोक्ति में प्रयुक्त 'गिर' (गिरि) उपाधि-नामपद पर विशेष रूप से आगे विचार किया गया है । दे० पृ० २१६ ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(घ) आधार : कुल-शील : उदा०

चमारे के बेटी नाँव रजरनियाँ ।
चमार की बेटी है, किन्तु नाम है राजरानी ।
बाप के नाँव सागपात, पूत के नाम परोरा खाँ ।
बाप का नाम साग-पात है, और पुत्र का नाम है—परोरा (परवल) खाँ ।
बापे के नांव 'आऊँ-जाऊँ' पूत के नांव सहंसनसाह ।
बाप का नाम है—'आऊँ-जाऊँ' (निरर्थक नाम) और पुत्र का नाम है—शाहंशाह ।

(आ) अनुकूल नाम :

लोकोक्तियों में कुछ ऐसे नामों पर भी व्यंग्य किया गया है, जो किसी व्यक्ति के हास्यास्पद गुण, रूप, स्थिति और कुल-संस्कार के अनुकूल होते हैं । उदा०

ऊलुँगी का बेटा भइल, उतपाती नाँव परल ।
उलुँगी (फूहड़ स्त्री) को पुत्र हुआ, तो उसका नाम पड़ा उत्पाती ।
कुतरू के गोहूँ होई तऽ का ऊ कूट पीस खइहें ?
कुतरू (कुतरकर खानेवाले) को गेहूँ होगा, तो क्या वे उसे कूट-पीसकर खायेंगे ?
जइसन दिगम्बर पाँड़े, ओइसन रसुल्ला;
उन्हका ना छान्ह छप्पर, इनका ना चूल्हा ।
जैसे दिगम्बर पाण्डेय हैं, वैसे ही रसुल्ला हैं—उनके घर पर छावनी नहीं है और इनके घर में चूल्हा नहीं है ।
जाहाँ गइली डाहो रानी, ताहाँ परल पत्थर पानी ।
जहाँ डाहो (दहन करनेवाली) रानी जाती है, वहाँ पत्थर-पानी पड़ता है (अर्थात्, वहाँ का विनाश हो जाता है) ।

(ख) उदाहरणपरक : नामी जब अपने रूप, गुण, स्थिति और स्वभाव के कारण लोक-समुदाय में लोकप्रिय हो जाता है, तब उसके नाम का सामान्यीकरण हो जाता है । इस स्थिति में नाम, नामी का बोधक होने के बदले उसके गुण या प्रवृत्ति का प्रतीक हो जाता है । ऐसे नामों में ऐतिहासिक व्यक्तियों के नाम और जाति और कुलसूचक नाम—दोनों परिगण्य हैं । लोकोक्तियों में सामान्यतः उदाहरण के प्रसंग में उपर्युक्त नामों का प्रयोग हुआ है । उदा०

(अ) ऐतिहासिक व्यक्तियों के नाम :

अनकर धन पर बिकरम राजा ।
दूसरे के धन पर विक्रम (विक्रमादित्य) राजा बने हुए हैं ।
जेकर बहिन अन्नर, सेकर भाई सिकन्नर ।
जिसकी बहन घर में रहती है (गृहस्वामिनी होती है), उसका (भाई का) बहन के यहाँ सिकन्दर-सा सम्मान होता है ।
नेम टेम गोपाल अइसन, चरुई चमार अइसन ।
उनका आचार-विचार तो गोपाल के समान है और उनकी 'चरुई' (बरतन) चमार के समान है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(आ) **जाति और कुलसूचक नाम :**

कहावे ले सइयद चोरावे ले छुँछी ।

(वे) कहलाते हैं सैयद, (किन्तु वे) चुराते हैं छुँच्छी (नाक का मामूली आभूषण) ।

कोरवा बाबू कुँवर, भुइयाँ उतरले सूअर ।

गोद में बच्चा कुँवर (राजपूतों की उपाधि) की तरह रहता है और नीचे उतरने पर सूअर-सा गन्दा हो जाता है ।

तीर ना कमान कहे कि पैठान ।

उसके पास तीर-कमान नहीं है, फिर भी वह अपने को पठान कहता है ।

माँगो मुड़वले गरीब गिर नाँव ।

सिर घुटाने पर भी गरीब गिरि नाम नहीं बदला ।[1]

(ग) **लयपूरक : छन्द और अनुप्रास :** लोकोक्तियों में लय या तुक की पूर्त्ति के लिए भी सार्थक और निरर्थक नामपदों का प्रयोग हुआ है । ऐसे नामों के प्रयोग से कभी-कभी लोकोक्ति के भावपक्ष को भी सहायता मिलती है । ऐसे नामों के प्रयोग का उद्देश्य मुख्यतः छन्द या अनुप्रास की पूर्त्ति करना होता है । उदा०

करे ना खेती परे ना फन्द पर घर नाचे मूसरचन्द ।

मूसरचन्द खेती करके फन्दे में नहीं पड़ता है । वह बेफिक्र होकर दूसरों के यहाँ पड़ा रहता है ।

पगरीदास नगरी ले ले ।

पगड़ीदास ने सारी नगरी ले ली ।

फटकचन्द गिरधारी, जिनका लोटा ना थारी ।

ये फटकचन्द गिरधारी हैं—इन्हें न लोटा है और न थाली ।

---

१. लोकोक्ति में प्रयुक्त 'गिर' 'गिरि' का विकसित रूप है । 'गिरि' दशनामी-सम्प्रदाय के एक प्रकार के संन्यासी या परिव्राजकों की उपाधि है । उपर्युक्त लोकोक्ति परोक्षरूप से भारतवर्ष में संन्यासियों एवं मठों के इतिहास पर प्रकाश डालती है । अद्वैतवाद के प्रवर्त्तक श्रीशंकराचार्य ने धार्मिक सिद्धान्तों के प्रचार-हेतु चार मठों की स्थापना की । इन मठों को समय-समय भक्तों और श्रद्धालुओं से दान के रूप में भरपूर सम्पत्ति प्राप्त हुई । मठाधीश ही इस सम्पत्ति के स्वामी हुए । कालान्तर में अद्वैती संन्यासियों की दस शाखाएँ हुईं । इन्हें श्रीशंकराचार्य के चार शिष्यों के उत्तराधिकारी शिष्यों के रूप में भी मान्यता दी गई । उक्त दस शाखाओं या शिष्यों में गिरि भी उल्लिखित है । गिरि-शाखा के संन्यासी 'गिरि' उपाधि धारण करते हैं ।

प्रामाणिक हिन्दी-कोश, (सम्पादक : श्रीरामचन्द्र वर्मा (पृ० ३४२) में गिरि का उल्लेख पर्वत या उपाधि-अर्थक सं० गिरि के रूप में है । किन्तु, 'गिरि' का सम्बन्ध ऋग्वेद में प्रयुक्त 'गिर' शब्द से है (मोनियर विलियम्स : ए संस्कृत इंगलिश डिक्शनरी, पृ० ३५५) । ऋग्वेद (१।३७।१०) में मरुतों को 'प्रशंसा-पुत्र' (सनवो गिरः) कहा गया है । इसी तरह सोम को भी 'गिरवंश' (ऋग्वेद, ९।६४।१४) कहा गया है ।

निश्चयपूर्वक 'गिरि' उपाधिधारी वैदिक काल में ही प्रशंसा-पुत्र न थे । अकबर और ब्रिटिश-शासनकालों में भी गिरि-नामधारी संन्यासियों ने अन्याय के विरुद्ध वीरोचित कार्य किये । —दे० (क) डॉ० जे० एन्० फर्कुहर : जे० आर० ए० एस्०, १९२५, पृ० ४७९—४८६ ; (ख) राय साहब यामिनीमोहन घोष : संन्यासी ऐण्ड फकीर रेडरस् इन बंगाल, १९३० ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(घ) **व्यक्तिबोधक** : लोकोक्तियों में कहीं-कहीं ऐसे नाम भी आये हैं, जो किसी विशेष व्यक्ति के बोधक न होकर व्यक्तिवाचक-मात्र हैं। ऐसे, इन नामों में से कुछ ऐसे नाम भी हो सकते हैं, जो लोकोक्ति की आधारभूत घटना या अनुभूति से सम्बद्ध रहे होंगे। परन्तु, लोकोक्तियों में तो वे रूढ प्रयोग के रूप में मात्र व्यक्तिवाचक के रूप में प्रयुक्त होते हैं। उदा०

जतने गांगू लाम, ततने सोहाइक चाकर।
गांगू जितने लम्बे हैं, सोहाइक उतने ही चौड़े हैं।

ना ऊधो के लेना ना माधो के देना।
न ऊधो से लेना है और न माधो को देना है।

बुड़बक के धन होय फहीमा मार खाय।
बेवकूफों को धन होता है और फहीमा मार खाता है।

साँच बात सदुल्ला कहे, सभ के चित्त से उतरल रहे।
सदुल्ला सच्ची बात कहता है, इसलिए वह सभी के चित्त से उतरा रहता है।

(ङ) **मानवीकृत** : लोकोक्तियों में प्राकृतिक व्यापारों या उपादानों, पशु-पक्षियों और निर्जीव वस्तुओं को मानवी नाम दिया गया है। ऐसे मानवीकृत नामों से लोक-समुदाय का मानवेतर प्राणियों या वस्तुओं के साथ स्थापित रागात्मक सम्बन्ध पर प्रकाश पड़ता है। उदा०

उचरुंग बइठलन बकुचा, कहलन कि सभ धन हमरे।
उचरुंग (कीट-विशेष) बोझ पर बैठ गये और बोले कि सभी धन मेरा है।

जानेली चीलम, जेह पर चढ़ेली अंगारि।
चीलम ही (दुःख) जानती है, जिसपर अंगार चढ़ता है।

न सावन हँसे लायक ना भादो दूसे लायक।
न सावन ही हँसने लायक है और न भादो ही उपहासास्पद है;

मघा लगावे घघा, सेवाती लावस टाटी।
कहतारी हाथी रानी हमहुँ आवत बानी॥
मघा नक्षत्र से आँधी के साथ वर्षा होती है, स्वाति नक्षत्र घर में टट्टी लगाने को विवश करती है। हस्तिरानी (नक्षत्र) भी कहती है, मैं भी आ रही हूँ।
इस प्रकरण में उद्धृत लोकोक्तियों में नामपद भिन्नाक्षर कर दिये गये हैं।

२.२.१.३.३ संख्यापद

संख्यापद लोकोक्तियों के अर्थबोध और रूप-गठन में विशेष रूप से सहायक होते हैं। ये, लोकोक्तियों में वाच्य और व्यंग्य—दोनों अर्थों की अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त हुए हैं। साथ ही, ये विशेष ढंग से प्रयुक्त होकर लोकोक्तियों के रूप को सुगठित, लयात्मक और स्मरणीय बनाते हैं।

लोकोक्तियों में प्रयुक्त संख्यापदों को निम्नांकित वर्गों में विभाजित किया गया है: (अ) उक्ति-उत्कर्षक, (आ) समुच्चयकारक और (इ) लयपूरक।

(अ) **उक्ति-उत्कर्षक** : ये संख्यापद भी दो प्रकार के हैं—(क) प्रतीकात्मक और (ख) व्यंग्यार्थबोधक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(क) प्रतीकात्मक : विशेष सन्दर्भ में व्यवहृत होकर कुछ संख्यापद अतिशयता, न्यूनता और किसी रूढिगत भावना की ओर संकेत करते हैं। उदा०

अतिशयता और न्यूनता :

जब एक कलम घिसके, तऽ बावन गाँव घसके।

जब मुंशीजी एक कलम चलाते हैं, तो बावन गाँवों का हिसाब-किताब इधर से उधर हो जाता है।

एक बूँद जल चइत चुए, लाखन बूँद सावन के मुए।

जब चैत में एक बूँद (थोड़ी) वर्षा होती है, तो उससे सावन की लाखों (अधिक) बूँदों की हानि होती है।

अबरे ओनचास बयारि।

कमजोर पर उनचासों हवाएँ चढ़ाई करती हैं।

नकटी के बियाह, सहसर गो भाखठ।

नकटी के विवाह में हजारों अड़चनें पैदा होती हैं।

बिन बैलन खेती करे, बिन भैयन के रार।

बिन मेहरा घर करे, चउदह लाख लबार॥

जो विना बैलों के खेती, विना भाइयों के लड़ाई और विना पत्नी के घर करता है, वह चौदह लाख लबारों (झूठ बोलनेवाले) के बराबर है।

उपर्युक्त लोकोक्तियों में भिन्नाक्षर संख्यापद 'एक', न्यूनतावाचक और 'उनचास', 'बावन', 'सहस्र', 'लाखों' और 'चौदह लाख' अतिशयतावाचक हैं।

रूढ़िगत भावना :

तीन टिकट[1] महाविकट।

तीन संख्या अशुभकारी होती है।

तीनि में कि तेरह में, सुतरी में कि गिरह में।

तीनवाले वर्ग में हो कि तेरहवाले वर्ग में, सुतली में हो कि गाँठ में।

ऐसा विश्वास है कि ब्राह्मणों में—गर्ग, गौतम और भारद्वाज—ये तीन गोत्र श्रेष्ठ हैं। उपर्युक्त लोकोक्ति इसी विश्वास पर आधारित है।

सात रोटी मइया के सत्ताइस रोटी पवनी के।

माताओं की पूजा के लिए तो सात रोटियों की ही आवश्यकता होती है, किन्तु पवनी के लिए सत्ताईस रोटियों की।

यहाँ सात संख्या का प्रतीकात्मक प्रयोग है। हिन्दू-विश्वास के अनुसार 'पार्वती' की सात सखियाँ हैं। पार्वती की पूजा के समय सात सखियों की भी पूजा होती है। उपर्युक्त 'सात रोटी' से सात सखियों अथवा सात माताओं की ओर भी संकेत किया गया है।

(ख) व्यंग्यार्थबोधक : कुछ लोकोक्तियों में प्रयुक्त दो संख्यापद (विशेषण) सम्बद्ध संज्ञाओं के पारस्परिक अनुपात या तुलनात्मक ज्ञान का बोध कराते हैं। उदा०

---

१. लोकोक्ति में प्रयुक्त 'टिकट' सं० 'त्रिकट' का विकसित रूप है। इस शब्द पर यथास्थान विचार किया गया है। दे० प्राचीन शब्द-भाण्डार, प्रकरण, २.२.१.३.१।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आठ जोलहा, नौ हुक्का, तवनो पर थुक्कमथुक्का ।

आठ जुलाहों के बीच नव हुक्के हैं, फिर भी वे जुलाहे हुक्का के लिए आपस में झगड़ रहे हैं ।

उतरा में जनि रोपहु भइया, तीन धान होय तेरह पइया ।

उत्तरा नक्षत्र में धान की रोपाई करने से सोलह धानों में तीन दानावाले और तेरह भूसीवाले होते हैं (अर्थात् धान की फसल अच्छी नहीं होती है) ।

चारि आना के जनेरा, चउदह आना के मचान ।

चार आना की कीमतवाले 'जनेरा' (मक्का) की रक्षा के लिए चौदह आने की कीमत-वाला मचान बना है ।

सात-पाँच मिली करीं काज, हारीं जीतीं नाहीं लाज ।

सात-पाँच आदमी मिल-जुलकर काम करते हैं, तो असफल होने पर भी लाज नहीं आती है ।

उपर्युक्त लोकोक्तियों में प्रयुक्त गणनात्मक संख्याएँ आनुपातिक ज्ञान और अनिश्चय-वाचक संख्याएँ (सात और पाँच) क्रमशः आनुपातिक ज्ञान और अनिश्चित भाव का बोध कराती हैं ।

(आ) **समुच्चयकारक** : संख्याएँ लोकोक्तियों में वर्णित विभिन्न वस्तुओं का चामत्कारिक ढंग से समुच्चय करती हैं । संख्याओं का यह विशिष्ट प्रयोग प्रायः संसार की सभी भाषाओं में प्राप्त है ।[1] लोकोक्तियों में समुच्चयकारक संख्यापद विशेषतः वक्तव्य को क्रमबद्ध, सुनिर्दिष्ट और स्पष्ट करते हैं । ऐसे संख्यापद लोकोक्ति के आरम्भ, मध्य या अन्त—तीनों स्थानों में प्रयुक्त हुए हैं :

(क) एक लोकोक्ति में एक संख्या का प्रयोग :

अहीर रजपूत डोम, तीनों जात हड़बोंग ।

अहीर, राजपूत और डोम, ये तीनों जातियाँ दुर्द्धर्ष होती हैं ।

कपड़ा पहिरे तीन बार, बुद्ध, बिरहस्पत सुकुरबार ।

नया वस्त्र, बुध, बृहस्पति और शुक्रवार को पहनना चाहिए ।

धान, पान, खीरा, तीनों पानी के कीरा ।

धान, पान और खीरा—ये तीनों पानी के कीड़े हैं ।

भूल गइलन राग रंग, भूल गइलन चाकरी ।
तीन चीज याद रहल, नून तेल लकड़ी ।।

वे अब राग-रंग और चाकरी भूल गये, उन्हें अब जो तीन चीजें याद रह गईं । वे हैं—नमक, तेल और लकड़ी ।

---

१ (क) एक प्राचीन संस्कृत-वाक्य में पाँच संख्या का समुच्चयकारक प्रयोग इस प्रकार हुआ है :
'पञ्च मे भिक्षव आदीन वा मथुरायाम्। कतमे पञ्च उरुकुलनिकलारथाणुकण्टकप्रधाना बहुपाषाणशार्करकठल्लउच्चन्द्रभक्ताः प्रचुरमातृग्रामा इति ।'
—बुद्धदेव का कथन, गिलगिट मैनुस्क्रिप्ट्स ३, भाग १, पृ० १४-१५ ।

(ख) अँगरेजी की 'प्राइमेल' (Priamel) के नाम से प्रचलित लोकोक्तियों में संख्याओं के समुच्चयकारक प्रयोग के पुष्कल उदाहरण मिलते हैं । 'प्राइमेल' के लिए दे० स्टैण्डर्ड डिक्शनरी ऑव फॉकलोर, माइथोलॉजी ऐण्ड लिजेण्ड, जिल्द २, पृ० ९०३ ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खिचड़ी के चारि यार, पापड़, दही, घी, अँचार ।
खिचड़ी के चार मित्र हैं—पापड़, दही, घी और अँचार ।
मेंधी, मेधा, मइँस किसान, मोर पपीहा घोड़ा धान ।
बाढ़े मीन जटा कह रानी, दस खुसी जब बरसे पानी ।।
मेढ़की, मेढ़क, भैंस, किसान, मोर, पपीहा, घोड़ा, धान, मछली और जटा—ये दस चीजें वर्षा होने पर खुश होती हैं ।

(ख) एक लोकोक्ति में एक से अधिक संख्या का प्रयोग :
एक तऽ बाग ना आइब, दोसरे आम ना खाइब, तीसरे खाइब तऽ लोकलोकउबा ।
एक तो बाग में नहीं आऊँगा, दूसरे आम नहीं खाऊँगा और तीसरे खाऊँगा भी तो ऊपर से ही लोककर ।
एक तऽ अहीर, दोसरे जवान, तीसरे होगइल नव मन धान ।
एक तो अहीर हो, दूसरे जवान हो और तीसरे उसके पास नौ मन धान हो !
तीनि खाट, दूइ बाट, चार छावे, छब निरावे ।
खाट बीनने के लिए तीन, राह में चलने के लिए दो, छावनी के लिए चार और निराई के लिए छह लोगों की आवश्यकता होती है ।

(इ) लयपूरक : लोकोक्तियों में संख्यापदों का प्रयोग लय की पूर्त्ति के लिए भी हुआ है । ये संख्यावाचक शब्द अनुप्रास या तुक के लिए भी प्रयुक्त होते हैं । ऐसे शब्दों से लोकोक्तिगत चरणों को लय और मात्रा का सामंजस्य प्राप्त होता है । इसलिए, लोकोक्तियों को श्रुतिमधुर बनानेवाले तत्त्वों में ऐसे संख्यापदों का भी विशिष्ट महत्त्व है । निम्नांकित लोकोक्तियों में प्रयुक्त संख्याएँ लयपूरक वर्ग में परिगण्य हैं :

ऊख तिरसा, गोहूँ बिरसा ।
(खाद देने पर) ईख तीसगुना और गेहूँ बीसगुना पैदा हो सकता है ।
चना चितरा चौगुना, स्वाति गोहूँ होय ।
चना चित्रा नक्षत्र में बोने से चौगुना होता है ।
चार कवर भीतर, तब देवता-पीतर ।
चार ग्रास पहले मुँह में डाल लेना चाहिए, तब देवता और पितर की चिन्ता करनी चाहिए ।
तिरिया तेरह, मरद अठारह ।
स्त्री तेरह वर्षों में और मर्द अट्ठारह वर्षों में युवा हो जाते हैं ।
तीन के तीसी तेरह लागल, तब तेलनियाँ पेरे लागल ।
जब तीसी का भाव तीन रुपये प्रति मन से बढ़कर तेरह रुपये प्रति मन हो गया, तब तेलिन ने उससे तेल निकालना शुरू किया ।
उपर्युक्त लोकोक्तियों में भिन्नाक्षर संख्यापद अनुप्रास या लय के निमित्त प्रयुक्त हुए हैं ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपसंहार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी लोकोक्तियाँ एक जीवन्त, निर्भीक, व्यावहारिक और अनुभवी जाति की निधि हैं। भोजपुरी क्षेत्र क्रान्तिकारी, ऐतिहासिक और सामाजिक घटनाओं का स्थल रहा है। इस क्षेत्र में विभिन्न वर्ग, जाति, पेशे और व्यवसाय के लोग बसते हैं। साथ ही, यहाँ की जनता जीविका, व्यवसाय और तीर्थाटन के लिए देश-विदेश की यात्रा करती रहती है। इसलिए, भोजपुरी लोक-समुदाय एक अनुभवी और व्यावहारिक समुदाय हो गया है। यही कारण है कि ऐसे क्षेत्र और ऐसे लोगों के बीच, लोकोक्तियों के उद्भव, विकास और प्रयोग के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ और प्रेरणाएँ मिलती रहती हैं।

भोजपुरी लोकोक्तियाँ, भोजपुरी जनता के समवेत अनुभव और ज्ञान की ही परिचायिका नहीं, वरन् क्षेत्रीय जीवन की गतिशील संस्कृति, आचार-विचार, रहन-सहन, इतिहास और प्राकृतिक वातावरण की भी द्योतिका हैं। इन लोकोक्तियों से परिमित भू-खण्ड में बसे लोक-समुदाय के जीवन के बीच पनपनेवाले विशिष्ट ज्ञान, भावना और जीवन-दर्शन का सम्यक् और पर्याप्त परिचय मिलता है। समासतः, भोजपुरी लोकोक्तियाँ भोजपुरी क्षेत्र की संस्कृति, इतिहास, भूगोल और भाषा के विविध स्तरों के अध्ययनार्थ एक मूल्यवान् सामग्री सिद्ध होती हैं।

भोजपुरी लोकोक्तियों की विषय-वस्तु विविध और व्यापक है। लोकोक्तियों के उद्भव और प्रयोग के प्रसंग अनेक हैं। इसके निर्माण में समाज के सभी वर्ग और पेशे के लोगों का सहयोग है। इन लोकोक्तियों के विषय समाज के दिनानुदिन जीवन और प्रत्यक्ष प्राकृतिक जगत् के सभी व्यापारों से गृहीत हैं। संक्षेप में, भोजपुरी जनता अपने जीवन में जिन वस्तुओं, विचारों, घटनाओं और व्यापारों के सम्पर्क में आई है, वे अधिकांशतः प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से लोकोक्तियों की विषय-वस्तु बने हैं। इस कथन की पुष्टि भोजपुरी लोकोक्तियों के विषयनिष्ठ वर्गीकरण से होती है।

अर्थ-सामर्थ्य, रूप, प्रभाव और उपयोगिता की दृष्टि से भी भोजपुरी लोकोक्तियाँ महत्त्व-पूर्ण हैं। अधिकांश भोजपुरी लोकोक्तियाँ एक से अधिक अर्थ ध्वनित करती हैं। साथ ही, प्रायः लोकोक्तियाँ विशेष व्यापारों पर आधारित होकर भी कई प्रसंगों में व्यवहृत होती हैं। वस्तुतः, प्रयोग की दृष्टि से इनमें अद्भुत लचीलापन है। इनकी यह विशेषता इनके विषयनिष्ठ वर्गीकरण करने में अध्येता को कठिनाई में डाल देती है।

प्रायः भोजपुरी लोकोक्तियों की भाषा लयात्मक और आलंकारिक हैं। इनके ये गुण स्वतः स्फूर्त्त और स्वाभाविक हैं। इनमें विचारित या नियोजित सुघटता का परिचय नहीं मिलता। इसीलिए, प्रायः लोकोक्तियों के छन्द, अलंकार, सूत्रात्मकता आदि रूपात्मक तत्त्वों में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विविधता और अनगढ़ सौन्दर्य है। किन्तु, इनके ऐसे रूप अपने अज्ञातनामा चतुर और आनन्दी रचयिताओं और प्रयोक्ताओं की अकृत्रिम और सहज रचना-शक्ति का भी यथार्थ परिचय देते हैं।

भोजपुरी लोकोक्तियाँ भोजपुरी जनता के वार्त्तालाप में उत्कर्ष ही नहीं लातीं, वरन् उनके चित्त का परिष्कार भी करती हैं। चाहे, खेतीबारी हो, घरेलू झगड़ा हो, किसी कठिन कार्य का प्रारम्भ हो, किसी व्यक्ति, जाति, जीव-जन्तु या वनस्पति की चर्चा हो—इन सभी प्रसंगों में लोकोक्तियाँ उद्धृत होकर श्रोताओं के मन पर बहुत गहरा और बहुकालिक प्रभाव डालती हैं। इस तरह ये पथप्रदर्शिका के रूप में लोकजीवन को व्यवस्था और विकास में सक्रिय सहयोग प्रदान करती हैं। ये सामाजिक जीवन के एक अविच्छिन्न अंग के रूप में प्रतिष्ठित 'तेजोमय वाक्' हैं।

भोजपुरी लोकोक्तियों में व्यंग्य और हास्य-विनोद का पुट अधिक है। इसका कारण यह भी है कि इनका स्रष्टा या प्रयोक्ता-समुदाय स्वयं बहुत जिन्दादिल है। जिस जाति में जितनी ही अधिक ओज, निर्भीकता, कुछ परवा नहीं करने की भावना और आमोद-प्रमोद की प्रवृत्ति रहती है, उतना ही अधिक उसकी लोकोक्तियों में व्यंग्य-विनोद का स्तर प्रमुख और परिव्याप्त रहता है। यही कारण है कि अधिकांश भोजपुरी लोकोक्तियों में व्यंग्य और हास्य का झीना आवरण दीख पड़ता है।

भोजपुरी लोकोक्ति-साहित्य में मौलिक और दूसरी भाषा से भी गृहीत लोकोक्तियाँ संचित हैं। उपर्युक्त दूसरे प्रकार की सभी लोकोक्तियों की मूलभाषा या जन्म-स्थान का निर्णय करना कठिन है। ऐसी लोकोक्तियों के रूपान्तर अन्य भाषाओं में भी मिलते हैं। इन लोकोक्तियों में ऐसी भी लोकोक्तियाँ पर्याप्त संख्या में उपलब्ध हैं, जो संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश-भाषाओं से किंचित् परिवर्त्तन के साथ रूपान्तरित होकर भोजपुरी भाषा में गृहीत हैं। भोजपुरी भाषा की मौलिक लोकोक्तियाँ भी बड़ी संख्या में प्राप्त होती हैं। इनमें क्षेत्रीय जीवन की झाँकी मिलती है। इनके वर्ण्य विषय या इनमें प्रयुक्त बिम्बों में क्षेत्रीय जीवन के सामाजिक, भौगोलिक और ऐतिहासिक विवरणों के उल्लेख मिलते हैं। साथ ही, इनमें भोजपुरी क्षेत्र के समीपस्थ चतुर्दिक् क्षेत्रों के जीवन के कुछ प्रसंग अनुस्यूत हैं।

उपर्युक्त उल्लेखों से यह सिद्ध होता है कि भोजपुरी लोकोक्तियाँ, संख्या, अर्थ-सामर्थ्य और रूप की दृष्टि से विविध और विशिष्ट हैं। ये प्लवमान लोकवार्त्ता के रूप में प्राप्त हैं। किन्तु, भोजपुरी लोकोक्तियाँ अपनी उपलब्धि से हिन्दी-भाषा और साहित्य को भी ऐश्वर्य प्रदान कर सकती हैं। सम्प्रति, हिन्दी-भाषा और साहित्य को 'क्लासिकल' बनाने की भी कोशिशें की जा रही हैं। फलस्वरूप, हिन्दी अपनी भोजपुरी जैसी समृद्ध बहन के आँचल में संचित वाणी की विरल विभूतियों का स्वागत नहीं कर्ने के लिए लाचार हो जाती हैं। परन्तु, यह सन्तोषजनक स्थिति नहीं है। हिन्दी संसार की अन्य भाषाओं के साथ अपनी बोलियों की विरासत को आत्मसात् करके ही, विराट् लोक-समुदाय की भाषा बनी रह सकती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिशिष्ट

१ : कवियों की लोकोक्तिपरक सूक्तियों की सूची

२ : संस्कृत लौकिक न्यायों पर आधारित और लौकिक न्यायपरक लोकोक्तियों की सूची

३ : प्रयुक्त लोकोक्तियों की सूची

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिशिष्ट : १

कवियों की लोकोक्तिपरक सूक्तियों की सूची :

भोजपुरी लोक-समुदाय लोकोक्ति की ही तरह कुछ लोकप्रिय कवियों की सूक्तियों का व्यवहार करता है। ये लोकप्रिय कवि हैं—घाघ, भड्डर, भड्डरी, डाक, कबीरदास, तुलसीदास, रहीम, गिरधर, मलूकदास, वृन्द और रामेश्वर।

इन उपर्युक्त कवियों में घाघ, भड्डर, भड्डरी और डाक के जन्मस्थान, जन्मतिथि, मृत्युतिथि, प्रामाणिक नाम और इनकी सूक्तियों की मूलभाषा के सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। असम से गुजरात तक की प्रायः सभी भाषाओं और बोलियों में इन कवियों के नाम से प्रचलित सूक्तियाँ मिलती हैं। इसी आधार पर भारतवर्ष के कई भाषा-भाषी क्षेत्र एक साथ इन कवियों को अपने-अपने क्षेत्र और भाषा के कवि सिद्ध करने की कोशिश करते हैं। कबीरदास और तुलसीदास के जन्मस्थान और जन्मतिथि के सम्बन्ध में भी विद्वानों में मतभेद है।

लेखक, उपर्युक्त कवियों में से रामेश्वरदास[1] को छोड़कर किसी भी कवि और उसकी सूक्तियों के भोजपुरी-भाषा के होने का दावा नहीं करता। यहाँ भोजपुरी लोक-समुदाय द्वारा व्यवहृत होनेवाली कवियों की लोकोक्तिपरक सूक्तियों की सूची प्रस्तुत करना ही अभीष्ट है। भोजपुरी लोक-समुदाय जिस रूप में सूक्तियों का व्यवहार करता है, उन्हें उसी रूप में कवियों के नामों के वर्णानुक्रम से अविकल नीचे दिया जा रहा है।

कबीरदास :

१. आये थे सो जायेंगे राजा रंक फकीर।
एक सिंहासन चढ़ि चले, एक बँधे जंजीर॥

२. एक लाख पूत, सवा लाख नाती।
तेह रावन घर दिया ना बाती॥

३. कबिरा खड़ा बाजार में लिये लुकाठी हाथ।
जो घर फूँका आपना, चले हमारे साथ॥

---

१. रामेश्वरदास का जन्म शाहाबाद जिले (बिहार) के 'कवलपट्टी' ग्राम में हुआ था। इनकी जन्मतिथि संवत् १७७५ वि० है और मृत्युतिथि संवत् १८८५ की ज्येष्ठ-कृष्ण अष्टमी है। रामेश्वरदास की जीवनी और कृतित्व के लिए देखिए—दुर्गाशंकरप्रसाद सिंह : भोजपुरी के कवि और काव्य, बि० रा० प० प्रकाशन, १९५८ ई०, पृ० १०२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४. जात-पाँत पूछे ना कोई, हरि के भजे से हरि के होई ।
५. जो कबीर कासी मुए तऽ रामहु काहु निहोरा रे ।
६. डूबा बंस कबीर का उपजा पूत कमाल ।
७. प्रेम ना बाड़ी उपजे, प्रेम ना हाट बिकाय ।

गिरधर :

१. कमरी थोरे दाम की आवे बहुते काम,
खासा मलमल वाफता उनकर राखै मान ।
उनकर राखै मान बूँद जहँ आड़ें आवै,
बकुचा बाँधे मोढ रात को झार बिछावै ।

२. कह गिरधर कबिराय बात बाँधो यह गाठी,
कमर लिये तरुवारि हाथ में राखो लाठी ।

घाघ :

१. उत्तर चमके बिजुरी, पूरबा बहे बेयार ।
घाघ कहे सुन भड्डरी बैल भीतर बान्हः हमार ।।
२. ऊँच अटारी मधुर बतास, घाघ कहे घर ही कैलास ।
३. घाघ बात अपने मन गुनही, छतरी भगत न मूसर धनुही ।
४. छिन पुरवैया छिन पछियाव, छिन छिन बहे बबूल बाव;
बादर ऊपर बादर धावे, तबे घाघ पानी बरसावे ।
५. झिलँगा खटिया बातलि देह, तिरिया लम्पट हाटे गेह ।
बेटा बिगरि के मुदई मिलन्त, कहे घाघ ई बिपति के अन्त ।।
६. थोर जोतिहः बहुत हें गइह, ऊँच के बनिहः आरी ।
उपजे तऽ उपजे नाहीं तऽ घाघे दिहः गारी ।।
७. दिन के बद्दर रात निबद्दर, बहे पुरवइया झब्बर-झब्बर ।
कहे घाघ कुछ होनी होई, कुइँया के पानी से धोबी धोई ।।
८. देस के बरखा, घर के घोड़ कहे घाघ कि दूरी थोड़ ।
९. नसकट खटिया दुलकन घोड़, कहे घाघ कि बिपति के ओर ।
१०. प्रातकाल खटिया से उठि के, पीये तुरन्ते पानी ।
ओह के घर में बैद ना जइहें, बात घाघ के जानीं ।।
११. बिन मेहरी ससुरारी जाय, साँझ पराते सत्तू खाय ।
जेठ मास में जे पेन्हे पौआ, कहे घाघ ई तीनों कउवा ।।
१२. माघे ऊखम जेठे जाड़, पहिले भरे गाढ़ ।
१३. रात निबद्दर दिन के छाया, कहे घाघ जे बरखा गया ।

डाक :

आदिन बरसे आदरा, हस्त न बरसे निदान ।
कहे डाक सुनि मिल्लरी, भये किसान पिसान ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुलसीदास :

१. आपहु आपहु जगत बियापू ।
२. उघरे अन्त न होहिं निबाहू ।
३. उदित अगस्त पन्थ जल सोखा ।
४. कतहुँ सुधाइहुँ ते बड़ दोसू ।
५. कर्म प्रधान विश्व करि राखा ।
६. खग जाने खग ही के भाखा ।
७. जस करनी तस भोगहुँ ताता । नरक जात काहे पछताता ।।
८. जहाँ सुमति तहाँ सम्पति नाना । जहाँ कुमति तहँ बिपति निधाना ।।
९. जेहि पर जेहि के सत्य सनेहू । सो तेहि मिले न कछु सन्देहू ।
१०. टेढ़ जानि संका सब काहू ।
११. दुइकि होई एक संग भुआलू । हँसब ठठाइ फुलाइब गालू ।।
१२. दैव दैव आलसी पुकारा ।
१३. पर उपदेस कुसल बहुतेरे ।
१४. पराधीन सपने सुख नाहीं ।
१५. प्रभुता पाइ काहि मद नाहीं ।
१६. भइ गति साँप छुछुन्दर केरी ।

भड्डर :

१. आवत आदर ना दिये जात ना देवें हस्त ।
कहे भड्डर दोऊ गये बनिया वो गिरहथ ।।
२. करकै भींजे कंकरी सिंह गरजे जाय ।
कहे भड्डर सुनु भड्डरी कुत्ता भात न खाय ।।
३. तोतर पंखी बदरी राँड़ फुलेल लगाय ।
कह भड्डर सुन भड्डरी वह आवे यह जाय ।।

भड्डरी :

१. कातिक सुदी एकादसी बादर बिजुरी होय ।
तो असाढ़ में भड्डरी बरखा चोखी होय ।।
२. नवें असाढ़ि बादरी जो गरजे घनघोर ।
कहे भड्डरी जोतसी अकाल पड़े चहुँ ओर ।।
३. सावन बदी एकादसी, बादल ऊगे सूर ।
तो अस भासे भड्डरी, घर घर बाजे तूर ।।

मलूकदास :

अजगर करै ना चाकरी, पंछी करै ना काम ।
दास मलूका कहि गये, सभ के दाता राम ।।

मो० लो० ३०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहीम :

१. अन माँगे मोती मिले माँगे मिले ना भीख ।
२. बड़े भये तो का भये जइसे तार खजूर ।
पंछी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर ।।
३. रहिमन बिपता तू भली जो थोरे दिन होय ।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय ।।
४. रोपे पेड़ बबूर के, आम कहाँ ते होय ।

रामेश्वर :

चइत के जाड़ राड़ के बोली बिखम कँहार छोट डोली ।
रामेश्वर आसिन के घाम, ई मति कबहुँ सहावऽ राम ।।

वृन्द :

१. बीछी मन्त्र न जानहि साँप पिटारे हाथ ।
२. रसरी आवत जात तें सिल पर होत निसान ।

परिशिष्ट : २

संस्कृत लौकिक न्यायों पर आधारित और लौकिक न्यायपरक लोकोक्तियों की सूची :

(क) संस्कृत लौकिक न्यायों पर आधारित :

लौकिक न्याय : अर्द्धं त्यजति पण्डितो न्यायः ।
पण्डित आधा का परित्याग करते हैं ।

लोकोक्ति : आधा तजे पंडित सरबस तजे गँवार ।
(सर्वनाश की सम्भावना के समय) चालाक आधा का त्याग कर आधा बचा लेते हैं ; परन्तु मूर्ख सम्पूर्ण के लोभ के कारण सम्पूर्ण से हाथ धो बैठते हैं ।

लौकिक न्याय : अहिकुण्डलन्यायः ।
सर्प का कुण्डल भंग भी कर दिया जाय, तो वह फिर पूर्ववत् हो जाता है ।

लोकोक्ति : कुकुर के पोंछ बारह बरिस ले गाड़ीं, तबहूँ टेढ़े के टेढ़े रही ।
कुत्ते की पूँछ बारह वर्षों तक गाड़कर रखने के बाद भी वह पहले की तरह टेढ़ी ही रहेगी ।

लौकिक न्याय : उत्पादितदन्तनागन्यायः ।
दन्तहीन साँप में गर्जना-मात्र होती है ।

लोकोक्ति : थोथा चना, बाजे घना ।
रिक्त चना खूब बजता है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लौकिक न्याय : उपवासाद्वरं भैक्ष्यमिति न्यायः ।
उपवास से भिक्षा श्रेष्ठ है ।
लोकोक्ति : उपास भला कि मेहरि के जूठ भला ।
उपवास अच्छा है कि पत्नी की जूठन ।
लौकिक न्याय : औपाधिकाकाशभेदन्यायः ।
एक आकाश उपाधि-भेद से अनेक हैं ।
लोकोक्ति : एके बिटिया आवे, बबुई बहुरिया देवानजी कहावे ।
एक ही लड़की वर में आती है, उसीको कोई 'बबुई' (स्नेह-सूचक नाम), कोई 'बहू' और कोई 'दीवानजी' कहता है ।
लौकिक न्याय : कण्ठचामीकरन्यायः ।
भ्रमवश गले के हार के लिए अन्यत्र खोज करना ।
लोकोक्ति : गोदी में लरिका, सदर में ढिढोरा ।
गोद में लड़का है, किन्तु शहर में उसकी खोज हो रही है ।

(ख) लौकिक न्यायपरक लोकोक्तियाँ :

कुत्ता-दो घर न्याय :

ए कुकुर तूँ दूबर काँहे, दू घर के आवे जावे से ।
ए कुत्ते ! तुम दुबले क्यों हो ? कुत्ता—दो घर में आने-जाने से ।

जौ-घुन न्याय :

जौ के संगे घून पिसाला ।
जौ के साथ घुन भी पीसा जाता है ।

नदी-नाव न्याय :

नदी नाव संजोग ।
संयोगवश नदी में नाव पर आते-जाते भेंट हो जाना ।

गदहा-धोबी न्याय :

ना धोबिया के दोसर जनवरवा, ना गदहा के दोसर मउआर ।
न धोबी को दूसरा पशु है और न गधे को दूसरा स्वामी ।

बिल्ली-छींका न्याय :

बिलारि के भागे सिकहर टूटल ।
बिल्ली के भाग्य से छींका टूटा ।

मध्यस्थ बैल-दँवरी न्याय :

बे मेंह के दौंरी ।
बिना मध्यस्थ बैल के दँवरी करना ।

बाँस-बाँसुरी न्याय :

ना बाँस रही ना बँसुरी बाजी ।
न बाँस रहेगा, न बाँसुरी बजेगी ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिशिष्ट : ३

प्रयुक्त लोकोक्तियों की सूची :

प्रस्तुत भोजपुरी लोकोक्तियों की सूची से सम्बद्ध कुछेक ज्ञातव्य तथ्यों एवं सूचनाओं का उल्लेख करना समीचीन है। तदर्थ, लोकोक्तियों के संग्रह-सिद्धान्त, स्रोत और सीमाक्षेत्र-सम्बन्धी विवरण संक्षेप में नीचे दिये जा रहे हैं।

(अ) संग्रह के सिद्धान्त :

प्रस्तुत लोकोक्ति-संग्रह के लिए कुछ नियोजित और निश्चित सिद्धान्तों का अनुसरण किया गया है। वे सिद्धान्त इस प्रकार हैं :

१. लोकोक्तियाँ जिस रूप में सुनी गई हैं या लिखित रूप में प्राप्त हुई हैं, उसी रूप में संगृहीत की गई हैं।

२. भोजपुरी भाषा की प्रकृति को दृष्टि में रखते हुए भोजपुरी लोकोक्तियों को लिपिबद्ध किया गया है।

३. बोलचाल में प्रयुक्त या लोकोक्ति-कोशों में संगृहीत लोकोक्तियों के विभिन्न पदक्रमों में प्राप्त उदाहरणों में, उन्हीं उदाहरणों को गृहीत किया गया है, जो अधिक प्रचलित हैं। ऐसे, अध्ययन की दृष्टि से लोकोक्तियों के विभिन्न पदक्रमों में प्राप्त उदाहरणों को भी संगृहीत कर लिया गया है।

४. लोकोक्तियों के प्राप्त पाठान्तरों या रूपान्तरों को भी संगृहीत किया गया है। किन्तु, लोकोक्तियों के अध्ययन के प्रसंग में उन्हीं पाठान्तरों का उल्लेख करना समीचीन समझा गया है, जिनसे सम्बद्ध प्रकरण के किसी तथ्य पर विशेष रूप से प्रकाश पड़ता है।

५. संस्कृत और अन्य भाषाओं की लोकोक्तियों के भोजपुरी रूपान्तरों को भी 'भोजपुरी लोकोक्ति' के अन्तर्गत ही परिगणित किया गया है।

६. भोजपुरी-भाषाभाषियों द्वारा व्यवहृत घाघ, भड्डरी, डाक, कबीर, तुलसी, रहीम, गिरधर आदि लोकप्रिय कवियों को सूक्तिपरक लोकोक्तियों को भी 'भोजपुरी लोकोक्ति' के अन्तर्गत परिगणित किया गया है। ऐसी लोकोक्तियों की सूची अलग से दी गई है।

(आ) संग्रह के स्रोत :

भोजपुरी लोकोक्तियों का संग्रह निम्नांकित स्रोतों से किया गया है :

क. लोकसमुदाय की बोलचाल।

ख. लोकोक्ति-कोश और सामान्य कोश।

ग. पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लोकोक्ति-सूची।

घ. लोक-साहित्य के विविध अंगों में प्रयुक्त लोकोक्तियाँ।

ङ. आलोचनात्मक ग्रन्थ और पत्र-पत्रिकाएँ।

उपर्युक्त स्रोतों में पहला स्रोत उच्चरित भाषा में प्राप्त होता है, इसलिए शेष अन्य प्रकाशित स्रोतों का विवरण नीचे दिया जा रहा है।

लोकोक्ति-कोश और सामान्य कोश :

लोकोक्ति-कोश : भोजपुरी लोकोक्तियों का कोई स्वतन्त्र कोश प्रकाशित नहीं हुआ है। कई भाषाओं या बोलियों की लोकोक्तियों के साथ भोजपुरी लोकोक्तियों को भी संगृहीत करनेवाले कोश प्रकाशित हुए हैं। कोश-ग्रन्थ इस प्रकार हैं :

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१. **ए डिक्शनरी ऑव हिन्दुस्तानी प्रोवर्ब्स** : एस्० डब्ल्यू० फैलन, प्रथम संस्करण, सन् १८९१ ई०, लन्दन।

२. **बिहार प्रोवर्ब्स** : जॉन क्रिश्चियन, प्रथम संस्करण, सन् १९३८ ई०, लन्दन।

३. **रैसियल प्रोवर्ब्स** : एस्० जी० चैम्पियन, प्रथम संस्करण, १९३८ ई०, लन्दन।

४. **ग्राम-साहित्य** (दूसरा भाग) : रामनरेश त्रिपाठी, प्रथम संस्करण, सन् १९५२ ई०, दिल्ली।

५. **कहावत-कोश** : सं० डॉ० भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव' तथा श्रीविक्रमादित्य मिश्र, बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, सन् १९६५ ई०, पटना।

सामान्य कोश :

१. **बिहार पिजेण्ट लाइफ** : जॉर्ज ग्रियर्सन, गवर्नमेण्ट प्रेस, गुलजारबाग, पटना।

२. **ए न्यू हिन्दुस्तानी-इंगलिश डिक्शनरी** : एस्० डब्ल्यू० फैलन, राय साहब एम्० गुलाब सिंह ऐण्ड सन्स लाहौर, सन् १९४१ ई०।

पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लोकोक्ति-सूची :

समय-समय पर भोजपुरी और हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओं में भोजपुरी लोकोक्तियों की नातिदीर्घ सूचियाँ प्रकाशित होती रही हैं। विवरण के साथ वर्णानुक्रम से सम्बद्ध उन पत्र-पत्रिकाओं के नाम नीचे दिये जा रहे हैं :

१. 'किशोर', पटना, अप्रैल-मई, १९४४ ई०, संग्रह-कर्त्ता : पं० रामदहिन मिश्र।

२. 'ग्रामसेवक', पटना, अगस्त, १९५५ ई०, सं० क० सत्यदेवनारायण अष्ठाना।

३. 'भोजपुरी', आरा, बिहार :

(क) मार्च, १९५३ ई०, 'भोजपुरी कहाउति' : सं० क० शिवप्रसाद सिंह।
(ख) मई, १९५३ ई०, 'भोजपुरी कहाउति' : सं० क० शिवप्रसाद सिंह।
(ग) जून, १९५३ ई०, 'भोजपुरी कहाउति' : सं० क० शिवप्रसाद सिंह।
(घ) अगस्त, १९५३ ई०, 'कहाउति' : सं० क० परमेश्वरीलाल गुप्त।
(ङ) नवम्बर, १९५३ ई०, 'घाघ के बानी' : सं० क० नर्मदेश्वर आजाद।
(च) कुआर, २०१० वि०, 'भोजपुरी कहाउति' : सं० क० परमेश्वरीलाल गुप्त।
(छ) अगहन, २०१० वि०, 'भोजपुरी कहाउति', सं० क० परमेश्वरीलाल गुप्त।
(ज) अगहन, २०१० वि०, 'खेति के कहाउति', सं० क० रामगणेश पाण्डेय।
(झ) जनवरी, १९५४ ई०, 'भोजपुरी कहाउति', सं० क० परमेश्वरीलाल गुप्त।
(ञ) जनवरी, १९५४ ई०, 'भोजपुरी कहाउति', सं० क० जगन्नाथप्रसाद सिंह।
(ट) मार्च, १९५४ ई०, 'कहाउति', सं० क० शिवप्रसाद सिंह।
(ठ) अगस्त, १९५५ ई०, 'बरखा के कहाउत', सं० क० अनिलकुमार।

४. 'हिन्दुस्तानी', प्रयाग—(उत्तरप्रदेश) :

(क) अप्रैल, १९३९ ई०, 'भोजपुरी लोकोक्तियाँ, सं० क० डॉ० उदयनारायण तिवारी।
(ख) जुलाई, १९३९ ई०, 'भोजपुरी लोकोक्तियाँ, सं० क० डॉ० उदयनारायण तिवारी।
(ग) जुलाई-सितम्बर, १९४६ ई०, 'भोजपुरी संस्कृति', : सं० क० श्रीलाल सिंह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोक-साहित्य के विविध अंग

भोजपुरी लोक-साहित्य विविध और समृद्ध है। किन्तु, उसका अधिकांश अलिखित है। इसलिए, लोक-साहित्य में प्रयुक्त लोकोक्तियों के संग्रह के लिए प्रकाशित भोजपुरी लोक-साहित्य को आधार बनाया गया है। लोकोक्तियों का प्रयोग विशेषतः भोजपुरी ग्रामगीतों और भिखारी ठाकुर, राहुल सांकृत्यायन एवं जगदीश सिंह 'काश्यप' द्वारा लिखित भोजपुरी नाटकों में अधिक हुआ है।

आलोचनात्मक ग्रन्थ और पत्र-पत्रिकाएँ :

भोजपुरी साहित्य, भोजपुरी भाषा, भोजपुरी क्षेत्र की संस्कृति और इतिहास पर लिखे गये ग्रन्थों या निबन्धों में भी छिटपुट रूप से भोजपुरी लोकोक्तियाँ उद्धृत की गई हैं। जिन ग्रन्थों और पत्र-पत्रिकाओं में थोड़ी-बहुत भोजपुरी लोकोक्तियाँ प्राप्त हुई हैं, उनके नाम इस प्रकार हैं :

ग्रन्थ :

१. हिन्दी-साहित्य का बृहत् इतिहास, षोडश भाग, सम्पादक : राहुल सांकृत्यायन, काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
२. भोजपुरी और उसका साहित्य, प्रथम संस्करण, डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
३. लोक-साहित्य की भूमिका : डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय, साहित्य-भवन लि०, प्रयाग।
४. भोजपुरी लोक-साहित्य का अध्ययन : डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय, हिन्दी-प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी।
५. भोजपुरी के कवि और काव्य, प्रथम संस्करण, १९५८, बि० रा० प०, पटना, लेखक : दुर्गाशंकरप्रसाद सिंह, सम्पादक : डॉ० विश्वनाथ प्रसाद।
६. भोजपुरी लोकगीतों में करुण रस : दुर्गाशंकर प्रासद सिंह।
७. भोजपुरी लोक-साहित्य—एक अध्ययन : बैजनाथ सिंह 'विनोद'।

पत्र-पत्रिकाएँ :

१. 'हंस', काशी-विशेषांक, वर्ष ४, संख्या १३।
२. भोजपुरी भाषा और साहित्य (लघु निबन्ध) : गणेश चौबे, बि० रा० प० द्वारा प्रकाशित।

(इ) संग्रह की क्षेत्रसीमा :

प्रस्तुत अध्ययन के लिए भोजपुरी लोकोक्तियों का संग्रह सामान्यतः समस्त भोजपुरी क्षेत्र और विशेषतः दक्षिणी भोजपुरी (आदर्श भोजपुरी) क्षेत्र, अर्थात् शाहाबाद, सारन, बलिया, देवरिया (पूर्वी) तथा गाजीपुर (पूर्वी) जिले, से किया गया है। भोजपुरी भाषा का समस्त क्षेत्र अति विस्तृत है। एक व्यक्ति को दृष्टि में रखते हुए पूरे भोजपुरी क्षेत्र में व्यवहृत होने-वाली लोकोक्तियों का, लोगों से पूछकर या सुनकर संग्रह करना समयसाध्य और दुःसाध्य कार्य है। इसलिए, लेखक ने प्राप्त सुविधा और साधन के अनुसार लोकोक्तियों का संग्रह विशेषतः दक्षिणी भोजपुरी क्षेत्र से किया है। इस क्षेत्र से संगृहीत लोकोक्तियों की विपुल संख्या और उनके अध्ययन से यह सिद्ध होता है कि यह क्षेत्र, लोकोक्तियों के उद्भव और विकास तथा व्यवहार के लिए उर्वर क्षेत्र है।

इस क्षेत्र से संगृहीत लोकोक्तियों की अस्सी प्रतिशत लोकोक्तियाँ, किंचित् स्थानीय उच्चारण और रूप-भेद के साथ सम्पूर्ण भोजपुरी क्षेत्र में भी व्यवहृत होती हैं। अतः, निस्सन्देह संगृहीत लोकोक्तियों को भोजपुरी लोकोक्तियों का प्रतिनिधि उदाहरण कहा जा सकता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वर्णानुक्रमानुसार लोकोक्ति-सूची :

(१) '—' चिह्न का संकेत है—भिन्न लोकोक्ति
(२) ऑ—ॉ=ह्रस्वोच्चरित 'ऑ' स्वर
(३) ओं—ों=ह्रस्वोच्चरित 'ओं' स्वर

१. —अंगुरी धरत धरत पहुँचा पकड़ लिहलें ।
२. —अंडा सिखावे बच्चा के कि चेउँ चेउँ बोलु ।
३. —अँटकल बनिया दे उधार ।
४. —अँटकल बनिया सौदा करे ।
५. —अँटकी से भटकी ।
६. —अइने के दइने न दइने के टिटोर ।
७. —अइली ना गइली दु केबऽ कहवली ।
८. —अइले दमाद एक दिन पिछहीं देखब ।
९. —अइसन दुनियाँ बाउर, बेग़ा के पीठा, दमादे के जाउर ।
१०. —अइसन देश मँझउवाँ, जहाँ भात न पूछे कउवा ।
११. —अउर अन्न खइलें, ना गोहूँ गँठिअवले ।
१२. —अकरब मुए ना छुतिहर फूटे ।
१३. —अकासे से गिरली खजुरी पर अँटकली ।
१४. —अक्किल बड़ा कि भइँस ।
१५. —अकुतइले गूलर ना पाकेला ।
१६. —अकुताइल कोहांर लकड़ी से खने माटी ।
१७. —अकुताइल से बउराइल ।
१८. —अकेले लकड़ी कहाँ तक जाले ।
१९. —अकेले चले न बाट, झार के बइठे खाट ।
२०. —अगर भेंड़ी के लेंड़ी मीठे होइत तऽ दोसर आदमी का खेते ना हिराइत ।
२१. —अगहन दूना पूस सवाई, माघ मास घरहू से जाई ।
२२. —अगहन बरसे टून, पूस बरसे दून ।
२३. माघ बरसे सवाई, फागुन बरसे गँवाई ।
२४. —अगहन रजपुत अहीर असाढ़, भादो भइँसा चइत चमार ।
२५. —अग्र सोची सदा सुखी ।
२६. —अघाइल बकुला पोठिया तीत ।
२७. —अघाइल भइँसा तबो अढ़ाई कट्ठा ।
२८. —अच्छी गाय बेसाइये जिसकी कजजल बान,
२९. सोलह सिंह बत्तीस खुरी नव थन तेरह कान ।
३०. आँगन बरसे घर भरे बाछा घास न खाय,
३१. पहिले दही जमाई के पीछे कीन्ह गाय ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३२. —अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम ।
दास मलूका कहि गये, सबके दाता राम ।।
३३. —अतना पर तऽ अइसन, काजर देला पर कइसन ।
३४. —अदमी ना हवे, बागड़ हवे ।
३५. —अथीत मंत्री बोआवे तितलउकी ।
३६. —अथीथ ना फकीर, परपोंगा ।
३७. —अदरा गइल तीनों गइल, सन साठी कपास ।
हथिया गइल सभ कुछ गइल, आगिल पाछिल चास ।।
३८. —अदरा मास जे बोए साठी, दुख के मार निकाल लाठी ।
३९. —अदरा धान पुनरबस पैया, गइल किसान जे बोए चिरैया ।
४०. —अधभरी गगरी छलकति जाये ।
४१. —अनकर भइया आन रोवइया, धान दीहें कि पैया ।
४२. —अनकर पद अनकर महुआ, नाचे चोर बजावे सहुवा ।
४३. —अनकर सेनूर देखिके, आपन कपार फोरीं ।
४४. —अनका खाती काँटा बोवलन, काँटे उनके गड़ल ।
४५. —अनका लगुरिया पर चामचूम ।
४६. —अनदेखल चोर राजा बरोबर ।
४७. —अनमाँगे मोती मिले, माँगे मिले न चीर ।
४८. —अनाज खाये आपन, लोग कहे दलिद्दर ।
४९. —अनारी के घोड़ा, सोनारी के सोना ना पटेला ।
५०. —अन्न अन्न जरलसि, भार खातिर रख देले फिरतिया ।
५१. —अन्हरन में काना राजा ।
५२. —अन्हरा के दूगो अँखिये चाहीं ।
५३. —अन्हरा के आगे रोवे आपन दीदा खोवे ।
५४. —अन्हरा के आगे हीरा कंकड़ बरोबरि ।
५५. —अन्हरा बाँटे अपने ले ।
५६. —अन्हरा बिना रहीं न जाय, अन्हरा के देखले अँखिये पिराय ।
५७. —अन्हरे सियार के पिपरे मेवा ।
५८. —अन्हेर नगरी चौपट राजा, टका सेर भाजी, टका सेर खाजा ।
५९. —अन्हरे के भइंस बिआइल पड़िया, गाँव के लोग ले दऊरल हँड़िया ।
६०. —अन्हरे सूझे बहराइच ।
६१. —अपना करवइया बिना राव के बने रवड़ी ।
६२. —अपना के रोंवती, तीन गीति गावतीं ।
६३. —अपना घरे दीआ ना बाती, अनका घरे मूसर अस बाती ।
६४. —अपना छान्ह पर ओरहा झोली, लोग के बाप के का ।
६५. —अपना नीनी सूतल, अपना नीनी जागल ।
अपना मुअला बिना सरग के देखल ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

६६. —अपने मन के जौ की, भात पकाईं कि लौकी।
६७. —अपनी करनी पार उतरनी।
६८. —अपने करे से काम, पास रहे से दाम।
६९. —अपने के अलहिजा, दूसरे के गंडा पूरे, अइसन होलें साधु।
७०. —अपने खाइ बिलारि के लावे, ओकर जियरा सूम सतावे।
७१. —अपने दुआरे कुकरो बरियार।
७२. —अपने पहरें रहीं जाग, आन के पहरे लागे आग।
७३. —अपने मन से जानीं पराया मन की बात।
७४. —अपने मुँह मियाँ मिट्ठू।
७५. —अबका लिलाम से तिलाम होई।
७६. —अबकी अब के साथ जबकी जब के साथ।
७७. —अब पछताये होत क्या, चिड़ियाँ चुग गई खेत।
७८. —अबरे ओन्चास बयारि।
७९. —अबहीं एगो चना के दू दाल ना भइल।
८०. —अबहीं पोखरा खनइबे ना कइल तबले घरियार डेरा डलले।
८१. —अब्बर घोड़ी पहिलहीं जीन कसेली।
८२. —अब्बर पइली बनियाइन, नाप देहली डेढ़ सेरी।
८३. —अमवाँ झोर बहे पुरवाई, तब जानो बरखा रितु आई।
८४. —अरकी के चढ़वइया, पोंछि के लगाम।
८५. —अरकी के नाउन बाँस के नोहरनी।
८६. —अरकी के पीवइया पोंछिटा में हुक्का।
८७. —अरनघट माया, परनघट छोह।
जब देखीं तब लागे मोह॥
८८. —अरब गये मोगल होय आये, बोले अरबी बानी।
आब आब कहि पिया मुअले, सिरहाने था पानी॥
८९. —अरिया के गरिया भला, पाही के ना डूब।
९०. —अलइयाँ लूँ, बलइयाँ लूँ, सनहक सरका लूँ।
९१. —अलख पुरुख के माया, कहीं धूप कहीं छाया।
९२. —अलगरजी के बिआह, लुआठी में भाँवर।
९३. —अलबेली गुजरिया, बड़हर के झुमका।
९४. —अल्पाहारी सदा सुखी।
९५. —अवर अन्न खइले ना गोहूँ गँठिअवले।
९६. —अवर जानवर के लीदि ना हाँथी के चिरकिल।
९७. —अवसर चूकलि डोमिन गावे ताल बेताल।
९८. —असक्का परली बिलारि तऽ मूस कहले जे होखऽ मोर बहुआरि।
९९. —असकत्ती गिरलन कुइयाँ में, कहलन हम एहिजे रहबि।
१००. —असमय पाय बिलरिया रोवे, मरल मूस मोर मोटरी टोवे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१०१. —अस रहिला बरियार होइहें, जे भरसाई फोरिहें ।
१०२. —असल से खाता ना, कमस्सल से नाफा ना ।
१०३. —असाढ़ मास आठै अँधियारी, जो निकले चंदा जलधारी ।
१०४. —चन्दा निकले बादर फोर, साढ़े तीन माह बरसा के जोर ।
१०५. —अस्सी लस्सी ।
१०६. —अहमद के पगड़ी, मुहम्मद के सिर पर ।
१०७. —अहीर बहीर बन बइर के लास्सा, अहीर हँसलन लागल तमासा ।
१०८. —अहीर के बखानल मछरी, मलाहे के बखानल दही, एके किसिम के हऽ ।
१०९. —अहीर बुझावे सेही मरद ।
११०. —अहीर मितनई नव करे जब अउर मीत मरि जाय ।
१११. —अहीर राजपूत डोम, तीनों जात हड़बोंग ।
११२. —आँगाँराइलि बिटिआ बरके आँखि फोरे ।
११३. —आँनकेर आटा, आँनकर घीव, चाबस-चाबस बाबा जीव ।
११४. —आँन का कमाई पर तेल बुकवा ।
११५. —आँनाका के पाँड़े दीन देखें, अपने पाँड़े ढिमिलिया खाले ।
११६. —आँनाँका सिंगार का पाछाँ आपन नाक ना कटवावल जाला ।
११७. —आँपना करते उढ़रल जाई, आ कहे कि दइबा उढ़रले जाइ ।
११८. —आँपना गाँवे लागे, आँनका गाँवे धुँआ ।
११९. —आँपना दुआर पर कुकरो बाघ होला ।
१२०. —आँपना दुआरी कुकुरो बरियार ।
१२१. —आँपना नीनी सूतल, आँपना नीनी जागल ।
१२२. —आँपना पेटे सुअरियो जीयेले ।
१२३. —आँपना बउराहे रोअल जाला, आँनका बउराहे हँसल जाला ।
१२४. —आँपाँना मरला के आगा, दोसरा के जरल आदमी ना देखेला ।
१२५. —आई आम की जाई लवेदा ।
१२६. —आई तऽ आई, ना तऽ खाली चरपाई ।
१२७. —आइल अगहन हाँड़ी दे अदहन ।
१२८. —आइल असाढ़ातऽ भूमि भई सँवारी, सैयाँ तुम जोति लेहु बीघा चारि अबरी ।
१२९. —आइल कनकट फूलल काँस, बराहमन उछललन नव नव बाँस ।
१३०. —आइल चइत फूलल गाल, माघ महीने उहे हाल ।
१३१. —आइल चइत सुहावन, फूहर मइल छुड़ावन ।
१३२. —आ मइल अगहन लागि गइल बेहरी, भागि गइल मरद धराइ गइल मेहरी ।
१३३. —आग खाये मुँह जरे, उधार खाये पेट जरे ।
१३४. —आग लगाके सियब पूरब ।
१३५. —आगिल बात पाछ परल, गले उदराछ परल ।
१३६. —आगे-आगे लोलबा, पीछे से खटोलबा ले चल लोलबा देसवा के ओरवा ।
१३७. —आगे आत्मा तब परमात्मा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१३८. —आगे कूबर, पाछे कूबर, हमरा भतार ले बाड़ा सूघर ।
१३९. —आगे खेती आगे आगे, पीछे के खेती भागे जोगे ।
१४०. —आगे गेहूँ पीछे धान, वाको कहिये बड़ा किसान ।
१४१. —आगे नाथ ना पीछे पगहा ।
१४२. —आगे मंगल पीछे भान, बरखा होखे ओस समान ।
१४३. —आगे भग्घा पीछे भान, बरखा होखे ओस समान ।
१४४. —आगे मनुवाँ खीर ना खाय, पीछे से पनोहर चोटे ।
१४५. —आगे मेघ पाछे भान, बरखा होखे ओस समान ।
१४६. —आजु तोहर महतारी खरजिउतिया कइले रहलि हा ।
१४७. —आजु मरिली सासु, काल्हि ढरिहे आँसु ।
१४८. —आजु बनिया, काल्हु सेठि ।
१४९. —आजु भइनी बासूदेव, काल्ह भइनी बसुवा,
पीठि पर लात धऽ के सास उतारस हँसुवा ।
१५०. —आठ आना पर दुर्गा पाठ, सतनारायन सूकी,
एहू पर जे ना सूने, सेहू करम के चूकी ।
१५१. —आठ कोस पर पानी बदले दस कोस पर बानी ।
१५२. —आठ जुलाहे नव हुक्का, तबनो पर थूकम-थुक्का ।
१५३. —आढ़ी काढ़ के बाढ़ी देहलीं घर घर से महथिन कहवलीं ।
१५४. —अथई गिरलन कुइआं में, कहलन भले बानी ।
१५५. —आदमी मुअला पर, चीज भुलइला पर सूझेला ।
१५६. —आदरा रेंड़ पुनर्वस पाती, लाग चिरैया, दिया ना बाती ।
१५७. —आध के साझ, बरोबरी के दरद ।
१५८. —आधा कहे से मरद बूझे, सरबस कहे से बरध बूझे ।
१५९. —आधा कूरई काटे अभाव,
देश के लंगा बसे नराँव ।
१६०. —आधा चितरा राई मुरई, आधा चितरा के राई ।
१६१. —आधा घर देउकुरि, आधा घर भरसाई ।
१६२. —आधा तजे पंडित, सर्वस तजे गँवार ।
१६३. —आधा पेट खाना, बनारस का रहना ।
१६४. —आधा माघे कम्मर कान्हें ।
१६५. —आधा साधे कम्मर बाँधे ।
१६६. —आधी को छोड़े, सारी का धाय, ऐसा बूड़ा थाह न पाय ।
१६७. —आधी छोड़ पूरी को धावे, ऐसा डूबे थाह न पावे ।
१६८. —आन के आस नित उपास ।
१६९. —आन के पनियां मैं भरों, ओ मोर भरे कहांर ।
१७०. —आन के मड़वे बड़ बड़ बाँस ।
१७१. —आन के गोड़वा धोवे नउनिया, आपन धोवत लजाय ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१७२. —आन ताल के बकुला, आन ताल बकलोल ।
१७३. —अन्हरा के आगे रोईं, आपन दीदा खोईं ।
१७४. —अन्हरा के लेखे, दिन रात बरोबरि ।
१७५. —अन्हेर नगरी चौपट राजा, टका सेर भाजी टका सेर खाजा ।
१७६. —आन्हर गइली भूँजा के, फूट गइल खपड़ी, लगली गावे ।
१७७. —आन्हर कुकुर, बतासे भूँके ।
१७८. —आन्हर गइया के राम रखवइया ।
१७९. —आन्हर गवरइया, भरसाई में खोंता ।
१८०. —आन्ही के आगे बेना के बतास ।
१८१. —आपन अँकवारि पूजल आगे बऽम्हना के खेत ।
१८२. —आप आप गइले साथे बाँड़ा के ले ले गइले ।
१८३. —आपद काले मरजादो नास्ति ।
१८४. —आपन टेंटर नाहिं देखे, आन के फूली निहारत फिरे ।
१८५. —आपन ढेड़ ना देखे, आन के फुल्ली निहारे ।
१८६. —आपन दऽ अबरू, गेंग मोल लऽ ।
१८७. —आपन पत अपने हाथ ।
१८८. —आप भला तो जग भला ।
१८९. —आपन बैल केल्हुवाडी नाथब ।
१९०. —आपन बैला मोहिं दे, तें जो अगवारि कर ।
१९१. —आपन मामा मरि गइले, जोल्हा धुनिया मामा भइले ।
१९२. —आपन मीठ, अनकर तीत ।
१९३. —आपन हाथ जगरनाथ के भात ।
१९४. —आपन हारल, मेहरी के मारल, केहू कहेला ?
१९५. —आँपना गाँवें लागे आन गाँवें धूआँ ।
१९६. —आम लगबे ना कइल कि मँगरा डेरा डलले ।
१९७. —आम के आम अँठुली के दाम ।
१९८. —आम फरे निहुर चले, रेंड़ फरे इतराये ।
१९९. —आरे जिला घर बा कौन बात के डर बा ।
२००. —आरसी ना फारसी, मियाँ जी बनारसी ।
२०१. —आलस नींद किसाने नासे, चोरे नासे खाँसी ।
२०२. —आला पर के धरल, साला के खाइल ना मिले ।
२०३. —आवत आदर ना कइलन, जात ना देलन हस्त ।
ये ही में दूनों गइलन पाहुन आ गिरहथ ।।
२०४. —आवत करे कुछ आदरा, जात करे कुछ हस्त ।
माघ मास के बुनी बिनु निरधन होय गिरहथ ।।
२०५. —आवतरन जइसे कि दउरा में डेंग धरत होखस ।
२०६. —आवत हाही, जात संतोख ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२०७. —आस पास रबी, बीच में खरीफ, नीमक मरिचा डाल के खा गइल हरीफ।
२०८. —आसनं पगु टारनं, पहिले खीसि निवारनं।
२०९. —आसाढ़ी सुदि नौमी, ना बादर ना बीज।
हर फाड़ि इन्ह ना कर, बइठल चाम बीज॥
२१०. —आसिन मास बहे ईसान थर थर काँपे गाय किसान।
२११. —आहर भरल, पोखर भरल, बहुरिया के पेट कबहूँ ना भरल।
२१२. —इडिल मिडिल के छोड़ऽ आस, खुरपी लेके गढ़हः घास।
२१३. —इहाँ बाघ देखल हा, तऽ बकोट केकर हऽ।
२१४. —ई उ गुड़ ना हऽ जेकरा चूँटा खइहें।
२१५. —ईख तिस्सा, गोहूँ बिस्सा।
२१६. —ई गूलर के पिलुवा हऽवन।
२१७. —ई गूलर के फूल लीहन।
२१८. —ई तऽ गांधी बाबा के सुराज हो गइल।
२१९. —ई तऽ जरमनवाँ के लड़ाई हो गइल।
२२०. —ई तऽ जोंक अइसन सटल बाड़न।
२२१. —ई नयनन के एही बिसेख, यह भी देखा वह भी देख।
२२२. —ई मँझउवाँ के बागड़ हऽवन।
२२३. —ई लड़का ना हवे, लड़का के पोंछ हवे।
२२४. —ईश्वर इच्छा बलीयसी।
२२५. —उकुसवनी बाती, खुधुकुवनी पतोह, अघसे नाहीं।
२२६. —उखरे बार ना नाँव का हऽ तऽ बरियार खाँ।
२२७. —उ खा के अफना गइल बाड़न।
२२८. —उ खूब पेन्ह-ओढ़ के निकलल बाड़न।
२२९. —उचकले ना मिली बान, मँगले ना रही मान।
२३०. —उचरुंग बइठलन बकुवा, कहलन कि सभ धन हमरे।
२३१. —उ छयल चिकनिया बनत फिरत बाड़न।
२३२. —उजरा गाँवे ऊँट आइल लोग कहे कि दद्दू अइलन।
२३३. —उत्तम खेती जेहर गहा, मद्धिम खेति जेहर संग रहा।
जे पूछे हर गइल कहाँ, तेकर घर दिन दुपहरे जरा॥
२३४. —उत्तम खेती, मध्यम बान, निखिद चाकरी, भीख निदान।
२३५. —उतरल घाँटी होखल माटी।
२३६. —उतरा में जे बहे उतरही, अगने गगरी भर बउरही।
२३७. —उतरा में जनि रोपहु भइया, तीन धान होई तेरह पइया।
२३८. —उदन्ते घोड़ी दुदन्ते गाय, माघे भैंस मउवारे खाय।
२३९. —उपास भला कि मेहरी के जूठ भला।
२४०. —उपास भला कि पतोहू के जूठ भला।
२४१. —उलटा चोर कोतवाले को डाँटे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२४२. —उलटा साँप सपहेरिए काटे ।
२४३. —उसरे के देवी, कोदो के अच्छत ।
२४४. —उसिना चाउर दाल खमारी मगह देश जनि जइह मुरारी ।
२४५. —उहाँ बाघ के बच्चा बिआइल बा ।
२४६. —उहे बैदा बतलावे जे रोगिया के भावे ।
२४७. —ऊख तिस्सा गोहूँ बिस्सा ।
२४८. —ऊँच हबेली फोफड़ बाँस, रिन खासु उ बरहो मास ।
२४९. —ऊँट रे ऊँट, तोर कवन खाल सीधा बा ।
२५०. —ऊखि करे सब कोई, जो जेठ बीच न होई ।
२५१. —ऊगत ऊगे महि भरे, बिसबत ऊगे जाय ।
२५२. —ऊगे अगस्त बन, फूले काँस, अब नइखे बरखा के आस ।
२५३. —ऊगे तारा तऽ चले सोनारा ।
२५४. —ऊँच बड़ेरी फोंका बाँस, रिन खैनी हम बरहो मास ।
२५५. —ऊपर धरीं तऽ सहदूल ले जाय, नीचे धरीं तऽ चील्ह कउवा खाय ।
२५६. —ऊलुँगी का बेटा भइल, उतापाती नाँव परल ।
२५७. —ए कुकुर तूँ दूबर काँहे, दू घर के आये जाये से ।
२५८. —ए छूँछा तोह के के पूछा ।
२५९. —ए माई अरजी, त ए पूता बरजीं ।
२६०. —ए मियाँ एढ़ें, तऽ हम तोहसे टेढ़ें ।
२६१. —एक तऽ अहीर, दोसरे जवान, तीसरे हो गइल नौ मन धान ।
२६२. —एक कलम घसके तऽ बावन गाँव खसके ।
२६३. —एक तऽ खाय अहीर किहाँ, दोसरे बिना घी के ।
२६४. —एक तऽ भालू दोसरे कान्ह कुदार ।
२६५. —एक तऽ बाग ना आइब, दोसरे आम ना खाइब, तेसरे खाइब तऽ लोक लोकउवा ।
२६६. —एक तावा के रोटी, का छोटी का मोटी ।
२६७. —एक दिन पहुना, दोसर दिन ठेहुना, तीसर दिन केहुना ।
२६८. —एक नाद दूइ भइँसा, ता घर कूसल कइसा ।
२६९. —एक पूत के पूत ना कहीं, एक आँखि के आँखि ना कहीं ।
२७०. —एक बोलावे, चौदह धावे ।
२७१. —एक बूँद जल चइत चुए, लाखन बुन्द सावन के मुए ।
२७२. —एक लाख पूत, सवा लाख नाती, तेह रावन घर दिया न बाती ।
२७३. —एक हर हतेया, दू हर काज, तीन हर खेती, चार हर राज ।
२७४. —एके बिटिया आवे, बबुई बहुरिया देवानजी कहाये ।
२७५. —एको पानी जो बरसे स्वाती, कुरमिन पेन्हे सोना-पाती ।
२७६. —एगो रहिला से भरसाह ना फूटेले ।
२७७. —एगो हरें मय गाँव खोखी ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२७८. —एने गिरीं तऽ कुइयाँ, ओने गिरीं तऽ खाई ।
२७९. —एने पाकड़ि ओने बर, एके सोझा दूनो घर ।
२८०. —एह पार नदी, ओह पार नदी, ई बिपति कहिया के बदी ।
२८१. —एहि रहिला के पूरी कचौड़ी, एहि रहिला के दाल ।
एहि रहिला के खाई खिरौली, खूब मोटाइल गाल ।
२८२. —ओझउ भाँज, गोंड़उ गीति के अन्त ना हऽ ।
२८३. —ओढ़े के आँटे ना, भुइँयाँ ले सोहरे ।
२८४. —ओढ़े के कुछ ना दरी बिछौना ।
२८४ क. —ओढ़े के लुगरी बिछावे के गलइचा ।
२८५. —ओरी तरके भूत नव पुहुत (पुस्त) के नाँव जानेला ।
२८६. —कंक के महुए मीठ ।
२८७. —कइसन दुनिया बाउर, लइका के बहुरी दमादे के जाउर ।
२८८. —कउवा कपूर खइले कहूँ उज्जर होला ।
२८९. —कटे अहीर के, सीखे बेटा नाउ के ।
२९०. —कतनो अहीरा होय सयाना, लोरिक छाड़ि ना गावहि आना ।
२९१. —कतनो करऽ जोगा टोना, बबुआ बैठिहें उहे कोना ।
२९२. —कदुआ पर सितुहा चोख ।
२९३. —कनियाँ के माँड़ ना, लोकनी के बुनियाँ ।
२९४. —कपड़ा पहिरे तीन बार, बुद्ध बिरहस्पत सुकुरबार ।
२९५. —कब जमले कब राकस भइले ।
२९६. —कब पाँड़े मरले कब भूत भइले ।
२९७. —कमती करे गाजा-बाजा जौने लागे तौने राजा ।
२९८. —कमानी ना धमानी, सनहक ले परियानी ।
२९९. —कर करवा कोपीन, भजु राधे गोबीन ।
३००, —कर खेती परदेस जाय, तेकर जनम अकारथ जाय ।
३०१. —करज करज के खाइल, पुअरा के तापल बरोबर ।
३०२. —करनी ना धरनी, धिया ओठ बिदोरनी ।
३०३. —करम में लिखल भेंड़ी के बार, कहाँ से ओढ़बि ऊनी बोसाल ।
३०४. —करमहीन खेती करे, ओला गिरे कि पाला पड़े ।
३०५. —करिआ अच्छर भइँस बरोबरि ।
३०६. —करिआ बामन गोर चमार, एक संग न उतरे पार ।
३०७. —करिगह छाड़ तमासा जाए, नाहक चोट जोलाहा खाए ।
३०८. —करिया बामन, गोर चमार, कायर छतरी महा हतियार ।
३०९. —करे न खेती पड़े न फन्द, पर घर नाचे सूसरचन्द ।
३१०. —कलछुलि राखल जाला, हाथ बचावे खातिर ।
३११. —करनी करे नथवाली, लाग जाय चिरकुटही के ।
३१२. —कहाँ जातरऽ तऽ ससराँव, तऽ एक जोड़ी जाँत लेले अइहऽ ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३१३. —कहाँ राजा भोज अउरू कहाँ भोजुआ तेली ।
३१४. —कह सुनाई कि कर देखाई ।
३१५. —कहावे के बुलबुल लीले के गूलर ।
३१६. —कहावे के सइयद चोरावेले छूँछी ।
३१७. —कहेलन बधार के, सुनेलन खरिहान के ।
३१८. —कहीं सूरज डलिया तरे झँपालन ।
३१९. —का बकुला तू लाव डीठि, कतने जाल खिचवली पीठि ।
३२०. —का बाँगर के अन्ने, का जोलहा के घन्ने ।
३२१. —का बिटिया के बेटवा भइले, का भइँसी के पड़वा बिअइले ।
३२२. —का मियाँ बहल जातारऽ, आ तऽ गँव से बानी ।
३२३. —का मूस मोटा के लोढ़ा होइहें ।
३२४. —का न होई घरनी घर से ।
३२५. —काम भइल दुखे बिसरि गइल, दादा हो चहुँपा दऽ ।
३२६. —काजर करनी बीजर करनी, टिकुली तऽ हइये ना ।
३२७. —काजर देहले के ना हऽ, मटकवलो के हऽ ।
३२८. —कातिक कुतिया माघ बिलाई, चइत चिरइया, सदा लुगाई ।
३२९. —कातिक बारह मेघा बरसे, सो मेघा असाढ़ीह बरसे ।
३३०. —कातिक मरले बरध, माघ के टूटल मरद अघसे ना ।
३३१. —कातिक गइले हेंगा ले आवे, चइत में लवटले ।
३३२. —कानी गैया के अलगे बथान ।
३३३. —काम पियारा होला, चाम ना ।
३३४. —काम करे मउसी, भोज परे लबार ।
३३५. —काम ना काज के, कटाही घोड़ी घास के ।
३३६. —कायथ के कागदे में सूझेला ।
३३७. —कायथ के कुछ लेले देले, बराम्हन खिअवले ।
रजपूत के बोध-बाध, नान्ह लतिअवले ।।
३३८. —कायथ के बेटा पढ़ा भला या मरा भला ।
३३९. —कायथ कुरकुट कउवा, तीनों जात पोसउवा ।
३४०. —कासी बसले का होखल जब घर नौरंगाबाद ।
३४१. —कासी कूसी चउठ के चाँद, अब का रोपबऽ धान किसान ।
३४२. —कि अपना बोअले, कि अपना जमले ।
३४३. —किया बयल तीसे पर बिकइहें कि खूँटे पर तवइहें ।
३४४. —किरपिन के घरे पाहुन अइले, जस बादरि घहराई ।
३४५. —कुआर करइला, चइत गुड़, सावन साग न खाय ।
कौड़ी खरचे, गाँठ की, रोग बिसाहन जाय ।।
३४६. —कुकुर के गोड़े जइहऽ बिलाई के गोड़े अइहऽ ।
३४७. —कुकुर के पेटे घीव ना पचे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३४८. —कुछ हाथ के सफाई, कुछ डंडी के फेर, दोसरा के तीन पाव बनिया के सेर।
३४९. —कुटतो फक, पीसतो फक, बबुआ के हाल हाल करतो फक।
३५०. —कुरमी कोंहार, हुचुक हुचुक के कोदरा पार।
३५१. —कुल बिआन बिलरिए खइलस।
३५२. —कुबंस से निरबंस भला।
३५३. —कुसी अमावस, चौठी चान, अब का रोपबऽ धान किसान।
३५४. —केकरी भंटा बेरी, अउरु केकरो पन्थ।
३५५. —केहु के पइया ना बूझे के।
३५६. —कोइरी अहीर खेती करे, अउर करे बरिआई।
३५७. —कोइरी के घरे लरिका होला, कुंजरा के घरे बधावा बाजेला।
३५८. —कोइरी के बरद अहीर के गाय, कवने कारन बेचल जाय।
३५९. —कोइरी के लरिका जनमें के हीन, हाथ में खुरपा मोथी बीन।
३६०. —कोइली के बचवा कोइली होइहें, कउवा भुंहे छाइ।
३६१. —कोरवा बाबू कूँवर, भुइयाँ उतरले सूअर।
३६२. —कोदो देके पढ़ल बाड़े।
३६३. —कौआ कपूर खइले उजर होला।
३६४. —खउरलें बिना भेंड़ बिगड़ल बाड़ी।
३६५. —खग जाने खग ही के भाखा।
३६६. —खर के टाटी गुजराती ताला।
३६७. —खरच तऽ खरचे सही, दे दाल में पानी।
३६८. —खरबूजा चाहे धूप, आम चाहे मेह, नारी चाहे जोर, बालक चाहे नेह।
३६९. —खल के दवा पीठि के पूजा।
३७०. —खाइ के परि रहु, मारि के टरि रहु।
३७१. —खाइब गोहूँ ना तऽ रहब एहूँ।
३७२. —खाइब हम नाना के रोटी, कहाइब हम दादा के पोती।
३७३. —खाइल दोसरा के होला, मगर पेट तऽ अपने हऽ।
३७४. —लाई घोड़ा कि रोड़ा।
३७५. —खाए के रग ना, नहाए के तड़के।
३७६. —खाके मूतीं, सूतीं बाँव, काहे के बैद बसाव गाँव।
३७७. —खाद पड़े तऽ खेत, ना तऽ कूड़ा रेत।
३७८. —खाली मड़वा बाजे ढोल, लइका भइले डाँवा डोल।
३७९. —खाले जीभि लजाले आँखि।
३८०. —खाली हाथ मुँह में ना परे।
३८१. —खाय मोटाय के भइले गदहा।
३८२. —खाये के कुछ ना, बरी बिछौना।
३८३. —खाये के डेढ़ सेर पूरे के पगहा।
३८४. —खिचड़ी के चार यार, पापड़ दही घीव अँचार।

RajGyan Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३८५. —खियावे के ना पियावे के, धा धा माँग टीके आवे के ।
३८६. —खुदा करे गुंडे पकड़े जायँ, लालखाँ के खूँटे में जकड़े जायँ ।
३८७. —खूँटा के बल पर बछवो कूदेला ।
३८८. —खेत खाय पड़िया, भइँसी के मुँह झकझोरल जाय ।
३८९. —खेत ना जोतीं राढ़ी, ना भइँस बेसाहीं पाड़ी ।
३९०. —खेत बेपनियाँ जोतऽ तब, ऊपर कुँआ खोनावऽ जब ।
३९१. —खेतिहर गइल घर, दाएँ बाएँ हर ।
३९२. —खेती करे ऊखि कपास, घर उठावे बेबहरिया पास ।
३९३. —खेती करे खाद से भरे, सौ मन कोठिला में ले धरे ।
३९४. —खेती बेटी नित्ते गाय, जे ना देखे ओकर जाय ।
३९५. —खेती राज रजावे, खेती भीख मँगावे ।
३९६. —खोरही कुतिया, रेशम के झूल ।
३९७. —गँजेड़ी यार किसके, दम लगाये खिसके ।
३९८. —गंगा के धार, हाकिम के मन, केहू ना जाने ।
३९९. —गंगा के नेहान तिरोजपुर के पेठिया ।
४००. —गइल ठकुरई, आइल चमरई, एहि ऊखि के बोए से ।
गोरि के देहिया करिया भइल, बिना जेठ में सोए से ।।
४०१. —गइलो घर के कवन ठेकाना ?
४०२. —गइल मरद जे खाय खटाई, गइल नारि जे खाय मिठाई ।
४०३. —गइल हुँड़ार तऽ उठल अड़ार ।
४०४. —गगरी अनाज भइल जोलहन के राज भइल ।
४०५. —गढ़ले बात रूखर होले, गढ़ले लकड़ी चीकन होले ।
४०६. —गदहा के इयारी लात के सनसनाहटि ।
४०७. —गदहा दूबर सावन मास ।
४०८. —गरजे सो बरसे नहीं ।
४०९. —गरजे सो बरसे नहीं, बरसे घोर अन्हार ।
४१०. —गर परल ढोलक बजावहीं के पड़ी ।
४११. —गवन समय जो स्वान, फड़फड़ाय दुइ कान ।
तब तऽ सगुन अकारथ जान ।।
४१२. —गाई गाई का होख बाउर, भूसा कुटले निकली चाउर ।
४१३. —गाइ गुन बछरू पिता गुन घोड़ ।
नाहीं बहुत तऽ थोड़म थोड़ ।।
४१४. —गाजर खलेलन न्योतन सकरकन्द के ।
४१५. —गाँड़ी पर लत्ता ना चले कलकत्ता ।
४१६. —गाय बामन के घूमले से पेट भरेला ।
४१७. —गाय भइँस तोरा, मथन्न बाजे मोरा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४१८. —गाय मार के जूता दान ।
४१९. —गीदर रखे मास के थाती ।
४२०. —गुनल-गूथल भोर परल, मुँह पुराधान भइल ।
४२१. —गुरु के गुरु, बजनियाँ के बजनियाँ ।
४२२. —गुरु गुड़े रहि गइले, चेला चीनी हो गइले ।
४२३. —गुरु गोसैंइयाँ एके हेंउवें ।
४२४. —गुरु ना गुरु भइया, सबसे बड़ा रुपइया ।
४२५. —गुरु से कपट, साधु से चोरी, कि घर निरधन, कि घर कोरही ।
४२६. —गेएँड़ा के पीपर दहिनअवले जाला ।
४२७. —गेयान बढ़े सोच से, रोग बढ़े भोग से ।
४२८. —गोंड़ के साखी दबिला ।
४२९. — गोंयड़ा के खेती सिखा के सांप, मैभा कारन बैरी बाप ।
४३०. —गोदी में लरिका सहर में ढिंढोरा ।
४३१. —गोबर मइला पानी में सड़े, तब खेती में दाना पड़े ।
४३२. —गोहुमा सभ के घरे होला, रोटिया बिरले घरे बनेला ।
४३३. —गोहूँ गिरे अभागा के, धान गिरे सुभागा के ।
४३४. —गोहूँ बाहे, धान बिदाहे ।
४३५. —घड़े कोंहार, भरे संसार ।
४३६. —घन मारे घनवहिया, हँकड़े लोहार ।
४३७. —घर के गरवइया मारल जाय, आन घर के खियावल जाय ।
४३८. —घर फूटे, गाँव लूटे, गाँव फूटे, जवार लूटे ।
४३९. —घर में आइल जोय, टेढ़ी पगिया सीधी होय ।
४४०. —घर में ना ताग, अलबेला माँगे पाग ।
४४१. —घर रही या जाई, बहरबूँटा गढ़ाई ।
४४२. —घीव के लड्डू टेढ़ो भला ।
३४३. —घीव देत घोड़ नरियाय ।
४४४. —घीव सँवारे काम, बड़ी बहू का नाम ।
४४५. —घीवो खाइब तऽ खेसाड़ी के दाल में ।
४४६. —घूघ मोरा रहेला ठेहून तक, बोली मोरा परेला बबूर तक ।
४४७. —घोड़ा के पिछाड़ी, अउर हाकिम के अगाड़ी ना जाये के ।
४४८. —घोड़ा के लात अदमी के बात ।
४४९. —घोड़ा बेटा के खियावल बेकार ना होला ।
४५०. —घोड़ा गाड़ी नोना पानी अउर राँड़ के धक्का ।
एह तीनों से बचल रहे, तऽ केलि करे कलकत्ता ।।
४५१. —घोड़े पर होदा, हाथी पर जीन ।
जल्दी से भाग गइल बारन हेस्टीन ।।
४५२. —चइत सूते भोगी, कुआर सूते रोगी ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४५३. —चढ़ते बरसै आदर उतरत बरसै हस्त।
बीच बरिसै माघा, चैन करे गिरहथ ।।
४५४. —चमके पच्छिम उत्तर ओर, तब जनिहः, बरखा बा जोर ।
४५५. —चमरी कोन बहे मजबूत, हराई में पानी पीवऽ मोरे पूत ।
४५६. —चमारे के बेटी नाँव रजरनियाँ ।
४५७. —चना चितरा चौगुना, स्वाती गोहूँ होय ।
४५८. —चलत समय नेउरा मिलि जाय, काग दाहिने खेत सुहाय ।
सफल मनोरथ समझहु भाय ।
४५९. —चलनी दूसे सूप के जेकरा सहसर छेद ।
४६०. —चलनी में दूध दूहे करम के दोस ।
४६१. —चल लरिके दादा के बिरा आई ।
४६२. —चाचा चोर भतीजा काजी, चाचा के सिर पर जूताबाजी ।
४६३. —चाम के टाटी कुकुर रखवार ।
४६४. —चाम के बेढ़ कुकुर रखदार ।
४६५. —चारि आना के जनेरा, चउदह आना के मचान ।
४६६. —चारि कवर भीतर, तब देवता पीतर ।
४६७. —चाल चले सादा, जे निबहे बाप दादा ।
४६८. —चालिस के भइँस लिहलीं, चोकरे के सेहुँ सेहुँ ।
४६९. —चिऊँटा मिसले पानी ।
४७०. —चितरा बरसे माटी मारे, आगे भाई गेरुई के कारे ।
४७१. —चित्तो तोहार, पट्टो तोहार ।
४७२. —चिरई में कउवा, मनई में नउवा ।
४७३. —चील्ह के खोता में माँस कहाँ ।
४७४. —चुनरी फाट गइल चमकल मेट गइल ।
४७५. —चूना चाम कूटले से ठीक होला ।
४७६. —चोर का अँगरिए मीठि ।
४७७. —चोर के दिल सरसों बरोबरि होला ।
४७८. —चोर चोर मौसिआउत भाई, साँझे हसुआ धइल पजाई ।
४७९. —चोर जइसन हीरा के, ओइसने खीरा के ।
४८०. —चोर मोर घोड़ पानी पिए भोर ।
४८१. —चोरवा के मन बसे ककरी के खेत में ।
४८२. —चोरवा के माई सपने देखे कि बबुआ बरधे ले आवतरे ।
४८३. —छपके ऊगे तो क्या भये, निरमल रैन करन्त ।
कि जल देखऽब सागर, कि कामनी कूप भरन्त ।।
४८४. —छव महिना के कुत्ता, बारह बरिस के पुत्ता ।
४८५. —छाजा बाजा केस, तीन बँगाला देस ।
४८६. —छिकते नाक कटल ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४८७. —छूँछ छोह हतेया बरोबरि ।
४८८. —छूँछ फटके उधिआइल जाय ।
४८९. —छेरी छीआ ऊँट कोंहार, फेंड़ बबूर के गाड़ीवान ।
फर जबासा बेसवा बानी, भइल मलिन जब बरसे पानी ।।
४९०. —छेरी भेंड़ी हर चले, बरध बेसाही काहे ।
४९१. —जंगल में मोर नाचल, के देखल ?
४९२. —जइसन करनी, ओइसन भरनी ।
४९३. —जइसन करे तइसन पावे, पूत भतार ना आगे आवे ।
४९४. —जइसन खाये अन्न, ओइसन होखे मन ।
४९५. —जइसन तोर देन दुआरी, ओइसन मोर चखारी ।
५९६. —जइसन दिगम्बर पांड़े, ओइसन रसुल्ला ।
उन्ह का ना छान्ह छप्पर इनका ना चूल्हा ।
४९७. —जइसन देखीं गाँव के रीत, ओइसन उठाई आपन मीत ।
४९८. —जइसन देस, ओइसन भेख ।
४९९. —जइसन बाबा अपने लबार ओइसन उनकर कुल परिवार ।
५००. —जइसन माई, ओइसन धीया, जइसन काकर ओइसन बीया ।
५०१. —जइसन मुरहा लइका, तइसन माला के करधन ।
५०२. —जइसन लाल चाउर, तइसन बँतनिपोर खनिहार ।
५०३. —जग में जगदीशपुर शहर ससराँव ।
चट्टी में दाऊदनगर भोजपुर में डुमराँव ।
५०४. —जतना जाल देखेला, ओतना मल्लाह देखे ते छाति फाटि के मर जाई ।
५०५. —जतना तपी, ओतने बरसी ।
५०६. —जतना मुँह ओतने बात ।
५०७. —जतने गहिर खेत जोताई, ओतने फसल झझाई ।
५०८. —जतने गाँगू लाभ, ततने सोहाइक चाकर ।
५०९. —जनमते बबुआ गोर न होइहें, तऽ का अबटला से होइहें ।
५१०. —जब एक कलम घिसके तऽ बावन गांव खसके ।
५११. —जब अपने बर बउराह तऽ बरेछा कहाँ से परी ।
५१२. —जब चइत राजा अइले, तब पूरओ पर दुइ दाना ।
५१३. —जब जनिहः खरचा के हीन, कतिका में तूँ बोइहः चीन ।
५१४. —जब तक जिये देवसिया, अहीर न छाजे गाय ।
५१५. —जब पेट में पड़ल खुद्दी, तऽ सूझे लागल बुद्धि ।
५१६. —जब बकुला टाँग उठवलस तऽ दह के पाता लागल ।
५१७. —जब बरसे तऽ बान्ह कियारी, बड़ किसान के हाथ कुदारी ।
५१८. —जब बहे हड़बहवा कौन, तब लादे बनजरवा नोन ।
५१९. —जबरा करे जबरई, अबरा करे निआव ।
५२०. —जब ले करीं बाबू बाबू, तबले चलाईं आपन काबू ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५२१. —जब ले देव दया ना करिहें, तब ले सागर सीपी भरिहें ।
५२२. —जब ले पाँड़े दोना लगावसु, तबले पड़ाइनि सुखले बुकावें ।
५२३. —जबले रसरी खेत पर तबले दिवान दिवान ।
५२४. —जब ले सिघरी पहाड़ ना ठेकिहें, तब ले ना मनिहें ।
५२५. —जब सैल खटाखट बाजे, तब चना खूब ही गाजे ।
५२६. —जब हम तूँ राजी तऽ का करिहें काजी ।
५२७. —जब हरवाहे धान बिदाहे ना जानीं ऊखि उपजे काहे ।
५२८. —जल में केवट, वन में अहीर, नइहर में जोय आपन ना होय ।
५२९. —जल में रहके मगर से बैर ।
५३०. —जलसूर बराम्हन ।
५३१. —जवना पत्तल में खाए के, तवने में छेद करेके ।
५३२. —जस मनई तस पनहीं ।
५३३. —जहँवा जेई, ताहाँ जीमा ।
५३४. —जहाँ के पीये पानी, तहाँ के बोले बानी ।
५३५. —जहाँ जाय भूखा, तहाँ पड़े सूखा ।
५३६. —जहाँ जेई, तहाँ जीमा ।
५३७. —जहाँ बूझ ना बड़ाई, तहाँ से भाग चल रे भाई ।
५३८. —जहाँ रोग वहाँ दावा ।
५३९. —जाएवाला के गोड़ हो जाला ।
५४०. —जाड़ काटे रूई ना तऽ धूस ।
५४१. —जाड़ राड़ के कवन चिउरी, कम्मर पर जब होय पिछउरी ।
५४२. —जात पाँत पूछे ना कोई, हरि के भजे से हरि के होई ।
५४३. —जाति सोभाव ना छूटे, कुत्ता टाँग उठाके मूते ।
५४४. —जान मारे कनियाँ अनजान मारे ठग ।
५४५. —जानेली चिलम, जेपर पड़ेली अँगारी ।
५४६. —जाहाँ जाली खेहो रानी, तहाँ ना मिले आग पानी ।
५४७. —जितला के आगा हरला के पाछा ।
५४८. —जे इयारी हाटे बाटे, से केल्हुवड़िए नाहीं ।
५४९. —जेकर आँख ना, ओकर साख का ।
५५०. —जेकर चून तेकर पून ।
५५१. —जेकर छाती बार ना, ओकर एतवार का ।
५५२. —जेकर बनल असढ़वा रे, सेकर बरहो मास ।
५ ५३. —जेकर बहिन अन्नर, सेकर भाई सिकन्दर ।
५५४. —जेकर बानर से खेलावे, आन खेलावे काटे धावे ।
५५५. —जेकर बाप कमरा ना ओढ़ले, से ओढ़सु रजाई ।
५५६. —जेकर मारे परगन रोवे, से कर माई गदगद रोवे ।
५५७. —जेकर मौगी दँतुली ओकर बड़ भाग रे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५५८. —जेकर सुखवन तेकर गाय, उ पापी जे हाँके जाय ।
५५९. —जे करवा में रहे, से टोंटी से बहे ।
५६०. —जेकरा पीठि पर अगरधत के नगारा बाजे से का सूप का भड़भड़ौले भागे ।
५६१. —जेकरा हरि अस ठाकुर, ओकरा जम्मु से कवन डर ।
५६२. —जेकरे बियाह ओकरे खाँड़ा बारा ना ।
५६३. —जेकर हाथ जोर, ओकरे हाथ मुलुक ।
५६४. —जेकरे हाथे लोई, ओकरे सभ कोई ।
५६५. —जे गइल कलकत्ता, से खेह खाइल अलबत्ता ।
५६६. —जे जइसन बोएला, ते तेइसन काटेला ।
५६७. —जेठ के दुपहरिया, भादो के अन्हरिया, पूस के भिनसहरा अभागा काम करेले ।
५६८. —जेठ मास में जे नर सोए, सेकर जर असाढ़ में रोए ।
५६९. —जो चले पछेया बाउ, मिली माँड़ ना कतहुँ जाउ ।
५७०. —जे पंडित के पतरा, से पंडिताइन के अँचरा ।
५७१. —जे पेट के आस उहे बिआइल बेटी ।
५७२. —जे बाँस के बाँस बँसुरिया, ओही बाँस के कलसूप दउरा ।
५७३. —जे रोगिया के भावे, ओहे बैदा फरमावे ।
५७४. —जे हमरा राम के ना, से कवना काम के ।
५७५. —जे हर जोते खेती ओकर, अउर नातऽ जेकर तेकर ।
५७६. —जेही बाँस के बाँस बाँसुरी, ओही बाँस के कलसूप दउरी ।
५७७. —जे दिन जेठ बहे पुरबाई, ते दिन सावन धूरि उड़ाई ।
५७८. —जेहे हाथ, उहे साथ ।
५७९. —जे होखे के होला उ होके रहेला ।
५८०. —जै दिन जेठ बहे पुरबाई, तै दिन सावन धूरि उड़ाई ।
५८१. —जो कहुँ मग्घा बरसावे जल, सभ छाड़ि के होई फल ।
५८२. —जो चले पछेया बाउ, मिली माँड़ ना कतहुँ जाउ ।
५८३. —जोते खेत घास ना टूटे, तेकर भाग सँझिए फूटे ।
५८४. —जो पुरवा पुरबइया पावे, सूखलि नदिया नाव चलावे ।
५८५. —जो बरसे पुनरबस स्वाती, चरखा चले ना बोले तांती ।
५८६. —जो भल रहती रूपा, तऽ का पंच लगाइत लूका ।
५८७. —जोर जर जाला तऽ जरे जाला, बाकिर अँइठन ना जरे ।
५८८. —जोलहा के आई पाई, चमरा के बिहान ।
५८९. —जोलहा के बेगरिहा पैठान ।
५९०. —जोलहिन के बेटी के बूबू के साध ।
५९१. —जो हरि होइहें बरसनहार, का कर पाई दखिना बयार ।
५९२. —जौ के संगे घून पिसाला ।
६९३. —टिटही के टेकले बाबर थम्हीं ।
५९४. —ठग जाने ठग ही के भाखा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५९५. —ठाढ़ नाच मोरा, तऽ निहुर के नाचब तोरा ।
५९६. —ठाँव गुने काजर, कुठाँव गुने कारिख ।
५९७. —ठिकरियो से घइला फूटेला ।
५९८. —ठेस लागल पहाड़ पर, फोड़ीं घर के सिलवट ।
५९९. —डोम के जनते धोबी नीच ।
६००. —डोम हारे अघोरी से ।
६०१. —ढाल, छुरा तरुवारी, गइल कुँवर के साथ ।
६०२. —ढोल, मँजीरा खँजरी, रहल उजैनी हाथ ।
६०३. —ढिल मिल बेंट कुदारी के, हँस के बोलब नारी से ।
हँस के माँगल दामा, ई तीनों काम नकामा ।।
६०४. —ढेबुआ देके दुख बेसाहऽ ।
६०५. —ढेर जोगी मठ के उजाड़ ।
६०६. —तन सुखी तऽ मन सुखी ।
६०७. —तसर पर मूँज के बखिया ।
६०८. —तसलवा तोर कि मोर ।
६०९. —ताई दिहलस तेल, बड़ेरी उठल धुआँ ।
६१०. —तिरिया तेरह मरद अठारह ।
६११. —तीतर के मुँह में लछमीनरायन ।
६१२. —तीतर बरनी बादरी, बिधवा काजर रेख ।
ई बरखे उ घर करे एह में मीन ना मेख ।।
६१३. —तीन कनउजिया तेरह चूल्हा ।
६१४. —तीन के तीसी तेरह लागलि, तब तेलनियाँ पेरे लागल ।
६१५ —तीन कौड़ी गाँठी, चूड़ी पहिरों कि माठी ।
६१६ —तीन टिकट महा विकट ।
६१७. —तीन दिन के बिटिया, अपना के दाल-भात सभ के लिटिया ।
६१८. —तीन पानी तेरह कोड़, तब देख ऊखी के पोर ।
६१९. —तीन में कि तेरह में ।
६२०. —तीन में ना तेरह में, सुतरी के गीरह में ।
६२१. —तीन बेर बुलावे तऽ आवेले नउनियाँ, आधा भार माँग के भूँजेले कनूनियाँ ।
६२२. —तीन बैल दुगो मेहरी, गइल घर ओ खेती ओकरी ।
६२३. —तीनि खाट, दुई बाट, चार छावे छव निरावे ।
६२४. —तीरि ना कमान, कहे कि पैठान ।
६२५. —तील गुड़ भोजन, तुरुक मिताई, आगे मीठ पीछे कड़वाई ।
६२६. —तुरंत दान महाकल्यान ।
६२७. —तुरुक ताड़ी, बैल खेसाड़ी ।
६२८. —तुरुक, तोता और खरगोस, ई तीनों ना माने पोस ।
६२९. —तू का हँस कोंहारे के पूत, कवनों ओर लटकिहें ऊँट ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

६३०. —तेंतर बेटी राज रजावे, तेंतर बेटा भीख मँगावे ।
६३१. —तेलिया हरे बेरिया बेरिया, दइवा हरे एके बेरिया ।
६३२. —तेलिन रुसली, तऽ कुप्पा ले बइठली, बोलली लेबऽ लबरू तेल ?
६३३. —तेली के तेल जरे मसालची के जीव जाय ।
६३४. —तहार नउजी बिकाय, मोर घलुआ दे ।
६३५. —थाकल ऊँट सराये ताके ।
६३६. —थाकल बैल गोन भइल भारी, अबका लदबऽ ए बैयपारी ।
६३७. —थाकल बैल थाकल आवे, छूँछ बैला कँहरत आवे ।
६३८. —थान हारों तऽ हारों गज भर ना फारों ।
६३९.. —थूके सातू ना सनाला ।
६४०. —थोथा चना, बाजे घना ।
६४१. —थोर करे बाली मियाँ, बहुत करे डफाली ।
६४२. —दखिनी कुलछनी, माघ पूस सुलछनी ।
६४३. —दमड़ी के पान बनिआइन खास ।
६४४. —दमड़ी के पान बनिआइन खासु, भाई घरे रहे कि जाय ।
६४५. —दमड़ी के भागवति, दोकरा के पुरान ।
६४६. —दमड़ी के मुरगा टका चोंथाई ।
६४७. —दम्मा जाय दम के साथ ।
६४८. —दरजी के पुत्ता जब तक जीता तब तक सीता ।
६४९. —दरजी के सूई कब्बो तास में, कब्बों टाट में ।
६५०. —दरबे से सरबे, जे चहबे से करबे ।
६५१. —दस के लाठी एक के बोझा ।
६५२. —दही चूड़ा के सुनगुन पाई, अस्सी कोस निहुरिए धाई ।
६५३. —दही चूड़ा बारह कोस, लिचुई अठारह कोस ।
६५४. —दाता दान करे, भंडारी के पेट फाटे ।
६५५. —दाना खाय आपन लोग कहे दरिदरी ।
६५६. —दाना ना घास दूनो जूनि खरहरा ।
६५७. —दाने दाने रासि, पियादे पियादे फौद ।
६५८. —दाम सँवारे काम ।
६५९. —दाम सँवारे काम, बड़ी बहू का नाम ।
६६०. —दाल भात में ऊँट के ठेहुन ।
६६१. —दिदिया दुलार कइली पीठि पर अँगारी धइली ।
६६२. —दुवरे लागल बरियात, समधिन के लागल पिआस ।
६६३. —दुसाध के खोभाड़ि कहीं गाँव बसेला ?
६६४. —दुसाध जात खाये नीचे, ताके ऊँचे ।
६६५. —दुइ लबारे दइबे साखी ।
६६६. —दूनो लोक से गइले पाँड़े, हलुवा मिले ना माँड़े ।

Rajpuri Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

६६७. —दूबरे बयल के अँड़वा में किलनी लागेले ।
६६८. —दूर के ढोल सोहावन ।
६६९. —दू हर खेती, एक हर बारी, एक बैल से भला कुदारी ।
६७०. —देखलीं ना सुनलीं सखराजी हो गइलीं ।
६७१. —देखले छँवड़ी समधिन ।
६७२. —देखा देखी ठाने जोग, छीजे काया, बाढ़े रोग ।
६७३. —देवकुर गइले दूना दुख ।
६७४. —देशी घोड़ी, मरहठी चाल ।
६७५. —देह धरला के दंड हऽ ।
६७६. —देही पर लत्ता ना पान खाय अलबत्ता ।
६७७. —दोसरा के सिर कद्दू बरोबरि ।
६७८. —धन उ राजा धन उ देश, जहवाँ बरसे अगहन सेस ।
६७९. —धन राजा मेदनियाँ, घर घर बाजे मथनियाँ ।
६८०. —धनी के बात सुनी, गरीब के भात खाई ।
६८१. —धरम करे में जो होखे हानी, तबो ना छोड़ी धरम के बानी ।
६८२. —धर्मों छूटल, तुम्मों फूटल ।
६८३. —धाइ के चलबि, ना, हारि के गिरबि ना ।
६८४. —धाई से पाई ।
६८५. —धान गिरै बड़ भाग, गोहूँ गिरे दुरभाग ।
६८६. —धान, पान, खीरा, तीनों पानी के कीरा ।
६८७. —धुर असाढ़ के पंचमी, ना बादर ना बीज ।
बेच गाड़ी बरधिया, उपजी कुछ ना चीज ।
६८८. —धूप धूर धुआँ हो जहँवा, बरध बरस पचीस जिए तहँवा ।
६८९. —धोबी के बेटी के, ना घरे सुख ना घाटे सुख ।
६९०. —धोबी पर धोबी बसे, तब कपड़ा पर साबुन पड़े ।
६९१. —नउवा केवट चीन्हे जात, बड़ लोगनि के चिक्कन बात ।
६९२. —नकटी के बिआह, हजार जिया जोखिम ।
६९३. —नकद कायथ भूत, उधार कायथ देवता ।
६९४. —नदी ताप्ती, खैरा बन, छतरी राजा गेहूँए अन्न ।
नदी तरैना, परसा बन, कुरमी राजा, मेंड़ुवे अन्न ।।
६९५. —नदी नाव संयोग ।
६९६. —ननदो के ननद होला ।
६९७. —नव के लकड़ी, नब्बे खरच ।
६९८. —नव नगद ना तेरह उधार ।
६९९. —नया गँजेरी बड़ेरी पर धुआँ ।
७००. —न सावन हँसे लायक ना भादो दूसे लायक ।
७०१. —नहट देवता के भरनहट पूजा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

७०२. —ना कइलीं नइहरे सुख, ना देखलीं पिआ के मुख ।
७०३. —नाँव गुलाबचन गन्ह के ठेकाने ना ।
७०४. —नाँव दाताराम पुन्नि के ठेकाने ना ।
७०५. —नाँव नवलखा, जनमे के भिखारी ।
७०६. —नाँव पिरथीपति समहुत के ठेकाने ना ।
७०७. —नाँव भवानी, मुँह छूछनरि के ।
७०८. —नाँव रामबहादुर सिंह, पोत पौन बारह आना ।
७०९. —ना अति वक्ता, ना अति चुप्प, ना अति बरखा, ना अति धूप ।
७१०. —ना ऊधो के लेना, ना माधो के देना ।
७११. —नाउ धोबी दरजी, तीनों जात अलगरजी ।
७१२. —ना कइली नइहरे सुख, ना देखली पिआ के मुख ।
७१३. —नाक ना कान बाली के अरमान ।
७१४. —ना खँड़लिच के गोड़े लागे के, ना ढेले फेंके के ।
७१५. —ना गेहूँ बा ना गेरूई लागी ।
७१६. —नाच काछ अइले मोरवा, गोड़वा देखि झँवाय ।
७१७. —नाचे कूदे बानर, माल मदारी खाय ।
७१८. —ना धोबिया के दोसर जनबरवा, ना गदहा के दूसरे मउवार ।
७१९. —ना नव मन काजर होइहें, ना राधा नचिहें ।
७२०. —नानी के धन, बैयमानी के धन, जजमानी के धन ना रहेला ।
७२१. —नानी मरल नाता टूटल ।
७२२. —ना बाँस रही ना बँसुरी बाजी ।
७२३. —ना मामा से काना मामा ठीक होला ।
७२४. —ना मोरा बोलाचाली, ना मोरा केहु ।
सिकहर पर पूआ बाटे, काढ़ि खाय केहु ।।
७२५. —नाया हकीम देले अफीम ।
७२६. —निपुती के मुँह देखते सात उपवास ।
७२७. —निरगुन गावे, धक्का पावे, बात बनावे, पइसा पावे ।
७२८. —नीचन कुट्टन, देवन पूजन ।
७२९. —नीमन के साथ रहला से नीमने बुद्धि होला ।
७३०. —नीम हकीम खतरे जान ।
७३१. —नेकी के नेक राह, बादी बद राह ।
७३२. —नेम टेम गोपाल अइसन हाँड़ी चरूई चमार अइसन ।
७३३. —नौकर का चाकर, मड़ई का ओसरा ।
७३४. —नौकर कुकुर बरोबर ।
७३५. —पंच संगे नीक, पिया संगे ना नीक ।
७३६. —पइसा ना कौड़ी बीच बजार में दउड़ा दौड़ी ।
७३७. —पइसा ना पास, मेला लागे उदास ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

७३८. —पइसा पास के, बिदेया कंठ के ।
७३९. —पकले आम सोहावन, पकले मरद घिनावन ।
७४०. —पगरीदास नगरी ले ले ।
७४१. —पढ़ल लिखल कवन काम, खेती करब घनिआइब धान ।
७४२. —पत्थर पर जब जामे गुरमी, तबहु न होखे आपन कुरमी ।
७४३. —पत्ता खड़कल कि बन्दा भड़कल ।
७४४. —पर घर नाचे तीन कायथ बैद दलाल ।
७४५. —पर धन बान्हे, कपड़ा फाटे ।
७४६. —परबस बन्दा, सुख का जाने ।
७४७. —परमुंडे फरहार ।
७४८. —परले राम कुकुर के पाले, खींच खाँच के ले गइल खाले ।
७४९. —परास में तीन पात ।
७५०. —परिवा पड़े जो छिपकिली गिरगिट चढ़े जो अंग ।
रोग बढ़ावे बेग ही, करे सक्ति को भंग ।।
७५१. —परीक पड़ली सहुआइन चढ़ा देली डेढ़ सेरी ।
७५२. —प्रातकाल जे रोज नेहाय, तेकरा देखि बैद पछिताय ।
७५३. —पसुवा बैल के हऽ के असरा ।
७५४. —पहिला पवन पुरुब से आवे, बरसे मेघ अन्न सरसावे ।
७५५. —पहिला पहर में सभ कोई जागे, दोसरा पहर में रोगी ।
तीसरा पहर में चोरवा जागे, चउथा पहर में जोगी ।।
७५६. —पहिले पीये जोगी, बीच में पीये भोगी, पीछे पीये रोगी ।
७५७. —पहिले बोअऽ पहिले काटऽ ।
७५८. —पाँच कवर भीतर तब देवता पीतर ।
७५९. —पान देले सातू ना, पनही देले पूआ ।
७६०. —पानी कलसा गरम होय चिरई नहाये धूर ।
अंडा ले चूँटी चढ़े, बरखा होय भरपूर ।।
७६१. —पानी पीजे छान, गुरु कीजे जान ।
७६२. —पानी बरसे आधा पूस, आधा गोहूँ, आधा भूस ।
७६३. —पाव भर के देवी, नव पाव के पूजा ।
७६४. —पावा हर का हुमना, खेती करब अब ।
७६५. —पीठा के मजा माठा सँगे ।
७६६. —पूख पुनरबस बोअऽ धान, मघा असरेखा कादो सान ।
७६७. —पूख पुनरबस भरे ना ताल, फेनु भरिहें लौट असाढ़ ।
७६८. —पूत माँगे गइली, कोख गँवाके अइली ।
७६९. —पूतवो नीक भतरो नीक, किरिया केकर खाँव ।
७७०. —पूनो परवा गाजे, तऽ दिना बहत्तर नाजे ।
७७१. —पूरब जनम के पाप से हरि चरचा न सुहाय ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

७७२. —पूरवा रोपे पूर किसान, आधा खखरी आधा धान ।
७७३. —पूरवा बहल, सूखलो घाव फफदल ।
७७४. —पूस अन्हारी सत्तमी, बिन जल बादर होय ।
सावन सुदि पूनो दिवस, बरखा निहिचय होय ।।
७७५. —पूस के दिन फूस बरोबरि ।
७७६. —पूस ना बोए, पीस खाए ।
७७७. —पेट करे खाँव खाँव, माँगे के टिकुली ।
७७८. —पेट बिगाड़े मूढ़ी, घर बिगाड़े बूढ़ी ।
७७९. —पेट भारी तऽ माथ भारी ।
७८०. —पेट में पड़ल खुद्दि तऽ निकले लागल बुद्धि ।
७८१. —पैर ओतने बढ़ावे के चाहीं, जतना चद्दर लाम होखे ।
७८२. —पोआ देखाय, गरुड़ के डेरवाय ।
७८३. —फटकचन्द गिरधारी, जिनका लोटा ना थारी ।
७८४. —फागुन मास बहे पुरवाई, तब गेहूँ में गेरुई धाई ।
७८५. —फूँक देवें मड़ई, सलाम भाई खरहर ।
७८६. —फूटल सहाला ना, आजन ना सहाला ।
७८७. —फूहर के माल सराह सराह खाइल जाला ।
७८८. —बइरी के फेड़ तर उघार कपार, ओह के जनिहः बड़ गँवार ।
७८९. —बन्हले भेली फोरले चुरकुनी ।
७९०. —बकुला टाँग उठवलस तऽ दह के पता लागल ।
७९१. —बघवा खाय या ना, बाकी ओकर मुँह रक्तावन ।
७९२. —बजर पड़े कहवाँ, तीन कायल जहवाँ ।
७९३. —बड़ अदमी के खीसि, छोट अदमी के किरिया देरी से होला ।
७९४. —बड़ घूघ, तनी तकलो चाहीं ।
७९५. —बड़ बड़ जना दहाइल जास, गदहा पूछे कतना पानी ।
७९६. —बड़ बड़ भूत कदम तर रोए, मूआ माँगे पूआ ।
७९७. —बड़ बड़ मार कोहबरे बा ।
७९८. —बड़ बेटा बाप के, छोट बेटा महतारी के, माझिल घुनसारी के ।
७९९. —बड़ दुलार भाँड़ भाँड़ के बुकवा ।
८००. —बदलो पंच बे बदलो पंच, जइसे माने तइसे पंच ।
८०१. —बनले मल्ल बिगरले कुरमी ।
८०२. —बनियाँ के खुसी भइल दमड़ी के दान करलस ।
८०३. —बनियाँ के जीव धनियाँ बरोबरि ।
८०४. —बनियाँ दे ना पूरे तउल ।
८०५. —बरधे पर कि मरदे पर ।
८०६. —बरसे घोर अन्हार ।
८०७. —बरसे सावन तऽ होखे मनभावन ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

८०८. —बरात के तीन मन, बर चाहे कनिया।
समधी चाहे धन अउर बराती चाहे सतकार ।।

८०९. —बराम्हन बचन परमान।

८१०. —बराम्हन बेटा लोटे पोटे, सूर बेयाज दूनो सर पोटे।

८११. —बरियार चोर सेन्हीं में गावे गीत।

८१२. —बलवान के हर भूत जोतेला।

८१३. —बसन्त आइल, ऊखि पाकल।

८१४. —बसुला अस मुँह रुखानी अस गोड़।

८१५. —बहरा के खाईं घर के गाईं।

८१६. —बाँझ का जाने परसोति के पीरा।

८१७. —बाँड़ी रे तोर अँगने कतना।

८१८. —बाँस के जरी बाँसे जामेला।

८१९. —बाँस के परिहथ, कुसे के नाधा, जोतें के मेरें, गाँव कें आधा।

८२०. —बाघ न देखल देखल बिलारि, ठग न देखल देखल पंसारी।

८२१. —बाढ़े पूत पिता के धरमा खेती उपजे अपने करमा।

८२२. —बात कहीं अगाध के काम देखाई गीध के।

८२३. —बात कहीं फरिछा, गुर लागे चाहे मरिचा।

८२४. —बात के चूकल अदमी, अउर डारि के चूकल बानर के ठेकान ना मिले।

८२५. —बात बताईं दिल्ली के, पोंछ देखाईं बिल्ली के।

८२६. —बानर का जाने अदरख के सवाद।

८२७. —बानर पहले आपन घर छावसु, तब दोसरा के छइहें।

८२८. —बाप के गला में गुरिया ना, बेटा के गला में उदराछ।

८२९. —बाप के जनमें ना, पूत गइले पिछवार।

८३०. —बाप के नाँव आऊँ जाऊँ पूत के नाँव सहसन साह।

८३१. —बाप के नाँव सागपात, पूत के नाँव परोरा खाँ।

८३२. —बाप जनमे ना खइले पान, दाँत निपोरत गइल प्रान।

८३३. —बाप जमबे ना कइले, पूत पिछुआरे ठाढ़ भइले।

८३४. —बाप दीहें हँसुआ तऽ बन करे जाइब।

८३५. —बाप पूत मिल खेती करीं, बाप के मुअले भाई के धरीं।

८३६. —बापे पूत परापत घोड़ा, न कुछ तऽ थोड़म-थोड़ा।

८३७. —बाप बटोरे गोबर नित, पूत बकसें गोहरउरि।

८३८. —बाप बड़ा न भइया, सबसे बड़ा रुपइया।

८३९. —बाप हवन ओझइत, माई हई डाइन।

८४०. —बाभन कुकुर भाँट जाति जाति के काट।

८४१. —बाभन पेटे, अहीर बकोटे, राजा दीठी, योगी पीठी।

८४२. —बाभन हाथी ई ना जोहे साथी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

८४३. —बासी पानी जो पिये, जो नित हरें खाय।
मोटी वतुअन जो करे, ता घर बैद ना जाय॥
८४४. —बासी बाँची ना कुकुर खाई।
८४५. —बासी भूत तेवासी माठा, ओ ककरी के बतिया।
आधा रात जुड़ावन आवे, भूइँया सुतावे कि खटिया॥
८४६. —बाहर उज्जर धोती, घर अँठुली के रोटी।
८४७. —बाहर के लोग खा जासु, घर के लोग गावें गीत।
८४८. —बाहर देखावे तीन सेर के नेउरा, घरे कलसूप ना दउरा।
८४९. —बाहर लामी लामी धोती, घरे मसुरी के रोटी।
८५०. —बाहे के ना बिआए के तीन हाला खाये के।
८५१. —बिछि के काटल रोवे, साँप के काटल सोवे।
८५२. —बिन घरनी घर भूत के डेरा।
८५३. —बिन बैलन खेती करे, बिन गैयन के रार।
बिन मेहरारू घर करे, चउदह लाख लबार॥
८५४. —बिन मारे बेटी मरे, खाढ़े ऊखि बिकाय।
बिन मारे मुदई मरे, ता पर देव सहाय॥
८५५. —बिना बान तिलक से लिलार चरचराय।
८५६. —बिना रोवेले माई भी दूध ना पिआवेले।
८५७. —बिनु पीसा बिनु कूटा, बिन हाथ परोसल बिनु आगि,
बिनु पानी, मोहे ततले ततले दे।
८५८. —बिप्र टहलुवा चीक धन, ओ बेटी के बाप।
एहू से धन ना घटे, तऽ करीं बड़न से रार॥
८५९. —बिरले कान होइहें भलमानुस।
८६०. —बिलारि के भागे सिकहर टूटल।
८६१. —बीली में हाथ तूँ लगावऽ मंतर हम पढ़ऽ तानी।
८६२. —बुड़बक कनियाँ के नव आना खोइँछा।
८६३. —बुड़बक के धन होय फहीमा मार खाय।
८६४. —बुड़बक के मेहरारू सभ के भौजाई।
८६५. —बुढ़वा भतार पर पाँच टिकुली।
८६६. —बुढ़िया सराहे घीव खिचड़ी।
८६७. —बुध कहै मैं बड़ा सयान, भोरे दिन जनि करिहो पयान।
कौड़ी से नहिं भेंट कराऊँ, छेम कुशल से घर पहुँचाऊँ॥
८६८. —बूढ़ गाय सोहराय के साथ।
८६९. —बूढ़ सूगा का कहीं पोस मानेला।
८७०. —बूढ़े सुग्गा कुतुर कुतुर।
८७१. —बूढ़ सूगा पोस ना माने।
८७२. —बूढ़ बकरी हुँड़ार से ठट्ठा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

८७३. —बेटा बेटी केकरो, गुरहत्थे बइठली मँगरो ।
८७४. —बे बोलवले मँड़वा गइलों, डोकी पोंछि के माथे लवलों ।
८७५. —बेटा लोटा बहरे चमकेला ।
८७६. —बेटी चमारे के, नाँव रजरनियाँ ।
८७७. —बेमेंह के दौंरी ।
८७८. —बेमेंह के दौंरी, घोड़ा बिन लगाम, बे माथ के लसकर, तीनों भइल नकाम ।
८७९. —बेल फूटले राई ।
८८०. —बेल बड़वार, धन बाग लगावे, अपने जमीन जनि बाँस लगावे ।
८८१. —बैल बेसाहे चललऽ कन्त, बैल बेसहिहः दू दू दन्त ।
काछ कसौटी साँवर बान, ई छाड़ि किनिहः मति आन ।।
जब देखिह रूपा धौरा, टका चारि दीहः उपरौरा ।
ओह पार जब देखिहः मैना, एही पार से दीहः बैना ।।
८८२. —बैल ना कूदे कूदे गोन, ई तमासा देखे कौन ।
८८३. —बैद पंसारी आधे आध ।
८८४. —बैल मुसरिहा जो कोई ले, राज भंग पलभर में कर दे ।
८८५. —बैल लीहः कजरा, दाम दीहः अगरा ।
८८६. —बोखार के जरि खाँसी, लड़ाई के जरि हाँसी ।
८८७. —बोलत लुखरी फूलत काँस, अब नाहीं बरखा के आस ।
८८८. —बोली मोरा परेला बबूर तर, घूघ मोरा गिरेला केहून भर ।
८८९. —भइँसा भइँसा के लड़ाई, खोंता बिरनी के उजाड़ ।
८९०. —भइँसा लादे लोहिआ खाई, तेकरा पापे परोसिया जाई ।
८९१. —भइँसि के आगे बीन बजावे भइँसि बैठी पगुराय ।
८९२. —भइल लरिका मरि मरि जाय, डीढ़े के ओझाई होखे ।
८९३. —भगवान जेकर मुँह चीरेलन, ओकरा दाना भी देलन ।
८९४. —भजन भोजन एकान्त भला ।
८९५. —भर गाँव मोर इतिया पितिया, अपने पिसान के लगवलीं लिटिया ।
८९६. —भर न करे भुइँहार के, पोंछ न धरे सियार के ।
८९७. —भर फागुन बुढ़ऊ देवर लागेलन ।
८९८. —भर बाँह चूड़, ना तऽ पट्ट देर ईं ।
८९९. —भरल झोरी जोइया के, छँछ बात भउजइया के ।
९००. —भल अदमी के एगो बात, भल घोड़ा के एगो लात ।
९०१. —भल जाति कुरमिन के, खुरपा हाथ, आपन खेत निरावे पिय के साथ ।
९०२. —भला संग रहबऽ खइबऽ बीरा पान । बुरा संग रहबऽ कटइबऽ दूनो कान ।।
९०३. —भरि सूप मोतियो बिआह, भरि सूप चउरो बिआह ।
९०४. —भाँड़ साथे खेति करनी, गा बजा के भाँड़े के भइल ।
९०५. —भाई अस हित ना, भाई अस मुदई ना ।
९०६. —भाई साथ के, हथियार हाथ के ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

९०७. —भागलपुर के भगोलिया, कहलगाँव के ठग।
पटना के देवालिया, तीनों नामजद।।
सुनि पावे भोजपुरिया, तऽ तीनों के तूरे रग।
९०८. —भात में कोदो के भात, सास में ममियौं सास।
९०९. —भादो भइँसा, चइत चमार।
९१०. —भादो मास कहाँ ना पानी, भइला के के ना कहावे दानी।
९११. —भारी रहे भार से पतुकी फफाई चले।
९१२. —भुसहुल के चूअल छव महीना बाद बुझाला।
९१३. —भूइँयाँ लोट चले पुरवाई, तब जानहु बरखा रितु आई।
९१४. —भूख में गूलर मेवा।
९१५. —भूखे भजन न होय गोपाला लेलऽ आपन कंठी माला।
९१६. —भूत मारेला ना तऽ सतावेला।
९१७. —भूल गइलन राज-रंग भूल गइलन चाकरी।
तीन चीज याद रहल, नून तेल लकड़ी।।
९१८. —भेंड़ी के लेंड़िये भला।
९१९. —भोजपुर में जइहऽ जन, जइहऽ तऽ रहिहऽ जन, रहिहऽ तऽ खइहऽ जन।
खइहऽ तऽ सूतिहऽ जन, सूतिहऽ तऽ टोइहऽ जन, टोइहऽ तऽ रोइहऽ जन।।
९२०. —भोजपुर : बावन गली, तिरपन बाजार दिया जरे छप्पन हजार।
९२१. —मँगनी के चन्नन घस रघुनन्दन।
९२२. —मँगनी के चन्नन हऽ तऽ हमरो चाही, अउरू हमरो कको के चाहीं;
अगर पइसा के हऽ तऽ लिलारे चरचराला।
९२३. —मँगनी के चाउर, नानी के सराध।
९२४. —मँगनी के तऽ आजन बाजन, जब मँगलस तऽ मरलों लाजन।
९२५. —मँगनी के बयल, अँजोरिया राति।
९२६. —मँगनी में चँगनी बिलरिया माँगे आधा।
९२७. —मँगनी में चिखनी बिलरिया माँगे आधा।
९२८. —मंगल पड़े तो लू चले, बुध पड़े अकाल।
जो तिथि होय सनीचरी, निहचें पड़े अकाल।।
९२९. —मंग र बुध उत्तर दिसि कालू सोम सनीचर पूरब ना चालू।
जे बिहफैं को दक्खिन जाय, बिना गुनाहे पनही खाय।।
९३०. —मँगले मउअति ना मिले।
९३१. —मंत्री बिना राज भंग।
९३२. —मनला के देवता ना तऽ पत्थर।
९३३. —माँगो मुड़ वले गरीब गिर नाव।
९३४. —माँगे बनिया गूर ना देय मुँहवाँ मलकें सब कुछ देय।
९३५. —माँगे के भीखि, चुकावे के गाँव के जामा।
९३६. —माँगे के मँगनी, गुरिया के बियाह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

९३७. —माँगे चाँगे काम चले तऽ बियाह करे बलाय ।
९३८. —माँड़ पीए के बहुत सवाद ।
९३९. —माँस मछरी आपहु खाय, हत्या ले ले पाहुन जाय ।
९४०. —माँ मरे मउसी जीए ।
९४१. —मास खाये तोंद बाढ़े, साग खाये ओझरी ।
९४२. —माई के कोख कोंहार के आँवा, की तऽ होय भाँड़ा की तऽ होय झावाँ ।
९४३. —माई के पेट, कोंहार के आँवा, कोई करिया कोई गोर ।
९४४. —माई के जियवा गाई अइसन, पूत के जियवा कसाई अइसन ।
९४५. —माई गुन बछरू पीता गुन घोर, ना कुछु तऽ थोड़म थोर ।
९४६. —माई के मनवाँ गाइ अस, पूत के मनवाँ कसाई अस ।
९४७. —माई धिया गवनहर, बाप पूत बरियाती ।
९४८. —माई से धियवे आगर, लेव लेव कहे कवरवैं लागल ।
९४९. —माई निहारे ठठरी, जोइया निहारे मोटरी ।
९५०. —माघ के जाड़ा, जेठ में धूप, बिरले खेत में उपजी ऊख ।
९५१. —माघ पूस जो दखिना चले, तो सावन के लच्छन ।
९५२. —माघ पूस ठेली तब न हारो तेली ।
९५३. —माघ मास जो पड़े ना सीत, मँहगी जानहु मीत ।
९५४. —माघ मास में भइल मलमली, खेती ले ठुकठुकवे भली ।
९५५. —माघ में बादल लाली धरे, साँचे जानहु पत्थर परे ।
९५६. —माघा के जल बाघ ।
९५७. —माघा बरसे, माता के परसे, भूखा ना माँगे फिर कुछ हरसे ।
९५८. —माघा भूमि अघा ।
९५९. —माघा में मक्कर पूरवा घास उतरा में भई सबके नास ।
९६०. —माघे ऊखम जेठे जाड़, पहिले भरे गाढ़ ।
९६१. —माघे पूर बहे पुरवाई, तब सरसों के माहुर खाई ।
९६२. —माटी के चउरा, तिलके में पार ।
९६३. —माटी के घोड़ा, सूत के लगाम ।
९६४. —माटी के देवता तिलके में ओरइहें ।
९६५. —माटी के देवता तेल के उजियार ।
९६६. —माटी के देवता अवरू राई के अच्छत ।
९६७. —माठा घोंटाय ना, पीठा ढकेलीं ।
९६८. —माथो मुड़ौले गरीब गिर नाँव ।
९६९. —मान तऽ देव ना तऽ पत्थर ।
९७०. —मार काट पिया तोरे आस ।
९७१. —मार के टर जाईं, खा के पर जाईं ।
९७२. —मार परे जहाँ भाग परे, पूरी के लूट तहाँ जुटि परे ।
९७३. —मार बरछिन के, लूट बनउर के ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

९७४. —मारल चोर, उपासल हीत, फेरू फेरू दुआरे ना लागे ।
९७५. —मारे ठेहुना, फूटे लिलार ।
९७६. —मारे मेहरू पादे पड़ोसिन ।
९७७. —मारेला भतार बाकी परसेला कसार ।
९७८. —मारे सरदारे लूटे भंडार ।
९७९. —माला लक्कड़, ठाकुर पत्थर, गंगाजमुना पानी ।
रामा कृष्णा मरते देखो, चारो वेद कहानी ।।
९८०. —माहुर खाइ ना जहर खाई, मुए के होखे तऽ डामडिम जाइ ।
९८१. —मिअनी बैल बड़ो बलवान, तनिक में करिहें ठाढ़े कान ।
९८२. —मियाँ के दउर महजिदिए तक ।
९८३. —मियाँ के मिले माँड़ ना खोजस ताड़ी ।
९८४. —मियाँ चोराने बेरिया बेरिया, खुदा चोरावस एके बरिया ।
९८५. —मियाँ के पाईं ना, बीबी के बकोरी ।
९८६. —(क) मियाँ जी के दाढ़ी फतेहे में पार ।
(ख) मियाँ जी के दाढ़ी, बाह बाहे में गइल ।
९८७. —मियाँ से पार न पाई, बिबिआ के बकोटि खाई ।
९८८. —मिये के थूक, मियें के दार ही ।
९८९. —मीठ मीठ गप गप, तीत तीत थू थू ।
९९०. —मुँह अइसन मुँह तिनकोनी, एक लात मार देव चल जइबऽ डेहरी के कोनी ।
९९१. —मुँह अस मुँह ना, रुपया मुँहदेखाई ।
९९२. —मुँह देख बीड़ा, चतुर देख पीढ़ा ।
९९३. —मुँह में दाँत ना पेट में आँत ।
९९४. —मुँह में राम बगल में छूरी ।
९९५. —मुँह सुतही मतिन, घूँघट घोंघा अइसन ।
९९६. —मुँह में धान डलला पर लावा फूटत बा ।
९९७. —मुँह लग्गी धोबिन, नाचे ताल बेताल ।
९९८. —मुँहे लागल डोमिन, गावे ताल बेताल ।
९९९. —मुअला धान में पानी परल ।
१०००. —मुअला पर कोदो दरे अइले ।
१००१. —मुअलो घोड़ा घास खाला ।
१००२. —मुअलो पर बैद अइले, दाँत चियार के घरे गइले ।
१००३. —मुड़ला माथे पानी पड़ल टघर गइल ।
१००४. —मुड़ि दिहली, माँगसु खास ।
१००५. —मुवई के ऊँच पीढ़ा दीहल जाला ।
१००६. —मुफुत के गंगा हराम के गोता ।
१००७. —मुफुत के निकले काम तऽ काहे को दीजे दाम ।
१००८. —मुरदा पर सौ मन माटी तऽ एक मन अउर सही ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१००९. —मुरगा ना बोली तऽ का बिहान ना होई ।
१०१०. —मुरगी का पोंछि में सूप ।
१०११. —मुरुगी बिअइली लाख बाकी धूरी उकटेरी के खाए के ।
१०१२. —मुसरी के मुँह में मूसर ना जाई ।
१०१३. —मुसरी देसु साँप के धर्रा ।
१०१४. —मुसरमान के लइका, भइल तऽ साहजादा ।
बिगड़ल तऽ हरमजादा, मुअल तऽ जीनजादा ।।
१०१५. —मूड़ी काट के बाल के रच्छा ।
१०१६. —मूल से ब्याज पियारा होला ।
१०१७. —मूस का गेहूँ होई तऽ ना कूटि के खाई, ना पूरी पकाई ।
१०१८. —मूस मोटइहें लोर्‌हा होइहें ।
१०१९. —मेघी मेघा भइँस किसान, मारे पपीहा घोड़ा धान ।
बाढ़े मीन जटा कह रानी, दस खुशी जब बरसे पानी ।।
१०२०. —मेटा घूंचा दियरी घाटी, सभके जरि बाटे कोहरे के माटी ।
१०२१. —मेहरी के झूला ना, बिलाई के गाँती ।
१०२२. —मैंदे गेहूँ-ढेले चना ।
१०२३. —मैं मर जइबों, तोहे ना भजइबों, तोहरा के देखि देखि जिअरा जुड़इबों ।
१०२४. —मैंना जो कहे मैंना तऽ दूध भात खाय ।
बकरी जो कहे मैंना तऽ उलटे खाल खिचाय ।।
१०२५. —मैं रहूँ कि मोर भतरा, अउर आवे तऽ करो झगरा ।
१०२६. —मोंची मोंची गेंग लागे, राजा के जीन फाटे ।
१०२७. —मोर खाइ कतारा, तोर खाइ कूस, देखल जाई अगहन पूस ।
१०२८. —मोर खेलावल गोंगनाथ, मोंसे करसु मसखरी ।
१०२९. —मोर पट्टी मोर गाँव, देवे के परे तऽ पेलि पराउँ ।
१०३०. —मोर पिया बात न पुछसु, मोर सुहागिन नाँव ।
१०३१. —मोर पिआ बिसनी, पचास बीड़ा खासु ।
१०३२. —मोर बरोबर हो पड़ोसिन गोदा रोटी खो ।
१०३३. —मोर मतार के गोड़ पर पाँच बिगहा ऊख बोअऽ ।
१०३४. —मोर बबुआ बड़ पंडित केहू के कहल मनवे ना करसु ।
१०३५. —मोर भइल बिआह, अब करबे का ।
१०३६. —मोर मन माई जाने, कठवति पर पिसान साने ।
१०३७. —मोर मनवाँ ना पतियाय, सउती के जियरा काँपत बा ।
१०३८. —मोर सौतीन खइलस दही, मोरा से कइसे जाइ रही ।
१०३९. —मोर सइयाँ की उलटी रीत, सावन मास उठावे भीत ।
१०४०. —मोहर के नाव मराई, कोइला पर छापा ।
१०४१. —यार के गुस्सा, मतार पर उतारेली ।
१०४२. —रंडी रूसल, धरम बाँचल ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१०४३. —रउताइन के दही राजा के भेंट ।
१०४४. —रकटलो गइली छछनलो किहाँ,
खोइंछा परलू बनउर ।
१०४५. —रजपूत अउरू धान के ओर ना मिले ।
१०४६. —रजपूत जात मुसर के धेनुही, टूटे तऽ टूटे नवे ना कबहीं ।
१०४७. —रवि को पान सोम कर दरपन, मंगर करिय धनियाँ चक्खन ।
बुद्ध राई बिरसपत मिठाई, शुक्र कहे मोहि दही सोहाई ।।
१०४८. —रसरी आवत जात तें, सिल पर होत निसान ।
१०४९. —रस्सी जल गइल बाकी अइठनि ना गइल ।
१०५०. —रहर के टाटी अउरू गुजराती ताला ।
१०५१. —रहल करिमना तऽ घर गइल, गइल करिमना तऽ घर गइल ।
१०५२. —रहल बात थोड़ी जनि रोकावऽ घोड़ी ।
१०५३. —रहली घुरामारी भइली समधिनि ।
१०५४. —रही बाँस ना बाजी बँसुरी ।
१०५५. —रहली हम तीन जानि, कइनी कवन जानी ।
१०५६. —रहे के चमार घर, करे के एतवार ।
१०५७. —रहे ना बाँस ना बाजे बँसुरी ।
१०५८. —रहे निरोगी जो कम खाय, बिगरै काम न जो गम खाय ।
१०५९. —राँड़ि का सरपले ले आस ।
१०६०. —राँड़ि का जाने आदि के सबाद ।
१०६१. —राँड़ि कहे जे सब कोई मरो, गाय कहे कि परती परो ।
१०६२. —राँड़ खुस जब सब मरे ।
१०६३. —राँड़ि ना भइली, साँढ़ि भइली ।
१०६४. —राँड़ माँड़े में सुखी ।
१०६५. —राँड़ि मरे न खंड़हर गिरे ।
१०६६. —राँड़ि रड़ापा करिहें कब उढ़रन से बांचे पइहें जब ।
१०६७. —राँड़ि राँड़ि ऐहबाती रोवसु,
संग लागल कुँअरिओं रोवसु कि हमरा बरे नइखे मिलत ।
१०६८. —राँड़ि साँढ़ि, सीढ़ी, सन्यासी, एह बचे तऽ सेवे कासी ।
१०६९. —राग, रसोइया, पागरी कबो कबो बनि जाइ ।
१०७०. —राजा करे से न्याव, पासा परे से दाव ।
१०७१. —राजा के गाँव मुसहर बाँटि लिहले ।
१०७२. —राजा के घरे मोती के दुख ।
१०७३. —राजा के बेटी, खाए के चूनल मार के बनउर ।
१०७४. —राजा नल पर बिपति परी, भूँजल मँछली जल में परी ।
१०७५. —राजा से कहे कि ढाँक लीहीं,
रानी से कहे कि झाँक लीहीं ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१०७६. —राजा होइबि तऽ खाइबि का ।
१०७७. —राजा हो राजा नगरिया के मूड़ि;
तू अपना के सोच जेकरा बार होई से उपाई करी ।
१०७८. —राति खाँ भूत से डरसु, नाँव ओझइत ।
१०७९. —रात के बोले कउवा, दिने बोले सियार,
उ गउवाँ होला उजियार ।
१०८०. —रात बहुरिया चाचर खेलस, दिन कउवा देख डरास ।
१०८१. —रात भर मियानी तऽ एक बच्चा बियानी ।
१०८२. —रानी के माँड़ ना, लोकनी के बुनिया ।
१०८३. —रानी डाल भर गुल्लर खइली जीव लगाय लगाय ।
१०८४. —रानी रूसिहें, आपन सोहाग लीहें ।
१०८५. —राम गति आवे ना, दे माई पोथी ।
१०८६. —राम कहऽ, राम कहऽ तोता, राम भजन बिनु खइबऽ गोता ।
१०८७. —राम के बन केकयी के अकलंक ।
१०८८. —रामनगर में रामलीला, डोल डुमराँव ।
कोचस में कंसलीला, तजिया ससराँव ।।
१०८९. —राम नाम सें आलसी, भोजन में तइयार ।
१०९०. —राम बिना दुःख कवन हरी, बरखा बिनु सागर कवन भरी ।
माता बिनु सेवा कवन करी, लछिमी बिनु आदर कवन करी ।।
१०९१. —राम भजे से लड्डू पावे ।
१०९२. —राम भाई पतुकी, सलाम भाई चूल्हा ।
१०९३. —राम राम कहत रहऽ, मन में राखऽ चेत,
चारो ओर ताक के, कबारे लागऽ खेत ।
१०९४. —राम राम रटना, चिउरा दही सपना ।
१०९५. —राम लखन नाँव, मुँह कुकुर अइसन ।
१०९६. —राम लागसु अभागा का, आदिमी लागे सुभागा का ।
१०९७. —राम रसोइया एक जानी, बज्जर पर पाँच जानी, पत्थर पड़े तीन जानी ।
१०९८. —रिन के फिकिर ना धन के सोंच, एही कारण धम धूसर मोर ।
१०९९. —रिन के खाइल, पुअरा के तापल बरोबर ।
११००. —रूख ना बिरिछ ताहाँ रेंड़ परधान ।
११०१ —रुखी मरले दुखी, कउवा मरले सुखी ।
११०२. —रुपया तीनि बयल लेब बीनि ।
११०३. —रूसल बहुरिया उकटेरल आग, दूनों ठहरल बड़ बा भाग ।
११०४. —रूसिहें देवान मोर करिहें का, लुँगटी छाड़ि के पहिरिहें का ।
११०५. —रोग के घर खाँसी, लड़ाई के घर हाँसी ।
११०६. —रोजा के गइले, निमाज परल गरे ।
११०७. —रोटी खाय सक्कर से, धन जोड़े मक्कर से ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

११०८. —रोपया देब तीन, बैल लेब बीन ।
११०९. —रोपया तो सेख ना तऽ जोलहा ।
१११०. —रोये के रहली, आँखिये खोदा गइलि ।
११११. —रोये अवरू गावे केकरा ना आवे ।
१११२. —रोवत गइलें, मुअला के खबरि ले अइलें ।
१११३. —रोहिन में घर रोहा नाहीं ।
१११४. —रोहिन खाऽ, मृगसिरा छउनि, अदरा आये धान की बोवनी ।
१११५. —लंका के जे छोट बड़ से हो उन्चास हाथ के ।
१११६. —लंगरी बिलार, घर ही में सिकार ।
१११७. —लंगटा नाचे फाटे का ।
१११८. —लंगटा नाचे तीनि तीनि बेरिया ।
अनगुत साँझ दुपहरिया ।
१११९. —लंगा नाचे फाटे का ।
११२०. —लंगा नाचे बीच बजार में ।
११२१. —लउर ना अउर चले, चल मियाँ जगदीसपुर ।
११२२. —लइका भीरी जाइब ना, जवनका मेरे भाई ।
११२३. —बुढ़वा के तऽ छोड़ब ना, कतनो ओढ़े रजाई ।
११२४. —लइकन के दोस्ती ढेला के सनसनाहट ।
११२५. —लउरी का पोर भेंट ना भइला—बाप-बाप गोहरावे लागल ।
११२६. —लकड़ी के बल मकड़ी नाचे ।
११२७. —लच्छन एक कुलच्छन नारि, का करिहें घर भूअरि बिलारि ।
११२८. —लजाइल लरिका ढोंढी टोवे ।
११२९. —लड़की आइलि, ना पेठिया लागलि ।
११३०. —लड़ पड़ोसिन दीदा रख ।
११३१. —लड़ा लड़ी के यार कभी न उतरे पार ।
११३२. —लड़े सिपाही नाँव कपतान के ।
११३३. —लड्डू लड़े झिल्ली जरे, कायथ बेचारे के पेट भरे ।
११३४. —लदले छव मन, बेचले नव मन ।
११३५. —लब लब करे अहीरिन के घीव ।
कब जाइबि ससुरा, कब खाइबि घीव ।।
११३६. —लरिका का बहाने, लरिकोरी जियेले ।
११३७. —लरिका का खेलवार, खन खटिया खन भुइयाँ ।
११३८. —लरिका के ढेर सहकावे के ना ।
मारे के तऽ फुसलावे के ना ।।
११३९. —लरिका ठाकुर, बूढ़ देवान, ममिला बिगरे साँझ बिहान ।
११४०. —ललका लुगत्रे जनि पतिआव तरे लुगरिये बा ।
११४१. —ललन के धोती, अगरवलन के पैंठ ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

११४२. —लस्सा के मारे चिड़िया मरे, नैनां के मोर जइसे करहिया में तेल जरे। वइसे सउत जरे।

११४३. —लागि से करू, चाहे चरू चाहे परू।

११४४. —लाजे भावह बोलस ना, सवादे भसुर छोड़स ना।

११४५. —लाजे लजासु ना तऽ डीढी डेरइबो ना करसु।

११४६. —लाठी हाथ के, भाइ साथ के।

११४७. —लात के आदमी बात से ना मानेला।

११४८. —लाद दऽ लदवा दऽ रेखा घाट पहुँचा दऽ।

११४९. —लादूसाव के बेटा पादूसाव, खरीदे के छव मन बेचे के नव मन।

११५०. —लाल पीअर जब होय अकास, तब ना बा बरखा के आस।

११५१. —लाल-लाल पइसा तऽ रोदना कइसा।

११५२. —लाल लूगा फाटि जाई चमकल मेटि जाई।

११५३. —लाला के मकान के ओरी बहारल जाला।

११५४. —लाला के लागल नौकरी, ललाइन के चढ़ल दिमाग।

११५५. —लाला के लावा कोइरिये खाय।

११५६. —लिखसु रहीम पढ़सु करीम।

११५७. —लुग्गा नव दिन लुगरी बरिस दिन।

११५८. —लूट में चर्खे नफा।

११५९. —लेना न देना बजाउ रे, बजाऊ।

११६०. —ले लुगरिया, चल डुमरिया।

११६१. —ले लुगरिया, चल बजरिया।

११६२. —लोहइनि के बचल कोहइनि ले के सती होई।

११६३. —लोहा से लोहा कटेला।

११६४. —लोहा के सहताई, सियार गढ़वले टाँगा।

११६५. —लोहा तामें अइसन, तऽ सोने-चानी में कइसन।

११६६. —लौटल सुहाग हाँक पिया मांछी।

११६७. —वक्त परे पर जानिये को बैरी को हित।

११६८. —वक्त पड़े बाँका तो गदहे को कहे काका।

११६९. —शनि अढ़ाई मंगल तीन, रवि गुर रहे आठो दीन।

११७०. —शेर के जूठ गीदर खाला।

११७१. —शेर के मालिक बनरा सियार।

११७२. —सँउसे ताल में एके खरई।

११७३. —सँउसे घर सियार खाइ घललसि, बाकी मूँड़ी के झाँटल ना छटल।

११७४. —सँउसे रजाई जर गइल, बाघराय के जाड़ा ना गइल।

११७५. —संख के देखके घोंघा मुँह टेढ़ करेलन।

११७६. —संग घोड़ा पयदल चलें, तीर चलावे बीनि।

११७७. —थाती धरे दामाद घर जग में भकुआ तीनि।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

११७८. —संगे लागल लँगड़ो देवाल कूदेली ।
११७९. —संगे संगे लँगरो, देवाल फानेली ।
११८०. —सइ कपूत से एक कपूत अच्छा ।
११८१. —सइ गुंडा एक मोछमुंडा ।
११८२ —सइ गुलाम, घर सूना ।
११८३. —सइ घर में एक घर डाइनों बकसेले ।
११८४. —सइ चमार, न एक भुइँहार ।
११८५. —सइ चाईं ना एक पछाहीं ।
११८६. —सइ चूहा खाइके, बिलारि भइली भगतनि ।
११८७. —सइ चोट सोनार के, ना एके चोट लोहार के ।
११८८. —सइ वक्ता ना एक चुप्पा ।
११८९. —सइ में सूर हजार में काना, सवा लाख में अइँचा ताना ।
अइँचा ताना कहे पुकार, कजरा से रहिअऽ होसिआर ।।
११९०. —सइयाँ अस कहीं तऽ नतवे टूटे ।
भइया अस कहीं तऽ सेजिये छूटे ।।
११९१. —सइयाँ के अरजल भइया के नाँव ।
चोलिया पहिरि मैं जइबो ससुरारि ।।
११९२. —सइयाँ के अरजल, भइया के नाँव ।
सो पहिरबों ससुरजी के गाँव ।।
११९३. —सइयाँ भइले कोतवाल, अब डर काहे के ।
११९४. —सइ हत्या बाघ मराला ।
११९५. —सगरे खीरा खाके भेंटी तीत ।
११९६. —सगरे गाँव पराइल जाय, घूरा बहू कहस जे मेंगिये टीक वऽ ।
११९७. —सगरे फौद में ऊँट बदनाम ।
११९८. —सगरे रमायन हो गइल सीता केकर जोरू ।
११९९. —सती आपन मान राखसु तऽ आन के रखिहें ।
१२००. —सती सती समझावे सती न होखे पावे ।
१२०१. —सत्तर चूहा खाके बिल्ली चलली दुअरिका ।
१२०२. —सती का सत बस सात घूरी रहेला ।
१२०३. —सदा दिवारी संत घर, जो घर आँटा होई ।
१२०४. —सन्थर जोते भूत चरावे, लगते जेठ भुसौला छावे ।
भादो मास उठे जो गरदा, बीस बरस तक जोतो बरदा ।।
१२०५. —सब अन्न में सांवा जेठ, से भइले धाने के हेठ ।
१२०६. —सब कहल करबि, बाकी खूँटा गाड़बि ऊहें ।
१२०७. —सब कुकुर काशी जइहें तऽ हाँड़ी के ढूँढ़ी ?
१२०८. —सबके कर, हर के तर ।
१२०९. —सबके गुरू गोबरधनदास ।

CC-0. Rajiv Lochan Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१२१०. —सब कोई बोले तऽ नीक लागेला कवूर बऽ बोलस तऽ टिहुक बरेला ।
१२११. —सब केहू तीन बीस, तऽ हम काहे ना साठि ।
१२१२. —सब गुण भरल ठकुरबा मोर, अपने पहरू अपने चोर ।
१२१३. —सब धन बाइस पसेरी ।
१२१४. —सब धन सियार खइलस, मूँड़ी के झाँटल कबहूँ ना गइल ।
१२१५. —सब मिलके झूमर पारे ठूठी कहे हमहूँ ।
१२१६. —सभ का सभ चीज के फीकिर तऽ गोंड़वा के बेगारो के फीकिर ।
१२१७. —सभ किछु काज भरथ के हाथ ।
१२१८. —सभ किछु छूटल, तुम्मा फेरल ना छूटल ।
१२१९. —सभ चिरइन में बाझ बरियार ।
ओकर माँस भछे ननीआर ॥
९२२०. —सभ दाम घरें खरचे नाहीं ।
१२२१. —सभ दिन साहु के, एक दिन चोर के ।
१२२२. —सभ घर निकलि गइल, पोंछि अँटकलि बा ।
१२२३. —सभ पर दया चिल्लर पर नाहीं ।
१२२४. —सभ बनिजिया थाकल, तऽ मुँह बिरावे लागल ।
१२२५. —सभ भेंड़ि भाँड़ में गइलीं, उर उर लगले बा ।
१२२६. —सभा के चूकल मरद, डाढ़ि के चूकला बानर ।
१२२७. —समधी कोहनाइल जासु बजनियाँ का गोड़ ले परीं ।
१२२८. —सम्मत के सिंगार, बीपत के आहार ।
१२२९. —सम्मन चुरिया ऊ गढ़े, ज्यों हस्ती के दन्त ।
बाँह पकड़ि रस लेत हैं, बैठे देखे कन्त ॥
१२३०. —सरदी के मारल पनपेला, अग्न के मारल ना पनपेला ।
१२३१. —सरनाम बनियाँ, बदनाम चोर ।
१२३२. —सरब दोस हरे बरिआई ।
१२३३. —सरबस हारों गज भर ना फारों ।
१२३४. —सरल सरपूत मुअल रजपूत ।
१२३५. —सरलो तेली तऽ एक अधेली ।
१२३६. —सराहल बहुरिया, डोम घरे जाली ।
१२३७. —सवख के मारे खेखरि, बइरकंटी में करे दंड ।
१२३८. —ससुराल सुख की सार, जो रहे दिन दो चार ।
१२३९. —सहकल गवरइया भरसाई लावें खोंता ।
१२४०. —सहता गेहूँ, घर घर पूजा ।
१२४१. —सहता माल, बहता पानी ।
१२४२. —सहता रोवे बार बार, महँगो रोवे एके बार ।
१२४३. —साँच कहले संग बिधुआय ।
१२४४. —साँच कहे तो मारल जाय, झूठ कहे तो जग पतियाय ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१२४५. —साँच के आँच का ।
१२४६. —साँच बात सदुल्ला कहे, सबके चित से उतरल रहे ।
१२४७. —साँझे मरब, बिहाने बरद ।
१२४८. —साँझे देई सबेरे पाये, पूत भतार के आगे ।
१२४९. —साँप के काटल उठके पानी ना माँगेला ।
१२५०. —साँप के काटल रस्सी देख के डेराला ।
१२५१. —साँप के दूध पियाई तबहूँ बीखे उगली ।
१२५२. —साँप छूछनरि के लड़ाई, छोड़े तऽ आन्हर आ घोंटे तऽ कोरिह हो जाई ।
१२५३. —साँप न मुअल लाठी टूटलि ।
१२५४. —साँपों मारऽ लाठी जोगावऽ ।
१२५५. —साँवाँ साठी साठ दिना, जब पानी बरसे रात दिना ।
१२५६. —साइत से सुतार भला ।
१२५७. —सागन में साग गधपुरना ।
१२५८. —साग से ना जुड़इले, तऽ साग का पान से जुड़इहें ।
१२५९. —साझ के घोड़ा के कवन जड़े नाल ।
१२६०. —साझ के माई, गंगा कबहुँ ना पाई ।
१२६१. —साझ के सुई सेंगरा पर चलेले ।
१२६२. —साठ कोस नाटा के दौड़, अस्सी कोस बड़कान ।
बाँके अन्त न पाइये, जो एक आँख के कान ।।
१२६३. —साठा पाठा, बीसी घीसी ।
१२६४. —साठी पाके साठ दिन, बरखा होखे रात दिन ।
१२६५. —सात चमार, एक भुइँहार, सात भुइँहार तऽ एक नोनियार ।
१२६६. —सात दाँत उदन्त को, रंग जो काला होय ।
इनको कबहूँ न लीजिये, राम चाहे जा होय ।।
१२६७. —सात पतोहिया, सातो बेवहरा, अइहें छोटको करब सुख सेहरा ।
का तू सासु करबू तू सुख सेहरा, सातो ले हम अउर बेवहरा ।।
१२६८. —सात पाँच के लाठी, एक अदिमी के बोझा ।
१२६९. —सात पांच मिलि करीं काज, हारी जीती नाहीं लाज ।
१२७०. —सात पाँच लइका एगो संतोख, खेखरि मरल एकहू ना दोस ।
१२७१. —सात बेवइहा के एगो कोरिह मारेला ।
१२७२. —सात रोटी मइया के, सताइस रोटी पवनी के ।
१२७३. —सात सइ के कनियाँ, सताइस सइ के बर ।
खेती बारी बान्हा बाटे साधु होई के चल ।।
१२७४. —सात सेर के सात पकौलों, चौदह सेर के एके ।
तूँ दढ़ीजरू सातो खइलऽ हम कुलवन्ती एके ।।
१२७५. —सात हाथ घोड़ा से डरिये चौदह हाथ मतवाला ।
हाथ अनगिनत बासे डरिये, जेकर जात फेटवाला ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१२७६. —सातू गुर खातनी, लागा लगवले बानी, आई तऽ आई,
नाहीं तऽ गइल माल के कवन ठेकाना ।
१२७७. —साधु के नेवान ना, चोरन के दँवरी ।
१२७८. —साधे घोड़ी बिअइली पाड़ा ।
१२७९. —साधे साधे बिआली बाबाजी के घोड़ी ।
१२८०. —सारा रामायन कह गये, सीता किसकी जोय ।
१२८१. —लाव के दाव हाट में, चोर के दाव घाट में ।
१२८२. —सावजी बहल जाल तऽ अपने गँवे से बहल जात रहीं ।
१२८३. —सावन उखमें मादो जाड़, बरखा मारे ठाढ़ कछाँड़ ।
जो पुरबा पुरबाई पावै, ओरी के पानी बड़ेंरी धावै ।।
१२८४. —सावन के आन्हर के हरियरे सूझेला ।
१२८५. —सावन कृष्ण एकादसी, गरजि मेघ अधिरात ।
तुम जावो पिया मालवा, हम जाइब गुजरात ।।
१२८६. —सावन पछया महि भरे, भादो पुरवा पाथर पड़े ।
१२८७. —सावन पछुवा, भादो पुरवा आसिन बहे ईसान ।
कातिक कन्ता सिकियो ना डोले कहाँ तू रखबऽ धान ।।
१२८८. —सावन पुरवाई बहै, भादो में पछियाव ।
कंत डगरवा बेंचि के, लरिका भागि जिआवऽ ।।
१२८९. —सावन पछुआ सींकि डोलावे, बरसत मेघ कवन विलगावे ।
१२९०. —सावन भैंसा माघ सियार, अगहन बरजी चइत चमार ।
१२९१. —सावन मासे बहे पुरबइया, बरधा बेचि लीह धेनु गइआ ।
१२९२. —सावन में जमले सियार, भादो में अइलि बाढ़ि ।
बाप रे बाप अइसन बाढ़ कबहुँ ना देखली ।।
१२९३. —सावन में ससुरारी गये पूस में खाये पूआ ।
चइत में छैला पूछत डोलें, तोहरो कतना हुआ ।।
१२९४. —सावन ले मादवे दूबर ।
१२९५. —सावन सुक्र न दीसे, निहचे पड़े अकाल ।
१२९६. —सावन सुक्ला सत्तमी, छपि के उगहि भान ।
तो लगि मेघा बरसे, जो लगि देव उठान ।।
१२९७. —सावन सुक्ला सप्तमी ज्यों गरजे अधिरात ।
तुम जावो पिया मालवा, हम जैवों गुजरात ।।
१२९८. —सावन सरि में उड़े धूरि, बीस बरिस जोते भरपूर ।
१२९९. —सावन सूखे धान, भादों सूखे गोहूँ ।
१३००. —सावन सुक्ला सत्तमी चन्दा उगे तुरन्त ।
कि या जल मिले समुन्दरो, किया नागर कूप भरन्त ।।
१३०१. —सावन हरा ना भादो सूखा ।
१३०२. —सावाँ खेती अहीर मीत, कबहुँ कबहुँ होखे हित ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१३०३. —सावाँ खेती बाज धन, धनपुरही भइँस बियाय।
अहीर मीत न कीजिये, अउर मीत मरि जाय॥
१३०४. —सावाँ साठी साठि दिन, बरखा होखे रात दिन।
१३०५. —सावां सोहले, बुरिबक सरहले।
१३०६. —सास के ओढ़ना पतोह के बिछौना।
१३०७. —सास के हाथे खपल तऽ खपल, अब पतोह के हाथे खपऽ तऽ जानी।
१३०८. —सासु ना ननद, घर अपने अनन्द।
१३०९. —सासु पतोहिया एके होइहें, भामा कुट्टन घर चलि जइहें।
१३१०. —साह में अनाफी साह, अवरू साह सहुला।
गंज में महराजगंज, अउरू गंज गँजुली॥
१३११. —साहु बटोरे कौड़ी कौड़ी, राम बटोरे कुप्पा।
१३१२. —सिंहा गरजे, हथिया लरजे।
१३१३. —सिखावलि बुधि अढ़ाई घरी।
१३१४. —सिंघरी चाल चले रोहुला का सिरे बीती।
१३१५. —सियार के मन्त्री कउवा, छोड़ बीहले हाड़-चाम खा लीहले मँसवा।
१३१६. —सिर बड़ा सरदार का, पैर बड़ा गँवार का।
१३१७. —सींघ झरे अउर खुर घिसे पीठ ना बोझा ले।
ऐसे बूढ़े बैल को बाँधे कवन भूस दे॥
१३१८. —सींघ मुड़े माथा उठा, मुँह का होवै गोल।
रोम नरम चंचल करन तेज बैल अनमोल॥
१३१९. —सुअर के बाचा धरऽ तब काँई काँई, मारऽ तब काँई काँई।
१३२०. —सुकवा के अइली सनिचरवे के गइली।
खोलु माइ टाटी गंगाजलि बेटी अइली॥
१३२१. —सुख चाहे खेती करे, धन चाहे बयपार।
१३२२. —सुख दुख गइल बिसरि जब जामल तीसर।
१३२३. —सुखी होय के पान न खाई, दुखी हो के नून न खाई,
सेकर जनम अकारथ जाई।
१३२४. —सुख सम्पत के सब कोई साथी।
१३२५. —सुखे सिहुला दुखे दिनाय।
१३२६. —सुखे सिहुला दुखे दिनाय, करम फुटे तऽ फाटे बेवाय।
१३२७. —सुरती कहे सुनो नर नारि, भोंहि का खाय बहुत बिचारि।
पहिले देउँ दाँत करिआय, एक एक कर देउँ हिलाय।
दूसरे वृष्टि में मन्द करि देउँ, तिसरे गँवहि भूख हरि लेउँ॥
चौथे सुधि बुधि दउँ भुलाय, धरती छोड़ि सरग मँडराय।
पँचवें एक बड़ा गुन मोरा, जिन खावा सो दाँत निपोरा॥
१३२८. —सूअरे के बदले सायन।
१३२९. —सूके के बाछी जनमे के हतिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१३३०. —सूके सोभे बुद्ध काम, यह स्वर लंका जीते राम ।
१३३१. —सूखल रोटी अइसन तऽ नूने तेल कइसन ।
१३३२. —सूखी के सिंगार, भूखे के आहार ।
१३३३. —सूते रजपूत उठे अजगूत ।
१३३४. —सूप हँसे तो हँसे चलनिओ हँसे जवना का सहसरि गो छेद ।
१३३५. —सूम का गेहूँ होई तऽ ना कूट के खाई ना पूरी पकाई ।
१३३६. —सूमिन पूछे सूम से काहे बदन मलीन ।
का गाँठी का गिर पड़ा, का काहू को दीन ।
ना गाँठी का गिर पड़ा, ना काहू कछु दीन ।
देत लेत पर देखिया, तातें बदन मलीन ।।
१३३७. —सूरदास के काली कामरि चढ़े ना दूजो रँग ।
१३३८. —सेआना सतरु हर उपावई नासे ।
१३३९. —सेतिहाँ के गंगा हरामी के गोता ।
१३४०. —सेतिहाँ के चिउरा भर भर गाल ।
१३४१. —से ननिअउरा नइखे, जे नाती कलेवा कइके जइहें ।
१३४२. —सेनूर टिकुली जरल तऽ पेटो में बज्जर परल ।
१३४३. —सेर भर के पिसिआ, महादेव के गितिया ।
१३४४. —सेर भर खातिर गइलीं गोनसारी ।
डेढ़ सेर जब मोर बछवे चवाई ।।
१३४५. —सेर भरि धनियाँ, शाहजहांपुर में कोठी ।
१३४६. —सेरही जागे पसेरही सूते पसंगी के छटपटी बरे ।
१३४७. —सेर सूते पउवा जागे छटँकी के छटपटी बरे ।
१३४८. —सोझे अँगुरी घीव ना निकले ।
१३४९. —सोझिया के मुँह कुकुर चाटे ।
१३५०. —सोना अइसन पूत मोरा वन में, खकटल पतोह मोरा कोन में ।
१३५१. —सोना के अँगुठी, पीतल के टाँका, माई छिनरी पूत बाँका ।
१३५२. —सोना के पावल भुलाइल दूनो बुरा होला ।
१३५३. —सोना जाने कसे, ननई जाने बसे ।
१३५४. —सोना सोनार के, अबरन संसार के ।
१३५५. —सोम सुकवा रवि गुरु जब जब सभा बइठिहे ।
चार दिन के भीतरे घुम घुम देउआ बरिसिहें ।।
१३५६. —सोये से खोवे, जागे से पावे ।
१३५७. —सोरह बोझा में बोझा तऽ समधियारो कइसन ।
१३५८. —सोरह भइँस में एके पड़वा, ऊहो लुकाइल ऊखि में ।
१३५९. —सौ अवगुन सोना हटेला ।
१३६०. —सौ गुंडा ना एक मोंछमुंडा ।
१३६१. —सौखीन बहुरिया चटाई के लहँगा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१३६२. —सौ चाईं ना एक ससराइ ।
१३६३. —सौ दिन चोर के, तऽ एक दिन साह के ।
१३६४. —सौ पग चले खाय के जोई, ताको बैद न पूछे कोई ।
१३६५. —सौ पर फूली हजार पर काना, सवा लाख पर एंचाताना ।
१३६६. —सौ मुँह एक ओर एक मुँह चुप्पा ।
१३६७. —सौ में फूली सहसर में काना, सवा लाख में एंचाताना ।
एंचाताना कहे पुकार, बिलरँखा से रहियो होसियार ।।
१३६८. —सौ सोनार के तऽ एक भुइँहार के ।
१३६९. —सौ सौ जूता खाय तबहूँ तमासा पइस के देखे ।
१३७०. —हंसा चले भाग केहुना संगे लाग ।
१३७१. —हंसा रहे सो उड़ि गये, कागा भये दिवान ।
जाहु विप्र घर आपने, के काको जजमान ।।
१३७२. —हंसा रहे सो मरि गये, कौवा भये दिवान ।
जाहु विप्र घर आपने, के काको जजमान ।।
१३७३. —हँसि लोरहा करसु लड़ाई, हम संभुनाथ के भाई ।
१३७४. —हँसुआ अपने ओर खिंचेला ।
१३७५. —हँसुवा के बिआह, खुरपा के गीत ।
१३७६. —हँसुआ चोख ना, खुरपा भोथर ।
१३७७. —हँसुआ टेढ़ो होजा तबहूँ अपने ओर खींचेला ।
१३७८. —हँसी हँसी मारी कुकुर, रोइ रोइ फेकों गूह ।
१३७९. —हईं जनाना, भेख मरदाना ।
१३८०. —हती चूके वाछी कान गइलि गाछि ।
१३८१. —हतेया मँगरे चढ़ि चिल्लाय ।
१३८२. —हत्या के भरोसे गाय खेत खाली ।
१३८३. —हथिया झरे आ चितरा मँड़राय, घर बइठल गिरहथ अगराय ।
१३८४. —हथिया पूँछ डोलावे घर बइठे गेहूँ आवे ।
१३८५. —हथिया बरसे चितरा घहराई घर में बैइठि के धनहा अगराइ ।
१३८६. —हथिया बरसे तीन होत बा, सक्कर साली मास ।
हथिया बरसे तीन जात बा, तील कोदो कपास ।।
१३८७. —हथिया बरिसे तीनि आवे, धान सक्कर आउर मांस ।
हथिया गइले तीनि मुए, कोदो तीलि कपास ।।
१३८८. —हथिया में हाथ गोड़, चितरा में रोड़ा,
चढ़त सेवाती झझाझोरा ।
१३८९. —हथियार हाथ के कौड़ी पास के,
यार बनलो के हऽ बिगड़लो के हऽ,
कुटुम्ब बरोबर के हऽ ।
१३९०. —हम अपना गेहूँ के अखरे पकाइबि, तोहार का ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१३९१. —हम अपना छान्ही पर होरहा लगाइबि, तोहार का ।
१३९२. —हम कहीं बोअन, गाय कहे परती ।
१३९३. —हम बउरहिया आग कहाँ से पाइब ।
१३९४. —हम भरी आन के, हमार भरे कमकरिनि ।
१३९५. —हमरा किहँवा अइबऽ तऽ का ले अइबऽ,
तहरा किहाँ जाइबि तऽ का खिअइबऽ ।
१३९६. —हमरा के केहु ना मारे, तऽ हम सनसार के मारि आई ।
१३९७. —हम राजा तू रानी, के भरी गगरी से पानी ।
१३९८. —हम लरकोरी तू अलबाँति, दूनो परोसा लइहऽ जाँत ।
१३९९. —हमार काका पहलवान नूँ हवे ।
१४००. —हमार दादा घीव खात रहलें, देख हमार बाँहि महँकति आ ।
१४०१. —हर दबल अकरब जो चढ़े, कह गये नकुल नरेस ।
आप आदर का करे, कि नगर आदर होय ।।
१४०२. —हरनट्ठ देवता, भरनट्ठ पूजा ।
१४०३. —हर्ना बयल, अकवारि भरि पयना ।
१४०४. —हर्ना समुझि, समुझि बन चर्ना ।
१४०५. —हर लागल पाताल तऽ भाग गइल अकाल ।
१४०६. —हरँ लागे ना फिटकिरी, आवे चोखा रंग ।
१४०७. —हरहा हाथी हाकिम चोर, बिगड़ला पर लागे ना ओर ।
१४०८. —हर हेंगा में अइसन तइसन, पंगुरी में रंथ ।
१४०९. —हराम के कमाई हराम में गँवाई ।
१४१०. —हरिकल मानेला, परिकल नाहीं ।
१४११. —हरिकवर पर बिसमिल्ला ना होई ।
१४१२. —हरिन फलांगन काकरी, पेंग पेंग कपास,
जाय कहो किसान से, बोवै धनी उखार ।
१४१३. —हरिहर खेती, गाभिन गाय, तब जानी जब कंठे जाय ।
१४१४. —हलवाई के दोकान दादा के फतिहा ।
१४१५. —हाँड़ी में खुदियो ना, चलऽ समधी खाये ।
१४१६. —हाँड़ी के एगो चाउर टोअला से पता चलि जाला ।
१४१७. —हाँड़ी के ठेकाने ना, चलीं समधी जेवें ।
१४१८. —हाकिम हारे, मुँह में मारे ।
१४१९. —हाकिम बदलेला, हुकुम ना बदलेला ।
१४२०. —हाथ के असकत मुँह में मोंछ ।
१४२१. —हाथ के हथियार पेटे के अधार ।
१४२२. —हाथ गोड़ के लूल्ह लाँगड़, नाम सलामतखाँ ।
१४२३. —हाथ गोड़ सिरकी पेट नदकोला, जे कुछ कमाई से भकोसेले के होला ।
१४२४. —हाथ में ना गोड़ में, टकही लिलार में ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१४२५. —हाथा के दाँत खाये के अउर, दिखावे के अउर ।
१४२६. —हाथी के पैर में सभ के पयर ।
१४२७. —हाथी के बोझ हाथी सम्हारे ।
१४२८. —हाथी चलले बजार, कुकुर भूँकसु हजार ।
१४२९. —हाथी पैर ना डलीहन कि गंगा फफैइहन ।
१४३०. —हाथी भुलाली तऽ चूका में खोजाली ।
१४३१. —हाथे धनुही कान्हे बान कहाँ चले डिल्ली सुलतान ।
१४३२. —हाथे बाड़ी खुदिया, तबही मोर दीदिया ।
नाही बाड़ी खुदिया, जरसु मोर दीदिया ।।
१४३३. —हाथो तर से गइल, लातो तर से गइल ।
१४३४. —हारल बैला हारल आवे, छूँछ बैला कँहरत आवे ।
१४३५. —हींगु ओराइ जाले बाकी ओकर गमक ना ओराला ।
१४३६. —हींड़ल के पोखर केहू, मछली मारल दोसर केहू ।
१४३७. —हीले रोजी, बहाने मउअत ।
१४३८. —हुक्का चार बेर अच्छा, सोके मुँह धोके साफे नहाके ।
अउरु चार बेरी बुरा, आन्ही में अन्हारी में, भूख में धूप में ।।
१४३९. —हेल बाँड़ा हेल आतऽ पोंछि अलगले बानी ।
१४४०. —हेठा मरदा ताके, ठाढ़े बरधा लीले ।
१४४१. —हेहर के हाँथे जामल रूख, बइठे के छाँह भइल ।
१४४२. —होखे के रहले बाबू भइया, हो गइले भिखारी ।
१४४३. —होत बिहान बिल सोनवा ।
१४४४. —होनहार बिरवान के होत चिकने पात ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहायक ग्रन्थ-सूची

(क) हिन्दी :

१. सामान्य ग्रन्थ :

अग्रवाल, वासुदेवशरण : पाणिनिकालीन भारतवर्ष : प्रथम संस्करण, बनारस २०१२ वि०।

: पृथिवी-पुत्र, पहली बार, नई दिल्ली, १९४९ ई०।

अज्ञेय : रूपाम्बरा, प्रथम संस्करण, काशी, १९६० ई०।

ओम्प्रकाश : हिन्दी—अलंकार-साहित्य, दिल्ली १९५६ ई०।

उपाध्याय, कृष्णदेव : भोजपुरी लोक-साहित्य का अध्ययन, वाराणसी, १९६० ई०।

: लोक-साहित्य की भूमिका, इलाहाबाद, १९५७ ई०।

काणे, पाण्डुरंग वामन : धर्मशास्त्र का इतिहास, हिन्दी-समिति, सूचना-विभाग, लखनऊ।

कीथ, ए० बी० : संस्कृत-साहित्य का इतिहास, हिन्दी-संस्करण, बनारस, १९६० ई०।

गुप्त, ओम्प्रकाश : मुहावरा-मीमांसा, पटना, १९६० ई०।

गुरु, कामताप्रसाद : हिन्दी-व्याकरण, का० ना० प्र० सभा, २००९ वि०।

गुलेरी, चन्द्रधर शर्मा : गुलेरी-ग्रन्थ, पहला खण्ड।

गेयर, जी० आर० : जाति-विज्ञान का आधार, हिं० स०, लखनऊ, १९५८ ई०।

गौड़, रामदास : हिन्दुत्व, प्र० सं०, काशी, १९९५ वि०।

जोशी, लक्ष्मीलाल : मेवाड़ की कहावतें उदयपुर।

तिवारी, उदयनारायण : भोजपुरी-भाषा और साहित्य, प्र० सं०, पटना, १९५० ई०।

त्रिपाठी, रामनरेश : कविता-कौमुदी, प्रयाग, १९५३ ई०।

: ग्राम-साहित्य, दूसरा भाग, दिल्ली, १९५२ ई०।

त्रिवेद, देवसहाय : प्राङ्मौर्य बिहार, पटना, १९५४ ई०।

दत्त, कालीकिंकर : कुँवरसिंह, पटना, १९५९ ई०।

दत्त, नलिनाक्ष : उत्तरप्रदेश में बौद्धधर्म का विकास, लखनऊ, १९५६ ई०।

द्विवेदी, हजारीप्रसाद : अशोक के फूल, दिल्ली, १९५० ई०।

: कबीर, बम्बई, १९४७ ई०।

: नाथ-सम्प्रदाय, इलाहाबाद, १०५० ई०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्विवेदी, हजारीप्रसाद : प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद, बम्बई, १९५२ ई०।
: विचार और वितर्क, जबलपुर, २००२ वि०।
दुबे, श्यामाचरण : मानव और संस्कृति, दिल्ली, १९६० ई०।
नरेन्द्रदेव : बौद्ध-धर्म-दर्शन, पटना, १९५६ ई०।
परमार, श्याम : भारतीय लोक-साहित्य, बम्बई, १९५४ ई०।
पाण्डेय, राजबली : गोरखपुर-जनपद और उसकी क्षत्रिय-जातियों का इतिहास, गोरखपुर, २००३ वि०।
: हिन्दी-साहित्य का बृहत् इतिहास, प्रथम भाग, ना० प्र० स०, काशी।
प्रसाद, विश्वनाथ : कन्हैयालाल मुंशी-अभिनन्दन-ग्रन्थ, सम्पादक।
: चन्दायन, हिन्दी-विद्यापीठ, आगरा-विश्वविद्यालय-प्रकाशन, १९६२ ई०।
बड़थ्वाल, पीताम्बर : मकरन्द, अवध पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ।
बेनीप्रसाद : हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता, इलाहाबाद, १९३१ ई०।
मिश्र, उमेश : भारतीय दर्शन, लखनऊ, १९५७ ई०।
मिश्र, जयकान्त : मैथिली-साहित्य का संक्षिप्त इतिहास।
मिश्र, रामदहिन : काव्यदर्पण, बाँकीपुर, पटना, १९४७ ई०।
मोतीचन्द्र : प्राचीन भारतीय वेशभूषा, प्र० सं०, प्रयाग, २००७ वि०।
: सार्थवाह, पटना, १९५३ ई०।
यादवेन्दु, रामनारायण : भारतीय नीति-विज्ञान, दिल्ली, १९४९ ई०।
वर्मा, धीरेन्द्र : हिन्दी-भाषा का इतिहास, प्रयाग, १९५८ ई०।
: मध्यप्रदेश, पटना, १९५५ ई०।
वाजपेयी, किशोरीदास : हिन्दी-शब्दानुशासन, काशी, मार्च, १९५२ ई०।
विद्यालंकार, जयचन्द्र : इतिहास-प्रवेश : पाँचवाँ संस्करण, इलाहाबाद, १९५७ ई०।
: भारतीय इतिहास की मीमांसा, इलाहाबाद, १९६० ई०।
विनोबा : लोकनीति।
विभु, विद्याभूषण : अभिधान-अनुशीलन, इलाहाबाद, १९५८ ई०।
वेदालंकार, हरिदत्त : भारतीय परिवार।
शर्मा, गिरिधर महामहोपाध्याय : वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति, बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्-प्रकाशन।
शर्मा, नलिनविलोचन : साहित्य का इतिहास-दर्शन : बि० रा० प० प्रकाशन।
शर्मा, सरनामसिंह : हिन्दी-साहित्य पर संस्कृत-साहित्य का प्रभाव।
शास्त्री, रघुनन्दन : हिन्दी-छन्द-प्रकाश, दिल्ली, १९६२ ई०।
शुक्ल, पुत्तूलाल : आधुनिक हिन्दी-काव्य में छन्द-योजना, लखनऊ, २०१० वि०।
शुक्ल, रामचन्द्र : रस-मीमांसा।
संसरचन्द्र : हिन्दी-काव्य में अन्योक्ति।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सक्सेना, बाबूराम : अर्थ-विज्ञान, पटना, १९४२ ई०।
: सामान्य भाषाविज्ञान, प्रयाग, २०१३।
सत्येन्द्र : ब्रजलोक-साहित्य का अध्ययन, मथुरा, २००४ वि०।
: हिन्दी-साहित्य और विज्ञान, आगरा, १९६२ ई०।
सन्याल, नलिनीमोहन : बिहारी भाषाओं की उत्पत्ति और विकास।
सर्वपल्ली, राधाकृष्णन् : भारत और विश्व, दिल्ली १९५९ ई०।
सहल, कन्हैयालाल : राजस्थानी कहावतें : एक अध्ययन, दिल्ली, १९५८ ई०।
सांकृत्यायन, राहुल : अकबर, इलाहाबाद, १९५७ ई०।
: पुरातत्त्व-निबन्धावली, प्रयाग, १९३७ ई०।
: मध्य एशिया का इतिहास, पटना, १९५६ ई०।
: हिन्दी-साहित्य का बृहत् इतिहास, भाग १६, ना० प्र० स०, काशी।
सिंह, दुर्गाशंकरप्रसाद : भोजपुरी के कवि और काव्य, पटना, १९५९ ई०।
सिंह, बैजनाथ : भोजपुरी लोक-साहित्य, पटना, १९५८ ई०।
सिंह, राजेश्वरप्रसाद नारायण : भारत के पक्षी, दिल्ली, १९५८ ई०।
सिंह, सुरेश : जीव-जगत, लखनऊ, १९५८ ई०।
सिन्हा, सत्यव्रत : भोजपुरी लोकगाथा, इलाहाबाद, १९५७ ई०।
सुन्दरलाल : भारत में अँगरेजी राज, भारत-सरकार-प्रकाशन, दिल्ली।
सुमन, अम्बाप्रसाद : कृषक-जीवन-सम्बन्धी ब्रजभाषा-शब्दावली।
सूर्यकान्त : वैदिक देवशास्त्र : प्रथम संस्करण, दिल्ली, १९६१ ई०।
सेन, सुरेन्द्रनाथ : सन् अट्ठारह सौ सत्तावन, भारत-सरकार-प्रकाशन, दिल्ली, १९५७ ई०।
हंस, कृष्णलाल : निमाड़ी और उसका साहित्य।
हरिऔध : बोलचाल, बनारस, २०१३ वि०।

२. कोश-ग्रन्थ :

अवधी-कोश : रामाज्ञा द्विवेदी, सम्पादक, इलाहाबाद, १९५५ ई०।
कहावत कल्पद्रुम : रतलाम सी० आई०, श्रीवेंकटेश्वर प्रेस-प्रकाशन, बम्बई, सं० १९५४ वि०।
कृषि-कोश (प्र० खण्ड) : डॉ० विश्वनाथ प्रसाद (सम्पादक), बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्-प्रकाशन, पटना।
गुजराती कहेवत संग्रह : आशाराम दलीचन्द शाहा, अहमदाबाद, १९२३ ई०।
घाघ और भड्डरी : रामनरेश त्रिपाठी।
घाघ और भड्डरी की कहावतें : हिन्दी-साहित्य-मन्दिर, वाराणसी, २९१४ वि०।
देशी नाममाला : हेमचन्द्र।
पारिभाषिक साहित्य-कोश : सम्पादक : धीरेन्द्र वर्मा, बनारस, २०१५ वि०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाँगला प्रवाद : सुशील कुमार दे, कलिकाता, आश्विन, १३६२ ई०।
बुन्देली कहावत-कोश : कृष्णानन्द गुप्त, लखनऊ, १९६० ई०।
महाराष्ट्र वाक्-सम्प्रदाय-कोश : यशवन्त रामकृष्ण दाते, पुणें, १९४२ ई०।
मुहावरे और कहावतें : बालमुकुन्द अलस मलसियानो, दिल्ली, १९५७ ई०।
मेवाड़ की कहावतें : लक्ष्मीलाल जोशी, उदयपुर।
राजस्थानी कहावताँ : मुरलीधर व्यास, कलकत्ता, १९४९ ई०।
लोकोक्ति और मुहावरे : चन्द्रभान (सम्पादक), मथुरा, १९५१ ई०।
लौकिक न्यायांजलि : जैकब (सम्पादक)।
संक्षिप्त हिन्दी-शब्द-सागर : काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा।
सूक्ति-सागर : रमाशंकर गुप्त, लखनऊ, १९५९ ई०।
हिन्दी-विश्वकोश(खण्ड १,२) : नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी।
हिन्दी-शब्दसागर : नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी।

३. पत्र-पत्रिकाएँ :

अजन्ता : हिन्दी-प्रचार-सभा, हैदराबाद।
अवन्तिका : श्रीअजन्ता प्रेस, पटना।
आजकल : पब्लिकेशन डिविजन, भारत-सरकार।
आज (दैनिक) : बनारस, काशी-विशेषांक, फरवरी, १९५७ ई०।
आलोचना : राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
कल्पना : हैदराबाद।
जनपद : हिन्दी जनपदीय परिषद्, काशी।
नई धारा : अशोक प्रेस, पटना।
नवनीत : बम्बई।
नागरी-प्रचारिणी-पत्रिका : नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी।
परम्परा : जोधपुर।
भारतीय साहित्य : हिन्दी तथा भाषाविज्ञान-विद्यापीठ, आगरा-विश्वविद्यालय।
भोजपुरी : भोजपुरी-कार्यालय, आरा।
मधुकर : टीकमगढ़।
माधुरी : लखनऊ।
राजस्थान-भारती : बीकानेर।
विशाल भारत : कलकत्ता।
संस्कृति : सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक अनुसन्धान-मन्त्रालय, दिल्ली।
सम्मेलन-पत्रिका : हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।
सरस्वती : इण्डियन प्रेस, प्रयाग।
साहित्य : बिहार-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, पटना।
हंस : काशी।
हिन्दुस्तान : हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिन्दी-अनुशीलन : भारतीय हिन्दी-परिषद्।

४. अभिनन्दन-ग्रन्थ :

कन्हैयालाल मुंशी-अभिनन्दन-ग्रन्थ : हिन्दी-विद्यापीठ, आगरा-विश्वविद्यालय, १९५८ ई०।

नेहरू-अभिनन्दन-ग्रन्थ : कलकत्ता, १९४९ ई०।

पोद्दार-अभिनन्दन-ग्रन्थ : मथुरा, २०१० वि०।

भटनागर-अभिनन्दन-ग्रन्थ : हिन्दी-विद्यापीठ, आगरा-विश्वविद्यालय, १९६१ ई०।

भारतीय अनुशीलन : ओझा-अभिनन्दन-ग्रन्थ : दिल्ली, ११ चैत्र, सं० १९९०।

विक्रम-स्मृति-ग्रन्थ, २००१ : ग्वालियर, २००१ वि०।

श्रीराजेन्द्र-अभिनन्दन-ग्रन्थ : आरा-नागरी-प्रचारिणी सभा, सं० २००६ वि०।

श्रीरामलोचनशरण-जयन्ती स्मारक-ग्रन्थ : पुस्तक-भण्डार, पटना।

श्रीसम्पूर्णानन्द-अभिनन्दन-ग्रन्थ : काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा, २००७ वि०।

गोपीनाथ कविराज-अभिनन्दन-ग्रन्थ : अखिलभारतीय संस्कृत-परिषद्, लखनऊ, १९६७ ई०।

(ख) संस्कृत :

१. सामान्य ग्रन्थ :

अथर्ववेद
ऐतरेय ब्राह्मण
ऋग्वेद
कामसूत्र
चरकसंहिता
चरकसूत्र
छान्दोग्य उपनिषद्
निरुक्त
शतपथब्राह्मण
पंचतन्त्र
पराशरसंहिता
पातंजल भाष्य
वाराहीसंहिता
मनुस्मृति
महाभारत
यजुर्वेद
याज्ञवल्क्यस्मृति
बृहदारण्यक उपनिषद्
सुश्रुतसंहिता

२. कोश :

अमरकोश : अमरसिंह
संस्कृत-लोकोक्ति-सुधा : जगदम्बाशरण
संस्कृत-सूक्ति-रत्नाकर : रामजी उपाध्याय, सागर, १९५९ ई०।
दि सुभाषित रत्नकोश : डी० डी० कोसाम्बी द्वारा सम्पादित, हारवर्ड युनिवर्सिटी, १९५७ ई०।
सुभाषितरत्नभाण्डागारम् : नारायणराम आचार्य द्वारा सम्पादित, निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९५२ ई०।

(ग) अँगरेजी :

Bahri, Hardev : Hindi Semantics (Allahabad, 1959)
Bannerjee, J. N. : The Development of Hindi Iconography (Second Edn. Calcutta, 1956)
Bernier : Travels in the Mogul Empire (London, 1916)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Bloomfield, L. : Language (London, 1935)

Chatterjee, S. K. : Origin and Development of Bengali Language (London, 1927)

Crooke, W. : Nature of Northern India

Curme George, O. : Syntax, a Grammar of English Language

Frajer, Sir James : The Golden Bough (Abridged Edn., Macmillan, London, 1954)

Gardiver, Sir Alen : The Theory of Proper names

Ghurye, G. S. : Cast and class in India (Bombay, 1959)

" " " : Indian Costume (Bombay, 1951)

Grierson, Sir George : Bihar Peasant life (Patna, 1926)

" " : Linguistic Survey of India (Calcutta, 1927-1930)

Hastings, W. : Narratives of Late Transactions at Benares

Henry I, Christ : Myths and Folklore (New York, 1952)

Hunter, W. W. : The Indian Empire (London, 1882)

Jespersan, Otto : Philosophy of Grammar (London, 1924)

Kellogg, S. H. : Grammar of Hindi Language (Calcutta, 1876)

Kenneth, W. Morgar : The Religion of Hindus (New York, 1856)

Kimball Young : Handbook of Social Psychology (London, 1957)

Louis Renow : Vedic India (Calcutta, 1957)

Maciver, R. M. : Society—An Introductory Analysis (London, 1952)

Melville, J. Herskovits : Man and his work (New York, 1956)

Majumdar, D. N. : Races and Culture of India (Asia Publishing House, 1958)

Pandey, Rajbali : Hindu Samskaras (Benaras, 1949)

Pargiter : Ancient India—Historical Tradition

Peimario : The Story of Language (London, Second Impression, 1957)

Radhakrishnan, S. : Indian Philosophy (Seventh Impression, London, 1956)

Rapson : The Cambridge History of India (Reprinted in 1955)

Reavey, P. H. : The Origin of English Place-names (London, 1957)

Risley : Peoples of India

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Sarkar, Benoy Kumar : The Sacred Books of the Hindus (Allahabad, 1937)
Sarkar, Jadunath : Ain-i-Akbari (Edited, Calcutta, 1948)
Saxena, B. R. : Evolution of Awadhi (Allahabad, 1938)
Sharing : The Sacred City of Hindus
Smith, C. A. : Studies in English Syntax (Boston, 1908)
Spencer, Herbert : The Philosophy of Style
Thompson, Stith : Four Symposia on Folklore (Bloomington, Indiana)
Travernier, I. : Travels in India (In two volumes, London, 1925)
Trench, R. C. : On the Lessons in Proverbs
Ullamann, S. : The Principles of Semantics (Glasgow, 1951)

ENGLISH JOURNALS AND REPORTS :

Archaeological Survey of India (New Imperial Series, Vol. II, Calcutta)
District Gazetteers of U. P. of Agra and Awadh (Allahabad)
Journals of Bihar Research Society
Journal of Royal Asiatic Society of Bengal and London
Proceedings of the 6th All India Oriental Conference (Patna, 1930)
Reports of Archaeological Survey of India (Govt. of India Press, Calcutta)
Shahabad Gazetteer (Patna, 1924).
Bihar District Gazetteers, Gaya (Secretariat Press, Patna, 1957)
Bihar District Gazetteers, Shahabad, P. C. Roy Chaudhury, Patna, 1966

DICTIONARIES :

Apperson, G. L. : English Proverbs and Proverbial Phrases (London, 1929)
Champion, S. G. : Racial Proverbs (London, 1928)
Davidson, T. : Chambers English Dictionary (London, 1949)
Fallon, S. W. : A New Hindustani English Dictionary (Banaras, 1879
" " : Dictionary of Hindustani Proverbs, 1886
Hajlitt, W. C. : English Proverbs, 1869
Hastings, James : Encyclopaedia of Religion and Ethics (Edinburgh, 1918)
John, Christian : Bihar Proverbs (London, 1891)
Joseph, J. Shiphy : Encyclopaedia of Literature
Maria Leach : Standard Dictionary of Folklore Mythology and Legend (New York, 1950)
Monior Williams : A Sanskrit-English Dictionary (Oxford, 1899)
Olof, Henry Davidoff : World Treasury of Proverbs (London, 1953)
Rev. J. Long : Eastern Proverbs and Emblems (London, 1881)
Smith, W. G. : Oxford Dictionary of English
Turner, R. L. : Nepali English Dictionary (London, 1931)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शब्दानुक्रमणी

अ

अँग—४३
अँगवरिया—१६
अंगुत्तरनिकाय—१६२ (टि०)
अँठुली—१२० (टि०), १७४
अकबर—२९,३०,४३,२१९ (टि०)
'अकबर' (पुस्तक)—३० (टि०), ४४ (टि०), ४५ (टि०), ४९ (टि०), ६९ (टि०)
अखड़ल—३, ४
अगरधत्त—२१०
अगवरिया—१६
अगवारि—१६
अग्निपुराण—६३
अग्निवेश—१६९
अघसना (क्रि०)—८७
अजगूत—१३४
अजातशत्रु—२९
'अट्ठारह सौ सत्तावन'—५१ (टि०)
अड़ार—२१०,२१० (टि०)
अथर्ववेद—२२,२२ (टि०), ५३ (टि०), ६२ (टि०), ६४,७०,१०३ (टि०), ११३ (टि०), १६८ (टि०), २१०,२१५
अनिलकुमार—२३७
अनुपिया—११३ (टि०)
अप्पयदीक्षित—१९०
अफनाइल—३, ४
अफ्रि (फ्री) का—३५, ६०
अभिज्ञानशाकुन्तल—१५० (टि०)
अमरकण्टक—३०
अमरकोष—१११ (टि०)
अमरसिंह—५१,५२,५२ (टि०)
अर्द्धमागधी—२६
अर्नाल्ड ह्वीटिक—१०८ (टि०), १०९ (टि०)
अलबल खाँ—६०
'अलबेरुनीज इण्डिया'—६६ (टि०)
अलवाँति—२०३
अलीपुर—३५
अल्तेकर (डॉ०)—१०१ (टि०)
अल्बर्ट आइन्स्टीन—४७ (टि०)
अवधीकोश—२११ (टि०)
अशोक—२९
'अशोक के फूल'—४४ (टि०), १२५ (टि०) १३० (टि०)
अश्वसेन—२९
अष्टाध्यायी—११९,१२० (टि०), १२२ (टि०), १४५ (टि०)
अ० स० अल्तेकर (डॉ०)—१६० (टि०)

आ

आइने अकबरी—३०,३० (टि०), ६८ (टि०), ११४ (टि०)
आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस—७० (टि०)
'आचारिय भागदायक'—५६
'आज' (काशी-विशेषांक)—५६ (टि०), ५८ (टि०)
आजमगढ़—२६
आत्रेय—१६८
आपस्तम्बश्रौतसूत्र—१६४ (टि०)
आयरलैण्ड—३३

Rajguru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आर्० एन्० दाण्डेकर—११३ (टि०)
आर्० एम्० मैकिवर—९७ (टि०)
आर्० एल्० सिंह (डॉ०)—५५ (टि०)
आरट्ठ—६६ (टि०)
आरण्य—३१
आरा—३१,५७,६०,२३७
ऑरिस्टोट्ल—२ (टि०)
'आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑव इण्डिया'—४३ (टि०), ६४ (टि०)
आर्चर टेलर—३ (टि०), ७ (टि०)
आला—१९९,२०९
आश्वलायनगृह्यसूत्र—१६४ (टि०)

इ

'इंगलिश ईडियम्स ऐण्ड हाउ टू यूज देम'—४ (टि०)
इंगलैण्ड—४७
इ० आर्० इ०—१२९ (टि०)
इ० आर्० ए०—१० (टि०), १३ (टि०), १५ (टि०), ४१ (टि०)
'इकोज ऑव ओल्ड कलकत्ता'—४५
'इण्ट्रोडक्शन टू दि प्रोवर्ब्स ऑव जर्मनी'—२४ (टि०)
इण्डियन ऐण्टीक्वेरी (भाग २)—५३ (टि०)
'इण्डियन कस्टम्स, बम्बई १९५१'—१०९ (टि०), ११० (टि०)
इण्डियन फिलासॉफी—१५८ (टि०)
इण्डिया—६६ (टि०)
'इतिहास-प्रवेश'—४६ (टि०), ६६ (टि०), ६८ (टि०)
इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका—२ (टि०)
इमहोटेप—१५
इम्पीरियल गजेटियर ऑव इण्डिया—६४ (टि०)
इराक—४७
'ईस्ट इण्डिया कम्पनी—४५,५१

उ

उकटेरल—२१०
उक्तिव्यक्तिप्रकरण—५६,५६ (टि०)
उज्जैनी राजपूत—५१
उढ़रना—२११
उणादिसूत्र—२१५
उदन्त—८६
उदयनारायण तिवारी (डॉ०)—२६,४८,५० (टि०), २०८ (टि०), २१० (टि०), २११ (टि०), २१३ (टि०) २१५,२३७
उदयशंकर शास्त्री—५८
उदराछ—११३,११४,११४ (टि०)
उपदेशरसायन—२२
उमेश मिश्र (डॉ०)—१६१ (टि०)
उशना—१२६ (टि०)
उसना—६१,६२

ऋ

ऋग्वेद (संहिता)—१५,१८,२२,२२ (टि०), ६२ (टि०), १०२ (टि०), ११३ (टि०), ११८ (टि०), १४९ (टि०), १५२ (टि०), १५७ (टि०), १५८,१५८ (टि०), १६० (टि०), १६४,१६८ (टि०), १९०,१९० (टि०), २१६ (टि०), २१९ (टि०)
ऋतुसंहार—१११ (टि०)

ए

ए० ए० मैकडॉनल—६४ (टि०)
एच्० आर्० नेविल—१२८ (टि०)
ए डिक्शनरी ऑव हिन्दुस्तानी प्रोवर्ब्स—२३७
ए न्यू हिन्दुस्तानी-इंगलिश डिक्शनरी—२३७
'एन्सियेण्ट इण्डियन हिस्टोरिकल ट्रेडिशन्स'—४२ (टि०)
ए० पी० बनर्जी शास्त्री (डॉ०)—२८ (टि०), ४८ (टि०)
एम्० ए० शेरिंग—४६ (टि०)
एम्० जे० सी० नेसफील्ड—१२५ (टि०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एल्० एस्० इ० (भाग ५)—४८ (टि०)
एल्० पी० स्मिथ—३
एलेन गार्डिनर (सर)—२१६ (टि०)
ए संस्कृत-इंगलिश डिक्शनरी—६३ (टि०), १११ (टि०), ११५ (टि०), २१३ (टि०), २१५ (टि०), २१९ (टि०)
एस्० चन्द ऐण्ड कं०, दिल्ली—५४ (टि०)
एस्० जी० कन्तवाला—११३ (टि०)
एस्० जी० चैम्पियन (डॉ०)—३९ (टि०), २३७
एस्० डब्ल्यू० फैलन—२३७
एस्० डि० एफ० एम्० एल्० (भाग २)—४१ (टि०)
ऐतरेय ब्राह्मण—२८,७३ (टि०), ९८ (टि०), ९९ (टि०), १०३ (टि०), १५७ (टि०)

ओ

ओझा-अभिनन्दन-ग्रन्थ—१३४ (टि०)
ओटो यस्पर्सन—२०४ (टि०)
ओटो हौफलर—२४,२४ (टि०)
ओमप्रकाश गुप्त (डॉ०)—५ (टि०)
ओरी—१९९
ओल्ड टेस्टामेण्ट—१५,२३
'औरंगजेब' (पुस्तक)—५७ (टि०), ६७ (टि०)
औरंगजेब (बादशाह)—५७,६०
औरंगाबाद—५७

क

'कचरकूट कइल'—४
कठोपनिषद्—१५७ (टि०)
कथासरित्सागर—४९,१४९ (टि०), १५९ (टि०)
कनकट—८०
कन्फ्यूसियस—२०४ (टि०)
कन्हैयालाल सहल (डॉ०)—९,४०,४० (टि०), ४१ (टि०), ४९,४९ (टि०)
कपर्दकद्वीप—७०
कपिलाह्रद—५४
कबीर (दास)—१५,३५,२३१,२३६
कम्बोज—६६ (टि०)
करवा—१०९,१२३,१८६,२११
करुआ—८६
करुष (राजा)—२८
करुष (देश)—२८
कर्पूरमंजरी—१८,२२
कलकत्ता—३५,४७,६०,६० (टि०), ६४,६५, ६५ (टि०)
कलसु (सू) प—८४,१२१
कलिंग—४३
कलेऊ—१२५ (टि०)
'कलेक्शन ऑव प्रोवर्ब्स'—१ (टि०)
'कल्यवर्त्त'—१२५ (टि०)
कवलपट्टी—२३१ (टि०)
कहलगाँव—३३,४३,४४
'कहावत-कोश'—२३७
काजी उलकजात—६७
कात्यायन—१४५
'कॉमर्सियल पॉलिसी ऑव दि मोगल्स'—७० (टि०)
कामसूत्र—१६१ (टि०)
कायस्थ—१२६,१२६ (टि०)
कारीसाथ—१२
कारूस—२८
कालिदास—१११ (टि०), १५५ (टि०)
कालीकिंकर दत्त (डॉ०)—५१ (टि०), ५२ (टि०)
काव्यप्रकाश—१९०,१९१,१९२,१९३,१९४, १९५,१९६,१९७
काशिका—१२२ (टि०)
काशिराज—५८,५९
काशी—२८,२९,४५,५१,५४,५५,५५ (टि०), ५६,५६ (टि०), ५७
काशी-जनपद—२९
काशीतीर्थ—५४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा—२८ (टि०), ५९ (टि०), ११३ (टि०), २३८
काशीवास—५४
काश्य—२९
काष्ठजिह्वा (देव)—५८
काष्ठजिह्वास्वामी—५८
किम्बॉल यंग—१७२ (टि०)
'किशोर' (मासिक)—२३७
किशोरीदास वाजपेयी (पं०)—२०४ (टि०)
कीकट—६२,६२ (टि०)
कुँवरसिंह (वीर)—३०,५१,५२,५२ (टि०), ५८
'कुँवरसिंह-अमरसिंह'—५१ (टि०), ५२ (टि०)
'कुआड़ो'—५८
कुप्पा—२११
कुमारसम्भव—१४९ (टि०)
कुरानशरीफ—२३
कुलच्छनी—७५
कुवलयानन्द—१९०
कुवलयानन्दसूत्र—१९० (टि०)
कूर्पासक—१११,१११ (टि०)
कृषिकोश—१३९ (टि०), २१३ (टि०)
कृष्णदेव उपाध्याय (डॉ०)—३९ (टि०), ६४, १२८ (टि०), २३८
कृष्णलाल हंस (डॉ०)—३९ (टि०)
के० के० बसु (प्रो०)—६८ (टि०)
केनिया—३४
कोचस—५८,५९
कोपिया—११३ (टि०)
कोलिय—२८
कोहबर—१०६,१०६ (टि०), १६४ (टि०), २११,२११ (टि०),
कौटिल्य—६६ (टि०)
कौड़ी—६८,६९,७०
'कौनक'—१२३ (टि०)
कौषीतकी-उपनिषद्—१६१ (टि०)
क्रूक (डब्ल्यू०)—१२४ (टि०), १२६ (टि०), १२९ (टि०)
क्रेमर (डॉ०)—१५
'कैप्रियानो डि वैलेरा स्पेनिश'—१ (टि०)

ख

खउरल—८८
खधुकवनी—१९७
खम (मो) री—६१
खम्भात (काम्बे)—६७
खरजिउतिया—१६४
खरहर—१९८
खरहरा—२०९
खरिहान—२११,२११ (टि०)
खुद्दक अट्ठकथा—५६
खुद्दी—१५४,१६२,२०२
खैरा-वन—१३
खोंइछा—१०६

ग

गंगा—३०
'गँगुआ'—४९
'गँगुआ तेली'—४८,४८ (टि०)
'गंगू तेली'—४९
गँवँ—२१२
गणेश कवँ—४८
गणेश चौबे (पं०)—२३८
गण्डक—३०
गण्डा—७०
गर्ग—२२१
'गवर्नमेण्ट ऑव इण्डिया सेण्ट्रल पब्लिकेशन ब्रांच, कलकत्ता'—५० (टि०)
गवर्नमेण्ट प्रेस (पटना)—४८ (टि०), २३७
ग (गा) हड़वाल-वंश—२९,६६
'गांगेय'—४८
गाँती—११०,२१२,२१३
'गाजल'—४
गाजीपुर—२६,२९,२३८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गात्रिका—११०,२१३,२१३ (टि०)
गाथासप्तशती—४९
गान्धीजी—४६
'गाभिन'—८५,८६
गायना—६० (टि०)
गिर (गिरि)—२१७ (टि०), २१९,२१९ (टि०)
गिरधर—२३१,२३२,२३६
गुजरात—६७
गुप्तवंश—२९
गुरहत्थी—१०५
गुरिया—११३,११३ (टि०), ११४
गुलेरी-ग्रन्थावली—१०९ (टि०)
गेरुई—७४,७८,२१३,२१३ (टि०)
गैण्ड (लेफ्टिनेण्ट)—५२
गोंयड़ा—१००,१३९,२१२
गोएँड़—१३९ (टि०)
गोतमी—३०
गोपीनाथ कविराज-अभिनन्दन-ग्रन्थ—११३(टि०)
गोरखपुर (जनपद)—१३,२६,२७,२९,५२, १६९
'गोरखपुर-जनपद और उसकी क्षत्रिय जातियों का इतिहास'—१२७ (टि०), १३३ (टि०), १३४ (टि०)
'गोरखपुरी'—२६
गोविन्दचन्द्र—३९
गोहरउरि—२०३
गौतम (मुनि)—२८,३१,२२१
गौरिया—५५
गौरैइया—१३१
'गौरेयाशाही'—५५
ग्राम-साहित्य (भाग २)—३९ (टि०), १४० (टि०), २३७
'ग्रामसेवक' (मासिक)—२३७
ग्रियर्सन (सर जॉर्ज)—२५,२६,२७,३३,४४ (टि०), ४८,१२२ (टि०), १२९ (टि०), २३७
ग्रीस—१५

घ

घाँटी—१२३,१२४
घाघ—२३१,२३२,२३६
घाघरा—३०
घूँचा—१२३,१२४
घूघ—१७४

च

चन्द्रकेतु, मल्ल (उपाधि)—२९
चन्द्रगुप्त (द्वितीय)—४९
चमरई—१४७ (टि०
'चमरीकोन'—७४
चम्पारण्य—३१
चम्पारन—२६,२७,२९,३१
चरक—१६९,१७० (टि०), १७२ (टि०)
चरकसंहिता—१६८,१६९ (टि०)
चरकसूत्र—१७० (टि०), १७२ (टि०)
चरुई—२१८
चहेटल—४
चाणक्य—२२
चाणक्यनीति (सूत्र)—१५५ (टि०)
चाणक्यसूत्र—१८,१५४ (टि०)
'चिकोरना'—८८
'चिरइया'—१४४
चिरकुटही—१९६
चिरैया—१४४
चीन—६९
चुनार—४६
चुहनियाँ—१७८
चेतसिंह (महाराजा, राजा)—३०,३० (टि०) ४५,४६,४६ (टि०)
चेरोवंश—५०
'चोकरना'—८८
चोल—१११,१११ (टि०)
चौदन्ता—८६
च्यवन (ऋषि)—६३

छ

छत्तीसगढ़—२७
छदाम—६८,६९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छपरहिआ—४४,४५
छान्दोग्य-उपनिषद्—९८ (टि०) १६० (टि०), १७० (टि०)
छुतिहर—१८५

ज

जंगबहादुर (महाराज) —५२
जगदीशनारायण सरकार (डॉ०)—४४ (टि०)
जगदीश सिंह 'काश्यप'—२३८
जगदीशपुर—५१,५२,५७,५८,६०
जगन्नाथप्रसाद सिंह—२३७
ज० बि० आर्० एस्० (भाग ३-४)—६८ (टि०)
ज० बि० रि० सो०—४४ (टि०), ६३ (टि०)
जमदग्नि—२८
जयचन्द्र विद्यालंकार—४६ (टि०), ६६ (टि०) ६८ (टि०)
जयप्रकाश सिंह (महाराज)—५९
'जरमनवाँ की लड़ाई'—४७
जर्नल ऑव दि युनिवर्सिटी ऑव पूना—११३ (टि०)
जर्नल ऑव रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑव बंगाल—३० (टि०)
जर्मनी—४७
जसपुर-राज्य—२६
जहाँगीर—३०
जाउर—१००
जातक—५६,१६१ (टि०)
जॉन क्रिश्चियन—२४,३९,४०,४१ (टि०), ६३,६३ (टि०), ६६,६९ (टि०), १४८ (टि०), २१०,२३७
जॉन बीम्स—४८
जॉन मार्शल—१६४
जापान—४७
जी० एस्० घुरे—१०९ (टि०),११० (टि०)
'जीव-जगत्'—९६ (टि०)
जे० आर्० ए० एस्०—४८ (टि०), २१९ (टि०)
जे० एन्० फर्कुहर (डॉ०)—२१९ (टि०)
जेम्स जे० केलसी—१३
जौनपुर—२६

ट

टंकशाल—६८
टंका—६८,६९
टकसाल—६८
टकही—६९,६९ (टि०), १७५
टका—६७,६९
टर्नर—६८,१६८ (टि०), २११ (टि०), २१३ (टि०), २१४,२१४ (टि०), २१५,२१६
'टवर्नियर्स ट्रेवेल्स इन इण्डिया' (भाग १)—७० (टि०)
टाहाटेप—१५
टिकट—२१,१६७ (टि०), २१३,२२१ (टि०)
टिकली—६९,६९ (टि०)
टिकुली—११४,११५
टेंटर—१७६
टेनीसन—१ (टि०)
टोडरमल—६७
ट्रान्सवाल—६० (टि०)
ट्रिनीडाड—३४,६० (टि०)
ट्रेंच—२ (टि०)
ठकुरई—१४७ (टि०)

ड

डब्ल्यू० जी० स्मिथ—३
डब्ल्यू० डब्ल्यू० हण्टर—१३३ (टि०)
डाक—२३१,२३२,२३६
डॉन क्विक्सोटे : करवैण्ट्स—१ (टि०)
'डि० ग० ऑव यू० पी०, ओ० आ०, बनारस, इलाहाबाद'—४५ (टि०)
'डिफिनिशन ऑव प्रोवर्ब्स'—१ (टि०)
'डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ऑव यू० पी० ऑव आगरा ऐण्ड अवध, बनारस डिस्ट्रिक्ट'—५५ (टि०), १२८ (टि०)
डी० पन्त (डॉ०) ७० (टि०)
डुडुहियाँ—१७८

RājGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डुमराँव—५३,५८,५९,६०
'डुमराँव-राज'—५९
डोई—२१३
डोओ—२१३
डोकी—१०४,२१३
डोल—५९
'ढाई कंगूरे की मस्जिद'—५१
ढींढ़ा—१६८

त

तक्षशिला—५६
तमसा—३०
तराई (नेपाल)—५२
तरैना नदी—१३
तलसा—५४,१२२
तासी नदी—१३
तिकठ—२१
तिब्बत—६९
तिरोजपुर—१२
तुरुक—६५,६६
तुर्क—६५,६६
तुलसीदास—१५,७२ (टि०), २३१,२३३ २३६
तैतिला—६६ (टि०)
तैत्तिरीय उपनिषद्—१०० (टि०), १५७, १५७ (टि०)
त्रिकटु—२१
थॉमस फूलर—१ (टि०)
थारू—२७

द

दउरा—१२१
दक्षिण (णी) अफ्रिका—३४,६० (टि०)
दधिकाँदो—५९ (टि०)
दमड़ी—६७,६९
दलपतराय (राजा)—३०
दाऊद खाँ—६०
दाऊदनगर—६०,६१
दाम—६९
दामोदर (पण्डित)—५६
दारानगर—५७
दार्जिलिंग—६०
'दि आक्सफोर्ड डिक्शनरी ऑव इंगलिश प्रोवर्ब्स'—३
'दि ऑरिजिन ऐण्ड डेवलपमेण्ट ऑव दि बेंगाली लैंग्वेज'—२५ (टि०)
'दि इण्डिया इम्पायर, लन्दन (१८८२)'—१३३ (टि०)
'दि कास्ट्स ऑव दि प्लेन्स'—१२९ (टि०)
'दि थ्योरी ऑव प्रोपर नेम्स'—२१६ (टि०)
'दि फिलॉसफी ऑव ग्रामर'—२०४ (टि०)
'दि सेकरेड सिटी ऑव हिन्दूज'—४६ (टि०)
दीघनिकाय—२८ (टि०), १२३ (टि०)
दीपंकर (आचार्य)—४३
'दीवान'—६७
'दीवान सलतनत'—६७
'दीवान सूबा'—६७
दुर्गाशंकरप्रसाद सिंह—४३,४३ (टि०), २३१ (टि०)
'दूष्य'—१११ (टि०)
'दूस्स'—१११,१११ (टि०)
देओगमीज—१५
देव (राजा)—५३
देवउठान—७१
देवकुण्ड—६३,६३ (टि०)
देवकुर—६३,६३ (टि०)
देवकुल—६३ (टि०)
देवरिया—३१,२३८
देवसहाय त्रिवेद (डॉ०)—६२ (टि०)
देवानजी—२३५
दोकड़ा—६७,६९
दौरी—१४०,२३५
द्रम्य – ६९
द्राख्मा—६९
द्रोण—७९ (टि०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ध

धनपुरही—८५
'धर्मंतेवासिक'—५६
धम्मपद—२२,१५९ (टि०)
धम्मपद अट्ठकथा—५६
'धर्मशास्त्र का इतिहास'—६६ (टि०), १०७ (टि०), १२६ (टि०), १३३ (टि०), १६४ (टि०)
धारवंश—५३
धीरेन्द्र वर्मा (डॉ० वर्मा)—६३,६४,६४ (टि०)
'धूस'—१११
'धेनु'—८५

न

नगपुरिया—२७
नदकोला—१७७,१९३
नन्द (मगध-सम्राट्)—५०
नरियाय (नरियाना क्रि०)—११७,११७ (टि०)
नर्मदेश्वर आजाद—२३७
'नवनीत' (पत्रिका)—४७ (टि०)
नवरत्नमहल—५३,५३ (टि०)
नागपुर—३६
'नागरी-प्रचारिणी-पत्रिका'—२११ (टि०)
नागरी-प्रचारिणी सभा—१०९ (टि०)
'नाजिम'—६७
नाना साहेब—५२
'निमाड़ी और उसका साहित्य'—३९ (टि०)
निरुक्त—६२ (टि०)
नीक—२१४
नीतिसूत्र—५
नेउरा—१२१
'नेटिव्स ऑव नार्दर्न इण्डिया'—१२४ (टि०), १२६ (टि०)
नेपाली डिक्शनरी (ने० डि०)—६८ (टि०), १६८ (टि०), २११ (टि०), २१३ (टि०), २१४ (टि०), २१५,२१६ (टि०)
नेहरू-अभिनन्दन-ग्रन्थ—१६० (टि०)
'नैरेटिव्स ऑव दि लेट ट्रांजैक्शन्स एट बनारस'—४५ (टि०)
नैषध (धीय) चरित—१११ (टि०), १५६ (टि०)
नौरंगाबाद—५७
न्यायसूत्र—३१

प

पंचतन्त्र—१०३ (टि०), १५१ (टि०)
पइया—१९२
पउमचरिउ—२२
पगड़ी—१०९
पटना—३३,४३,४४
पतंजलि—१६१ (टि०)
पतुकी—१२३,१९३
'परगन'—६८
परमार-वंश—२८,४३
परमेश्वरीलाल गुप्त (डॉ०)—२३७
परसा-वन—१३
परुआ—८७
पराशर—१५७,१५७ (टि०)
पराशरसंहिता—१३७ (टि०)
'पला जाना' (क्रि०)—१४४ (टि०)
पलामू—२६,५०,६०
पवनी—१६४
पाड़ा—८७
पाड़ी—८७
पाणिनि—११९,१२० (टि०), १२२ (टि०), १४६ (टि०)
'पाणिनिकालीन भारतवर्ष'—११८ (टि०), १२३ (टि०), १४५ (टि०), १४७ (टि०), २११ (टि०)
पाण्डुरंग वामन काणे (पी० वी० काणे, म० म०)—६६ (टि०), १०७ (टि०), १२६ (टि०), १३३ (टि०), १६४ (टि०)
पातंजल महाभाष्य—१३७ (टि०)
पानीपत—२९
पापेय—६६ (टि०)
पार्जिटर—४३ (टि०)
पालवंश—२९

RâjGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाहुडदोहा—२२
पाहुन—१५७
पिछउरी—१११
'पिपुल्स ऑव इण्डिया'—१२४ (टि०)
'पियरी'—३१
पी० ई० राबर्ट्स—५४ (टि०)
पी० के० गोडे—४९
पुरातत्त्व-निबन्धावली (प्राचीन)—४३ (टि०), ६१ (टि०), १२७ (टि०)
'पूरल'—८६
'पृथिवीपुत्र'—२५ (टि०), ७० (टि०)
पेठिया—२००
पेशवा (राजा)—५५
पैक्सटन हूड—२३ (टि०)
पोआ—९४
'पोजीशन ऑव वोमेन इन हिन्दू सिविलिजेशन'—१०१ (टि०)
'पौराणिक इटिमोलॉजीज्'—११३ (टि०)
प्रज्ञासूत्र—५
प्रतिहार-वंश—२९
'प्राइमेल'—२२२ (टि०)
प्राङ्मौर्य बिहार—६२ (टि०)
'प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद'—११६ (टि०)
प्राचीन प्रारतीय वेशभूषा—११० (टि०) १११ (टि०), ११२ (टि०)
प्राचीन शब्द-भाण्डार—२२१ (टि०)
प्रामाणिक हिन्दी-कोश—२१९ (टि०)
'प्रोसीडिंग्स ऑव सिक्स्थ ऑल इण्डिया ओरियेण्टल कान्फ्रेंस, पटना'—२८ (टि०), ४८ (टि०)
'ध्वायनीयर'—१२५ (टि०)

फ

फि (फी) जी—३५, ६० (टि०)
फिरंगी—६६
फोकड़—१७४
फ्रांस—४७
फ्रांसिस बेकन—१ (टि०)

ब

बँहरबूँट (टा)—११३,२०८
बकुचा—२२०
बकेन—८५
बक्कोट—९०
बक्सर (व्याघ्रसर)—२८,३१,५३
बनारस—३०,४६,४६ (टि०), ५१,५६,५७
'बनारस : ए स्टडी इन अरबन ज्यॉग्रफी'—५५ (टि०)
बनारस-राज—४५
बबुई—२३५
बम्बई—६०,६० (टि०)
बरियाई—२००,२०२
बरेंछा—१०४
बर्मा—३४,६० (टि०)
बलवन्तसिंह (राजा)—४६ (टि०), ५१
बलिया—२६,५१,२३८
बस्ती—२६
बहराइ (य) च—६३,६४,६४ (टि०)
बहुरिया—२३५
बहुरी—११९
बाँड़ा—७५
बाइबिल (ओल्ड टेस्टामेण्ट)—१५,१०० (टि०)
बागड़—१९३
बाजीराव—६६
बाण (बाणभट्ट)—१०९,११०
बापू (पूज्य)—३०
बारी—१४०
बावग—१४१
बालाजी पेशवा—६६
'बिकरम राजा'—४९
बिरता—२१४
बिसराम (कवि)—८५ (टि०)
'बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, शाहाबाद'—१२ (टि०), ५७ (टि०), ५९ (टि०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, गया'—६० (टि०), ६१ (टि०), ६३ (टि०)
'बिहार पीजेण्ट लाइफ'—४४ (टि०), १२१ (टि०), १२६ (टि०), १३६ (टि०) २३७
'बिहार प्रोवर्ब्स'—२४ (टि०), ३६,३६ (टि०), ४०,४१ (टि०), ६३ (टि०), ६६ (टि०), ६६ (टि०), १४८ (टि०), २३७
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्—११० (टि०), १३६ (टि०), २३१ (टि०), २३७,२३८
'बिहारी'—२५
'बिहारीजी का मन्दिर'—५६
बीजर—११५
बुकवा—११६,१७७
बुद्ध (देव)—२२,२८,२६,६४, २२२ (टि०)
बुद्धकाल—५६
बुद्धचरित—१५४ (टि०)
बूबू—१७३
बृहदारण्यक उपनिषद्—१६० (टि०)
बृहस्पति—१३३ (टि०), १६१ (टि०)
बेबिलोनिया—१५,२३
बेलकूर—१६६
बैजनाथ सिंह 'विनोद'—३६ (टि०), २३८
बैरम खाँ—३०,३० (टि०)
'बैरिया गोल'—८६
'बोलचाल'—६ (टि०)
ब्रह्मजालसुत्त—१२३ (टि०)
ब्रह्मदत्त—२६
ब्रह्माइ(य)च—६३,६४
ब्रह्मोदय—७
'ब्रिटिशकालीन भारत का इतिहास'—५४ (टि०)
ब्लॉचमैन—३०,३० (टि०), ५३ (टि०)

भ

भंगलपुर—४३
भँड़-माँड़—११६
भगलू खाँ—४३ (टि०)
भगवतशरण उपाध्याय (डॉ०)—६२, १३० (टि०)
'भगेलू'—४३ (टि०)
भगोलिया—४३
भग्ग—२८
भड्डर—२३१,२३३
भड्डरी—२३१,२३३,२३६
भर—२१४,२१५
भरसाई—६३,१८५
भर्तृहरि—२२
भागलपुर—३३,४३,४३ (टि०)
भागवत—१५६ (टि०)
भानुकवि—३६
'भारतीय अनुशीलन'—१३४ (टि०)
'भारतीय दर्शन'—१६१ (टि०)
'भारतीय साहित्य' (भटनागर-अभिनन्दन-ग्रन्थ)—१०६ (टि०), १६४ (टि०), २११ (टि०)
भारतेन्दु—५६
भारद्वाज—२२१
भारशिव—२६
भारशिव नाग—२६
भास्कराचार्य—६६
भिखारी ठाकुर—२३८
भोज (द्वितीय)—४८
भोज (महाराजा, राजा)—२८,४७,४८,४८ (टि०), ४६
भोजदेव (राजा)—५३
भुरुकवा—६२ (टि०)
भुवनकोश—७०
भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव' (डॉ०)—२३७
भुसहुल—१६६
भोजपुर—३०,४८,५३
भोजपुर गाँव (नया-पुराना)—५३
भोजपुर दह—५३
भोजपुर नगर—५२,५३
'भोजपुरी' (पत्रिका)—३३ (टि०), २३७
'भोजपुरी और उसका साहित्य'—२३८

RājGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'भोजपुरी के कवि और (उनका) काव्य'—२६ (टि०), ३५ (टि०), ४३ (टि०), ४७ (टि०), २३१ (टि०), २३८
'भोजपुरी-ग्रामगीत'—१२८ (टि०)
'भोजपुरी भाषा और साहित्य'—२६ (टि०), ४८ (टि०), २०८ (टि०), २१० (टि०), २११ (टि०), २३१, २१५,२३८
'भोजपुरी भाषा और साहित्य का इतिहास'—२६ (टि०)
'भोजपुरी लोकगाथा'—३२ (टि०), १२५ (टि०)
'भोजपुरी लोकगीतों में करुण रस'—४८ (टि०) २३८
'भोजपुरी लोक-साहित्य'—३९ (टि०)
'भोजपुरी लोक-साहित्य : एक अध्ययन'—२३८
'भोजपुरी लोक-साहित्य का अध्ययन—६४ (टि०), २३८
'भोजपुरी सार्थवाह'—४९
भोजप्रबन्ध—४८
'भोजुआ तेली'—४८
भोटिया-ग्रन्थ—४३

म

मँगरा—८३
मउआर—८५,८९
मक्कर—१२०
मगध—६२,६२ (टि०)
'मगधन-लिटरेचर'—६२ (टि०)
मगह—६१,६१ (टि०), ६२,६२ (टि०)
मज्झिमनिकाय—२८ (टि०)
मणिपुर—४७
मत्स्यपुराण—११३ (टि०)
'मधुकर' (पत्रिका)—२ (टि०)
मधेसी—२७
मनु—२२,१०३ (टि०), १५७,१५७ (टि०), १५८,१५८ (टि०)
मनु वैवस्वत—२८
मनुस्मृति—६२ (टि०), ९८ (टि०), १४९ (टि०), १५२ (टि०), १७० (टि०)
मयूरभट्ट—६४ (टि०)
मलूकदास—२३१,२३३
मल्ल—२८
मल्ल-गणतन्त्र—२९
मल्लराष्ट्र—२९
मसऊद गाजी—६४
मसाढ़—१२
महमूद गजनी—६४
महात्मा बुद्धदेव—२९
महाभारत—६४,१०२ (टि०), ११९ (टि०), १३७ (टि०), १४८ (टि०), १५२ (टि०)
महाराष्ट्र—६६
महाराष्ट्र-वाक्सम्प्रदाय-कोश—४८,४८ (टि०), ४९
महावग्गजातक—१११
महावीर—२८
महासर—१२
'माँग टीकना' (मु०)—११५
माँड़ो—१०४
मागधन-परिवार—२५
मागधी—२६
माठी—११४
मानसिंह (राजा)—४३,४४
मॉरिशस—३४,६० (टि०)
मार्कण्डेय—१५७
मार्कण्डेयपुराण—१५७ (टि०)
मार्शल—१२३ (टि०)
मालद्वीप (मालावार)—७०
मालव-गणतन्त्र—४९
मालवा—४८,५३
'मिअनी'—८७
मिताक्षरा—१२७ (टि०)
मि० मूले—१ (टि०)
मिर्जापुर—२६
मिसाल—२३
मिस्र—२३,४७
मीमांसादर्शन—१५९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'मुंज भोज'—४८
मुकद्दमा शेर व शायरी—६ (टि०)
मुजफ्फरपुर—२७
मुसरिहा—८७
मुंहदिखाई—१०७
मुंहदेखनी १०६
मुहम्मद तुगलक—२९
मुहम्मदाबाद—५७
मुहावरा-मीमांसा—५ (टि०)
मृच्छकटिक—९९ (टि०)
मेंह—१४०,२३५
मेंहदौरी—१४०
मेकडानेल—११३ (टि०)
मेक मारडी—४ (टि०)
मेघदूत—१५५ (टि०)
मेटा—१२३,१२४
मेदनीराय (राजा)—५०
मेदनी-वंश—५०
मेरुतुंगाचार्य—४९
मैक इण्टोस मेमोरीज—२ (टि०)
मैकमिलन ऐण्ड कं० लि०—९७ (टि०)
'मैना'—८६
'मोतियनवाला'—४९
मोतीचन्द्र (डॉ०)—५३ (टि०), ५४ (टि०), ५५ (टि०), ५६,५६ (टि०), ११० (टि०), १११,१११ (टि०), ११२ (टि०) १२३ (टि०)
मोहम्मद बिन बख्तियार खिलजी—६६
मोनियर विलियम्स—६३ (टि०), ९३ (टि०), १११ (टि०), ११५ (टि०), २११ (टि०), २१३ (टि०), २१५ (टि०), २१९ (टि०)
मौर्य—२८
मौर्यवंश—२९
मौलाना नियाज फतेहपुरी—४९
मौलाना हाली—६,६ (टि०)

य

यजुर्वेद—२२ (टि०), १४९ (टि०), १६८ (टि०)
यदुनाथ सरकार (डॉ०)—५७ (टि०), ६७ (टि०)
यशोधर्मन्—४९
'यष्टिग्राहक'—३३
याज्ञवल्क्य—१२७ (टि०)
याज्ञवल्क्यस्मृति—१२६ (टि०)
यामिनीमोहन घोष (रायसाहब)—२१९ (टि०)
यूनान—२३
योगवासिष्ठ—१४७ (टि०)
योगेन्द्र मिश्र—६३ (टि०)

र

रंगून—४७,६०
रमाशंकर त्रिपाठी (डॉ०)—४९ (टि०)
रहिला—१४६
रहीम—२३१,२३४,२३६
राँची—२६,३०
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली—२३८
राजगिरि—६३
'राजघाट का किला'—५१
राजबली पाण्डेय (डॉ०)—२८,४९ (टि०), १२७ (टि०). १३३ (टि०), १३४ (टि०)
'राजस्थानी कहावतां'—३ (टि०), २२ (टि०), २३ (टि०)
'राजस्थानी कहावतें : एक अध्ययन'—९ (टि०), ४० (टि०), ४१ (टि०), ४९ (टि०)
राजेन्द्र प्रसाद (डॉ०, देशरत्न)—३०
राढ़ी—८४
राधाकुमुद मुखर्जी (डॉ०)—४९ (टि०)
राधाकृष्णन् (डॉ०)—१५८ (टि०)
रामकृष्ण दाते—४८
रामगणेश पाण्डेय—२३७
रामचन्द्र वर्मा—२१९ (टि०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामचरितमानस—३५,५८
रामदहिन मिश्र (पं०)—३,२३७
रामनगर—५८,५८ (टि०)
रामनरेश त्रिपाठी (पं०)—३९ (टि०), २३७
रामपाल—४३
रामाज्ञा द्विवेदी 'समीर' (पं०)—२११ (टि०)
रामायण—२८,२९,६४
रामेश्वरदास (कवि)—२३१,२३१ (टि०), २३४
'रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑव बंगाल'—६८ (टि०)
राय साहब एम० गुलाब सिंह ऐण्ड सन्स, लाहौर—२३७
राष्ट्रकूट-वंश—२९
राहुल सांकृत्यायन (राहुलजी, म० पं०)—३० (टि०), ३३ (टि०), ४३ (टि०), ४४ (टि०), ४५, ४५ (टि०), ४८,४८ (टि०), ४९ (टि०), ६१ (टि०), ६८, ६९ (टि०), १२७ (टि०), २३८
'राहू'—१३१
रिजले—१२४ (टि०)
'रिपोर्ट्स ऑव आर्क्योलॉजिकल सर्वे ऑव इण्डिया'—१२५ (टि०)
रुद्र—११३ (टि०)
रुद्रप्रतापनारायण (राजा)—५३
'रूपाधौरा'—८६
'रैसियल प्रोवर्ब्स'—१ (टि०), २ (टि०), २३ (टि०), २४ (टि०), ३९ (टि०), १७३ (टि०), २०४ (टि०), २०७ (टि०), २३७
'रोपा'—१४३
रोर—९३,१२६

ल

लक्ष्मणदेव (राजा)—४३
'लटपट पगड़ी'—३६
लड़नी—२००
लतीफपुर—४६
लाट्यायन श्रौतसूत्र—११० (टि०)
'लामी'—१०९
लॉर्ड जॉन रसेल—२ (टि०)
लाल खाँ—५१
'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑव इण्डिया'—२५ (टि०) २६ (टि०), २७ (टि०), ३३ (टि०)
लियोनलगिब्स (डॉ०)—२०७ (टि०)
'लिस्ट ऑव एन्शियेण्ट मानुमेण्ट्स प्रोटेक्टेड अण्डर ऐक्ट ७ ऑव १९०४ इन प्रोविन्स ऑव बिहार ऐण्ड उड़ीसा'—५० (टि०)
'लीलावती'—६९
लुआठ—१०६
लुखरी—७६
लोकनियाँ—२१५,२१५ (टि०)
लोकनी—२१५
लोकायत-दर्शन—१६१,१६१ (टि०)
लोरिक—१२५,१२५ (टि०)
लोरिकायन—१२५ (टि०)
'लोक-साहित्य की भूमिका'—२३८

व

वज्जि—२८
वनायु—६६ (टि०)
वराहमिहिर—७१,७२ (टि०), ७९ (टि०)
वराहमिहिरसंहिता—७०
वर्दीज़ ऑव इंगलैण्ड—१ (टि०)
वस्टीज (डॉ०)—४५
वाग्वित्रय—६९
वाचस्पत्यकोश—१०२
वाजसनेयिसंहिता—१४६ (टि०)
वात्स्यायनकामसूत्र—१८
वाराणसी—२६,२३८
वाराहीसंहिता—७१ (टि०), ७२ (टि०), ७३ (टि०), ७५ (टि०), ७७ (टि०), ७९ (टि०), ९४ (टि०)
वाल्मीकि—२२
वाल्मीकिरामायण—२९ (टि०), ९८ (टि०), ९९ (टि०), १५४ (टि०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वासुदेवशरण अग्रवाल (डॉ०)—२ (टि०), २४,६६,११० (टि०), १११ (टि०), ११८ (टि०), १२३ (टि०), १४५ (टि०), १४७ (टि०), २११ (टि०), २१२ (टि०)
वाह्लीक—६६ (टि०)
विक्रमशिला—४३
विक्रम-स्मृति-ग्रन्थ—४६ (टि०)
विक्रमादित्य (प्रथम)—४६
विक्रमादित्य (महाराजा)—४७,४६
विक्रमादित्य मिश्र—२३७
विक्रमादित्य हेमू—२६
विजयगढ़-दुर्ग—४६
विन्ध्याचल—३०,३१,५७
विलियम वेरिष्टक (लॉर्ड)—५४ (टि०)
विष्णुधर्मसूत्र—१३२ (टि०)
विष्णुपुराण—१५१ (टि०)
विष्णुशर्मा—२२
विश्वनाथ प्रसाद (डॉ०)—२६,२७,४७ (टि०), १०६ (टि०), १२५ (टि०), १३६ (टि०), १६४ (टि०), २११ (टि०), २३८
विश्वामित्र—२८,३१,४८,५८
वीर हेमू—४६
वुलि—२८
वृन्द—२३१,२३४
वेंकटेश्वर प्रेस (बम्बई)—६४ (टि०)
'वैदिक देवशास्त्र'—६४ (टि०), ११३ (टि०)
'वैदिक माइथोलॉजी'—६४ (टि०), ११३ (टि०)
व्यवहारसूत्र—५
व्यास—२२

श

शंख (ब्राह्मण)—५६
शक—४६
शकसातवाहन-काल—५६
शतपथब्राह्मण—१५,२६,२६ (टि०), १०२ (टि०), १४२ (टि०), १५४ (टि०), २११ (टि०), २१६ (टि०)
शाक्य—२८
शाक्यवंश—२८
शान्तनशाह—४८
शाहाबाद—२६,२३८
शाहाबाद गजेटियर—४८,४८ (टि०)
शिलाँग—६०
शिवनन्दन मिश्र—४७ (टि०)
शिवपुर घाट—५१
शिवप्रसाद सिंह—२३७
शिशुनाग—२६
शिशुनाग-वंश—२६
शिशुपालवध—१११ (टि०), १५६ (टि०)
शुक्राचार्य—२२
शेरशाह—२६,६०,६८
श्रावस्ती—६४
श्रीभारत भारती लि० प्रकाशन, दिल्ली—६४ (टि०)
श्रीमद्भगवद्गीता—१५८
श्रीलालसिंह—२३७
श्रीशंकराचार्य—२१६ (टि०)
श्रीसम्पूर्णानन्द-अभिनन्दन-ग्रन्थ—५५ (टि०), ५६ (टि०), ११३ (टि०)

स

सँकेता—४
संन्यासी ऐण्ड फकीर रेडरस् इन बंगाल—२१६ (टि०)
संयुक्तनिकाय—१६० (टि०)
संस्कृत-इंगलिश-डिक्शनरी—६३ (टि०), २११ (टि०)
सं० हि० श० सा० (संक्षिप्त हिन्दी-शब्दसागर)—६८ (टि०), २१० (टि०), २११ (टि०), २१२ (टि०), २१३ (टि०), २१४,२१४ (टि०), २१५,२१५ (टि०), २१६
सईद सालार मसऊद—६४
सकलनारायण शर्मा (म० म० पं०)—३१ (टि०), ६१ (टि०)
सत्यदेवनारायण अष्ठाना—२३७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सत्यव्रत सिन्हा (डॉ०)—३२ (टि०), १२५ (टि०)
सप्तमातृका—१६४
समहूत—२१५
समुद्रगुप्त—२९
सम्पूर्णानन्द (डॉ०)—४५ (टि०), ४६, ४६ (टि०)
सरगुजा-रियासत—२६
सरगुजिया—२७
सरयू—३०
'सरवरिया'—२६
'सरस्वती' (पत्रिका)—२६ (टि०), १६२ (टि०)
ससराँव—५७,५७ (टि०), ५८,६०
'सहदूल'—९५
सहल (डॉ०)—४१
सहस्र अर्जनपुर—५७ (टि०)
सहस्रग्राम—५७ (टि०)
साठी—१४५
सायणाचार्य—१०३
सारंगारण्य—३१
सारन—२६,२९,३१,४४,५८,२३८
'सार्थवाह'—५३ (टि०), ५४ (टि०)
'सालेज'—१३१
सावयधम्म दोहा—२२
सासाराम—५७,५७ (टि०), ५८,६०
साहित्य-भवन लि०, प्रयाग—२३८
सिकहर—२१३
सिकन्दर—४७,५०
सिकन्नर—५०
सिन्धु—६६ (टि०)
'सिन्धु-उपत्यका की सभ्यता'—१२३ (टि०)
'सिम्बॉल्स : साइन्स ऐण्ड देयर मीनिंग्ज'—१०८ (टि०), १०९ (टि०)
सिलहट—७०
'सिहुला'—१६६
सी० एफ़० पॉटर—७ (टि०)
सीलोन—१५
'सुखवन'—१९८
सुत्तनिपात—१५९ (टि०)
सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या (डॉ०)—३ (टि०), २३,२५
सुन्दरविलास—४८ (टि०)
सुरेन्द्रनाथ सेन—५१ (टि०)
सुशीम—५६
सुश्रुतसंहिता—१७० (टि०)
सूका—६८
सूकी—२१५,२१६
सूर्यकुण्ड—६४,६४ (टि०)
सूर्यशतक—६४ (टि०)
सेतिहाँ—११८
सेलविन गुर्ने चैम्पियन—२ (टि०)
'स्केन'—८६
सोननदी—२६,३०
सोना-पाती—७८
सोसाइटी : एन् इण्ट्रोडक्शन एनेलाइसिस—९७ (टि०)
'सोहराइ'—१७९
सौमितिका—११२
सौवीर—६६ (टि०)
स्कन्दगुप्त—२९
'स्टैण्डर्ड डिक्शनरी ऑव फोकलोर, माइथोलॉजी ऐण्ड लीजेण्ड'—३ (टि०), ७ (टि०), २२२ (टि०)
स्मृतिचन्द्रिका—१३३ (टि०)
स्वर्णजयन्ती-स्मारक-ग्रन्थ (श्रीरामलोचन शरण)—३१ (टि०), ६२ (टि०)

ह

'हंस' ('काशी-विशेषांक')—५५ (टि०), २३८
'हंस' (पत्रिका)—४५ (टि०), ६४ (टि०)
हजारीप्रसाद द्विवेदी (डॉ०)—२६,४४,४४ (टि०), ५६ (टि०), ११६ (टि०), १२५ (टि०), १३० (टि०), १६२ (टि०)
हड़बहवा—७५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'हण्टर'—६६ (टि०)
हत्यूत्थर—११२
हरप्रसाद शास्त्री—६२ (टि०)
'हराई'—७४
'हरिऔध'—६ (टि०)
हरिश्चन्द्र (यवनारि)—२६
हर्षचरित—१०६,१०६ (टि०), ११०,२१३ (टि०)
हर्षवर्द्धन—४६
हसन खाँ सूरी—६०
'हाँका-हाँकी'—१४१
हिन्दी-प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी—२३८
'हिन्दी मुहावरे'—३
हिन्दी-विद्यापीठ (आगरा वि० वि०)—१२५ (टि०)
हिन्दी-शब्दसागर—५६ (टि०), २१६
हिन्दी-शब्दानुशासन—२०४ (टि०)
हिन्दी-समिति (ग्रन्थमाला) लखनऊ—१२६ (टि०), १६४ (टि०)
हिन्दी-साहित्य का बृहत् इतिहास—२८ (टि०), ३६ (टि०), ६२ (टि०), २३८
'हिन्दुस्तानी' (पत्रिका)—५० (टि०), ६४ (टि०), २३७
हिमालय—३०
हिस्ट्री ऑव दि परमार डाइनेस्टी—४३ (टि०)
हीरालाल (डॉ०)—४६
हेमू—२६,३०,३० (टि०)
हेस्टिंग्ज़ (वारेन, गवर्नर जेनरल)—३०, ४५,४५ (टि०), ४६,४६ (टि०)
हैण्डबुक ऑव सोशल साइकोलॉजी—१७२ (टि०)
'हैस्टिंग्स इन्साक्लोपीडिया ऑव रिलीजन ऐण्ड एथिक्स'—२ (टि०)
होमॉल—१ (टि०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
२.	Aphorisum	Aphorism
४.	हतैया	हतेया
७.	भावना	भावना
७.	Archer Tayler	Mana Leach
९.	सम्बन्धा	सम्बन्धी
१२.	वादी	वादी
१३.	के ऐतिहासिक	की ऐतिहासिक
१५.	नहीं जाने	नहीं आने
२१.	मरीच	मिर्च
२३.	लिखा	लिखा है
२८.	मग्ग	भग्ग
३१.	प्रान्तर ये	प्रान्तर थे
३५.	निहार	निहोरा
५२.	हा	हो
५९.	Subuls	Suberbs
६४.	का चक्षु	की चक्षु
७४.	पछैया	पछिया
७७.	हबावाले	हवावाले
८५.	गौली	गोली
८९.	जीवों स	जीवों से
१०६.	डालले	डालल
१०७.	तें	में
११०.	'गत्रिका'	'गात्रिका'
११२.	(अ)	(क)
११९.	पूजा	पूआ
१२२.	सेवइठली	ले बइठली
१३६.	खिलवले	खिअवले
१३८.	मैया	मैभा
१४८.	सर्वरव	सर्वस्व
१६६.	ऐंचातान	ऐंचाताना
१६८.	ढींढे	ढींढ़े
१७२.	Cormunal	Communal
१७९.	लगाव	लगावऽ
१८४.	नहवे	ना हवे
२५५.	६९३	५९३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment Heritage Foundation, Jalgaon